-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
1.	ले चल मेरे नाविक मुझको	39
2.	चैतन्य घन आनन्द घन	39
3.	हरि हरि कहें बहे यह नयना।	40
4.	हरी हरी तुझे जपें हम।	40
5.	हरि हरि भज मन आये चैना।	41
6.	किसे कहूँ मैं अपना साथी।	41
7.	पी रटो मन पी रटो मन।	42
8.	हरि सुमरण कर मोह मिटेगा।	42
9.	बहते नयनों से आंसू है।	43
10.	तेरा विरह हुआ मैं पागल।	43
11.	सोचता है मन यहाँ क्या।	44
12.	दिल लगाते फिर रहे हैं।	44
13.	चला नहीं जाता प्रभु मैं।	45
14.	हरि मिलो जल नयन बहता।	45
15.	चल निभा दे तू यहाँ पर।	46
16.	बंशी बाजे लीन होऊँ।	46
17.	चलते चलते मिट जाना है।	47
18.	छोड़ कहाँ मैं तुमको जाऊँ।	47
19.	मैं कौन तू है कौन।	48
20.	हरि तुझे मनाये हम हरपल।	48
21.	हरि नीर मेरे बहते।	49
22.	दिन आते और यहाँ जाते।	49
23.	जिन्दगी में कौन अपना।	50
24.	हरि जपो जाने नहीं कुछ।	50
25.	हरि ही जपता हरि को रहता।	51
26.	चल चल गिरे बैचेन दिल।	51

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
27.	बह रही अंखियां न आये।	52
28.	आज तो जी लो क्या कल हो।	52
29.	पूछता मैं कहाँ मेरा घर।	53
30.	दो पल के सुख को पाने को।	53
31.	मन हरि हरि गा तज सब आशा।	54
32.	प्यासा मन तड़े है हरि को।	54
33.	हरि जपो जपते ही रहो मन।	55
34.	जप ले मन तू ओम ओम को।	55
35.	हरि हरि जप बरसेंगी अंखियां।	56
36.	नयना तरसे तुमको मिल ले।	56
37.	कुछ पल का है मेल यहाँ पर।	57
38.	जाने न कहाँ जाये।	57
39.	शरण में आया तुम्हारी।	58
40.	हरि तुमको दिन रात रटूँ मैं।	58
41.	कौन अच्छा है बुरा है।	59
42.	तारक मारक सब कुछ तू ही।	59
43.	बहता जा मन है ना मंजिल।	60
44.	तुम उठा कर आंख देखो।	60
45.	कुछ पल हँसे घूमे यहाँ।	61
46.	मन हुआ है बाबरा।	61
47.	बस यहाँ कुछ भी नहीं है।	62
48.	बस जाओ मेरे नयनों में।	62
49.	गीत गा ले मन हरी के।	63
50.	पार हरि नदिया करा दो।	63
51.	गा गीत मन, उड़ चल गगन।	64
52.	नीर बहायें मेरी अंखियां।	64

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
53.	कह दो मुझसे तुम हो मेरे।	65
54.	पाने को जब कुछ नहीं यहाँ।	65
55.	आये ना तुम सावन जाये।	66
56.	गा ले मन तू गीत हरी के।	66
57.	किसको सुनाएँ दास्ता।	67
58.	हरि दर्शन को अंखियां तरसे।	67
59.	जो तूने चाहा वही हुआ।	68
60.	खोजते हम सत्य को है।	68
61.	तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ।	69
62.	मन पीछे पीछे जाये क्यों।	69
63.	जीवन जाता तू ना आता।	70
64.	बिखरा रूदन कितना यहाँ।	70
65.	पी रूठ गया तो जायें कहाँ।	71
66.	पाना क्या और यहाँ खोना।	71
67.	हरि करो कृपा दो ज्ञान हमें।	72
68.	हरि की मर्जी से आये हम।	72
69.	अपनी अपनी यहाँ कहानी।	73
70.	दो बूंद गिरे हरि चरण चढ़े।	73
71.	उड़ता मन जाये कहाँ ठिका।	74
72.	जिन्दगी क्या गीत गाती।	74
73.	तन नहीं मैं मन नहीं हूँ।	75
74.	अपनी अपनी लिये वासना।	75
75.	याद करते हम तुझे हरि।	76
76.	गाये गीत न मैं गा पाया।	76
77.	यहाँ मिलकर बिछुड़ जाते।	77
78.	हरि हरि बोलो हरि को जी लो।	77
79.	हरि हरि जप मन सत्य कहूँ सुन।	78

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
80.	क्या खता हुई जो भूल गये।	78
81.	दिल रोये यह बहते नयना।	79
82	तरस गये पर प्यार न पाया।	79
83.	पल पल मांगू तुझसे पानी।	80
84.	नयन आंसू पास तुम ना।	80
85.	मन चुप हो क्या तू अब गाये।	81
86.	हरि आंखों को खोलो।	81
87.	दीन बन्धु दयालु तुम हो।	82
88.	हरि को जपो यहाँ मन।	82
89.	जप ले मन और न भटक कहीं।	83
90.	अंखियां बरसे यह दिल नहाये।	83
91.	हरि कृपा करो जग के पालक।	84
92.	मन हरि हरि जप नहीं और है सुख।	84
93.	तेरी दुनिया रास न आई।	85
94.	हरि हरि जपें हरि को पूजे।	85
95.	बन्शी की धुन सुन नाचे तन।	86
96.	मिले दिशा ना तुम बिन रसिया।	86
97.	हरि हरि तेरी करते पूजा।	87
98.	हरि ओम जपो मन उसे जपो।	87
99.	हरि ओम जपो मन उसे रटो।	88
100.	क्यों इन्तजार हमको।	88
101.	हरि दर्शन को तरसे अंखियां	89
102.	यह नीर हैं बहते रहे।	89
103.	आंसू आये तुम मिलो नहीं।	90
104.	हरि सदा जपेंगे हम तुमको।	90
105.	ओम तू है कौन कह दे।	91

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
106.	ओम हरी हर ओम हरी हर।	91
107.	ओम जप खिलता कमल	92
108.	मन ओम जपो जप इसे लखो।	92
109.	क्या मेरा सब है तेरा।	93
110.	बीत रहे दिन तुम ना आये।	93
111.	खिल कर यहाँ होवें विलय।	94
112.	क्या है दुनिया क्या हैं हम।	94
113.	प्यार तेरा सदा चाहें।	95
114.	तुम सर्जक तुम ही पालक।	95
115.	प्यार करो हरि से पागल।	96
116.	नाचते हो कर विवश सब।	96
117.	जग से प्रीति करे दुख होई।	97
118.	दुख ना मिटते प्रीति बिना हरि।	97
119.	मांगता तेरी दया को।	98
120.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	98
121.	जप हरि जप हरि जप ले तू मन।	99
122.	कितनी पीड़ा दर्द यहाँ है।	99
123.	जो भी चाहें वह ना होवे।	100
124.	हरि बस जाओं नयनों में।	100
125.	जख्म इस दिल में लगे जो।	101
126.	हरि भक्ति हरि कृपा से होई।	101
127.	हरि मैं तुमसे प्रीति बढ़ाऊँ।	102
128.	किस कोने में बैठे हरि तुम।	102
129.	सुनो हरी हर तुझे बोले।	103
130.	हरि हरि सुमरे हरि मनावें।	103
131.	मेरे मन्दिर में हरि बसना।	104

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
132.	क्या पाना और यहाँ खोना।	104
133.	ताप हरे सुख पावे जिवड़ा।	105
134.	जप ले हरि को वह दुख भंजक	105
135.	लहर न खोजे अन्तस सागर।	106
136.	अनजानी डगर जायें किधार।	106
137.	जप ले हरि को मन जपता जा।	107
138.	बह ले मन बह हरि में खो जा।	107
139.	हरि हरि सुमरो जग में जी लो।	108
140.	हरि सदा जपते रहेंगे।	108
141.	चाहत तज बह सागर में मन।	109
142.	जपो हरि को द्वन्द सभी तज।	109
143.	कौन हो तुम कुछ कहो तो।	110
144	सदा हम तुमको मनाये।	111
145.	नयन से मेरे नीर गिरते।	111
146.	क्या कहें किसको यहाँ हम।	112
147.	जगत पिता तुम सबके पालक।	112
148.	हरि हरि जपें हरो दुख सारे।	113
149.	मन रोया पर तुम नहीं मिले।	113
150.	हरि मन बहलाऊँ मैं कैसे।	114
151.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	114
152.	आश्वासन मिलते यहाँ बहुत।	115
153.	ढल रही है शाम अब तो।	115
154.	पियूं मैं नाम की मदिरा।	116
155.	हरि हरि जप मन प्रेम बढ़ेगा।	116
156.	यह बह रही है जिन्दगी।	117
157.	सांस तेरा गीत गायें।	117

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
158.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	118
159.	आंख यह रिमझिम बरसती।	118
160.	सागर में कितनी लहर उठें।	119
161.	बह रही है जिन्दगी यह ।	119
162.	हरि यह विनय है हमे प्यार देना।	120
163.	खोज पी को पी रटो मन।	120
164.	हरि कहते बीते जीवन।	121
165.	हरि हरि जपो कट जाये स्र्र।	121
166.	गा गीत उसी के देख जगत।	122
167.	हरि हरि जपें तुझे ना भूले।	122
168.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	123
169.	किसको सुनाये दर्द हम।	123
170.	नीर मैं किसको दिखाऊँ।	124
171.	हरि जपो कटता स्र्र है।	124
172.	कुछ न पाना कुछ न खोना।	125
173.	कुछ किया ना ज्ञान था ना।	125
174.	जागो मोहन अब तो प्यारे।	126
175.	ले चल नौका मेरे खेवट।	126
176.	मन गीत सुना यह कटे स्र्र।	127
177.	आंख में आंसू हमारे।	127
178.	कुछ गीत कहो तो गा दूँ।	128
179.	प्रभु दर्शन को तरसे नयना।	128
180.	प्रियतम प्यारा वह मन भावन।	129
181.	मेरे जीवन अन्तर्यामी।	129
182.	शाम जाती रात आती।	130
183.	किसको कहें अपना यहाँ।	130

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
184.	मेरे नयना हरि तुम देखो।	131
185.	मन गीत सुना जियरा रोये।	131
186.	बंशी बजैया रास रचैया।	132
187.	मांगू क्या मर्जी तेरी।	132
188.	मर्जी हरी की नाचते।	133
189.	दिन बीते ना आये बालम।	133
190.	गीत सुना मन हरि ही भाये।	134
191.	हरि हरि जप मन प्रीति बढ़ा ले।	134
192.	ले चल नाविक नदिया गहरी।	135
193.	जग सुपना मन लेता सुपना।	135
194.	हरि हरि बोलो हरि को जी लो।	136
195.	ढूंढते खो जायेंगे हम।	136
196.	हरि हरि जप मन प्यार बढ़ा ले।	137
197.	नयनों से जो झरती पीड़ा।	137
198.	दिन बीते हरि तुम ना आये।	138
199.	क्या करूँ मैं धयान तेरा।	138
200.	चाहते थे प्यार को हम।	139
201.	बहलाऊँ इस दिल को कैसे।	139
202.	तेरे दर पर आये हम।	140
203.	हरि हरि जपो मिलेगा चैना।	140
204.	क्या करें शिकवा किसी से।	141
205.	दर्शन की यह प्यासी अंखियां।	141
206.	हरि हर तुझे पुकारूँ सुन ले।	142
207.	जो भी है सहना ही होगा।	142
208.	आवाज तुझे मैं दूँ।	143
209.	हरि हरि गायें तुझे मनायें।	143
210.	जीवन यह क्यों सांसे लेता।	144

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
211.	जो हरि चाहे वह ही होता।	144
212.	हरि पुकारे हम तुझी को।	145
213.	बहते आंसू बहते जाये।	145
214.	मन चाहे है उड़ना।	146
215.	सोचता मन क्या यहाँ है।	146
216.	कितने आये सब विछुड़ गये।	147
217.	हरि मुझे रख लो शरण में।	147
218.	किसे सुनाये दास्ता को।	148
219.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	148
220.	चलेगे हम चलाये जब तक।	149
221.	हरि में जीना, हरि में मरना।	149
222.	हरि भज हरि भज जाने वह सब।	150
223.	तेरी चौखट पर मस्तक रख।	150
224.	लड़खड़ायें जब कदम यह।	151
225.	कितने सुख कितने दुख जग में।	151
226.	मन रोया हरि तुमको खोया।	152
227.	हरि जपो वह ही सहारा।	152
228.	हरि जपो जपते रहो मन।	153
229.	मिले यहाँ पल पकड़ नहीं चल।	153
230.	हरि जपो हरि हरि जपो मन।	154
231.	नयनों में मेरे आंसू है।	154
232.	हरि ओम ओम हरि ओम ओम।	155
233.	जपते ही रहते सदा तुझे।	155
234.	समय उड़ रहा पंख लगा कर।	156
235.	हरि जपे जपते रहेंगे।	156
236.	तुम दीन बन्धु करूणा सागर।	157

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
237.	इस जिन्दगी को कैसे मनाये।	157
238.	तेरी है महफिल प्याला खाली।	158
239.	क्या गलत यहाँ क्या सही यहाँ।	158
240.	क्या यहाँ निवारण दुख का है।	159
241.	जीवन के इन गलियारों में।	159
242.	मैं नहीं तपस्वी आवारा।	160
243.	मिलें हमें खुशियों के दो पल।	160
244.	नयन में जब हरि बसेगा।	161
245.	करने को कुछ भी नहीं यहाँ।	161
246.	तुम बिन रोवे मेरी अंखियां।	162
247.	हरि ओम ओम हरि ओम ओम।	162
248.	जानते कुछ भी नहीं है।	163
249.	दुःख हरो तुम दुख के हर्ता।	163
250.	फिर रहे मन को लगाते।	164
251.	बह रही नदिया न जाने।	164
252.	बहूँ लहर सा जीवन दाता।	165
253.	पाना और यहाँ क्या खोना।	165
254.	अपने अपने शौक यहाँ है।	166
255.	कहने को कुछ भी नहीं यहाँ।	166
256.	आंसू से नयना भीगे है।	167
257.	हरि ओम जपो हरि ओम जपो।	167
258.	बहती यह मेरी अंखियां।	168
259.	किसको सुनाएँ दास्ता।	168
260.	शान्ति मिले जप ले हरि मनुआ।	169
261.	मौन हुए तुम अश्रु बहे यह।	169
262.	मन नहीं लगता हमारा।	170

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
263.	पाना और यहाँ क्या खोना।	170
264.	हरि ओम कहो हरि ओम कहो।	171
265.	हरि सुनो तुम आवाज।	171
266.	हरि बालक हूँ मैं अज्ञानी।	172
267.	मन उड़े कहीं ठौर न पाये।	172
268.	आ रही सांस यह जब तक।	173
269.	पार करा दे मुझको नदिया।	173
270.	लो मुझे अपनी शरण में।	174
271.	ले चलो किस्ती हमारी।	174
272.	मन ओम कहो मन ओम कहो।	175
273.	हरि बिन होय न कोई काजा।	175
274.	हरि सुमरन कर हरि भज ले मन।	176
275.	हरि दर्शन को अंखियां प्यासी।	176
276.	जीवन क्या है मृत्यु यहाँ क्या।	177
277.	आंसू से भीगी अंखियां हैं।	177
278.	दिन जाते हैं ऐसे।	178
279.	धौर्य हमें दे ज्ञान हमें दे।	178
280.	मन ओम जपो मन ओम जपो।	179
281.	कुछ कह दो तुम यह आंखें नम।	179
282.	आंसू बहते पर कह न सके।	180
283.	दिल नहीं लगता हमारा।	180
284.	हरि मर्जी मन तू रहना।	181
285.	पीड़ा से व्याकुल है यह तन।	181
286.	सूखा पत्ता कब झड़ जाये।	182
287.	गिरे आंसू गिरते ही रहें।	182
288.	हरि मन जपे नही क्यों पागल।	183

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
289.	ज्ञान वही है ध्यान वही है।	183
290.	कितनी पीड़ा में कटी रात।	184
291.	गीत गा ले तू हरी के।	184
292.	जप ले नाम हरी का प्यारा।	185
293.	खोजा ना पी, मन भरमाया।	185
294.	मन ओम कहो या राम कहो।	186
295.	हरि गीतों को मैं गाऊँ।	186
296.	जो दर्द दिल में बह रहा।	187
297.	हरि हरि जपूं मिला दे कोई।	187
298.	हरि हरि जप चैन मिलेगा मन।	188
299.	वह चले गये वह छोड़ गये।	188
300.	ओम जपो मन ओम जपो मन	189
301.	जो पीड़ उबलती इस दिल में।	189
302.	जप ले मन बहती किस्ती।	190
303.	हरि जप हरि जप कर ले मन तप।	190
304.	शरण में आये तुम्हारे।	191
305.	प्यासी अंखियां तरसे नयना।	191
306.	ले चलो नौका हमारी।	192
307.	छनक छनक छन पायल बाजे।	192
308.	व्यर्थ यह भी व्यर्थ वह भी।	193
309.	बरसे नयना रिमझिम रिमझिम।	193
310.	देखे रोती अंखियां पर चुप।	194
311.	हरि ओम कहो मन ओम कहो।	194
312.	जीवन नदिया बहती जाये।	195
313.	चाहते कितनी लिये हम।	196
314.	हरि हरि जपें रिझायें तुमको।	196
315.	पार करा दे मुझको नदिया।	197

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
316.	हरि हरि बोलो नयना खोलो।	197
317.	हरि हरि बोलो हरि हरि बोलो।	198
318.	नयना भीगे बाट निहारें।	198
319.	हरि प्यार का प्यासा फिरूँ।	199
320.	हरि कृपा करो हरि कृपा करो।	199
321.	कैसी दुनिया जाने ना हम।	200
322.	मन समझ करना यहाँ क्या।	200
323.	हरि जपे जपते रहेंगे।	201
324.	कितना रो ले मन विलख विलख।	201
325.	पल पल में सब परिवर्तन है।	202
326.	स्वीकार करो तेरा सेवक।	202
327.	आशा क्या रक्खे मन जग से।	203
328.	ले चलो अंगुली पकड़ कर।	203
329.	उठ रहे हरि गीत तेरे।	204
330.	हरि की कृपा मिलती रहे।	204
331.	तुझे रोकर सुनाऊँ मैं।	205
332.	हरि बोलो मन हरि बोलो मन।	205
333.	दुख हरो तुम नाथ हमारे।	206
334.	हरि हरि जप ले स्वप्निल दुनिया।	206
335.	मांगते तेरी कृपा को।	207
336.	दिल में मेरे हरि रहना।	207
337.	मान जाना ना बुरा तुम।	208
338.	मन लगाते फिर रहे हैं।	208
339.	मैं पराजित गर्व क्या है।	209
340.	जो तूने चाहा वही हुआ।	209
341.	मान मन दुख तज यहाँ पर।	210
342.	कितने बने मिटे क्या गिनती।	210

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
343.	दिल बता कैसे लगाये।	211
344.	जो बात मन में तेरे।	211
345.	हरि रूप हैं अनेको।	212
346.	मन हरि जप, जपता जा जग में।	212
347.	क्षण भंगुर से प्रीति यहाँ क्या।	213
348.	जपते ही रहे तुझे हरपल।	213
349.	कब से बैठी दीप जलाये।	214
350.	तेरे बालक हम प्रभु हैं।	214
351.	यह जग तेरा है प्यारा।	215
352.	हरि इतना बल मुझको देना।	215
353.	मन हरि जप चलता जा जग में।	216
354.	ना जानूं कुछ अंखियां रोई।	216
355.	मन हरि भजन करो सुख पाओ।	217
356.	सोचता मन क्या यहाँ है।	217
357.	मिटता तन मन करो हरि भजन।	218
358.	गा गा तुझे रिझाऊँ मोहन।	218
359.	गिरते आँसू बैचेन हुई।	219
360.	जिन्दगी की शाम जाती।	219
361.	ना जान सके पहचान सके।	220
362.	तुम कृपा रखना सदा हरि।	220
363.	किसने पूछा मैं क्यों आया।	221
364.	हरि ओम जपो मन ओम जपो।	221
365.	को हम को हम को हम को हम।	222
366.	नित नित देखूं रूप तुम्हारा।	222
367.	सोचता तू क्या यहाँ मन।	223
368.	चल अकेला चल यहाँ तू।	223

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
369.	बोल मत चुपचाप चल ले।	224
370.	गा ले कुछ गीत मिलन के तू।	224
371.	गा गीत उसी के बहता जा।	225
372.	यह नीर गिरे इनको लख ले।	225
373.	सोचता मन क्या क्या है।	226
374.	तू नहीं संग ना भरे रंग।	226
375.	लगता ही ना दिल किसे कहे।	227
376.	हरि ओम जपो मन उसे रटो।	227
377.	अपनी हरि कृपा सदा रखना।	228
378.	मिट रहा सब देख ले मन।	228
379.	प्रीति अपनी हरि बढ़ा दे।	229
380.	पाने को कुछ भी नहीं यहाँ।	229
381.	ज्ञानी बने फिरे इस जग में।	230
382.	हरि हरि बोलो नयना खोलो।	230
383.	पा सके ना हरि तुझे हम।	231
384.	ले चल मुझको कन्हैया।	231
385.	हरि हरि गाऊँ प्यार बढ़ाऊँ।	232
386.	बने मिटे सब शौक यहाँ पर।	232
387.	ऐसा कोई गीत सुना दो।	233
388.	स्वप्न दुनिया खेल हरि का।	233
389.	गीत अपने गा यहाँ पर।	234
390.	हरि तुम बिन यह रोये अखियां।	234
391.	हरि को मन रे काहे जपे ना।	235
392.	हे राम राम हे राम राम।	235
393.	मन पकड़ो हरि का दामन।	236
394.	वीणा कुछ गीत उठा लेगी।	236

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
395.	आ रहा दिन जा रहा है।	237
396.	किसको सुनाये दर्द हम।	237
397.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	238
398.	छिपो नहीं तुम कृष्ण मुरारी।	238
399.	बना हुआ है वह निर्मोही।	239
400.	क्या पाना और यहाँ खोना।	239
401.	असफलता की लिये कहानी।	240
402.	बने सन्त फिर भी रोते है।	240
403.	चल मन उड़ चल नील गगन में।	241
404.	नाथ यही मैं तुमसे चाहूँ।	241
405.	सोचता क्या मन यहाँ है।	242
406.	जीवन में मिल जाये खुशियां।	242
407.	थक गये ना चल सके हम।	243
408.	गीत अपने गा यहाँ पर।	243
409.	क्या ठीक यहाँ क्या गलत यहाँ।	244
410.	आज यहाँ हम कल ना होंगे।	244
411.	गीत सुना मन आये साजन।	245
412.	कौन मैं हूँ कौन तू है।	245
413.	नमन ले लेा चमन तेरा।	246
414.	हरि को जप जपते रहो मन।	246
415.	कर सको तो माफ करना।	247
416.	हरि शरण मुझे अपनी रख लो।	247
417.	हरि सुने या ना सुने तू।	248
418.	ओम ओम ओम ओम।	248
419.	गा गा मैं तुझे बुलाता हूँ।	249
420.	ढलता दिन और ढलें रातें।	249

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
421.	शरण तुम्हारी मैं गिरधारी।	250
422.	हरि भज मन सुख का सागर है।	250
423.	सोच रहा मन क्या तू पागल।	251
424.	जीवन यह क्यों सांसे लेता।	251
425.	सजती ही रहती मधुशाला।	252
426.	हरि अपनी कृपा सदा रखना।	252
427.	कुछ रहा गया सब खेल चला।	253
428.	मन मिटे मिले हरि जपता जा।	253
429.	हे जगत ईश ले चलो कहीं।	254
430.	आज यहाँ कल यहाँ न होगे।	254
431.	हरि सदा मनाये हम तुमको।	255
432.	क्या गलत हुआ क्या सही हुआ।	255
433.	हरि भज इस बिन है कुछ भी ना।	256
434.	बिछुड़ा पीव मोहि मिल जावे।	256
435.	कुछ पल की मिल जाये खुशियां।	257
436.	नयन प्यार तेरा पाने को।	257
437.	हरि दर्शन को घूम रहा मैं।	258
438.	आस लगाये बैठा कब से।	258
439.	सोचता क्या मन यहाँ है।	259
440.	माटी भी खशबू देती है।	259
441.	गीत तेरे मैं नहीं कुछ।	260
442.	इस मेले में ठगे गये हम।	260
443.	हरि की मर्जी आना जाना।	261
444.	मन छोड़ पकड़ हरि को जी ले।	261

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
445.	मन हरि भजन करो जग माही।	262
446.	काहे मनुआ अंखियां मीचे।	262
447.	दुनिया जंगल हरि भज पागल।	263
448.	मर्जी हरि की वही चलावे।	264
449.	ओम जपो मन ओम जपो मन।	264
450.	दिल बता कैसे लगाये।	265
451.	सुख दुख का चलता खेल यहाँ।	265
452.	प्यार पाने को तड़फते।	266
453.	चल उड़ चल मन कित जायेगा।	266
454.	मन ढूंढ रहा क्या पाना है।	267
455.	हरि हरि गा सब हरि की लीला।	267
456.	उठे सदा तेरी धुन हरपल।	268
457.	करूँ सदा हरि विनती तुमसे।	268
458.	प्रीति यहाँ पल पल परिवर्तित।	269
459.	मन हरि भजन करो सुख पाई।	269
460.	झुक गया मैं झुक गया मैं।	270
461.	यहाँ विवशता में पड़ कर तू।	270
462.	हरि जपे जपते रहे हम।	271
463.	बह रहे हैं नीर देखो।	271
464.	मन हरि भज हरि को ही जी ले।	272
465.	हरि को जप जग से तर जाई।	272
466.	हरि सुनो विनती हमारी।	273
467.	ढूढ़ते फिरते ठिकाना।	273
468.	उड़ उड़ जाये ठौर न पाये।	274

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
469.	अपनी अपनी नियति लिये सब।	274
470.	पी पी रटूँ न देखे छलिया।	275
471.	जीवन है यह बहती धारा।	275
472.	ले चलो दे कर सहारा।	276
473.	शाश्वत चुन या क्षण भंगुर चुन।	276
474.	खिले तुम्हारी बगिया में हरि।	277
475.	सुख की आशा में मन डोले।	277
476.	कोई बड़ा नहीं है छोटा।	278
477.	खोना है क्या पाना है क्या।	278
478.	गम यहाँ बहुत स्वप्निल दुनिया।	279
479.	मन साध शून्य क्या सोच रहा।	279
480.	हरि ओम जपो मन उसे रटो।	280
481.	बन्शी बाजे हरषे जियरा।	280
482.	बहता जाता जीवन हरि हरि।	281
483.	सोचता मन क्या यहाँ है।	281
484.	नगमे रोये तू ना आवे।	282
485.	इस जगत की प्रीति ढलती।	282
486.	जीना होगा खुद को पागल।	283
487.	दीप जला दो अंधियारा है।	283
488.	हरि बोलो मन हरि को जी लो।	284
489.	हरि दर्शन को प्यासी अंखियां।	284
490.	सारी दुनिया भागी जाती।	285
491.	शाश्वत हरि मन इसको जप ले।	285
492.	गा ना पाऊँ गीत तुम्हारे।	286

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
493.	पल पल में पलटे रंग यहाँ।	286
494.	कितना साथ किसी का होगा।	287
495.	सुपना जीवन जोडू कण कण।	287
496.	तन मिटता यह भी न अपना।	288
497.	पल दो पल की चाहें खुशियां।	288
498.	हरि जप ले मन जो शाश्वत सुख।	289
499.	हरि जपो मन चैन आवे।	289
500.	डगमगाती नाव मांझी।	290
501.	हरि ओम ओम हरि ओम ओम।	290
502.	मन जप ले हरि, तू कर ले तप।	291
503.	नीर मेरे गिर रहे हैं।	291
504.	तेरे पिया मन हिय बसत है।	292
505.	आंसू से भीगी यह अंखियां।	292
506.	जीवन क्या है एक पहेली।	293
507.	घुटती सांसे है, कैसी घुटन यह?	293
508.	नीर बहे ना पूछा तुमने।	294
509.	हरि तुझे जपते रहेगे।	294
510.	मिल कर विछुड़े हम इस जग में।	295
511.	कौन हूँ मैं, कौन हूँ मैं।	295
512	चुप हो जा मन, चुप हो जा मन	296
513.	जाने वाले कभी न रूकते।	296
514.	नयनों में मेरे बस जाओ।	297
515.	बेचैन यह दिल क्या है मंजिल।	297
516.	दीप जला अन्तस में तेरे।	298

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
517.	कौन हो कह दो मुझे तुम।	298
518.	हरि कृपा मिले तब राह मिले।	299
519.	मन सोचे क्या पागल है क्या।	299
520.	बीते कितने दिन ना आये।	300
521.	गीत सुना मन ऐसा कोई।	300
522.	लाज को रखना हरी तुम।	301
523.	जिन्दगी आती रहेगी।	301
524.	सोच रहा मन क्या है इतना।	302
525.	चुप हो जा मन, चुप हो जा मन।	303
526.	तुम कहो सही या मुझे गलत।	303
527.	दो पल के सब हैं याराने।	304
528.	करूणा सागर कृपा हरी की।	304
529.	प्यासे प्राण पिला दे जल को।	305
530.	तू कौन है मैं कौन हूँ।	305
531.	चल रहे पहुँचे न पहुँचे।	306
532.	सुख का है सागर यह हरि।	306
533.	चलती है दुनिया चलती रहेगी।	307
534.	थके यहाँ भर आई अंखियां।	307
535.	हरि हरि गाओ हरि की लीला।	308
536.	बहे नयन से आंसू मेरे।	308
537.	क्या चाह थी ले आई हमें।	309
338.	छिपे ईश तुम रोवें अंखियां।	309
539.	हरि हरि बोलो अमृत पी लो।	310
540.	जिद क्या जैसा चाहे जी ले।	310
541.	जग में मेरा मन लगा नहीं।	311

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
542.	सुरति जगा बल दे दे इतना।	311
543.	हरि जपे ना मन न माने।	312
544.	इस जग का वह ही मालिक।	312
545.	चल उड़ चल मन पार गगन कें।	313
546.	हरि कृपा रखना सदा तुम।	313
547.	गीतों को गा ले हरि के।	314
548.	चल उड़ चल मन पार गगन के।	314
549.	हरि जपूँ तुझे मनाऊँ तुझे।	315
550.	मन हरि हरि भज मन हरि हरि भज।	315
551.	नमस्कार लेलो नमस्कार ले लो।	316
552.	कटते ना दिन चैन गया छिन।	316
553.	जैसा राखे रहना होगा।	317
554.	तू पिला दे जाम ऐसा।	317
555.	नैया के खेवट आंखे गई थक।	318
556.	हरि दर्शन को प्यासी अंखियां।	318
557.	मगन ना होई हरि भजन में।	319
558.	वही है हम तो नही कुछ।	319
559.	जप मन शान्ति मिलेगी तुझको।	320
560.	हरि घर जाना तेरा साजन।	320
561.	आवे कोई जावे कोई।	321
562.	बना मन्दिर का पुजारी।	321
563.	कल क्या हो मन तू क्या जाने।	322
564.	तू ही तू है इस जग में।	322
565.	ओम जपो मन ओम जपो।	323
566.	किसको सुनाएँ दर्द हम।	323

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
567.	हरि का भजन करो सुखदाई।	324
568.	अपनी मन्जिल सब खोज रहे।	324
569.	मन हरि हरि जप हरि को जी ले।	325
570.	जप ले हरि मन का चैन यही।	325
571.	हरि हरि जपें मनाये तुमको।	326
572.	तुम बसो नयनों में मेरे।	326
573.	हरि का भजन करो सुखदाई।	327
574.	जी रहे यह आस लेकर।	327
575.	सोच सोच कर पागल होता।	328
576.	किसके साथ मनाये खुशियां।	328
577.	हरि हरि भज हरि भज गोविन्दम्।	329
578.	मन हरि हरि जप तू कर ले तप।	329
579.	आंसू नयना क्या कहूँ तुझे।	330
580.	सत्य तू है सत्य तू है।	330
581.	हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई।	331
582.	देख ले मुझको कहाँ तू।	331
583.	जपता जा हरि के गा ले गुन।	332
584.	सब खोज रहे अपने सुख को।	332
585.	जपो मन नाम हरि सुख दाई।	333
586.	जपो मन नाम हरि सुखदाई।	333
587.	सूखे नहीं नयन के आंसू।	334
588.	जो ठीक लगा तुम वही किया।	334
589.	बन गये गाफिल बता दो।	335
590.	अधिकार नहीं है कहने का।	335
591.	मन मान मिला अपमान मिला।	336

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
592.	मैं भिखारी जन्म से हूँ।	336
593.	मुझे हरि तुम प्यार देना।	337
594.	कैसे पाऊँ तुमको कान्हा।	337
595.	अकड़ क्या है तेरा जहाँ क्या।	338
596.	हरि जपो टूटते सारे भ्रम।	338
597.	पार करा दे मुझको नदिया।	339
598.	हरि हरि हरि हरि, हरि कह प्यारे।	339
599.	सुमरन तेरा सदा रहे हरि।	340
600.	रामा राम जपूँ दिन राती।	340
601.	चुप हो जा मन चुप हो जा मन	341
602.	सुख दे दुख दे मर्जी तेरी।	341
603.	हरि हरि गाऊँ हरि मनाऊँ।	342
604.	हरि हरि गा हरि की सब लीला।	342
605.	बालम ही रूठ गया हम से।	343
606.	उड़ कर यह पंछी जाये कहाँ।	343
607	पागल हूँ पागल बन आया।	344
608.	यह पाँच भूत का महापिण्ड।	344
609.	बहती लहर न मन्जिल कोई।	345
610.	जाये कौन कहाँ ना जाने।	345
611.	चंचल तू मन ना हरि जपे।	346
612.	हरि बिन कहाँ सहारा पागल।	346
613.	तन चाह लिये जब व्याकुल हो।	347
614.	तन्हाई में किसे पुकारे।	347
615.	जब तक चल सकता तू चल ले।	348
616.	अपनी प्रीति में रंग मोहन।	348

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
617.	गीत अपने गा रहे सब।	349
618.	हरि जप दिल को बहला ले मन।	349
619.	अपने अपने गीत यहाँ गा।	350
620.	कितने लेता रहता सुपने।	350
621.	चाह सुख की स्वप्न दुनिया।	351
622.	कौन हूँ हरि कौन हूँ मैं।	351
623.	सुरति करो मन सुरति करो मन।	352
624.	जप ले हरि मन चैना आये।	352
625.	पी ही प्यारा रट ले पी को।	353
626.	मुँह फेर यहाँ सब लेते।	353
627.	चंचल मन कितनी ले उलझन।	354
628.	हरि बिन ज्ञान न आवे तड़फे।	354
629.	बह ले नदिया हरि की बह ले।	355
630.	हरि भजो विछुड़े कभी ना।	355
631.	पागल मन ऐसा यह चंचल।	356
632.	आये जग में सुपने लेते।	356
633.	राम सुमर मन राम सुमर मन।	357
634.	जग से प्रीति किये दुख होई।	357
635.	जप ले हरि मन को समझाले।	358
636.	नजरें उठा के देखता।	358
637.	लाज रखना नाथ मेरी।	359
638.	हरि चाहे वह हो जाये।	359
639.	हरि ओम जपो हरि ओम जपो।	360
640.	पल पल परिवर्तित यह दुनिया।	360
641.	जप मिलेगी शान्ति मन को।	361
642.	मैं तो हूँ तेरी कठपुतली।	361
643.	मन हरि जपो पागल न हो।	362

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
644.	नाम जपो अमृत फल समझो।	362
645.	चले चल कर थक गये हम।	363
646.	स्यानों की सारी दुनिया है।	363
647.	हरि हरि जप हरि नयन बसा ले।	364
648.	हरि सम्भालो डूब रहा मैं।	364
649.	जप ले हरि मन का यह चैना।	365
650.	मन हुआ दुखी सब छोड़ खुशी।	365
651.	दिल बता कैसे लगायें।	366
652.	बहता जीवन नहीं किनारा।	366
653.	बन लहर बहो जपता जा हरि।	367
654.	अंधियारी रातों में कह दे।	367
655.	हरि हर बरसत नयन हमारे।	368
656.	हरि दास पर कर दो कृपा।	368
657.	ज्ञान को दो तम हरो प्रभु।	369
658.	तुम मिलो नहीं जियरा भटके।	369
659.	पल पल परिवर्तित यह दुनिया।	370
660.	क्या बन्धन है क्या मुक्ति यहाँ।	370
661.	मौत क्या है जिन्दगी क्या।	371
662.	हरि हरि जप ले बरसे नयना।	371
663.	हरि हरि गायें तुझे मनायें।	372
664.	कितने बीते जनम न आये।	372
665.	हरि सुमर क्या सोचता मन।	373
666.	हरि जपो न चिन्ता घेरेगी।	373
667.	तुम मुझे सुनो मैं तुझे सूनूँ।	374
668.	क्या किसी से मन गिला है।	374
669.	मन तेरे सोंचे क्या होता।	375

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
670.	जो तू बोले वह मैं बोलूं।	375
671.	खेल ले जैसे खिलाये।	376
672.	मन जप ले हरि ले चले कहीं।	376
673.	आता दिन फिर खो जाता है।	377
674.	कितना किसके बस में जानो।	377
675.	तुझ मन्दिर का बनूं पुजारी।	378
676.	अर्चना तेरी करें हम।	378
677.	उलझन ही उलझन इस जग में।	379
678.	सोचता क्या मन जपो हरि।	379
679.	गिरते आंसू तुझे पुकारे।	380
680.	हरि हरि सुमरो नयन बसा लो।	380
681.	हरि कहें जपते रहे हम।	381
682.	जाओगे कहाँ न भटक यहाँ।	381
683.	ओम जपो हरि ओम जपो मन।	382
684.	पंडित ज्ञानी बन बन घूमें।	382
685.	अपनी अपनी छोड़ नियति पर।	383
686.	तुम तो छोड़ छिप गये मुझसे।	383
687.	हरि भजन करो मन सुख पाओ।	384
688.	मैं ना कुछ सब कुछ तू ही हरि।	384
689.	ओम जपो मन ओम जपो मन।	385
690.	मन भाग कहाँ पर जायेगा।	386
691.	पंडित ज्ञानी बन बन घूमें।	386
692.	गली गली में खोजो कितना।	387
693.	ज्ञानी मैं ना बालक तेरा।	387
694.	न भटकाओ मुझे मोहन।	388
695.	मन मिटे हरि ही रहेगा।	388

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
696.	जप ले मन क्यों उलझ गिरे है।	389
697.	जप ले हरि हर पता न कोई।	389
698.	क्या अच्छा और बुरा होता।	390
699.	खड़े द्वार पर करे प्रतीक्षा।	390
700.	मेरे बनाये क्या बने।	391
701.	सब हरि खेला नहीं यहाँ बस।	391
702.	कठपुतली उसकी नाच रहे।	392
703.	हरि भज मन जग में क्या रक्खा।	392
704.	सुमरन कर मिल जाये छैंया।	393
705.	पूजो ना पूजो चाहे हरि।	393
706.	मन मन्दिर में ओम बिठा लो।	394
707.	छोड़ तुमको जाये कहाँ पर।	394
708.	हरि नयन में मेरे बसो।	395
709.	हरि ओम जपो हरि ओम जपो।	395
710.	हरि हरि जप दाता है वह ही।	396
711.	हरि देख हमें लो खड़े द्वार।	396
712.	ले चलो मर्जी कहीं भी।	397
713.	जप ले हरि हरि वह सागर मन।	397
714.	स्वीकारो हरि की लीला को।	398
715.	थक गये हम शरण में लो।	398
716.	गिर जा मन हरि के चरणों में।	399
717.	कर भजन मन चैन आवे	399
718.	बरसे अम्बर भीगे धरती।	400
719.	लेख नियति के यहाँ मिटे ना।	400
720.	नियति के बन कर खिलौने।	401
721.	बनो तुम मन दास हरि के।	401

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
722.	कौन हो तुम कुछ कहो तुम।	402
723.	ध्यान हरि का कर हरपल मन।	402
724.	नहीं कर्ता यहाँ तू बन।	403
725.	हरि जप हरि जप मन जपता जा।	403
726.	उठती लहर मिटने को यहाँ।	404
727.	हे भगवान दया के सागर।	404
728.	इस बांसुरिया में स्वर हरि के।	405
729.	हरि हरि जप ले जाये किस्ती।	405
730.	जी रहे क्या खोजते हम।	406
731.	तुझ चरण की धूल हूँ मैं।	406
732.	ले चल मुझे ले चल मुझे।	407
733.	अपना अपना खेल दिखाकर।	407
734.	किस्मत का कैसा खेला यह।	408
735.	हरि जो चाहे वह ही होता।	408
736.	दो पल की खुशियाँ मिले हमें।	409
737.	कर मन भजन हरि उसकी ही दुनिया।	409
738.	दो पल की मिल जाये खुशियाँ।	410
739.	मत मान बुरा क्या यहाँ गिला।	410
740.	द्वार तेरे बैठ कर हम।	411
741.	गा हरि हर बन बन्शी उसकी।	411
742.	हरि से ध्यान लगा ले पगले।	412
743.	कुछ तो कहो मैं क्या करूँ।	412
744.	चाहा मिलूँ नहीं मिल पाया।	413
745.	हरि की प्रति सदा सुखदाई।	413
746.	जपो हरि को लहर बन कर।	414
747.	बोलो रसिया रोवे अंखियां।	414

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
748.	कहने को मिलते यहाँ बहुत।	415
749.	स्वीकारो हरि की लीला को।	415
750.	बरसे अंखियां बरसे बादल।	416
751.	जो बीत गई वह बात गई।	416
752.	जप ले हरि का नाम सहारा।	417
753.	जप ले हरि ना पछतावे मन।	417
754.	मेरे चाहे यदि कुछ होता।	418
755.	सुपना दुनिया छलके अंखियां।	418
756.	नयन यह प्यासे छिपा दर्द दिल में।	419
757.	खोजे सुख पर पावे दुख।	419
758.	क्या गीत बता दो गाऊँ मैं।	420
759.	कब सुबह हुई कब शाम हुई।	420
760.	हरि हरि जप चैन मिले दिल को।	421
761.	नौका डोले इस सागर में।	421
762.	जीव हर चाहे सहारा।	422
763.	अपना प्यार मुझे तू दे दे।	422
764.	जपो मन नाम हरि सुखदाई।	423
765.	सब यादें तज भूली बिसरी।	423
766.	जीवन पथ पर चलते जाये।	424
767.	तू ही तू है मैं नहीं यहाँ।	424
768.	बगिया तेरी यह महक रही।	425
769.	खोजते तुमको रहेंगे।	425
770.	क्या गलत कहें क्या सही कहे।	426
771.	कह कह अपनी सभी कहानी।	427
772.	ढलती संध्या आ जा सजना।	427
773.	दिन बीत रहे तुम ना आये।	428

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
774.	दिल लगा स्वयं से हरि को जप।	428
775.	जीने मरने का खेल यहाँ।	429
776.	जप ले हरि हरि जपता ही जा।	429
777.	लागे ना मन हरि जप लो मन।	430
778.	सुपना दुनिया देखे सुपना।	430
779.	अखियां रोवे ना चैन मिले।	431
780.	मन चैन मिले जप ले हरि को।	431
781.	पत्थर दे देता साथ यहाँ।	431
782.	दास तुम्हारा हाथ थाम लो।	432
783.	हरि बसो नयन में मेरे तुम।	432
784.	चुप हो जा तू चुप हो जा मन।	433
785.	पकड़ो हाथ शरण तुम्हारी।	434
786.	लिख लिख भेजूँ तुमको पाती।	434
787.	हरि जपो ज्ञान वह ही देगा।	435
788.	तुम न नजरों को उठाना।	435
789.	हरि जपे मनाये हम हरि को।	436
790.	जप लहर यहाँ तू सागर की।	436
791.	चलने को हमें कहाँ जाना।	437
792.	किसको कह दूँ अपनी पीड़ा।	437
793.	जप मन सोच मिटेगी सारी।	438
794.	तेरी प्रीति बढ़े हरि वर दो।	438
795.	चाह न तुमको दुख पहुँचाता।	439
796.	जप ले हरि यहाँ मिटा मैं को।	439
797.	हरि विनय करो ले चल नौका।	440
798.	ले ले सहारा जप हरि।	440
799.	शान्ति मिले मन भज ले हरि को।	441
800.	हरि की लीला हरि ही जाने।	441

-: समर्पण :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
801.	ओम जप मन ओम जप मन।	442
802.	दो पल की मिल जाये खुशियां।	442
803.	तुम बिन तड़फे मेरे नयना।	443
804.	चुप हो जा मन चुप हो जा।	443
805.	दौड़े हम है सुख की खातिर।	444
806.	दो पल की जो दे रहा खुशी।	444
807.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	445
808.	सुनने बाला और न कोई।	445
809.	गलत कहूँ क्या कौन यहाँ मैं।	446
810.	सुख दुख का सारा खेल यही।	446
811.	जप ले हरि यह बहती धारा।	447
812.	मन तू चंचल दुनिया जंगल।	447
813.	किसने देखी किसकी पीड़ा।	448
814.	अच्छा न कहूँ ना बुरा कहूँ।	448
815.	मौला मेरे दे ज्ञान मुझे।	449
816.	छिपे हो तुम तड़फते हम।	449
817.	देखो सुपने फंस जाओगे।	450
818.	प्राण प्यासे पी पुकारें।	450
819.	जो भी बनाया बन गये।	451
820.	अनहद बाजे मन उसको सुन।	451
821.	कैसा किस्मत का खेला है।	452
822.	पी कितनी मधुशाला हमने।	452
823.	जप ले हरि देवे ज्ञान वही।	453
824.	कैसे इस दिल को समझाये।	453
825.	जप ले ना जप पर सत्य यही।	454
826.	ले नाम सहारा बहता जा।	454
827.	सत्य तू है कौन हूँ मैं,	455

प्रकाशकीय

असंख्य देव स्थलों से शोभायमान छोटी काशी के नाम से विख्यात भिवानी के महान साहित्य साधक कवि, लेखक, चिन्तक एवं अध्यात्मवेता श्री चन्द्र 'प्रभाकर' कोकड़ा को उनके सृजनात्मक लेखन के लिये 'हरियाणा गौरव सम्मान २००६' दिया गया । उनके चिन्तन का विस्तृत फलक उनकी भक्ति को बहुवर्णी बनाता है तथा समाज के लिये अधिकाधिक उपयोगिता प्रतिष्ठित करता है। उनका ईश प्रेम साकार, निराकार, रूप रंग, मत सम्प्रदाय, ऊँच–नीच, धर्म, भाषा और काल क्षेत्र आदि की सीमाओ से परे सर्वगाह्य है। इनकी कृति में आध्यात्मिक आडम्बर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लिप्सा, पांडित्य प्रदर्शन छन्द, शैली, विधान आदि से उपरत हो सरल चित्त हो कर अपने ईष्ट के प्रति समग्र समर्पण भाव की ही प्रतिष्ठापना की है। लेखनी के धनी स्वनाम धन्य चन्द्र 'प्रभाकर' जी की दीर्घायुष और निरोगता की कामना करते हुए पाठक वृन्द से आशा रखते है कि इस उत्तम साहित्य के मनन चिन्तन को अपनी दिनचर्या में धारण करेंगे। क्योंकि केवल मीठा मीठा कहने से मुंह मीठा नहीं होता है अपितु मीठा खाने से ही मुँह मीठा होता है। उनकी पुस्तको में खुली अनौपचारिक बातचीत में मानव के सामान्य व्यवहार तथा परमात्मा प्रेमी जीवन के विविध पक्षों से जुड़े हुए हर पक्ष का सविस्तार स्पष्टीकरण सौहार्दपूर्ण तथा रूचिकर शैली में किया गया है। जो प्रत्येक पाठक की मन की वीणा को गहरे तक

झंकृत करता है। उनकी रचनाओं में प्रभु स्मरण के अभ्यास से समाधि ा में लीन हेा जाने के प्रेरणा भाव भरे पड़े है। साहित्यकार एवं समालोचक डॉ० मनोज भारत के शब्दों में :–

''कवि के चिन्तन पर अनेक पूर्ववर्ती साधकों का प्रभाव अनेक स्थानों पर परिलक्षित होता है। उन्होंने सदाशयता से अपने जीवन परिचय में उन महान सन्तों का उल्लेख भी किया है। उदाहरणार्थ वे महात्मा बुद्ध की तरह से ही संसार को दुखों का घर मानते हैं। जैसे :–

जग से प्रीति करे दुख होई।

हरि बिन अंखियां जी भर रोई।।

यह संसार भले ही दुखों का घर हो या केवल एक स्वप्नजाल हो लेकिन कवि मन उद्विग्न नहीं है। वह तेा निरन्तर हरि रमण करते हुए कबीर की भांति अपनी अराधना की चरम स्थिति में पहुँच कर उस अनहद के संगीत में डूबे रहने में ही सच्चा सुख अनुभव करता है। समभाव युक्त एक उदाहरण दृष्टव्य है –

हरि हरि कहते बीते जीवन, कान सुने बजती अनहद धुन।
विछुड़ा जाता सारा मेला, जप ले उसको वह सांचा धन।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कृति पाठक मन को निश्चित रूप से शान्त रस से आप्लावित कर शीतलता प्रदान करेगी। स्वनामनानुरूप उनकी रचनाओं में चन्द्रमा के समान औषधेयगुन प्रदान करने बाली शीतलता तथा देदीप्यमान प्रभाकर के समान अज्ञान के अन्धकार को

नष्ट करने की क्षमता भी हैं उस सर्वशक्तिमान से प्रार्थना है कि उनके सृजन का अवदान इसी प्रकार से पाठकों को निरन्तर मिलता रहे।''

समीक्षक निदेशक डा० राधाकिशन चन्देल के शब्दो में ''कवि चन्द्र 'प्रभाकर' की काव्य यात्रा हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के कवियों की तरह सब समर्पण और स्वान्तः सुखाय के पथ पर अग्रसर होती हुई आगे बढ़ती है। यथा–

तुझ चरणों में पड़ा रहा हूँ मै, दास तुम्हारा ना ठुकराना।
हारा थका मुसाफिर हूँ मैं, न मेरा अब कोई ठिकाना।
करें अर्चना नीर गिरें यह, धूप दीप नैवेद्य नहीं है।
अंखियां झरती बस झरने दे, जीवन का संगीत यही है।

कवि का अपने आराध्य के प्रति समर्पण निम्न पंक्तियों में देखिये –

अर्चना कैसे करूँ मैं, पास में कुछ भी नहीं।
बन सकता बाती तेरी, भाग्य क्या मेरा नहीं?

प्रस्तुत भजन हमें कवियत्री महादेवी की याद दिलाता है जब वे गीत में कहती हैं–

क्या पूजा क्या अर्चन रे
उस असीम का लघुतम मन्दिर
कैसा मानस मन रे...

भक्ति काल के कवि रसखान की तरह ही भगवान श्री कष्ण

से निवेदन करता है–

वंशी वजैया रास रचैया, चाह रहा तेरी मैं छैंया।
मेरे सर्जक मुझे न भूलो, थामो प्रभु जी मेरी बहियां।

कवि चन्द्र 'प्रभाकर' हिन्दी साहित्य को श्रेष्ठ रचनाएँ प्रदान कर उसके भण्डार की श्री वृद्धि करेंगे ऐसी मेरी शुभ कामना है।'' 'समर्पण' कृति का स्वागत करते हुए उस सर्वशक्तिमान से प्रार्थना है कि सृजन का अवदान पाठको को निरन्तर मिलता रहे। पुस्तक में पूर्व प्रकाशित अर्चना, रामकह, जपहरि, सांस सांस में, हरि भजन, बाट निहारूँ, नयन बसो, नयना बरसे, हरि बोलो, प्यासी अंखियां, हरि ओम जपो, जप ले मनुआ के भजनों का विशेष परिशिष्ट जोड़ कर इसकी उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है। भक्ति रस के काव्य जगत में उनका नाम सूर्य की भांति चमके यही मेरी कामना है। वस्तुतः श्री चन्द्र 'प्रभाकर' एक निष्काम साधक और भक्ति रसास्वादक हैं।

डा० महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'
कवि/साहित्यकार

1

ले चल मेरे नाविक मुझको, दिये भुलावा धीरे धीरे।
जग की रीति न कुछ भी जानूं, नयना रोवें तुमको टेरे।
स्वप्निल दुनिया दर्द बिखेरा, छिपा कहाँ न जाने सुबेरा।
जख्म लगे किसको दिखलाऊँ, चाह रहा मैं प्यार तुम्हारा।

पथ दूभर अनजानी गलियां, चैन न आये छिपो न छलिया।
मेरे प्राण पुकारे तुमको, दे दे मुझको अपनी छैंया।
छाया है सब ओर अंधेरा, कह तो दे यह तू है मेरा।
बरसे अंखियाँ चाह प्यार की, चरण पडू. यह जीवन तेरा।

मन्द बुद्धि हूँ ज्ञान तुम्ही दो, मुझे बना लो अपना सेवक।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, क्यों रोता मैं तेरा बालक।
मेरे नयनों में बस जाओ, सारे मेरे ताप मिटाओ।
मर्जी तेरी जहाँ ले चलो, पर मुझसे ना नयन चुराओ।

2

चैतन्यघन आनन्दघन, कैसे रिझाऊँ तुम कहो।
जो नीर बहते नयन से, वे कह रहे दिल में रहो।
दृष्टा जगत के देखते, पर कुछ न कहते तड़फते।
ऐसी क्या दुनिया तेरी, सुपने यहाँ पर मचलते।

तुम ले चलो मर्जी जहाँ, पर प्यार तुम देना सदा।
बालक तुम्हारे अबल हैं, चाहूँ तेरा संबल सदा।
दरिया तुम्हारा नाचते, जायें कहाँ ना जानते।
सुमरण करे तेरा सदा, तुम साथ हो यह मानते।

छवि हो तुम्हारी नयन में, कितनी रातें काली हो।
डर ना लगे रूला न अब, जीवन के तुम माली हो।
चैतन्यघन हो तुम सदा, जिसने भी तुमको है जपा।
सब टूट जाते भ्रम यहाँ, हरि की सदा मिलती कृपा।

3

हरि हरि कहें बहें यह नयना, संग मेरा तुम कभी न तजना।
करूणासागर दास तुम्हारा, प्यार सदा तुम देते रहना।
सूख गया जिस डाली का रस, उसमें फूल कभी ना खिलता।
डाली क्या मुरझाये बगिया, कृपा होय उसमें रस झरता।

दुनिया रंग बदलती हरपल, ना जाने होवेगा क्या कल?
लिये भविष्य की चिन्ता फिरते, अंखियों से गिरता रहता जल।
दर्द लिये हम दिल में चलते, काटे कटती है ना रैना।
अपना कौन पराया जग में, सारा जीवन है इक सुपना।

स्वागत कैसे करूँ तुम्हारा, सूखा दिल ले कर मैं हारा।
मैं हूँ अबल शक्ति के दाता, चाहूँ तेरा सदा सहारा।
बसो नयन में प्रीति जगा दो, तृष्णा सारी दूर भगा दो।
चल चल गिरता बहते नयना, शरण तुम्हारी प्यार हमें दो।

4

हरी हरी तुझे जपे हम, चाह क्या ले फिर रहे हम।
स्वप्निल सारी है दुनिया, घूमते बैचेन हो हम।
नीर नयनों से ढुलकते, खोजते हम तुझे फिरते।
फंस जगत जंजाल में हम, भूल तुमको हम बिलखते।

नाथ हम तुमको मनाये, चाह सुपनों से न जाये।
ज्योति हरि जलती रहे नित, अश्रु नयनों के चढ़ाये।
दास मैं हूँ हरि तुम्हारा, चाहूँ मैं तेरी छैंया।
हरि मुझे ना भूल जाना, पडू. तेरे नाथ पैंया।

जगत रचैया तुम पालक, प्यार मिले तेरा बालक।
घूमता अनजान गलियाँ, करो कृपा पहुँचू तुझ तक।
नाव कर दे पार मेरी, सुन ले खेवट कन्हैया।
कुछ सुना दे गीत प्यारे, ढले संध्या देख अंखिया।

5

हरि हरि भज मन आये चैना, टूटें भ्रम किससे क्या कहना।
गिरती उठती लहर यहाँ पर, हरि हरि भज हरि में ही बहना।
दिल का दर्द दिखावे किसको, हरि को जप देखे वह सबको।
बहते आंसू उसे चढ़ा दे, जपता जा ना छोड़ हरी को।

वह ही अपना भाग्य विधाता, कठपुतली सा हमें नचाता।
इन सांसों का वह ही मालिक, जोड़ो मन हरि से ही नाता।
दुख के बादल फटें न उस बिन, सूना सूना लागे हरि बिन।
झिलमिल करती सारी दुनिया, पकड़ उसे बह ले जग में मन।

आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में हमें नचावे।
डोरी हाथ उसी के पगले, जब चाहे तब वह ले जावे।
हरि को तज भागे कातर बन, मृगमरीचिका में ना पड़ मन।
दुनिया स्वप्निल रंग बदलती, हरि जप सुमरण कर बह ले मन।

6

किसे कहूँ मैं अपना साथी, इस जग में मैं फिरूँ उदासी।
पत्थर दिल तेरा क्यों इतना, बरसे नयना क्यों मैं प्यासी?
दीखे ना तू छिपा कहाँ है, दिल मेरा तो सदा जला है।
कैसे दर्द दिखाऊँ अपना, विनय करूँ दे पता कहाँ है?

इस जीवन के तुम ही मालिक, सांसे हरपल तुमको भजती।
नयन देखें राह तुम्हारी, मिलो नहीं अंखियाँ यह रोती।
मुझे पिला दे इतनी मदिरा, जग के भूलूँ सभी नजारे।
मेरे नयनों में बस जाओ, करूँ समर्पण तारे मारे।

प्यास मिटा दे मैं हूँ प्यासा, सूनी डगर तुझी से आशा।
चरणों में मै पड़ा तुम्हारे, अब ना दे तू मुझे निराशा।
जनम मरण बन्धन सब तेरा, दिल रोये प्रभु करो सुबेरा।
अपना प्यार मुझे तुम दे दो, खिले फूल जो प्रभु है तेरा।

7

पी रटो मन पी रटो मन, बाजती सब ओर पी धुन।
न किनारा कोई भी मन, पी रटो बहते रहो मन।
नाचता सागर लहर तू, मन करो सुमरण उसी का।
कौन तू मर्जी उसी की, देखो अन्तस वह मन का।

छोड़ मैं सब ओर छलिया, तेरी रोती यह अंखियां।
साथ तेरे पी रटो मन, यह बदलती रंग दुनिया।
दन्श जग के जब सताये, पी न बिन कोई लुभाये।
पी रटो मन शान्ति आये, दीप तम में वह जलाये।

आदि वह ही अन्त वह ही, कुछ पलों का खेल सारा।
छोड़ नौका बहो उसमें, जाती ले उसकी धारा।
कितने सुपने संजो ले, पी बिना ना चैन आये।
सुख दुखो की हेाली जलती, धन्य जो पी को मनाये।

8

हरि सुमरण कर मोह मिटेगा, मन तू समझ नहीं क्यों पाता।
टूटे सभी व्यर्थ से नाता, सोच सोच तू पागल होता।
चिन्ता उपजे जितना सोचे, मोह अज्ञान सब को हर्ता।
जप हरि सदा साथ वह तेरे, तृष्णा को तज हरि है भर्ता।

जप हरि छूटे सब चिन्ताएँ, नैया तेरी पार लगाता।
चिन्ता छोड़ जपो मन हरि को, ज्ञान ज्योति को वही जलाता।
कितनी लहरें दौड़ रही है, गिरती उठती करें तमाशा।
जपता जा बस में तेरे क्या, करता पूरी वह ही आशा।

स्वप्निल दुनिया भूल गया तू, अपना जोड़ हरी से नाता।
पल दो पल का रैन बसेरा, धन्य जाम हरि का पी बहता।
करो समर्पित निज को जी लो, मर्जी उसकी वैसे रह लो।
विनय करो बल मांग हरी से, राजी रहे शरण में रख लो।

तप है यही करो ना शिकवा, उसकी मर्जी में मन हो जा।
दास उसी के चलती उसकी, मन हरि के चरणों में पड़ जा।
काली छाया यहां डरावे, मांग सदा मन हरि का साया।
ज्ञान ध्यान सबका मालिक वह, जग में काहे तू भरमाया।

9

बहते नयनों से आंसू है, तुम लाज राखना हरि मेरी।
मालिक तू कौन यहाँ पर मैं, नयनों में चाहूँ छवि तेरी।
तेरी यादों में अमृत है, ना भूले हरि हम जीवन में।
बहते रहते आंसू मेरे, पाये तुमको इस जीवन में।

हरि हरि गा तुझे मनाये हम, बरसे मेरे नयना रिमझिम।
हरि प्यार सदा अपना देना, बिन कृपा नहीं चल पाये हम।
तेरा ही नाम सदा प्यारा, जीवन का तू ही आधारा।
मृगतृष्णा में जो भी उलझा, जीवन उसका होता खारा।

हरि रूठ नहीं जाना मुझसे, बस जाओ मेरे नयनों में।
तुम बिन रोती रहती अंखियाँ, ना छोड़ हमें मझधारे में।
ले चल नाविक नैया मेरी, डर लागे इस अंधियारे में।
मेरे दिल में तुम सदा रहो, दे प्यार झुका सिर चरणों में।

10

तेरा विरह हुआ मैं पागल, नयना बरसे जैसे सावन।
अपनी बन्शी मुझे सुना दे, नाचूं गाऊँ सुन बन्शी धुन।
अपरंपार तेरी लीला है, बरस रही मेरी अंखियां है।
अपना प्यार मुझे तू दे जा, कहाँ छिपा बैठा छलिया है।

तेरी मर्जी से है आना, बना हुआ तू क्यों बेगाना।
प्यासे प्राण पुकारें तुमको, देख हमें ले बहते नयना।
तुम बिन चैन न आये दिल को, खोजूं कहाँ बता दो हमको।
कण कण पर है राज्य तुम्हारा, चाह प्यार की दे दो हमको।

बुद्धि दाता ज्ञान प्रदाता, बन्धु मित्र तुम पिता हो माता।
कैसे पूजा करूँ तुम्हारी, नीर नयन से मेरे आता।
हरि हरि धुन गूंजे कानों में, बस जाओ मेरे नयनों में।
जग के दुखड़े नहीं सतावे, ध्यान नहीं टूटे तुम संग में।

11

सोंचता है मन यहाँ क्या, जान रहना ना यहाँ है।
मन हुआ बैचेन तू क्यों, जप हरी का यह जहाँ है।
जप हरी वह शान्ति सागर, व्यर्थ की चिन्ता मिटेगी।
लहर बन बह दरिया तेरा, समझ से मुक्ति मिलेगी।

जी रहे निज चाह में सब, ले विवशता रो रहे सब।
क्या शिकवा किससे करना, जप उसे वह साथ है रब।
आदि वह ही अन्त वह ही, सत्य वह जानो सदा है।
कुछ पलों का खेल यह है, ना कभी होता जुदा है।

हरि जपो जपते रहो मन, वह ही मिटाता है चुभन।
नाम उसका जान सांचा, बन नीर यह होते सुमन।
प्रीति मन हरि से बढ़ा ले, देख मन सब ओर छाया।
नाम जप भय सारे मिटते, संग रहता उसका साया।

12

दिल लगाते फिर रहे हैं, नीर नयनों से बहें हैं।
दास तेरा मैं हरी हूँ, प्यार को हम चाहते हैं।
सुहानी दुनिया तुम्हारी, नयनों से आता पानी।
तुम बिना अच्छा न लगता, कर रहे प्रतीक्षा दानी।

माना स्वप्निल है दुनिया, न कटे पल आ जा छलिया।
देख ले नजरें उठाकर, बहती हैं मेरी अंखियां।
दर्द कितना है जगत में, कुछ न आता है समझ में।
तू पिला दे मुझे इतनी, डूबूँ मैं तेरे रस में।

ना हमें मिलता किनारा, बहती है तेरी धारा।
बिलखते हम भूल तुमको, आंख से जल बहे खारा।
द्वार पर तेरे खड़े हैं, चाहते कृपा तुम्हारी।
अर्चना के फूल सूखे, पर सदा से मैं तुम्हारी।

13

चला नहीं जाता प्रभु मैं, मांगता तेरा सहारा।
जी रहा अज्ञान में मैं, बह रही है अश्रु धारा।
मेरे जीवन के सर्जक, नाथ मैं बालक तुम्हारा।
ज्ञान का दीपक जला दो, चल यहाँ मैं नाथ हारा।

हरी हरी जपें सदा हम, पा रहे दुख भूल तुमको।
सांस तेरा गीत गाये, दो सहारा मिलो हमको।
सृष्टि के तुम हो रचियता, झरती हैं मेरी अंखियां।
देख लो नयना हमारे, प्यार बिना सूखे बगिया।

नाचता सागर लहर क्या, पूछती तू छिप गया क्या?
दर्द मुझे इतना देकर, आ रहा तुमको मजा क्या?
प्यार दे इतना हमें प्रभु, साथ लागे चल रहा है।
इस अंधेरी रात में हरि, देख आंसू बह रहा है।

14

हरि मिलो जल नयन बहता, जानो घट की क्या कहता?
दास मैं हूँ हरि तुम्हारा, लाज राखो चरण पड़ता।
हरि जपें तुम साथ देना, भीगे यह मेरे नयना।
दिल में बस जाओ मेरे, ना विलग हो यही कहना।

दर्द तूने जो दिया है, अब सहा न जाता मुझसे।
हरि मैं बालक तुम्हारा, चाहता न रूठो मुझसे।
दुनिया तेरी रंग कितने, तुझे खोजूँ पर न दीखे।
प्यार दे दे मुझे अपना, क्यों नहीं तू मुझे दीखे।

नयन मेरे बरसते हैं, पास में कुछ भी नहीं है।
मैं रिझाऊँ तुझे कैसे, ज्ञान भी इतना नहीं हैं।
झोली खाली पर आया, ना सहारा और कोई।
द्वार तेरे मैं पड़ा हूँ, चाह उठूं न आँख रोई।

15

चल निभा दे तू यहाँ पर, फिर न जायें हम कहाँ पर।
स्वप्न सा संसार सारा, बरसे यह अंखियाँ झर झर।
फानी सब कुछ ना दुनिया, पोंछ आंसू दे खुशी तू।
प्यार के गा गीत मन तू, रंग भर ले प्यार के तू।

उठ यहाँ गिरती लहर है, ना किसे कल की खबर है।
कितने सुपने संजोते, आँख रोती टूटते है।
प्यार को दिल में बसा ले, कुछ भी अपना न यहाँ है।
घूमते मैं ले यहाँ हम, तन भी अपना जा रहा है।

करो हरि का ध्यान बह ले, बीत जायेगी उमरिया।
जमाना यह रंग बदले, डर मिटें जप ले संवरिया।
जप हरि नहीं भूल उसको, संग तेरे वह सदा है।
लहर तू है नाच उसका, सब जगह वह तू कहाँ है?

16

बंशी बाजे लीन होऊँ, ध्यान तेरे को तरसता।
इसमें भीगूँ मैं सारा, नीर यह रिमझिम बरसता।
आ मिलो मोहन पुकारूँ, तुम बिना यह रात फीकी।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, प्यार दे दे सुनो मन की।

ढूंढते तुमको फिरे हम, पा नहीं तुमको सके हम।
मिट यहाँ जाते जगत में, मैं नहीं ना कह सके हम।
सत्य मैं ना खेल तेरा, आस क्या ले चल रहे हैं।
स्वप्न सा संसार सारा, मृग तृष्णा में फंसे हैं।

आँख भीगी लाज रखना, एक तेरा ही सहारा।
प्यार पाने को तड़फता, जानो बालक तुम्हारा।
नयनन में बस जा मेरे, रात काली हो सुबेरा।
खिलती मुरझाई बगिया, गीत गाती पवन तेरा।

17

चलते चलते मिट जाना है, मिटते मिटते हरि पाना है।
फूल खिलेंगे इस पथ पर मन, दुख मिटते मन लय होना है।
स्वप्निल दुनिया पकड़े क्या तू, आज यहाँ कल नहीं यहाँ तू।
नयनों से गंगा बहती है, दर्द लिये फिरता रहता तू।

किस किससे है यहाँ शिकायत, घूमे सभी वासना निज ले।
साथ निभा दे मन हँस हँस कर, मन में दीप जला हरि का ले।
जप ले मन का सुमन खिलेगा, नहीं डरावेगा भय हमको।
दो दिन का यह रैन बसेरा, खेल यहाँ जाना हरि घर को।

हरि हरि जपो उसी की दुनिया, कौन यहाँ तू सब वह छलिया।
सांच कहूँ मन चैन मिलेगा, आंसू से भीगी यह अंखियां।
गिरते आंसू याद करो हरि, ठौर वही है इस दुनिया में।
बहो लहर बन इस दरिया में, लिये जा रहा है निज घर में।

18

छोड़ कहाँ मैं तुमको जाऊँ, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।
मात पिता तुम सब कुछ मेरे, नीर नयन से मेरे आता।
पूजें तुझे मनायें तुमको, पीड़ा अपनी तुझे दिखायें।
दुख भंजक है नाम तुम्हारा, दुख हर लो जिय भर भर आये।

अनजाना पथ घिरा अंधेरा, दीप जला दो जीवन तेरा।
मेरी नैया के तुम खेवट, प्यासे प्राण कहें तू मेरा।
हरि हरि हरि हम तुझे मनायें, जीवन अपना सफल बनाये।
हिचकोले खाती नौका को, विनय करूँ तू पार लगाये।

इस जीवन का दर्द यही है, जल में रह ना प्यास बुझी है।
कहाँ छिपा तू प्रियतम मेरा, आ कुछ पल फिर यहाँ नहीं है।
हरि हरि आओ रास रचाओ, खुशियां दे गम दूर भगाओ।
तेरी दुनिया तू ही जाने, मन मन्दिर से कभी न जाओ।

19

मैं कौन तू है कौन, आये न तुम बिन चैन।
अंखियों से नीर बहें, लगता जगत यह मौन।
एक तू सहारा है, ना और किनारा है।
दुख के बादल छंटते, बस नाम सहारा है।

गाते तेरे नगमें, ले दर्द यहाँ बहते।
अपना न पराया कुछ, सुन दिल की कुछ कहते।
स्वीकार करो पूजा, दिल मेरा है रूखा।
बालक पर तेरा हूँ, दे प्यार न रख सूखा।

प्रभु जपे सदा तुमको, ना भटके अब हम तो।
तुम लाज रखो मेरी, संध्या ढलती अब तो।
आ जा आ जा प्रियतम, यह प्राण पुकार रहे।
चरणों में शीश झुका, तुम बिन अब हम न रहे।

20

हरि तुझे मनाये हम हरपल, आंसू बरसें मेरे रिमझिम।
तुम कहाँ छिप गये हो छलिया, अब चला न जाता ना है दम।
चरणों में रखकर शीश मुझे, रो लेने दो मेरे भगवन।
पतवार तुम्हारे हाथों में, ना रोक सकूँ यह बहे नयन।

अपरम्पार तुम्हारी लीला, ना जान सका कोई जग में।
आंखों में आंसू दर्द लिये, मैं भटक रहा हूँ इस जग में।
हरि चैन मिले बन्शी बाजे, खिल जाये मुरझाई बगिया।
बहते आंसू खोजें तुमको, न भूल मुझे तू मेरा जिया।

दे प्यार चाह इस जीवन की, अनजानी सारी है गलियां।
सब ज्ञान ध्यान का मालिक तू, तू दे विवेक हरषे जीया।
बीते घड़ियां हरि हरि कहते, मुझमे कुछ दम ना ओ छलिया।
ले चल मर्जी जैसी तेरी, पर बसो नयन ना जिया जला।

21

हरि नीर मेरे बहते, कुछ कह नहीं सकते।
नयन में तुम ही बसते, विनय मेरी सुनते।
खाई जगत में ठोकर, अंखियां बही झर झर।
किसको दिखायें यह दिल, सुनता न तू रहवर।

यह पार कर दे नौका, तेरा बस सहारा।
बालक हरी तुम्हारा, गिरता चरण हारा।
जग के रचैया पालक, मुझको बना सेवक।
न हो कोई भी शिकवा, गीत पहुँचे तुम तक।

कर्मों में हरि उलझ कर, न हो कभी भटकना।
बह रहे मेरे नयना, मुझे अबल समझना।
मैं हूँ शरण तुम्हारी, आ दिल में मुरारी।
ना ज्ञान कोई मुझको, दीपक जला हारी।

22

दिन आते और यहाँ जाते, नयनों में आंसू आते है।
ना पूछ रहा हमको कोई, क्या चाह लिये हम जीते हैं।
चलते जाना यह डगर बड़ी, कितनी ही बरसें नयन झड़ी।
अपना तू दर्द दिखाये क्या, पीड़ा की चादर यहाँ पड़ी।

आंखों में सबके झांक यहाँ, दे सके खुशी तू बांट यहाँ।
दो दिन का स्वप्निल मेला है, हरि जप ले आवे चैन यहाँ।
अपना न कोई पराया है, मनुआ जग में भरमाया है।
प्यासे प्राणों की प्यास हरी, जप ले हरि क्यों अकुलाया है।

न कोई किनारा अंधियारा, लगता जीवन में सब हारा।
ऐसे में भी हरि दिल में हेा, डर लगे न बहता हरि धारा।
हरि प्यार मांग हरि में जी ले, हरि छोड़ मुझे न सब ले ले।
तेरे चरणों में सिर रखता, ना और परीक्षा अब तू ले।

23

जिन्दगी में कौन अपना, चल रहा है एक सुपना।
मिल यहाँ सारे बिछुड़ते, सत्य हरि ना छोड़ जपना।
आदि वह ही अन्त वह ही, सत्य वह सब ओर छाया।
पकड़े दामन जो उसका, तप्त पथ पर मिले छाया।

हरि जपो जपते रहो मन, प्रीति मन उससे बढ़ा लो।
बीतेगी सारी घड़ियां, प्राण प्यासे याद कर लो।
मन हरि जपो स्नान कर ले, बह रही बस एक धारा।
दुख हरे शीतल हो काया, जल रहा संसार सारा।

हरि जपो जपते रहो मन, और क्या सांचा यहाँ धन।
जो यहाँ है आज अपना, पल में बदले रंग यह मन।
बन लहर बह ले यहाँ मन, तन उसका अपना क्या मन।
नयन में उसको बसा ले, खेल कुछ पल का यहाँ मन।

24

हरि जपो जाने नहीं कुछ, सफर कहाँ यह जायेगा?
पी ले मन मदिरा हरि की, पथ में ना दुख पायेगा।
डगर लम्बी है जगत की, काँटे यहाँ बिखरे बहुत।
पकड़ ले मन हरी दामन, तू स्वप्न है उसका जगत।

जप हरि बरसेंगे आंसू, वह ले चले हरि पास में।
जग से क्या रखता आशा, मन हरि बसा ले नयन में।
हरि जपो जपते रहो मन, यहाँ तेरे बस कुछ नहीं।
नाव अपनी छोड़ दे तू, हरि ही संभाले सब वही।

जब घिरे दुख की घटाये, कौन तुझको पथ दिखाये?
छोड़ जाते संगी साथी, हरि बिना ना चैन आये।
जप हरि खेवट तुम्हारा, कौन जीता कौन हारा।
मैं हटा बह ले लहर बन, कुछ पलों का खेल सारा।

25

हरि ही जपता हरि को रहता, बना अबल आंसू ढलकाता।
ब्रह्म स्वयं और सृष्टि रचियता, बन कोल्हू का बैल घूमता।
क्या जीवन का चक्र चल रहा, घूम रहा खुशियां लेने को।
सुख का सागर कहलाता है, फिर भी पकड़े क्षण भंगुर को।

हरि का ही सब ओर नजारा, फिर भी नीर बहाये खारा।
कण कण में वह बसा हुआ है, अलग अलग दुख भोगे सारा।
मन हरि जप हरि को जपता जा, हरि ही अपना नाच दिखाये।
देखे स्वयं नाचता हरि ही, पागल मन क्यों समझ न पाये।

प्राण न जिसमें लेवे सुपने, ऐसा चक्र चलाया मन ने।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, हरि जप हरि पा टूटें सुपने।
हरि हरि जपो यहाँ सब हरि है, सांसे कुछ पल घूम रही है।
कर हरि पूजा हरि को पा ले, हरि बिन कुछ भी यहाँ नहीं है।

26

चल चल गिरे बैचेन दिल, न पा सके तुमको यह गम।
शाम ढलती जा रही है, तुम देख लो आंख यह नम।
किसको जगत में हम कहें, कौन अपना है पराया।
सब पलटते रंग अपना, इन नयन में नीर आया।

हरि कृपा की चाह हरपल, देख लो बालक तुम्हारे।
थाम लो बैयां हमारी, नीर बहें तेरे द्वारे।
सृष्टि सारी के रचैया, मांगू मैं तुमसे छैया।
प्यार तेरा चाहता मैं, प्यासी दर्शन की अंखियां।

तप्त पथ बैचेन दिल, गिरता प्रभु नयनों से जल।
तुझे मनाऊँ कैसे मैं, हरी कृपा हो आऊँ चल।
करती है मेरी अंखियां, पल को ना बिसराऊँ मैं।
मन को समझाऊँ कैसे, ज्ञान दे तुझे पाऊँ मैं।

27

बह रही अंखियां न आये, दिल बता कैसे लगाये?
स्वप्न सा मिटता सभी कुछ, दिल तड़फता प्यार पाये।
नयन आंसू हरि पुकारूँ, ना सहारा और कोई।
डूबता ही जा रहा हूँ, तुम बिना देखे न कोई।

थक कर टूटे हैं पल पल, चल रहे दीखे न मन्जिल।
पार कर नैया हमारी, बालक तुम्हारे हम अबल।
दास तेरा मैं भटकता, प्यार पाने को तड़फता।
लाज राखो हरि हमारी, तुम सुनो, न कोई सुनता।

न छिपो तुम प्यारे छलिया, डूबूँ मैं तुझ में रसिया।
कितने जन्मों से भटकूँ, करो कृपा बहती अंखियां।
हरी जपे हरि को गायें, दिल सदा तुझ में लगाये।
नयन में हरि बसो मेरे, चाह दिल की तू न जाये।

28

आज तो जी लो क्या कल हो, यहाँ जानते कुछ नहीं।
पी लो मन हरि की सुधा को, इसमें जो ना है कही।
डोर हरी के हाथ में है, बना कठपुतली नाचे।
कौन तू जाने न कुछ भी, मैं हटा न आंख मीचे।

तू यहाँ किस किसको पकड़े, कोई ना हाथ आये।
वासना ले निज की फिरते, लहरें आ लौट जायें।
चल अकेला नहीं झमेला, जो मिले उसे निभा दे।
कुछ ही पल का खेल सारा, मृगतृष्णाएँ हटा दे।

हरी जपो जपते रहो मन, सत्य वह सांचा है धन।
आदि अन्त वह तो सदा है, चक्र उसका घूमता मन।
हरि बसा नयनों में मन तू, जायेंगी भीग अंखियाँ।
ले चलेगी पास हरी के, मिले तुमको फिर छलिया।

29

पूछता मैं कहाँ मेरा घर, बरसे अंखियां पता ना डगर।
पता बता दो ज्ञान जगा दो, अंधियारा है दे प्रकाश कर।
हरि हम तुझे मनाये कैसे, विधि ना जाने आंसू बहते।
कृपा सदा हरि हम पर रखना, चरण तुम्हारे हरि हम पड़ते।

सृष्टि रचैया जग के पालक, अंखियाँ मेरी बरसे झर झर।
प्यार मिले खिल जाये उपवन, सुन पाऊँ मैं बन्शी के स्वर।
तुम बिन बरसे मेरी अंखियाँ, मुझसे छल क्यों करता छलिया।
बालक तेरा नाथ अबल मैं, जग की ना जानूँ मैं गलियां।

हरि हरि जपूँ तुझे ही पूजूँ, चाहूँ अपने नयन बसा लूँ।
छोड़ मुझे तुम कभी न जाओ, प्यार तुम्हारा ले मैं जी लूँ।
हरि सब लीला चले तुम्हारी, प्यास जाये मिट पिला पानी।
ना कुछ भी है मेरे बस में, नयन बहाते हैं बस पानी।

30

दो पल के सुख को पाने को, इस जग में हम घूम रहे हैं।
नहीं किनारा कोई मिलता, इन नयनों से नीर बहे हैं।
हरि भज हरि भज मन ले तू रस, सारा जग यह बहता पानी।
यहाँ बदलते रंग अनेंको, मत पकड़ो हरि ही है दानी।

हरि सुख जग दुख चिन्तन कर ले, जैसा चाहे वैसे जी ले।
हरि शाश्वत जग में क्या पकड़े, जितना चिन्तन जग का रो ले।
लिपटेगा जग से उतना दुख, हरि को जप ले वह ही है सुख।
आदि अन्त वह सदा सत्य है, बिन उसके ना यहाँ कहीं सुख।

धूप छांव का खेल यहाँ है, आज यहाँ कल जान कहाँ है?
अपने जब बेगाने लगते, सोच सोच मन सत्य कहाँ है।
हरि चिन्तन कर छिपा हृदय में, देख रहा यह जग में सुपने।
जपे स्वयं जो उसको लख ले, मिटे है दुख जपा है जिसने।

हरि हरि जप बह लहर बना तू, ले जाये सागर की मर्जी।
ज्ञान ध्यान जीवन सब उसका, छोड़ सभी क्या तेरी मर्जी।
हरि जप हरि जप प्रीति बढ़ा ले, जगत उसी का शीश झुका ले।
अपना क्या सब हरि की लीला, मैं को तज जप नयन बसा ले।

31

मन हरि हरि गा तज सब आशा, ले जाती सबको हरि धारा।
लहरों से बन मिटे सुपन सब, आंखों से बहती है धारा।
लहर बनी सागर ही जाने, मर्जी ना कोई भी जाने।
मैं को छोड़ लहर सा बहता, हरि के वह होते दीवाने।

हरि हरि जपो मिले सुख इसमें, डर लागे ना फिर इस जग में।
जप दिल में वह ज्ञान जगाये, लगे साथ वह उठते नगमें।
किसको पकड़े किसको छोड़े, यहाँ भागते सब ही जाये।
हरि की लीला समझ यहाँ सब, क्यों अपना तू जिया दुखाये।

हरि जप हरि जप स्वप्निल दुनिया, चैन मिलेगा जप ले छलिया।
आदि अन्त वह सदा सत्य है, उस बिन रोती है यह अंखियां।
दुख मिटते संताप हरेगा, सोया छलिया तुझे मिलेगा।
पकड़ उसी की मन तू छाया, हरि हरि जप पथ दन्श मिटेगा।

32

प्यासा मन तड़फे है हरि को, कैसे जीये उस बिन हम तो।
सूखें नहीं नयन के आंसूं, थके यहाँ हम गिरते अब तो।
क्योंं यह जीवन सांसे लेता, ढूंढू तुझे पता ना चलता।
ज्ञानी करे ज्ञान की बातें, दिल जलता यह हरपल रोता।

अज्ञानी हम मन्दबुद्धि हैं, बालक पर तेरे हैं हम तो।
पार लगा दो नैया मेरी, केवट बन कर आओ अब तो।
दास तेरा शरण तुम्हारी, तुम ना हरि मुझको ठुकराओ।
धूप दीप नैवैद्य नहीं है, कुछ ना जानूं प्यार दिखाओ।

बिखरा यहाँ जगत में क्रन्दन, पाप पुण्य कर्मों के बन्धन।
समझ न पाऊँ तेरी लीला, करो कृपा तुम हो सुखनन्दन।
ज्ञानी ज्ञान तुझी से पायें, तुम ना रूठो तुझे मनाये।
इतनी विनती सुनो हमारी, सदा नयन मेरे बस जाये।

33

हरि जपो जपते ही रहो मन, नौका तेरी पार लगाये।
कौन देखे बहें जो आंसू, प्यास जान बस हरी बुझाये।
दिल जले जलता ही रहेगा, कोई भी कुछ नहीं कहेगा।
अपनी अपनी नियति लिये सब, जाने ना क्या भाग्य करेगा।

ढलती है यह संध्या अब तो, याद नहीं क्यों हरि को करता।
बतला तेरे हाथों क्या है, खेल कुछ समय का तू करता।
चल रहा संसार यह सारा, टूटे सुपने मैं तो हारा।
क्या सुनाऊँ अपनी कहानी, छोड़ो सब बन हरी दुलारा।

ध्यान लगा ले मन तू हरि का, ले जायेगी तुझको धारा।
हरि बिन चैन न आये दिल को, बहा रहा क्यों आंसू खारा।
हरि जपो जपते ही रहो मन, हरि जप मन का सुमन खिला ले।
मिटते दुख बाजेगी बन्शी, नाचे काया शीश झुका ले।

34

जप ले मन तू ओम ओम को, इस जीवन का नहीं ठौर है।
बहता जा ले जाती धारा, जाने न क्या कोई छोर है।
ओम ओम जप नहीं यहाँ कुछ, स्वप्निल दुनिया मिटता है सब।
जप मन को बहला ले अपना, अंखियां रोये ढूंढे यह रब।

माया अपना चक्र चलाती, फंस उसमें रोवें दिन राती।
जपो ओम टूटें यह कड़ियां, पवन ओम संगीत सुनाती।
जन्म धरा पर हरि की लीला, लिये हुए सब अपनी पीड़ा।
दुखभंजक जप ओम यहाँ पर, कर स्वीकार देख सब क्रीड़ा।

ओम ओम जप वही सभी कुछ, कठपुतली हम नाच नचाये।
ज्ञान ध्यान सबका वह मालिक, जैसा चाहे सुरति जगाये।
जपो ओम मिल जाये सम्बल, गाती दशों दिखा उसकी धुन।
मन तू कौन एक है झौंका, प्यास मिटेगी उस बिन ना मन।

35

हरि हरि जप बरसेगी अंखियां, खिलती फिर मुरझाई बगिया।
हरि का जिसने नाम लिया है, डर न लगे मिल जाती छैया।
जग है यह इक बहती धारा, हरि बिन सब कुछ होता खारा।
दिल में दीप जले जब हरि का, मिटता तब सारा अंधियारा।

आये हम क्या लिये प्रयोजन, नाचें गायें फिर खो जाये।
हरि से प्रीति लगा ले मन तू, दन्श जगत के नहीं सताये।
हरि बिन रोती हैं यह अंखियां, निर्मोही पर प्यारा छलिया।
प्रीति बढ़ा ले पागल ना बन, पार करेगा तेरी नैया।

हरि हरि जपो उसी की दुनिया, तू है कौन नाचता छलिया।
ज्ञान ध्यान वह सबका मालिक, जपो उसे खेवे वह नैया।
सारी दुनिया है यह स्वप्निल, इसी स्वप्न में हरि से ले मिल।
दुःख मिटेंगे सारे तेरे, हृदय कमल जायेगा फिर खिल।

36

नयना तरसे तुमको मिल ले, इस जीवन की प्यास बुझा ले।
कहाँ छिपे तुम प्यारे छलिया, अंखियां बरसें चाहें पा ले।
अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढे तुमको पर मन मेरा।
पार लगा दो मेरी नैया, शरण तुम्हारी करो सुबेरा।

हरि हरि कहते बीते जीवन, इस जीवन के तुम ही हो धन।
यहाँ नचावे माया तेरी, अंखियां बरसे जैसे सावन।
दास तुम्हारा लाज राखना, ना भटकूं मैं इस मेले में।
प्रीति बढ़े हरि हरपल तुमसे, बसो सदा मेरे नयनों में।

जीवन तेरा बालक तेरे, तम हर लो पथ हमें दिखा दो।
तेरी सदा करें हम पूजा, अज्ञानी को ज्ञान तुम्ही दो।
नमन करो स्वीकार हमारा, चमन तुम्हारा मैं तो हारा।
निज चरणों में मुझे जगह दो, चाह यही मैं बनूं दुलारा।

37

कुछ पल का है मेल यहाँ पर, मिलकर यहाँ विछुड़ जाना है।
किस किस से तू वैर करेगा, जाता तन सब बह जाना है।
दिल से अपने वैर हटा लो, हरि हरि जप लो प्यार बढ़ा लो।
स्वप्निल दुनिया क्या तू पकड़े, हरि को अपने नयन बसा लो।

सारा जग अनजानी गलियाँ, पकड़ो मन तुम हरि की बैंया।
डर न लगेगा इस मेले में, पार लगावे तेरी नैया।
हरि हरि जप मन ज्ञान जगावे, टूटे भ्रम मन चैना आवे।
आये कहाँ से जायें कहाँ, धन्य हुए जो हरि को गावे।

बहता जा बन लहर यहाँ पर, सागर नाचे तुझे नचावे।
छोड़ो मैं सब हरि की लीला, अश्रु बहें हरि चरण चढ़ावे।
हरि हरि गा मन कटती रैना, कौन सुनेगा हरि बिन बैना।
कृपा मिले हरि बसे नयन में, बहता जाये फिर क्या कहना।

38

जाने न कहाँ जायें, न जाने यहाँ कुछ हम।
नयनों में हैं आंसू, हरि कृपा करो ना दम।
बालक तेरे स्वामी, सारे जग का दानी।
प्रभु प्यार मिले तेरा, अंखियां गेरे पानी।

अनजानी हैं गलियां, हरि पकड़ो तुम बैंया।
मैं अबल शक्तिदाता, चाहूँ तेरी छैंया।
दे प्यार मुझे अपना, कट जायेगी रैना।
नित प्रीति बढ़े तुमसे, बहावें नयन झरना।

हरि साथ सदा मेरे, मन गाये यह गाना।
पल भर भी ना भूलूँ, नयनों में हरि बसना।
बन लहर बहूँ हरि मैं, तू रहे रहूँ ना मैं।
स्वीकार करो पूजा, प्रभु दास तुम्हारा मैं।

39

शरण में आया तुम्हारी, प्यार दे दो तुम मुरारी।
इस जगत के तुम रचैया, तेरे बिन आंसू जारी।
कण्ठ प्यासा जल पिला दो, दुख जगत के सब मिटा दो।
नयन में तुम बसो मेरे, प्यार की मदिरा पिला दो।

नाम तेरा एक सांचा, मैं भटकता भूल तुमको।
तुम बिना ना चैन आये, दिल तड़फे पाये तुमको।
जिन्दगी कैसी पहेली, नाचे कठपुतली बनकर।
सब इशारे चलें तेरे, जानूँ न जाऊँ कहाँ पर।

हरि जपे जपते रहे हम, चाहें तेरा ही सम्बल।
अज्ञान के इस तिमिर से, पार करना हम अबल।
बन कर लहर बहते रहे, तू सदा दिल में रहे।
सुरति हो जब नाथ तुझ में, मैं मिटे तू ही रहे।

40

हरि तुमको दिन रात रटूँ मैं, प्यारे प्यारे गीत लिखूँ मैं।
अपनी कृपा बनाये रखना, अंखियाँ रोती तुझे लिखूँ मैं।
दुख भंजक तुम दुख को हर लो, आधि व्याधि कष्टों को हर लो।
बालक तेरा मुँह ना मोड़ो, बहते आंसू मेरे लख लो।

गीतों को तुझे सुनाये हम, दिल में उठती है जो पीड़ा।
अंखियाँ मेरी रिमझिम बरसे, स्वप्निल दुनिया क्या है क्रीड़ा?
वीणा रूठी स्वर ना बजते, कैसे अपना मन बहलाऊँ।
छिपे हुए तुम देखो सब कुछ, अंखियां रोवे तुझे न पाऊँ।

फैला जाल यहाँ माया का, मन होता पल पल में मैला।
पार लगा दे मेरी नौका, प्यार मुझे दे अपना छैला।
दास तेरा शरण तुम्हारी, नाथ अबल मैं, मुझमें ना दम।
सर्जक तुम सारी दुनिया के, बसो नयन में मिट जाये गम।

41

कौन अच्छा है बुरा है, कौन जो निर्णय करूँ मैं?
नाचता जैसे नचाये, तुम रहो दिल में जपूँ मैं।
तेरी मर्जी से आये, जाये ले तेरी मर्जी।
गिरते नयनों से आंसू, प्यार दे दो सुनो अर्जी।

तुम जगत के हो रचियता, नाचता ब्रह्माण्ड सारा।
खेल कुछ पल का यहाँ है, कौन जीता कौन हारा।
प्यार चाहें हरि तुम्हारा, चाहते शुभ ही कराये।
मैं अबल बस कुछ नहीं है, दर्द इतना अश्रु आये।

द्वार पर बैठे तुम्हारे, ताप से तू ही बचाये।
कैसे मैं तुझे रिझाऊँ, आंसू नयनों में आये।
ध्यान तेरा ही सदा हो, मैं नहीं तू ही सदा हो।
सब जग के भूलूँ मैं गम, चाहूँ न मुझसे खफा हो।

42

तारक मारक सब कुछ तू ही, याद तुझे कर अंखियां रोई।
पार लगा दे मेरी नौका, मैं हूँ अबल कहाँ तू सोई।
निशदिन अंखियां नीर बहाई, क्यों छिपे तुम कृष्ण कन्हाई।
बालक हूँ मैं नाथ तुम्हारा, मुझको राखो तुम शरणाई।

जीवन तेरा पालक मेरे, झर झर गिरते आंसू मेरे।
कहाँ छिप गये छोड़ मुझे तुम, निशदिन तड़फू सांझ सबेरे।
इस जीवन की आशा तुम ही, बाट निहारे अंखियां तेरी।
बन्शी की धुन मुझे सुना दे, जनम जनम से तेरी चेरी।

हरि हरि जपे तुझे ही खोजें, बहे नीर तुमको ना भूलें।
मेरे नयनों में बस जाओ, प्यार बढ़े हिय कमल फिर खिले।
नयन नीर थाली है खाली, फिर भी तुझे मनाऊँ माली।
मेरे सर्जक भूल न जाना, तुझ बिन कृपा लगे ना लाली।

43

बहता जा मन है ना मंजिल, सारी दुनिया करती झिलमिल।
हरि का मन पकड़ सहारा तू, ना दन्श सतायेंगे हरपल।
हरि जप बह लहर बना तू मन, दरिया ही है तेरा साहिल।
मर्जी उसकी नाचे जिवड़ा, उसके सम्मुख हम सभी अबल।

हरि हरि जप सुरति करो हरि से, सब ओर हरी ही है छाया।
ना लहर यहाँ कुछ पल नाचे, सागर सब ओर यहाँ छाया।
हरि हरि जप हरी बसा दिल में, हरि का सब ऋषि मुनि ध्यान करे।
अन्तस जब ज्योति जले हरि की, मैं मिटे लगे हरि खेल करे।

हरि हरि जप सब उसकी माया, आया कुछ पल तू खेल करे।
जायेगा ले तुझको हरि जब, ना पूछे चाहे नयन झरे।
हरि हरि जप मन जपता ही जा, बह जान उसी की यहाँ रजा।
हरि की मन हो जा शरणाई, मैं पकड़ पाता काहे सजा।

44

तुम उठा कर आंख देखो, दिल तुझे दिखला रहे।
नयन में आंसू हमारे, तुम बिना क्यों हम रहे।
दर्द तुमने दे दिया है, अब सहा जाता नहीं।
प्यार से तुम देख लो हरि, तुम बिना कुछ भी नहीं।

हरि जपते तेरी लीला, नाचता संसार है।
ऋषि मुनि करते हैं पूजा, तुम बिना ना सार है।
न किनारा कोई भी है, झिलमिलाता जगत है।
जो पकड़े तेरा दामन, छूटते भय साथ है।

डर लगे न काली रैना, तू यदि दिल में बसे।
हरि कृपा करना सदा तुम, चाह नयनों में बसे।
मेरी पूजा यह आंसू, और कुछ भी है नहीं।
तुम सदा ही प्यार देना, ले चलो मुझको कहीं।

45

कुछ पल हँसें घूमे यहाँ, फिर देखते कैसा जहाँ?
जिनको समझे अपना सब, मिटता निशा ना कुछ वहाँ।
हरि बिना ना चैन आये, नीर यह अंखियां बहाये।
स्वप्निल यह दुनिया सारी, मन हरी को क्यों भुलाये।

जपो हरि दुनिया उसी की, तू बन कठपुतली उसकी।
अश्रु बहते याद कर हरि, ज्ञान दे चलती उसी की।
हरि जपो जपते रहो मन, फिर ना सतायेगी चुभन।
मार्ग के कांटे सिमटते, मन तू बसा ले हरि नयन।

सत्य वह कुछ पल यहाँ है, जाने न जाना कहाँ है?
पकड़ो मन अंगुली हरि की, ले चले वह ही ठिकां है।
हरि मर्जी आयें जायें, मैं पकड़ नयना बहायें।
सौंप निज को उसके हाथों, ज्ञान दे जिय सुख को पायें।

46

मन हुआ है बाबरा, छिप गया तू सांवरा।
व्याकुल मन है मेरा, अबल हूँ चल चल गिरा।
लाज को रखना हरी, तुम जगत के रचैया।
घूमूं बालक तेरा, पकड़ो मेरी बैंया।

प्यार हरि तुम से बढ़े, नयन में तू समाये।
मृगतृष्णा में फंसकर, नीर अंखियाँ बहाये।
बहते मेरे आंसू, मुँह नहीं प्रभु मोड़ना।
चाह सुनूँ बन्शी स्वर, देख दिल का तड़फना।

दर्द जग में बिखेरा, इन्तजा हो सुबेरा।
नयन से बहें आंसू, दूर कर दो अंधेरा।
कृपा को चाहता हूँ, भटकता अज्ञान में।
दास मैं माफ करना, नीर बहते आंख में।

47

बस यहाँ कुछ भी नहीं है, आ गये जायें कहीं पर।
नाचें कठपुतली बन कर, जान पाते हैं नहीं पर।
हरि बसा ले मन नयन में, भूल कर जग की शिकायत।
जगत यह चलता रहेगा, मत उलझ रख हरी चाहत।

जप हरि सबका वह मालिक, बस क्या जो होता गाफिल।
मैं चढ़ा दे हरि चरण में, जाये ले तुझको साहिल।
हरि जपो जपते रहो मन, छूट जाये ना सुरतिया।
दर्द बहता है जगत में, देखो रोती हैं अंखियां।

हरि जपो जप शान्ति देगा, दीप इस तम में जलेगा।
कौन अपना है पराया, जप हरी ही ज्ञान देगा।
बहता जा सागर हरि का, ढूंढती है लहर सागर।
हरि सुमर सब कुछ उसी का, मिट के देखे संग सागर।

48

बस जाओ मेरे नयनों में, दीप जले इस अंधियारे में।
मेर देवता तुम ना रूठो, गया हार आंसू नयनों में।
चाह प्यार की दानी दे दे, बन्शी सुन नाचे यह जियरा।
प्रेम दिवानी मीरा नाची, नाचूँ भूल जगत गम विसरा।

प्रीति बढ़े नित वर दे ऐसा, सूख न जायें मेरी अंखियां।
बरसे ऐसे जैसे सावन, जब तक तुम पाओ ना सैयां।
हरि हरि सांस रटें यह मेरी, कितनी हरी लगाना देरी।
बहता रहे नयन से पानी, ना ठुकराना तेरी चेरी।

जनम जनम से साथ तुम्हारा, तुमको भूल हुआ बेगाना।
तुम बिन कृपा मिले ना रस्ता, तुझे पुकारूँ सुन ले बयना।
अन्तस मेरे ज्ञान जगा दो, तम बिखरा प्रभु उसे हटा दो।
करूँ चरण तेरे की पूजा, ना जानूँ कुछ नाथ शरण दो।

49

गीत गा ले मन हरी के , उसी की रजा में बह ले।
समझ ले उसके इशारे, तज मैं को हरि को जप ले।
आये जब यहाँ न पूछा, जायेंगे न पूछ कोई।
आंसू की बह रही गंगा, हरि चाहे वह ही होई।

टूटते जब बिखरते हैं, ले रहे सुपने अनेको।
नयन में आंसू मचलते, न रोक पाते हम स्वयं को।
बहो मन नदिया उसी की, तुम हो लहर यह जान लो।
आर्ये है मर्जी उसकी, जायेगे हरी शरण लो।

मन करो सुमरण हरि का, कर रहा संसार झिलमिल।
जो मिले है अब यहाँ पर, जायेगे यही विछुड़ कल।
क्या यहाँ अपनी खुशी है, कब जगा कर वह सुलाये।
तू लहर जप ले जलध को, जप मिटे संग जलध पाये।

50

पार हरि नदिया करा दो, मन नहीं लगता हमारा।
नयन से आंसू निकलते, क्यों हुआ यह जगत खारा?
तेरी बंशी धुन सुने बिन, क्या जगत में फिर प्रयोजन।
तप्त दिल ना मेघ वरषे, मैं कहूँ किसे तेरे बिन।

ढलती है अब तो संध्या, ना जाना जग में भटका।
प्यार अपना हरि मुझे दो, नीर नयन से है टपका।
तुम सर्जक मेरे पालक, तुझे रो दुखड़ा सुनाऊँ।
जो रच दी तूने लीला, मैं अबल ना समझ पाऊँ।

ज्ञान इस दिल में जगा दो, प्यार का झरना बहा दो।
गीत तेरे ही उठें हरि, कर्म शुभ हों वर हमें दो।
प्रभु हम हैं तेरे बालक, देखो रोवे यह जिवड़ा।
नयन में प्रभु बसो मेरे, सब मिटे फिर जगत पीड़ा।

51

गा गीत मन, उड़ चल गगन, कहाँ पिव छिपा देखो मन।
जाऊँ कहाँ हारे नयन, नचा रहा तू भी तो मन।
जग में चुभन मिटती न जब, सांस यह गाती गीत है।
हरि एक सांचा मीत है, आंखें बहाती नीर हैं।

सुन लो हरि विनती मेरी, तुझ दर्श के प्यासे नयन।
तू प्यार दे दे मैं अबल, मछली सा तड़फूं जल बिना।
ऊसर जमी उपजे सुमन, हरि प्यार में सब कुछ छिपा।
दीपक जला, कर अर्चना, मन क्यों जगत से है चिपा।

सर्जक वही पालक वही, तू कौन नाचे सब वही।
वह करेगा पार नौका, हरि ध्यान धर खेवट वही।
नयन में हरि मूरति बसे, ना डर लगे उसको जपे।
सागर लहर है जानती, जाना कहाँ उसको जपे।

52

नीर बहायें मेरी अंखियां, खोजूँ तुझे कहाँ मैं सैंया।
ना आये तुम हार गई मैं, ना रूठो पड़ती मैं पैंया।
बाट निहारूँ सदा तुम्हारी, याद करूँ सूरत वह प्यारी।
मिट जाते सब दन्श जगत के, तुमको भजते सब संसारी।

जीवन तेरा प्यार मुझे दे, तुम बिन कहूँ किसे मैं बोलो?
अन्तर्यामी घट की जानो, ताप हरो तुम रस को घोलो।
खिलें फूल महके जब बगिया, नभ से गिरती हैं जब झड़ियाँ।
गीत सुनाये पवन प्यार के, करूँ याद बरसे यह अंखियां।

मीरा नाची मैं भी नाचूं, कोई ऐसा राग सुना दे।
मिट जाऊँ गा तेरे नगमें, बंशी स्वर को मुझे सुना दे।
प्यारा तू प्यारी है यादें, याद तुझे कर अंखियां तरसे।
नीर रूके न बहता जाऊँ, मिलो न जब तक झर झर बरसे।

53

कह दो मुझसे तुम हो मेरे, मैं रटूं तुझे ना मुंह फेरे।
अज्ञानी बालक मैं तेरा, प्यासी अंखियां आंसू गेरे।
इन नयनों में छवि हो तेरी, चाहूँ मैं सदा रहूँ तेरी।
पल भर भी नहीं विछोवा हो, हरि बना मुझे अपनी चेरी।

अपनी राखो हरि मुझे शरण, हरि हरि कहते बीते जीवन।
तुझमें सोऊँ जागूँ तुझमें, संगीत सुनाए यही पवन।
कण कण में हरि तुम बसे हुए, प्यासे क्यों फिर भी तड़फ रहे।
जल बिन जैसे मछली तड़फे, तुम बिन चाहूँ ना प्राण रहे।

ऋषि मुनि ज्ञानी तुमको भजते, सब कृपा तेरी हरपल चहते।
चाहूँ मैं प्यार अबल हूँ प्रभु, देखो हरि नीर यहाँ बहते।
सागर में बहूँ लहर बन कर, नयनों में नाचे छवि तेरी।
दे ज्ञान मुझे तू हरि इतना, तू सदा साथ ना है दूरी।

54

पाने को जब कुछ नहीं यहाँ, क्या पाने दौड़ लगाये मन।
बैचेन जगत सारा डोले, चिन्ता को मिटा न पाये मन।
आंखों में आंसू भूख प्यास, सुख दुख की छाया पुण्य पाप।
सुपने आंखों में है हजार, हरि भजो मिटे फिर सकल ताप।

हरि हाथ डोर हम कठपुतली, वह नचा रहा सबको छलिया।
मृगतृष्णा में भटकावे मन, बिन जपे न मिलती है छैंया।
हरि जप हरि जप है सार यही, तपते दिल को दे शान्ति यही।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, दे वर्तमान में राह यही।

हरि जपो सदा जपते रहना, बन लहर यहाँ बहते रहना।
उसकी मर्जी जैसे राखे, दे ज्ञान वही हरि में बहना।
हरि गा हरि गा हरि चरण चढ़ा, नयनों से नीर बहें तेरे।
अपना क्या सब माया उसकी, मैं मिटा कटें फिर सब फेरे।

55

आये ना तुम सावन जाये, प्यासा कौन पिलाये पानी।
नीर बहावें मेरी अंखियां, आंख उठा देखो तुम दानी।
जीवन तेरा कुछ ना मेरा, देखो हमको रोवें अंखियां।
प्यार तुम्हारा चाहूँ दे दो, बाट निहारें कब से अंखियां।

हरि हरि जपें पुकारे तुमको, इन नयनों में तुम बस जाओ।
छूटे सभी जगत की तृष्णा, हरि तुम अपना प्यार बढ़ाओं।
सुन लो हरि मैं दास तुम्हारा, तू ही है बस एक सहारा।
पार लगा दो मेरी नौका, सारे जग का खेवन हारा।

तेरी रहमत का भूखा जग, आंसू गिरते रहते टप टप।
पिला सभी को अपनी हाला, पहुँचे तेरे द्वारे सब जप।
सांस सांस हरि तुझे उचारे, शरण तुम्हारी हम तो हारे।
तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, ज्ञान हमें दो पहुँचे द्वारे।

56

गा ले मन तू गीत हरी के, उस बिन रोवें मेरी अंखियां।
कैसे पहुँचूंगा मैं चलकर, डर लागे धड़के यह जीया।
इस जीवन का प्यारा वह ही, हरि बिन नहीं सहारा कोई।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान क्यों उसको खोई।

जपता जा वह प्यारा प्रियतम, थके हुए को देता वह बल।
उस बिन पार न होवे नौका, जिया जलावे तू क्यों हरपल।
हरि हरि बोलो हरि को जी लो, जख्म लगे जो उनको सी लो।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, जप उसको मन अमृत पी लो।

अंखियां बरसे हरपल रिमझिम, जब तक मिले नहीं वह साजन।
पिया प्रीति का प्याला जिसने, डूबा उसमें खोजे साजन।
गा मन गा मन जाता है तन, भूल भुलैया सारी दुनिया।
जप ले चैन मिलेगा दिल को, छिपा हुआ रहने दे छलिया।

57

किसको सुनायें दास्तां, सुन ले यहाँ पर कौन है?
दर्द दिल में बह रहा जो, ना देखता हरि मौन है।
बहे आंसू चल रहे पर, न शिकायत जग से करते।
प्यार मिल जाये तुम्हारा, यह विनती तुमसे करते।

नाथ तेरी हम शरण में, सारे जग का तू दानी।
थक गिरूँ हरि थाम लेना, तुम बिना मिलता न पानी।
गीत तेरे ही उठे हरि, स्वप्न सा संसार सारा।
चैन आये न तेरे बिन, चाहता तेरा सहारा।

मर्जी तेरी मैं चेरी, खुश रहूँ तुमको मनाये।
प्रीति की ना डोर टूटे, नाथ हम तुमको रिझाये।
याद कर हरि नयन रोयें, छिपो नहीं मुझसे छलिया।
नयन में हरि बसो मेरे, मैं पड़ता तेरे पैंया।

58

हरि दर्शन को अंखियां तरसे, मन बहलाऊँ मैं कैसे?
अगम अगोचर पार न उसका, फिर भी यह अंखियां बरसे।
प्रीति दिवानी नाची मीरा, अंखियों से मोती बरसे।
सकल सिद्धि फीकी पड़ जाती, यादों में नयना बरसे।

जप ले मन रख सदा सहारा, भूलो ना खेवनहारा।
जाती संध्या ढलता दिन है, याद करो वह है प्यारा।
हरि हरि जप ले उसकी दुनिया, कौन यहाँ तू नाचे छलिया।
लाये ले जाये वह मालिक, सींच नीर से मन पैंया।

जप हरि हरि बह ले सागर में, साथ रहे उसका साया।
डर न लगेगा उसे भजेगा, देखेगा हरि की माया।
हरि हरि जप मन प्यार बढ़ा ले, मुरझाया जिया खिला ले।
स्वप्निल दुनिया क्या तू पकड़े, लहर बना सागर जी ले।

59

जो तूने चाहा वही हुआ, किससे करनी है यहाँ गिला।
जैसा विवेक दे जीते हम, चाहूँ निज हाला खूब पिला।
हरि प्यार हमें दे बहें नयन, दर्शन की प्यासी हैं अंखियां।
तुम बिन जियरा यह ना लागे, पड़ता हरि मैं तेरे पैंया।

आये हम जाये नाव कहाँ, तुमसे हरि करूँ यही विनती।
नौका को पार लगा देना, हरि कृपा मिले खिलती धरती।
मैं दास तुम्हारा अज्ञानी, दे भीख मुझे तू तो दानी।
ना होना मुझसे कभी जुदा, सुमरण हो नही रूके पानी।

हरि बाट निहारूँ सदा तेरी, जब भी आओ मर्जी तेरी।
न प्रेम डोर यह जाये टूट, जन्मों जन्मों से मैं चेरी।
हरि हरि गाये तेरे नगमें, गाते गाते लय हो जाये।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, यह नीर बहे तुमको पाये।

60

खोजते हम सत्य को है, सत्य हम क्या जानते?
बह रही आंसू की गंगा, पीड़ ना पहचानते।
आये पूछा न किसी ने, जायें रोके न रूके।
फिर रहे दिल को लगाते, कौन जो हम कह सकें?

मन जपो हरि सत्य वह ही, कुछ पलों का खेल है।
बह रही नौका हमारी, हरि बिना ना चैन है।
उठा रहे सुपने अनेको, बैचेन दिल भागता।
नयन रोये हरि कृपा बिन, क्यों नहीं हरी भजता।

हरि जपो मन वह सहारा, जाती ले हरि धारा।
छोड़ मैं तू कौन जग में, मिट रहा खेल सारा।
जपो हरि हरि जप हरि हरि, दन्श सब भूल जाये।
बस न कुछ हरि ही मालिक, सब जगत वह चलाये।

61

तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, दे दो ज्ञान तुझी से पाऊँ।
जग में भटकूँ उलझ गिरूँ मैं, कृपा होय तो ही तर पाऊँ।
नयना मेरे झरते झर झर, मैं हूँ अबल चाहता सम्बल।
बढ़ा हाथ हरि मुझे थाम लो, पहुँचू तुम तक ना इतना बल।

हरि हरि जपूँ करूँ मैं पूजा, दास तुम्हारा क्यों तू रूठा।
कितने बीते जनम न आया, तू ही संभाले पर न दीठा।
हरि हरि जपूँ खोल दे खिड़की, मन्दिर तेरा अंखियां बहती।
खड़ा द्वार पर हाथ जोड़कर कर, मुझे रूला ना ले चल किस्ती।

इस जीवन को देने वाले, तुम बिन कहूँ किसे मतबाले।
ठगनी माया नाच नचावे, नयन झर रहे इनको लख ले।
पाप पुण्य दुख सुख का मेला, नाच नचावे हमको छैला।
नाच रहे ना बस में है कुछ, मिले ज्ञान ना दिल हो मैला।

62

मन पीछे पीछे क्यों जाये, जग से लिपटे ठोकर खाये।
मन सजा नयन में हरि मूरति, बसता दिल में दुख मिट जाये।
हरि जप ले मन तू सत्य वही, ना व्यथा मिटेगी और कहीं।
मर्जी उसी की आये यहाँ, ले जाये चाहे जहाँ कहीं।

हरि हरि जप और नहीं है सुख, मेला दो दिन का यह दुनिया।
मन तृष्णाओं में घूम रहा, हरि बिन रोती रहती अंखियां।
हरि हरि जप सुख का सागर वह, मन भूल उसे दुख पाता क्यों?
जपता जा पार करे नौका, देता पतवार न उसको क्यों?

हरि हरि जप ज्ञान वही देगा, कांटे तेरे सब हर लेगा।
बहते जो नीर नयन से है, वह फूल बना महका देगा।
मैं हटा हरी के चरण पकड़, मन तू क्या सत्य सदा वह ही।
जब मिटे लहर सागर ही हैं, मन सत्य जान सब जगह वही।

63

जीवन जाता तू ना आता, कहाँ छिपे तुम मेरे दाता।
नयनों में मेरे आंसू हैं, खोजूँ तुमको पता न पाता।
लाज राखना इस मेले में, इस जीवन के तुम हो स्वामी।
बहता इन आंखों से पानी, तुझे मनाऊँ अन्तर्यामी।

अज्ञानी कुछ भी ना जानूं, रो कर अपने नीर दिखाऊँ।
बालक तेरा प्यार चाहता, नगमें गा गा तुझे सुनाऊँ।
सांसें तुझे उचार रही है, इन प्राणों की प्यास तुही है।
पार लगा दे मेरी नौका, मेरा खेवनहार तुही है।

कण कण में तू बसा हुआ है, फिर भी मुझसे छिपा हुआ है।
अंखियां नीर बहाती रहती, बता मुझे क्यों खफा हुआ है?
अंखियां झरें बजा दे बंशी, कटे रैन जलता यह जीया।
बालक तेरे ज्ञान हमें दो, मिल जाये हरि तेरी छैया।

64

बिखरा रूदन कितना यहाँ, खिलखिलाती पर हंसी भी।
कैसी माया तुम्हारी, कोई जाने न कभी भी।
दुख भरी यह रात काली, चैन मिले तुझसे माली।
नयन से जो नीर गिरते, फूल बने लगती लाली।

बह रही नौका हमारी, जायें कहाँ ना पता है।
एक हरि तेरा सहारा, चल रहा तुझसे जहाँ है।
कृपा हो जिस पर तुम्हारी, सब बादल दुख के फटते।
नयन से जो बहें आंसू, फूल बन कर वह महकते।

चाहते तेरी कृपा हरि, जगत की अनजान गलियाँ।
हरि करो पथ में उजाला, सदा मिले तेरी छैंया।
हरि जपें सांसें उचारें, तुम बसो नयन में मेरे।
प्यार चाहे हरि तुम्हारा, दूर हो तम हमें घेरे।

65

पी रूठ गया तो जाये कहाँ, जीवन यह क्यों सांसे लेता?
तुम बिन लागे न मेरा जिया, इन आंखों से पानी बहता।
देकर कठोर ऐसा जीवन, बेदर्दी छलिया छिपा कहाँ?
सुपनों की होली जली यहाँ, ना छोड़ मुझे पी रटूँ यहाँ।

क्यों जीते आंसू को पीते, दिल लगता मेरा नहीं यहाँ।
दुख देख देख जग के मालिक, नयना बरसें दे प्यार यहाँ।
बज जाये हरि बन्शी तेरी, तब शान्ति मिले तपते दिल को।
यह प्राण पुकारें सदा तुझे, ना भूल शरण रख ले हमको।

ऐसा रूखा ना जीवन दे, तेरे नगमों को गायेगे।
हरि प्रीति बढ़े विनती मेरी, सुमरण कर लय हो जायेगे।
नयनों से आंसू बरस रहे, इस दिल से मेरे दर्द बहे।
अज्ञानी बालक पर तेरे, दे प्यार मुझे बस यही चहे।

66

पाना क्या और यहाँ खोना, तू दर्द बांट ले जग सुपना।
जो रोती आंखे प्यार बांट, तू देख छिपा उसमें सजना।
बहती जाती जीवन धारा, बह और किनारा क्या खोजे।
हरि हुआ समर्पित बहता जा, कर याद उसे तन मन भीजे।

हरि हरि जप बन तू यहाँ लहर, क्या लहर यहाँ सागर नाचे।
यह लहर जहाँ हरि छिपा वहाँ, क्या लहर झूठ हरि ही सांचे।
झेले सुख दुख सारी पीड़ा, सागर ले लहर करे क्रीड़ा।
वह भ्रमित हुई सी भाग रही, बिन ज्ञान मिटे ना यह पीड़ा।

हरि हरि बोलो हरि को जप लो, ना और यहाँ कोई मंजिल।
नयनों से नीर बहें तेरे, तू देख उसी की है हलचल।
बस अपने कुछ ना हरि लीला, स्वीकार करो उसकी क्रीड़ा।
सब ज्ञान ध्यान का मालिक वह, जप शान्ति मिले मिटती पीड़ा।

67

हरि करो कृपा दो ज्ञान हमें, बालक तेरे नादान यहाँ।
जीवन की इस पगडण्डी पर, दे प्यार खिले यह सकल जहाँ।
तुम सृष्टि रचियता जगपालक, करूणा सागर कहलाते हो।
अरमानों की जलती होली, क्यों छिपे हुए ना आते हो।

कैसे स्वर यहाँ उठाये हम, तू रीझे तुझे मनाये हम।
अज्ञानी अबल नाथ हैं हम, दे ज्ञान तभी कुछ पाये हम।
जीवन तेरा हरि हरि बोले, इस अंधियारे में ना सोवे।
डगमग करती मेरी नौका, तू हमें देख नयना रोवे।

कण कण में तेरा वास यहाँ, यह पवन गीत तेरे गाये।
तुझ दर्शन की प्यासी अंखियां, खोजे पर नजर नहीं आये।
साथी अंधियारी राहों में, हरि हरि करते तेरी पूजा।
तू पार लगा मेरी नौका, न तुझ बिन और कोई दूजा।

68

हरि की मर्जी से आयें हम, जप उसको मन हरि को जी ले।
अपना क्या देगा ज्ञान वहीं, हरि याद करो हरि को जप ले।
अच्छा हरि यह दुनिया अच्छी, क्यों फिर भी यह अंखियां बरसी।
ना जाने कुछ हम कठपुतली, हरि यादें ले अंखियां तरसी।

कोई है राजा रंक यहाँ, सुपने टूटें चल रहा जहाँ।
हरि चरणों में पड़ यह देखो, सब उसकी मर्जी चले जहाँ।
कुछ खेल यहाँ मिट जायेंगे, मन गा हरि हरि जीवन सुपना।
उसकी सब मर्जी समझ यहाँ, नदिया उसकी कुछ ना अपना।

जैसा राखे रहना होगा, जो ज्ञान मिले जीना होगा।
नयनों से नीर बहें कितने, हरि बिन मन शान्त नहीं होगा।
आये कहाँ से जायें कहाँ, जाना किसने ऋषि मुनि हारे।
जो हुआ समर्पित हरि चरणों, ले जाती धारा वह तारे।

69

अपनी अपनी यहाँ कहानी, बहता इन नयनों से पानी।
घूम रहे अनजानी दुनिया, दम यह भरते हम है ज्ञानी।
मन हरि जप बस ज्ञान यही है, नियति खिलौने सत्य यही है।
खेले कूदें फिर खो जाये, क्या बस में क्या जान सही है?

हरि हरि जप बरसेंगे आंसू, पड़ हरि चरण नही कुछ भी तू।
छोड़ वासना तुझे रूलाये, स्वप्निल सब मन कौन यहाँ तू।
धूप छांव सुख दुख का खेला, हरि बिन जपे न आये चैना।
जग के दन्श सताये जब जब, करें याद हरि आये रोना।

हरि हरि जप मन चैन मिलेगा, अन्तस तेरे ज्ञान जगेगा।
तुझे ले चले बांह पकड़ कर, हरि जप तुझको लिये चलेगा।
हरि हरि गा मन हरि को भज ले, दुख आये सह मन तप कर ले।
पड़ जा मन उसके चरणों में, अपना क्या सब उसका भज ले।

70

दो बूंद गिरे हरि चरण चढ़े, चाहत हरि मुझसे प्रेम करे।
ना जान सके बहते नयना, बस जाओ नयनों में मेरे।
अन्तर्यामी घट के स्वामी, तुम बिन रोती मेरी अंखियां।
न पता तुम्हारा मैं जानूँ, कैसे समझाऊँ यह जीया।

हरि हरि गाऊँ चैना पाऊँ, सब भूल तुझी में खो जाऊँ।
कर माफ खता यदि है कोई, अज्ञानी समझ नहीं पाऊँ।
मैं जाऊँ कहाँ रोवे नयन, जीवन की अब ढलती संध्या।
पूजा मेरी स्वीकार करो, कठपुतली मैं पड़ता पैंया।

बालक तेरा रखबाला तू, मुझमें ना बल सुखदाता तू।
दे प्यार जिया मेरा हरषे, अपनी छैया में रख ले तू।
तेरे गीतों में हरि बहकर, यह सफर यहाँ होगा पूरा।
दो बूंद गिरें स्वीकार करो, हरि बहती तेरी ही धारा।

71

उड़ता मन जाये कहाँ ठिका, बहते नयना हरि चरण चढ़ा।
तू जहाँ बसेरा वह तेरा, बन लहर हरी से प्यार बढ़ा।
बहता जा यह हरि मर्जी, जप उसे याद कर संग वह ही।
उसकी ही चले जायें कहाँ, दुख मिटते जप सब कुछ वह ही।

हरि हरि गा मन जग में क्या धन, अंखियां बरसे जैसे सावन।
कोई ना आये हाथ यहाँ, मिटता जाता है यह भी तन।
हरि हरि जप हरी को हिय बसा, पथ दुर्गम पी ले यही नशा।
कट जायेंगी काली राते, दे ज्ञान वही दे तुझे दिशा।

हरि हरि जप चलती बस उसकी, नाचें हम तो है कठपुतली।
जग में आये ले जाये वह, उसके हाथों में है सुतली।
ज्ञानी कोई है मन्द बुद्धि जग में कितनी योनी घूमे।
जीवनदाता मारक वह ही, सब छोड़ धन्य पग हरि चूमें।

72

जिन्दगी क्या गीत गाती, देख नयना खोलकर।
कर जतन हो नहीं विह्वल, संग हरि को याद कर।
विखरे कांटे हैं जग में, फूल भी खिलते यहाँ।
जपो हरि को प्यार कर लो, खिलेगा सारा जहाँ।

हरि जपो वह ही सहारा, जपता रह क्यों हारा।
सबका सर्जक वह पालक, उस बिन न है गुजारा।
फटते सब दुख के बादल, हरि कृपा हो मन जहाँ।
उस बिन रोवें यह अंखियां, देख कितना बल यहाँ।

हरि जपो सांचा वही धन, प्यार से जप उसे मन।
उठ रहे तूफान जग में, ना मिटे उस बिन चुभन।
आदि वह ही अन्त वह ही, कौन मैं सत्य वह ही।
ले चलेगा ना रूकेंगे, पड़ चरण सत्य वह ही।

73

तन नहीं मैं मन नहीं हूँ, कौन हूँ हरि तम को हर लो?
ज्ञान की बाती जला दो, प्रीति में हरि मुझको रंग लो।
उठ रही लहरें अनेकों, स्वप्न सी यह सारी दुनिया।
टूटते अरमान दिल के, नीर बहते रोवें अंखियां।

ले चलो उस पार मुझको, जलती जहाँ तेरी बाती।
मन नहीं लगता हमारा, तुम बिना अंखियां यह रोती।
यह बरसते नयना मेरे, प्यार दो हरि आये चैना।
तू बजा दे बन्शी अपनी, चाहता मैं तुझमे बहना।

प्यार दे झरें है अंखियां, जग में तुम बिन रस न रसिया।
मीरा नाची प्यार पा कर, मुझे रंग ले तू भी छलिया।
प्यार पायें हम मनाये, जा रहा ले मुझको झोंका।
चरण में पड़ते तुम्हारे, पार कर दे मेरी नौका।

74

अपनी अपनी लिये वासना, घूम रहे इस जंगल में सब।
हरि बिन चैन न आये मन में, उलझ गिरें देखें यह क्या सब।
क्षण भंगुर करता नादानी, सभी मिट रही यहाँ कहानी।
तू जो सोंचे सत्य वही क्या, पल पल नयन बहाये पानी।

जैसा होना हो किस्मत में, मति हो जाती वैसी ही है।
हरि ही तेरा भाग्य विधाता, क्यों उसे भूल कर रोवे है।
हरि जप हरि जप ज्ञान जगावे, व्यर्थ नहीं जग में भटकावे।
सोच सोच हारा जो जग में, छैया हरि की फिर मिल जावे।

प्रीति बढ़ा अज्ञान हरे वह, मेला यह दो दिन का सारा।
दे पतवार उसे क्यों रोवे, पार करे वह खेवन हारा।
हरि जप हरि जप शान्ति मिलेगी, कौन जपे लख दृष्टि मिलेगी।
तेरी बगिया का रखबाला, याद उसे कर फिर महकेगी।

75

याद करते हम तुझे हरि, ले चलो नौका हमारी।
तुम बिना ना पार होवे, डरता अंखियां हैं भारी।
प्यार दो बालक तुम्हारे, तुम बिना जायें कहाँ हम?
नीर बहते हैं नयन से, रूठो न हरि हैं अबल हम।

ज्ञान दो अनजान गलियां, बहती हैं मेरी अंखियां।
मृगतृष्णा में फंसे हम, पाते दुख रोवे जीया।
तुम अगोचर दीखते ना, तुमसे है संसार सारा।
कौन हूँ मैं खोजता यह, कर कृपा हरि दे सहारा।

काट सकता मैं न बन्धन, मन रोता करता क्रन्दन।
बहते नयनों से आंसू, कैसे पाऊँ सुखनन्दन?
यह जगत तेरी कहानी, कुछ पता न बहता पानी।
लाज मेरी राखना हरि, तुमसे कहता सुन दानी।

हरि कृपा रखना सदा तुम, बालक तुम्हारे जानना।
अज्ञानी पर्दा हटाना, जब भी गिरे, संभालना।
तुमसे यह ब्रह्माण्ड नाचे, देखो अंखियां यह रोवे।
प्रीति हरि तुमसे बढ़े नित, दे कृपा हरि तू न सोवे।

76

गाये गीत न मैं गा पाया, हरि दे दो तुम अपना साया।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, इस जंगल में मैं भरमाया।
ऋषि मुनि ध्यान लगा कर हारे, धन्य वही जो पड़ता द्वारे।
अगम अगोचर पार न तेरा, कृपा करो बस तू ही तारे।

मेरी सांसों में बस जाओ, प्राण पुकारें तुमको आओ।
रोम रोम ले नाम तुम्हारा, हरि तुम मुझसे प्रीति बढ़ाओ।
जग में भटका प्यास मिटी ना, तृष्णाओं ने है उलझाया।
अन्धकार से ढकी चदरिया, दीप जला दो शरणा आया।

बन्शी धुन हरि मुझे सुनाओ, ताप हरो हरि कष्ट मिटाओ।
खोज रहा कितने जन्मों से, अब सुन लो ना नयन चुराओ।
कण्ठ नहीं जो रिझा सकूँ मैं, टूटा साज लिये शर्माऊँ।
बहते इन नयनों से आंसू, लाज राखना तुझे मनाऊँ।

77

यहाँ मिलकर बिछुड़ जाते, चले यह एक सुपना है।
यहाँ हम नीर को देखें, यह दुनिया इक धोखा है।
जगत की प्रीति क्या पागल, बहा कितना नयन से जल।
न आते जा चुके है जेा, पलटती रंग यह हरपल।

जपो हरि हरि सहारा वह, दुखों में साथ दे तेरा।
घटायें जब घिरें काली, पुकारे तू कहे मेरा।
नयन में हरि बसा पगले, कटेगा यह सफर सारा।
न उस बिन चैन मन पावें, नयन से जल बहे खारा।

हरि हरि बोलो हरि जप लो, बहे जो जल इसे चख लो।
विषम दुनिया यहाँ कितनी, देखो हरी नहीं भूलो।
तू बन्जारा हरि जप ले, आये अब तो जायेगा।
यहाँ मिटती लकीरें सब, मिटा मैं हरी पायेगा।

78

हरि हरि बोलो हरि को जी लो, बहता जीवन इसको पी लो।
प्यास मिटेगी पीड़ भगेगी, इस सुपने को सुन्दर कर लो।
पीड़ित सब जग मन तू हरि जप, सबका खेवन हार वही है।
जिसने जपा चुभन मिट जाती, कण कण में फिर छिपा वही है।

साथ हर समय वह है तेरे, फिर भी उससे अंखिया फेरे।
फंसा वासना के पहिये में, बादल दुख के फिर फिर घेरे।
हरि हरि जपो साथ वह तेरे, किसके लिये नीर तू गेरे।
साथ उसी का अन्तिम पल तक, प्यास प्राण की मुँह ना फेरे।

आस क्या करे जग से तू मन, लिये वासना घूम रहे सब ।
मिल कर यहाँ विछुड़ते सारे, कोई हाथ न आये जप रब।
हरि हरि गा मन कटती रैना, दुख में नहीं बहेंगे नयना।
हरि पर है विश्वास अटल जब, बनते शूल फूल यह कहना।

79

हरि हरि जप मन सत्य कहूँ सुन, अन्तस तेरे ज्ञान जगेगा।
जो रोते हैं तेरे नयना, दिल का उससे सुमन खिलेगा।
धूप छांव सुख दुख का खेला, जिवड़ा इसमें फिरे अकेला।
हाथ बढ़ाये हाथ न आये, बहे लहर कैसा यह मेला।

ऋषि मुनि हारे ध्यान लगा कर, कहाँ छिपा वह नटखट छलिया।
जप ले मन तू मांग उसी से, दे दे अपनी तुझको छैया।
जीत हार का चक्र चल रहा, देखे कुछ पल का है सुपना।
बनी पहेली रोते हैं हम, हरि बिन कभी न आये चैना।

झुक जा मन तू हरि चरणों में, और सहारा ना कोई है।
मान ना मान मर्जी तेरी, हरि बिन आंख सदा रोई है।
प्राण पुकारे आ जा रसिया, तुम बिन सूना रोये अंखियां।
दास हरी का जनम जनम का, मांग ले मन हरी की छैया।

80

क्या खता हुई जो भूल गये, नजरें न उठाई बदल गये।
नादान हूँ मैं सोचा नहीं, पाते दुख निशदिन नये नये।
प्यासा हूँ प्यार मिले मुझको, अज्ञानी ज्ञान नहीं मुझको।
तेरी बगिया में खिले यहाँ, कहाँ जाये कहो तुम हमको।

मेरी आंखों में आंसू है, हरि भीख प्यार की मैं मांगू।
इस दुनिया के तुम मालिक हो, दे ज्ञान मुझे जो मैं जांगू।
जपता ही रहूँ हरी तुमको, नयन से बहे मेरे धारा।
जब तक न मिलो हरि तुम मुझको, सूखे ना बहे सदा धारा।

हरि लाज राखना ज्ञानी ना, मैं बना समय का मोहरा हूँ।
चरणों में जगह मुझे दे दे, हरि कृपा मिले मैं प्यासा हूँ।
बस जाओ नयनों में मेरे, हरि हरि तेरी पावन गंगा।
मैं सदा करूँ सुमरण तेरा, जो भी नहाये मन हो चंगा।

81

दिल रोये यह बहते नयना, मन मेरे तू सुन ले बयना।
मृगमरीचिका में उलझावे, तू दूर न कर मेरे सजना।
प्रीति बढ़ा वह प्रियतम प्यारा, स्वप्निल है यह सारी दुनिया।
कितना भटक न आये चैना, मेरी रोती उस बिन अंखियां।

जग में भटकूँ सिर को पटकूं, सारी हंसती है यह दुनिया।
डोर बांध दे उस छलिये से, फिर मिल जाये उसकी छैया।
करूणा कर वह कृपा करेगा, छोड़ मुझे दे अब तू छलना।
खोजूँ उसकी राह बता दे, मेरे भर भर आये नयना।

बस जाये हरि इन नयनों में, हरि हरि प्राण पुकारें मेरे।
मुझको ऐसा जाम पिला दे, सांस सांस में उसे उचारे।
कल क्या होगा हरि ही जाने, बहते आंसू उसको जप ले।
दो दिन यहाँ प्रीति में रंग ले, हरि हरि गाये हरि को जी ले।

82

तरस गये पर प्यार न पाया, मेरा जीवन यह मुरझाया।
बालम रूठ गया है मुझसे, क्यों रिझा नहीं उसको पाया।
ऐसी तोड़ी प्रीति बता क्यों, बहें नीर पर वह ना देखे।
अंखियां बरसे वह ना रीझे, विवश बने हम नभ को देखे।

जनम जनम का साथ हमारा, कह कह कर मन मेरा हारा।
निष्ठुर बन कर तुम क्या लोगे, दो दिन का जीवन है सारा।
तुम बिन सूना जग यह लगता, तुझे खोजती मेरी अंखियां।
नही सहारा तुम बिन कोई, निष्ठुर ना बन प्यारे छलिया।

बालक तेरे माफ हमें कर, जाने ना हम खता हमारी।
जग में आये घूम रहे हैं, कुछ ना जाने आंखे भारी।
प्यार हमें दो ज्ञान हमें दो, सर्जक तुम हम तो अज्ञानी।
पार लगा दो मेरी नौका, इन आंखो से बहता पानी।

83

पल पल मांगू तुझसे पानी, रूप बदल कर आवे दानी।
अंखियां मेरी नीर बहावें, कौन पिलावे मुझको पानी?
तुम बिन चले न सारी दुनिया, कितने रूप बदलता छलिया।
कण कण में तू करे बसेरा, मैं तू भेद किया यह दुनिया।

मैं का रूप हाथ में लोटा, दर दर पूछे तू क्यों रूठा?
अपनी कृपा मुझे तू दे दे, सुख दुनिया का सारा झूठा।
पिला रहा है कोई पानी, रूठे मिलती नहीं निशानी।
कौन रूठता कौन मनाता, मैं भी कौन हुआ अज्ञानी।

कोई राजा रंक भेद क्या, ज्ञानी अज्ञानी में बैठा।
मैं हूँ कौन ज्ञान उसका ही, मिटता सब सारा जग झूठा।
जीवन आता किससे पगले, सोच समझ ले हरि को जप ले।
दो दिन का यह रैन बसेरा, हरि गंगा में मन तू बह ले।

छोड़ यहाँ मैं उसकी दुनिया, जैसा राखे तप तू कर ले।
हरि हरि प्रीति बढ़ाता जा तू, वही यहाँ पर उसमें बह ले।
बदले रूप खिलावे छैला, अज्ञानी हम रोवे नयना।
किसने जानी उसकी माया, जप पायेगा दिल यह चैना।

84

नयन आंसू पास तुम न, दिल बता कैसे लगाये।
तड़फे है दिल यह मेरा, तू बता कैसे मनाये।
दिल नहीं लगता हमारा, यह हो गया सूना जहाँ।
नयन से है नीर बहते, कह दो कहें किसको यहाँ।

देख लो नजरें उठाकर, बहता नयनों से पानी।
दर्द दिल का यह रहेगा, न प्यार पाया जग फानी।
डगमगाती नाव मेरी, क्या नियति यह चाहती है।
बेवफ़ा क्यों हो गये तुम, सांझ ढलती जा रही है।

प्राण सारे भीग जाये, हरि मुझे बन्शी सुना दो।
हरि जपे तुमको रिझायें, नाथ गम सारे मिटा दो।
चरण में पड़ते तुम्हारे, इस जगत के तुम रचैया।
माफ कर देना अबल हम, बहती हैं मेरी अंखियां।

85

मन चुप हो क्या तू अब गाये, किसको अपना दर्द दिखाये।
इस जग का हरि ही रखबाला, सारे जग को वही चलाये।
नयन बहावे वह ना आवे, दिल की पीड़ा कौन बुझावे।
चाहत का अम्बार लगा है, हरि बिन कृपा ज्ञान ना पावे।

धरा न बोले गगन मौन है, कर विचार तू यहाँ कौन है।
मर्जी हरि की जग में आया, जायेगा ना चले जोर है।
जप हरि हरि उसकी ही दुनिया, मैं को तज दे नाचे छलिया।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, उसको भूला रोवें अंखियां।

अंधियारी रातों में मनुआ, दिल में दीप उसी का जलता।
डूबा मैं में भूला उसको, अहंकार से स्वयं को छलता।
हरि हरि गा मन ज्ञान जगावे, हरि बिन ज्ञान नहीं तू पावे।
दो दिन का यह रैन बसेरा, छला जा रहा नीर बहावे।

86

हरि आंखों को खोलो, बालक हम तेरे हैं।
तम हरो नाथ मेरा, अंखियां यह बरसे हैं।
क्यों भाग्य बना ऐसा, मुंह फेर नियति सोती।
क्या दोष हमारा है, अंखियां मेरी रोती।

जग के तुम पालक हो, तुम भाग्य विधाता हो।
दे प्यार न वंचित कर, जीवन की आशा हो।
हरि तुझे मनाये हम, आंसू बरसे रिमझिम।
ना छोड़ मुझे कान्हा, मैं हार गया ना दम।

जीवन आता तुझसे, ना रूठ कभी मुझसे।
प्रभु सदा करे सेवा, कम प्यार न हो हमसे।
प्रभु चरण पड़े तेरे, दे ज्ञान तुझे टेरें।
अज्ञानी बालक हम, पर भूल न हम तेरे।

87

दीन बन्धु दयालु तुम हो, हरि राख लो अपनी शरण।
ढूंढते तुमको सदा ही, हरि पा सके तेरे चरण।
सुमरण करें हम रात दिन, तुम बिन लगे न मेरा दिल।
प्रीति बढ़े हरपल तेरी, कर दो कृपा मैं हूँ अबल।

इस जगत के तुम रचैया, नाव मेरी के खिवैया।
लाज मेरी राखना प्रभु, बहती हैं मेरी अंखियाँ।
न पता जानूँ तुम्हारा, चल रहे चल चल गिरे है।
बहते नयनों से आंसू, खोजते तुमको फिरे हैं।

पास में हरदम हमारे, फिर क्यों लगे तुम दूर हो।
दिल नहीं लगता हमारा, तुम जिन्दगी की चाह हो।
सुखदाता सुख को मांगू, मैं प्यार को चाहूँ सदा।
नयन में हरि बसो मेरे, न फिर कभी हो ना जुदा।

88

हरि को जपो यहाँ मन, उसको पुकार ले तू।
कैसे जलन मिटेगी, जाने नहीं यहाँ तू।
तपते हुए हृदय को, बस एक वह दिलासा।
उस बिन न चैन आये, मन रख उससे आसा।

जब रोता तू पगले, बस में बता यहाँ क्या?
जब भी बरसे आंसू, पूछें बता हुआ क्या?
सुख दुख नियति खिलाती, सब ज्ञान वह जगाती।
बन कठपुतली नाचे, आंसू न रोक पाती।

मन कौन जानता है, दुनिया में रंग इतने।
अपने बने पराये, बने पराये अपने।
सब कुछ बदले पल में, नयन से बहे धारा।
कल क्या हो जानते न, होगा कहाँ किनारा।

थक हारा तू बैठा, नभ मौन उसे देखे।
हरि को पुकार ले तू, सब घट में है देखे।
सुन मन हरि को जपना, लहर बना तू बहना।
सागर है रूप हरि का, यह जान हरि न तजना।

89

जप ले मन और न भटक कहीं, ना और किनारा कोई है।
अंखियां रोई ना चैन मिले, जग का रखबाला वह ही है।
किसने देखे बहते आंसू, निज इच्छाओं में जीते सब।
पल दो पल के हैं याराने, यहाँ रंग बदलते पल में सब।

अंधियारी रातों का साथी, जलती दिल में उसकी बाती।
मैं छोड़ उसे जो जपता है, भय से ना फिर फटती छाती।
हरि जप सुन ले उसकी बन्शी, संगीत दिशायें गाती है।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, सुपना हरि का दुख हरती है।

मृग तृष्णा यहाँ जलाये दिल, दौड़े पर यहाँ न पाये जल।
अन्तस में मन झरना बहता, ली ले क्यों तू तड़फे हरपल।
सुख दुख का खेल नियति खेले, तप कर ले हरि संग हैं तेरे।
पल भर भी दूर नहीं हम से, वह धन्य यहाँ जो मैं गेरे।

90

अंखियां बरसे यह दिल न्हाये, कब से बैठे तुम ना आये।
मीठी है याद तुम्हारी प्रभु, चाहूँ जीवन में तू छाये।
प्रभु सदा तेरा स्मरण करते, मिल जाये हरि तेरी छाया।
अज्ञानी तेरा बालक हूँ, प्रभु रेाती है मेरी काया।

तेरी बगिया में खिले नाथ, तुम बिन न और कोई दूजा।
हरि दे हमको अपनी छैंया, बह रहे अश्रु करते पूजा।
ब्रह्माण्ड इशारे पर नाचे, तेरे गुण गाता जग सारा।
तुम कहाँ छिपे मोहन मुझसे, बहती नयनों से है धारा।

जीवन तेरा तू ही मालिक, छाती मेरी करती धक धक।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, दो ज्ञान हरी पहुँचे तुम तक।
मेला दो दिन स्वप्निल दुनिया, मेरे सुपनों में तुम रहना।
तुम बिन होती नैया डगमग, मेरे नयनों में हरि बसना।

91

हरि कृपा करो जग के पालक, कण कण में तुम हरि स्वामी हो।
डगमग होती जब जब नैया, टूटे दिल की भी आशा हो।
खेवट तुम भूल नहीं जाना, मारग मेरा है अनजाना।
बहते आंखों से आंसू हैं, हरि मुझे प्यार अपना देना।

मैं उलझ गिरूँ हरि थाम मुझे, मुझमे मेरा बल कुछ भी ना।
अज्ञानी हूँ बहते आंसू, दे ज्ञान मुझे तुम बिन कुछ ना।
जपते ही रहे हम हरि हरपल, तुम कहाँ गये ढलता यह दिन।
नयनों से झड़ियाँ झरती है, ना मिलो यही रस बस जीवन।

तुम मुझको क्या छलता छलिया, मैं हार गया पड़ता पैयां।
तेरी दुनिया तू ही जाने, दे प्यार बह रही यह अंखियां।
खेला सुख दुख का पाप पुण्य, यह पार न हो गहरी नदिया।
इसे पार करा मेरे मांझी, यह रोती हैं मेरी अंखियां।

92

मन हरि हरि जप नहीं और है सुख, कहाँ जाये तेरी मंजिल क्या?
मृगमरीचिका में फंस हरपल, अंखियां रोवे न मिले छलिया।
बहते है नीर चढ़ा उसको, मर्जी उसकी से आये हम।
जपता जा चलता जा जग में, ना ज्ञान उस बिना पाये हम।

कोई है राजा रंक यहाँ, सब बने उसी की मर्जी पर।
वह पार करेगा नौका को, जप ले मन उसको वह हरि हर।
मन हरि हरि जप तेरे क्या बस, आवे सांसे उसको लेता।
उपजे हिय में जो ज्ञान यहाँ, मन सोच उसी को ले जीता।

सारी दुनिया का वह स्वामी, जप उसको कुछ भी और नहीं।
क्या जोर यहाँ मेला दो दिन, कब ले जाये वह और कहीं।
जो है जीवन जीना होगा, जैसा राखे रहना होगा।
उस कृपा मिले ना जग में सुख, जप उसे ज्ञान तुझको देगा।

93

तेरी दुनिया रास न आई, मुझको भूल गया हरजाई।
इन नयनों से बहता पानी, डूब नहीं क्यों दिल यह जाई।
तुम बिन भटकूं रोवे अंखियां, नहीं मिलो तुम मुझको छलिया।
शरण मुझे तू रख ले अपनी, अज्ञानी मैं दे दे छैंया।

निशदिन देखूँ बाट तुम्हारी, कब देखे तू मुझे मुरारी।
चल चल कर मैं हार गया प्रभु, तेरी यादें लागे प्यारी।
अपना मुझे बना ले छलिया, प्रीति बढ़ा ले रोवें अंखियां।
तुम बिन सूना जग यह लागे, कहूँ किसे मैं दिल की बतियां।

हरि हरि जपें नाम हरि तेरा, ना जाने कब होय सुबेरा।
अंखियां बरसे चैन मिले हरि, यादों का ना टूटे घेरा।
दास तुम्हारे अपना लो हरि, खता हुई क्या मैं ना जानूं।
पार करा दे मुझको नदिया, तुम बिन और न कोई जानूं।

94

हरि हरि जपें हरी को पूजें, ज्ञान हमें दे पथ जो सूझे।
बहते आंसू तुझे पुकारे, बता हमें तू कैसे रीझे?
गीत प्यार के गा पागल मन, प्यासे प्राण खोजते छलिया।
नीर बहे रोवे यह अंखियाँ, पीड़ घनेरी स्वप्निल दुनिया।

उसकी मर्जी चले इशारे, जाये कहाँ कोई न जाने।
हरि हरि भज बस वह ही है सुख, सांच कहूँ मैं मान दिवाने।
हरि जपो ज्ञान वह देगा, पीड़ा तेरी सब हर लेगा।
कर ले मन विश्वास उसी पर, नौका तेरी लिये चलेगा।

दर्द बह रहा इस दुनिया में, खोज रहे सब हरि की छैंया।
दौड़े मन चाहत ले ले कर, नीर बहावे पल पल अंखियाँ।
तृष्णा में हरि अब ना भटका, बढ़े प्रेम तेरा हरि हरपल।
अपना साया मुझ पर रखना, इन नयनों से गिरता है जल।

95

बन्शी की धुन सुन नाचे तन, जग के भूलूँ मैं सारे गम।
प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, इन आंखों में बस जाओं तुम।
मेरे जीवन की तुम आशा, अंधियारे में तुही है किरण।
अपनी कृपा बनाये रखना, मिले तुम्हारे मुझे हरि चरण।

मेरे खेवट भूल न जाना, तुझे पुकारूँ अब ना छिपना।
मेला दो दिन का यह सारा, अब तो हरि मेरी सुन लेना।
आंसू मेरे गिरते झर झर, अंखियां खोजे गया तू किधर।
कैसे इस मन को समझाऊँ, कुछ ना जानूं जाऊँ मैं किधर।

मेरे जीवन की तुम आशा, ज्ञान हमें दे पाये तुमको।
निशदिन सांझ सुबेरे भजकर, आंसू हार चढाऊँ तुमको।
जग में इनका मोल नहीं है, बहते इन आंखों से मोती।
लाज राखना शरण तुम्हारी, सकल सृष्टि यह तुझे पूजती।

96

मिले दिशा ना तुम बिन रसिया, पार लगा दे मेरी नैया।
अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी ढूंढे मेरी अंखियां।
तुझे बसाऊँ मैं नयनों में, निशदिन तेरी करूँ मैं पूजा।
तुमसे बढ़कर और न कोई, मेरे सुपनों में भी छा जा।

ऋषि मुनि तेरा करें है स्मरण, तुमको हरपल जपते रहते।
नाम तेरे में अमृत टपके, इसको पी पी कर ना थकते।
सकल विश्व के तुम हो स्वामी, सभी तुम्हारा प्यार चाहते।
मुझे भूल ना दास तुम्हारा, इन आंखों से आसू बहते।

चाहूँ सदा तुम्हारी छैंया, नाथ पकड़ ले मेरी बैया।
तुम बिन सूना यह जग लगता, देख हमें ले बहती अंखियां।
जपते रहे सदा ही तुमको, मेरे नयनों में बस जाओ।
प्यार तुम्हारा पा लें हरि हर, इस जीवन को सफल बनाओ।

97

हरि हरि तेरी करते पूजा, जो दर्द छिपा उसको लख जा।
जन्मों से दास तुम्हारा हूँ, मुरझाया सुमन खिला अब जा।
जग झूठ स्वप्न दुनिया सारी, छल तू भी क्या करता छलिया।
बैचेन मेरा दिल डोल रहा, दे प्यार मुझे पड़ता पैंया।

जग भूल भुलैया नीर बहें, मुझे तू भी नाथ भुलावा दे।
जग के भूलूं मैं सारे गम, चरणों में जगह मुझे हरि दे।
दे ज्ञान हमें मिलता तुमसे, जीवन की सभी बहारें तुम।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, खिलते तेरी बगिया में हम।

मैं छोड़ कहाँ तुमको जाऊँ, दीखे ना पथ अब रह ना चुप।
अज्ञानी मैं तू सत्य सदा, आंसू गिरते मेरे टप टप।
प्रभु सदा मनायेंगे तुमको, तुम पीठ न मुझसे कर लेना।
मैं अबल नाथ बालक तेरा, यह जान क्षमा तुम कर देना।

98

हरि ओम जपो मन उसे जपो, हरि बांह पकड़ कर चले चलो।
सबका सर्जक पालक तारक, मन भूल न उसको जपे चलो।
कहाँ जाये खबर ना नैया, बस मांगो मन हरि की छैयां।
मन के भय मिट जायें सारे, जब लगे साथ में है सैयां।

नौका को पार लगावेगा, आंसू तेरे वह पोछेगा।
विश्वास करो मन ओम जपो, दिल का वह कमल खिलावेगा।
हरि ओम जपो मन ओम जपो, सांसों में स्वर बाजे उसका।
मैं रहे न उसकी ज्योति रहे, तब चैन मिले सब कुछ उसका।

मन याद करो बरसे अंखियां, प्यारा लगता है वह छलिया।
जग के वैभव फीके पड़ते, सुन ले अनहद नाचे जीया।
जप क्षण भंगुर यह दुनिया मन, पल मिले यहाँ कुछ हरि का बन।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, ना भूल उसे तू बसा नयन।

99

हरि ओम जपो मन उसे रटो, मेला दो दिन का सारा है।
मैं छोड़ उसे पागल भज ले, मिल जाये हरी सहारा है।
हरि ओम यहाँ तू यहाँ कहाँ, अब है कल हो ना पता कहाँ।
जो नीर बहें वह चढ़ा उसे, जप खेल उसी का जान यहाँ।

हरि हरि जप मन तू कर ले तप, कठपुतली उसकी वह ही सब।
मैं हटा सुमर उसको चल ले, तू कौन यहाँ जाने सब रब।
हरि हरि जप ले विश्वास करो, इस दिल को मिल जाये चैना।
हरि बिन रोती है यह अंखियां, मैं सांच कहूँ सुन ले बयना।

हरि प्रीति बढ़े यह नयन झरे, दिल का मुरझाया सुमन खिले।
बहता जाये वह बना लहर, मर्जी सागर वह लिये चले।
हरि हरि जप मन उसका ही सब, स्वप्निल दुनिया है यह सारी।
मैं कौन यहाँ उसकी लीला, मैं छोड़ वही है दुखहारी।

100

क्यों इन्तजार हमको, आयेगा वह मिलने।
नयन ने नीर गेरा, न कह सका हो अपने।
बहे लहर है बहती, जाये कहाँ ठिकाना।
सागर मर्जी बहती, जहाँ है वह ठिकाना।

हरि गीतों को गा ले, मर्जी उसकी चलती।
आये उसकी मर्जी, जायें उसकी चलती।
करो भरोसा हरि पर, दो दिन खेला सारा।
पागल बन क्यों फिरता, जप नाम वह अधारा।

हरि को जपो खिवैया, मन में जलन न होगी।
सब कुछ उसका जानो, अपनी नहीं चलेगी।
कितनी योनी जग में, मन घूमती फिरें है।
नियति सभी की अपनी, अंखियां यहाँ झरें है।

हरि एक नाम सांचा, सबने इसको वांचा।
पतवार दे हरी को, ले कर मैं क्यों नाचा।
हरि हरि जप ले मनुआ, वह खेले है छलिया।
उसके चले इशारे, मैं छोड़ो पड़ पैयां।

101

हरि दर्शन को तरसे अंखियां, वह न मिले ढूंढू मैं छलिया।
मेरी तेरी प्रीति पुरानी, क्यों तड़फावे मुझको रसिया।
नाम तुम्हारा प्यारा लागे, अमी झरत जियरा खिल जावे।
दास बना लो मुझको अपना, नित उठ दर्शन तेरे पावे।

पी पी रटूं पिया ही प्यारा, उस बिन सारा जग यह खारा।
दिल की मेरी कौन सुनेगा, पी न सुने जग से मैं हारा।
बहते आंसू हार चढ़ाऊँ, बता तुझे कैसे समझाऊँ।
अब मुझसे पी रहा न जाता, बाह बढ़ा दे तुझे मनाऊँ।

नाम तेरे की जपूं माला, मुझे पिला दे अपनी हाला।
खो जाऊँ बस सुपने तेरे, छोड़ नहीं अपना ले लाला।
पी पी रटू मोहि तू भावे, क्यों ना मुझसे प्यार जतावे।
बनी विरह में पागल मैं तो, पल पल मेरे आंसू आवे।

102

यह नीर है बहते रहे, आये न तुम हम क्या कहे?
हरि जान लो मैं हूँ अबल, बस कुछ नहीं आंसू बहें।
सर्जक पालक हो तुम्ही, तेरा यहाँ पर राज है।
सब जीव चाहे तुझ कृपा, तू शक्ति का भण्डार है।

तेरी लगे यादें मधुर, खोई हुई मेरी डगर।
तम में जला दे दीप तू, मैं पा सकू तेरी खबर।
संसार के स्वामी तुम्ही, तुम बिन बता किसको कहें।
नज़रे उठा कर देख लो, इन नयन से आंसू बहें।

तुम बिन नहीं लगता जिया, मैं खोजता तुमको पिया।
लग रहा डर रात काली, अब तुम जला दो हरि दिया।
हरि कृपा मिल जाये तेरी, आशा तुझ पर है मेरी।
अंधेरा है डगमगाती, पार करो नौका मेरी।

103

आंसू आये तुम मिलो नहीं, किसको अब दर्द दिखायें हम।
जब तारनहार छिपा बैठा, अब किसको यहाँ मनाये हम।
यह नीर बहें ना कभी रूके, यह बहें सदा जब तक जीवन।
इसमें ही तेरा प्यार छिपा, ना रूके कहूँ तुमको भगवन।

यह विरह लगे तेरा प्यारा, दो दिन का जीवन बीतेगा।
तेरी यादों में मिटूँ सदा, प्राणों में मेरे गूंजेगा।
तुम बिन सारी दुनिया नीरस, आंसू बहते मेरे झर झर।
मैं हाथ जोड़ कर द्वार खड़ा, तू देख मुझे ले अब हरि हर।

तुम मिलो न महके यह बगिया, कह दे कसूर है क्या छलिया।
जाता जीवन राह निहारूँ, आती भर भर कर यह अंखियां।
हरि सदा मनायेंगे तुमको, आती सांसें यह जब तक है।
इन सांसों का तू ही मालिक, दे ज्ञान हमें अज्ञानी है।

104

हरि सदा जपेंगे हम तुमको, ना इन्तजार करवा, अब आ।
नयनों से बहता है पानी, दिल क्यों पसीजता ना, अब आ।
हरि दास तुम्हारे रोते हम, क्यों आंख मूंद कर सोते हो?
तुम बिन ना दिल का कमल खिले, दे प्यार हमें तड़फाते हो।

प्यासे है प्राण पुकार रहे, तुम बिन जीवन क्यों यहाँ रहे।
कण में बास तुम्हारा जब, क्या खता बता क्यों छिपा रहे।
तू रास रचा ले अब रसिया, मैं छला गया तेरी दुनिया।
कुछ पल महके, जीवन चहके, कुछ पल बाकी सुन ले छलिया।

हरि हरि की धुन प्यारी लागे, बन्शी की धुन सुन मन नाचे।
संगीत दिशाये गाती हैं, अब देर न कर तू क्या सोचे?
आंसू बहते इन नयनों से, जल में रह कर भी हूँ प्यासा।
हरि प्यार मुझे तू अपना दे, मेरे जीवन की तू आसा।

105

ओम तू है कौन कह दे, बहती आंखों से धारा।
मैं भटकूं जग के अन्दर, तू बना मेरा सहारा।
मैं जपूं तुमको यहाँ पर, अंखियां आती यह भर भर।
ना सहारा और कोई, देख ले नज़रे उठा कर।

प्यार तेरा चाहते हैं, रोती हैं मेरी अंखियाँ।
भूल ना जाना मुझे तुम, पड़ता मैं तेरे पैंया।
नाचता ब्रह्माण्ड सारा, बना तू ही सृजनहारा।
मैं मनाऊँ तुझे कैसे, चल रहा दे दे सहारा।

लाज रखना प्रभु सदा तुम, दास हूँ मैं तो तुम्हारा।
नाव यह जाये कहाँ पर, तू खेवट मैं तेा हारा।
नयनों से बहता पानी, शरण में रख मैं न ज्ञानी।
मैं लिये झोली खड़ा हूँ, तू सदा का नाथ दानी।

106.

ओम हरी हर ओम हरी हर, हरि ही हैं इस जीवन के धन।
हरि बिन नीर बहायें अंखिया, बरसे ऐसे जैसे सावन।
बालक हरि का कुछ ना जानूं, नीर बहा बस रोना जानूं।
लाज रखेगा इस मेले में, सेवक हरि का यह मैं मानूँ।

ओम ओम की ध्वनि जब गूंजे, प्रीति उसी की दिल में उपजे।
मोह हरे स्वप्निल दुनिया सब, मिटते भय जो हरि को पूजे।
गाते गाते गीत उसी के, लय हो जाते इस मेले में।
चिन्ता मिटती अंखियां झरती, बस जाते जब हरि नयनों में।

जपते रहो न भूलो इक पल, सदा चाह मन उसका सम्बल।
सारे जग का वही रचियता, प्यार चाह मन उसका हरपल।
हरि हरि जप मन सदा सुमर तू, जाता जीवन अब ना भटके।
बीत जायेगी काली रैना, जप मन हरि में अमृत टपके।

107.

ओम जप खिलता कमल, प्राण हो जाते मगन।
सकल चिन्ता त्याग कर, मन उसी का कर भजन।
ओम जप ले ओम जप, ओम ही जपते रहो।
शान्ति का सागर यही, दुख मिटें जपते रहो।

उस बिन न चैन आवे, जप मिल जायेगी छाया।
नाव तेरी पार हो, कर भरोसा खिवैया।
कितना भटको जग में, सूखते आंसू नहीं।
जपे जो भी ओम को, चैन मिलता सब कहीं।

नाव इसकी बैठ जा, दुख मिटे वह सहारा।
प्यार मन उससे बढ़ा, ओम का नाच सारा।
नयन को देखो उठा, सभी उसका नजारा।
ओम को जपते रहो, बह रही ओम धारा।

108.

मन ओम जपो जप इसे लखो, मिट जाती सारी ही पीड़ा।
जप ओम लहर बन कर बह ले, सब जान उसी की है क्रीड़ा।
यह कठिन डगर मन ओम कहो, मन चाह शान्ति की ओम कहो।
सब मिल मिल यहाँ विछुड़ते है, तू एकाकी मन ओम कहो।

दरिया में लहरें भाग रही, सुपने सबके न रूकें कहीं।
मिल यहाँ विछुड़ जाते सारे, मन ओम जपो सब जगह वही।
जपता जा चलता जा मग में, दुनिया पागल है इक सुपना।
जो दर्द छिपा है सीने में, मन जान यहाँ क्या है अपना।

जप ओम ओम जप ओम ओम, जप बाहर भीतर ओम ओम।
मर्जी उसकी मन समझ ओम, आना जाना सब ओम ओम।
मन जपता जा है मार्ग यही, तू नहीं यहाँ सब जगह वही।
तू सौंप स्वयं उसके हाथों, मर्जी उसकी दे चैन वही।

109.

क्या मेरा सब है तेरा, ओम जपें ओम ओम।
ले चलो किस्ती हमारी, प्यारे तुम ओम ओम।
नयन में आंसू हमारे, विछुड़ कर नाथ हारे।
जगत के तुम ही रचैया, बल दो पहुँचे द्वारे।

गीत हर पल उठें तेरे, सुगम पथ तुझे टेरे।
लाज को प्रभु राखना तुम, दूर करो तम घेरे।
मैं अबल अज्ञान में हूँ, ज्ञान मिले ओम ओम।
तुझे हम सुमरें सदा ही, भूले ना ओम ओम।

लहर हम सागर तुही है, बल लहर का तो तुही।
इक पल न भूले हम तुझे, देख ले संग में तुही।
नाथ कठपुतली तुम्हारी, नाचे हम मैं, हारी।
बरसे नयनों से आंसू, प्यार चाहूँ मुरारी।

110.

बीत रहे दिन तुम ना आये, दिल को कैसे बता लगायें?
अंखियां नीर बहावे हरपल, चाहे प्यार तुम्हारा पायें।
पी पी रटूँ ध्यान हरि तेरा, काली रैना छिपा सुबेरा।
दास तुम्हारा भूल न मुझको, बहे नयन से मेरे धारा।

जीवन देने बाले दाता, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।
बाट निहारूँ हरपल तेरी, चैन नहीं इस दिल को आता।
हरि हरि गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, चाह यही बस तुझे मनाऊँ।
ढलती जाती है यह संध्या, तुझ चरणो में शीश नवाऊँ।

तोड़ी प्रीति भटकता जग में, घेरे तृष्णा मुझको मग में।
व्याकुल हो मैं तुझे पुकारूँ, थामों मुझे गिरा हूँ पथ में।
कठपुतली तेरी नाचे हम, फिर भी लगता जैसे हैं हम।
बिना कृपा न हटे अंधेरा, सम्बल दो ना मुझमें है दम।

हरि हरि जपे तुम्ही बल देना, ना मुझमें कुछ बरसे नयना।
लाज राखना इस मेले में, प्रीति बढ़े नित तुझमें बहना।

111.

खिल कर यहाँ होवे विलय, मेरी हरी तुमसे विनय।
नयन में रहना सदा तुम, मेरी यही होगी विजय।
एक तुम ही हो सहारे, जग में हम जब भी हारे।
लाज मेरी राख लेना, शरणा हूँ तेरे द्वारे।

तुम बिना चैना न आये, तपस मग की जिय जलाये।
आंखों से बहता पानी, चाह तेरे चरण धोयें।
मुँह न मुझसे फेरना प्रभु, थक गया मैं मार्ग दूभर।
सब जहाँ के तुम्ही मालिक, आँख झरती यहाँ झरझर।

दीप मन्दिर में जलाऊँ, चाह तेरे पास आऊँ।
जी रहा अज्ञान में मैं, अबल हूँ कुछ कर न पाऊँ।
नीर बहते देख लो तुम, और क्या तुमको सुनाऊँ?
बालक तेरे माफ करना, व्यथा अपनी रो बताऊँ।

112.

क्या है दुनिया क्या हैं हम, यह समझ न पाये गम।
बिन हरि की प्रीति मनुआ, खिल सकें इतना न दम।
अजनबी बन कर यहाँ बह, प्रीति किससे क्या करे।
क्या शिकायत है किसी से, वासना निज ले फिरें।

नाच कितना तू दिखाले, डोर उसके हाथ में।
सुरति मन उसकी लगा ले, ना डरे मझधार में।
बोल हरि हरि दुख मिटेगे, बन लहर बह ले यहाँ।
नाचता सागर यहाँ पर, जान बल कितना यहाँ।

चाह बस उसकी कृपा ही, ज्ञान उसके बिन कहाँ?
कर्म शुभ हो कर विनय यह, भूल हरि भटके कहाँ?
चल रही मर्जी उसी की, देख ले तू स्वयं को।
हरि चरण का दास बन जा, कर समर्पित स्वयं को।

113.

प्यार तेरा सदा चाहें, देख लो हरि नीर बहते।
तुम बिना न शान्ति जग में, दिल तड़फता तुझे कहते।
खोजे तुमको प्रभु हम, सब तरफ छाया अंधेरा।
दीप जल जाये कृपा हो, तुम बिना न हो सुबेरा।
दो सहारा मांगते हैं, डगमगा रही है नौका।
बनो खेवट पार कर दो, पीठ न कर दे दे मौका।
अश्रु नयनों से बहें प्रभु, ना रूके बहते रहें यह।
तुम मिलो जब तक नहीं हरि, खोजते तुमको रहे यह।
दास तेरा तू सहारा, खो रहे स्वर पर पुकारा।
घूमता अनजान राहें, चाह बन जाऊँ दुलारा।
बरसें यह मेरे नयना, घट के वासी क्या कहना।
पर व्यथित हो कह रहा हूँ, मुँह न मुझसे मोड़ लेना।
मन मन्दिर में बिठा लूँ, बीते यह काली रैना।
बस जा नयनों में मेरे, डर लगे न चलता सुपना।
जानते हम ना किनारा, बह रही संसार धारा।
चाह पकडूं नाव तेरी, मैं अबल हूँ नाथ हारा।

114.

तुम सर्जक तुम ही पालक, कौन मैं जो कुछ कहूँ प्रभु।
पीड़ जो दिल में उफनती, तुझ बिना किससे कहूँ प्रभु।
दास तेरे प्यार देना, बहते हैं मेरे नयना।
सृष्टि के मालिक तुम्ही हो, तप्त राहें छाँव देना।
न पता कोई तुम्हारा, खोजता मैं नाथ हारा।
अबल मैं बलहीन हूँ प्रभु, रो रहा तुमको पुकारा।
बैठ चरणों में तुम्हारे, नीर से मैं चरण धोऊँ।
पूछता अपनी खता को, मैं विछुड़ दिन रात रोऊँ।
दिल नहीं लगता हमारा, ना भटका मैं तो हारा।
लो शरण अपनी मुरारी, बहती नयनों से धारा।
पाप क्या है पुण्य क्या है, गणित सारा तुझे आये।
कैसे तोडू. कर्म बन्धन, जानूँ न बस नीर आये।

कर दया सब जीव घूमें, ना अकेला मैं यहाँ हूँ।
दिल तड़फता कह रहा बस, इस जगत का तू मही है।
प्यार देना प्यार चाहे, प्यार की भूखी मही है।
नयन में हरि बसो मेरे, चाह बस मेरी यही है।

115.

प्यार करो हरि से पागल, नही लिपट दुनिया काजल।
माँग ना दे प्यार सबको, छायेंगे सुख के बादल।
जा रहे सब भागते हैं, देख ले कोई न पीछे।
किसे फुरसत राह देखे, क्यों न अपने नीर पोंछे।
पीड़ मन किसको दिखाये, दर्द ले सब बहे जायें।
पोंछ आंसू छोड़ आशा, जी ले मन हरि के साये।
जपो हरि को शान्ति देगा, बुझा भी दीपक जलेगा।
सब उसी का खेल जग में, जोड़ नाता साथ देगा।
साथ तेरे भूलता क्यों, भूल यह तुझको रूलाती।
नाचता सागर लहर तू, देख अन्तस क्यों न पाती।
उठ रही लहरें अनेको, जोर उनका देख कितना।
नाच सागर ही नचाये, छोड़ मैं को यहाँ बहना।

116.

नाचते हो कर विवश सब, नाथ यह सब देख हारा।
घूमता अज्ञान में मैं, शरण तेरी मैं पुकारा।
नीर आंखों से बहें हैं, तुम बिना किसको कहें।
अर्चना के फूल सूखे, पीड़ा बता कैसे कहें।
लाज रखना दास तेरा, कुछ नहीं है नाथ मेरा।
ले यहाँ तृष्णा भटकता, जानता ना खेल तेरा।
पार नौका को लगाना, थक गया मैं नाथ हारा।
आ रही सांसे जो मेरी, स्वर बजे केवल तुम्हारा।
बह रही नदिया न जानूं, ले हमें कहाँ जायेगी।
सुरति तुझमें ही लगी हो, पीड़ा कम कर जायेगी।
शक्ति हरि देना हमें तुम, तुमको सदा जपते रहें।
याद तेरी ही लिये हम, चलते रहे नयना बहें।

देखता हरपल बदलता, क्या लिये अरमान चलता।
डूब जाऊँ बस तुझी में, डर मिटे फिर क्या है चिन्ता।
नयना बस जाओ मेरे, टूट जायें कर्म घेरे।
दास मैं तो हरि तुम्हारा, लो शरण न मुँह को फेरे।

117.

जग से प्रीति करे दुख होई, हरि बिन अंखिया जी भर रोई।
बस अपने ना पकड़े सब कुछ, मैं मिटता मैं लेकर रोई।
कुछ पल का तू बना मुसाफिर, मन हरि जप ले जपता ही जा।
ज्ञान ध्यान सबका वह मालिक, सोंच उसी की मन तू झुक जा।
लहरें भागे हाथ न आये, हरि बिन कैसे मन समझाये।
लिये वासना सब ही अपनी, झिलमिल करती नाच नचाये।
हरि हरि जप ना और कहीं सुख, कैसे कैसे खेल खिलावे।
सुख दुख के पहियें पर घूमें, करो विनय हरि पार लगावे।
सत्य यहाँ सागर ना तू है, लहरें भटक भटक पर जावे।
विनय करो सागर ही सच है, ज्ञान मांग जिय ना तरसावे।
हरि बिन पार न होवे नौका, सत्य कहूँ पथ और न दूजा।
बसे नयन में मिटते सब भय, सुरति न छूटे मन कर पूजा।

118.

दुख ना मिटते प्रीति बिना हरि, प्रीति बढ़ा दो करूँ विनय हरि।
बस जाओं मेरे नयनों में, प्राण पुकारें तुमको ही हरि।
अबल नाथ मैं अज्ञानी हूँ, कैसे तेरा ध्यान लगाऊँ।
ठगनी माया मुझे नचावे, खा खा ठोकर नीर बहाऊँ।
जीवन नदिया बही जा रही, ना छल कर मुझसे ओ छलिया।
दास बना ले मुझको अपना, दुख हर ले पड़ता मैं पैयां।
पी कर प्रेम प्याला तेरा, इस सारे जग के भूलूं गम।
तेरी दुनिया तू ही जाने, मुझे सहारा दे दो ना दम।
मान यहाँ अपमान यहाँ है, तड़फे जियरा छिपा कहाँ है?
पल पल रंग बदलती दुनिया, तुझमें ही आनन्द छिपा है।
मुझे पिला दे अपनी हाला, मिट जायें सब यह गम लाला।
किसके पीछे भाग रहा मैं, अन्धकार हर करो उजाला।

119.

मांगता तेरी दया को, चाहता क्या जानता ना?
वासना ले कर भटकते, जानते अस्तित्व कुछ ना।
हरि कृपा रखना सदा तुम, बहता नयनों से पानी।
ना भुलाना याद अपनी, बीत जायेगी कहानी।
चल चल खाते हैं ठोकर, ज्ञान दो तो संभल जायें।
सृष्टि तेरे गीत गाती, लाज राखो शरण आये।
ना कभी तुम रूठ जाना, कर रहा पूजा जमाना।
पास में कुछ भी नहीं है, चाह तेरा प्यार पाना।
कर रही आँखें प्रतीक्षा, कब मिटेगी दुःख घड़िया।
ध्यान तेरे लीन हो कर, पाऊँगा विश्राम सैंया।
पथ तुम्हारे ही चले प्रभु, आँख ना मुझसे चुराना।
अबल हम अज्ञान में हैं, जब गिरें हरि थाम लेना।

120.

हरि तुम राखो लाज हमारी, तुम बिन मेरा जिय अकुलाता।
कण कण में हरि तू ही बसता, जल में रह क्यों प्यासा फिरता।
अगम अगोचर पार न तेरा, मनुआ भटके खोजे डेरा।
अपनी दया बनाये रखना, नयन बसो हरि दास तुम्हारा।
घूम रहे हरि इस मेले में, तुम ही मेरे एक सहारे।
मेरी अंखियां नीर बहाये, सुनो न तुम फिर किसे पुकारे।
जीवन एक पहेली माना, चाहूँ भूलूँ गम रखबाला।
प्यास मिटे ना प्यासा हूँ मैं, मुझे पिला दे अपनी हाला।
सर्जक मेरे जीवन पालक, जियरा मेरा करता धक धक।
नमन करो स्वीकार हमारा, थक ना जाऊँ पहुँचू तुम तक।
जपें हरि अमृत वर्षा दे, सदियों की तू प्यास मिटा दे।
बहती नयनों से हैं गंगा, ढूंढ रही पथ उसे दिखा दे।

121.

जप हरि जप हरि जप ले तू मन, और सहारा ना कोई है।
चाहत कितनी कर ले जग में, अंखियां नीर बहा रोई हैं।
जप हरि जप हरि जपता ही चल, कोई जग में नहीं किनारा।
हरि की मर्जी में जो बहता, मिटती फिकर नाचती धारा।

दर्द यहाँ दुनिया का क्या है, जो चाहे वह हो ना पाये।
दर्द करे स्वीकार यहाँ जो, नहीं शिकायत फिर रह जाये।
जप हरि मन है नही यहाँ कुछ, उसकी मर्जी से है आना।
मेला दो दिन का यह सारा, ले जाये कब किसने जाना।

हरि जप हरि जप चैन मिलेगा, टूटे दिल की वह ही आशा।
अंधियारी रातों में भी मन, जप ले उसको मिटे निराशा।
जप हरि जप हरि प्रेम बढ़ाले, मैं को मिटा रजा में बह ले।
कठपुतली तू जान उसी की, समझ इशारे उसके जी ले।

122.

कितनी पीड़ा दर्द यहाँ है, तुम बिन मनुआ भटक रहा है।
इस जीवन को देने बाले, बतला तो दे छिपा कहाँ है?
कांटे बिखरे यहाँ धरा पर, फिर भी सुमन यहाँ खिलते हैं।
थोड़े से जीवन को जीकर, दे सुवास फिर वह मिटते हैं।

ऐसा ही हरि जीवन देना, सदा नयन में मेरे रहना।
प्रीति जगाओ बरसे नयना, बहूँ तुझी में तुझमें सोना।
नीर नहीं आंखों के सूखें, प्राण प्यार के हैं यह भूखे।
मेरे साहिल मुझे न भूलो, विनय करूँ मोहि रस्ता दीखे।

दिल मेरा बैचेन हुआ क्यों, मुझे सुना दे बंशी के स्वर।
दीन बन्धु तुम जग के पालक, लहराये करूणा का सागर।
हरि हरि करें अर्चना तेरी, करो उजाला रात अंधेरी ।
तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, अंखियां रोवे करो न देरी।

123.

जो भी चाहें वह ना होवे, फिर भी तो हम ब्रह्म कहावें।
कण कण में जब बसा हुआ है, समझ सकें ना नीर गिरावे।
लहर विवश नाचे सागर में, सत्य लहर सागर कहलावे।
जोर यहाँ पर उसका कितना, बिना मिटे ना सागर पावे।

चल चल गिरते थकते टूटें, मृगतृष्णा पर सदा नचावे।
जो भी मिला उसे स्वीकारों, हरि जप वह ही पार लगावे।
लहरें भटक रही सागर में, ढूंढ़ रही अपनी मंजिल को।
नयनों के आंसू सूखे ना, पूछें कहाँ मिले सागर को।

चाह इस जीवन में हंसना, पर दिल रो बेहाल हुआ है।
तैर रहे आंखों में सुपने, इनको कोई लूट गया है।
तुम हो सागर हम है लहरे, करो सदा विनती सागर से।
नचा रहा तू ही हम सबको, ज्ञान हमें दो अलग न तुमसे।

124.

हरि बस जाओ नयनों में, नहीं हेाना जुदा मुझसे।
तुम्हारा दास हूँ हरि मैं, नहीं हेाना खफा मुझसे।
लहर उठती यहाँ गिरती, खिलाता खेल कैसे तू।
बरसते आंख से आंसू, छिपा बैठा मदारी तू।

तुम्हारा प्यार पा जाये, खिल जाये मेरी बगिया।
बिना तेरे जहाँ सूना, नहीं लगता मेरा जिया।
नहीं बल मैं तुझे पाऊँ, मनाऊँ कैसे न जानूँ।
ढरकते नीर नयनों से, शरण तेरी यही मानूँ।

मुझे ले चल भुलावा दे, जहाँ मर्जी तू ले जाये।
बसे रहना नयन में तुम, विनय संग छूट न जाये।
तेरी पीता रहूँ मदिरा, यहाँ के सब भुला कर गम।
कट जायेगी रैना यह, न अपना प्यार करना कम।

125.

जख्म इस दिल में लगे जो, किसे दिखलाये यहाँ हम।
पूछते यह नीर मेरे, चाह क्या आये लिये हम।
चाह थी तुम साथ चलते, हर कदम पर फूल खिलते।
ना मना पाये तुझे हम, भाग्य कैसा हाथ मलते।

लुट गया संसार मेरा, ना उठा कर आंख देखा।
बनते निर्मोही इतने, आँख में न प्यार देखा।
चलते खो जायेगे हम, ना करें शिकवा कभी भी।
पीड़ गीतों में छिपी जो, गुनगुना लेना कभी भी।

आता पीछे से रेला, छूटते सब कूल सारे।
दर्द दिल का यह रहेगा, हो सके ना तुम हमारे।
सांझ ढलती जा रही है, आ निशा लग जा गले से।
प्यार से वंचित रहा मैं, फिर कहेगे ना किसी से।

126.

हरि भक्ति हरि कृपा से होई, जपता जा चाहे वह होई।
तेरे हाथों नहीं यहाँ कुछ, तुझकों हरपल नाच नचाई।
कितने देखे स्वप्न यहाँ पर, बने मिटे आंखे आई भर।
प्रीति लगा ले मनुआ हरि से, नहीं यहाँ रहना तेरा घर।

हरि हरि जपो ज्ञान वह देगा, ताप हरे शीतलता देगा।
पल पल रंग बदलती दुनिया, हरि बिन चैन नहीं आयेगा।
जप हरि साथ उसी का सांचा, दुख में देवे वहीं दिलासा।
अंधकार के बादल में फंस, तड़फे जियरा लिये निराशा।

हरि जप हरि जप मन जपता जा, नयन बहें पर छोड़ उसे ना।
फूल खिलेंगे इस जीवन में, तज हरि ना जीवन है सुपना।
किसकी पागल करे प्रतीक्षा, भागे लहर हाथ न आये।
हरि में खेले हरि में जीवे, अन्तस में जा हरि लहराये।

127.

हरि मैं तुमसे प्रीति बढ़ाऊँ, मिटा अंधेरा दीप जलाऊँ।
आधि व्याधि ने तन को घेरा, दुख हरो मैं तुझे मनाऊँ।
जगत पालक तुम्ही सहारे, बुद्धि बल मैं सभी से हारा।
पार लगा दो मेरी नौका, अश्रु नयन में कर उजियारा।

नाच नचाये होनी हरपल, सारी दुनिया करती झिलमिल।
इस मेले में कहाँ खो गया, चैन न आवे गिरे नयन जल।
जीवन तेरा कुछ ना मेरा, चाहूँ इतना छटे अंधेरा।
तुझे उचारे मेरी सांसें, प्राण कहें बस तू है मेरा।

जनम जनम से दास तुम्हारा, जानूं न मैं ठिका तुम्हारा।
कण में तुम बसे हुए हो, नयन बहावे जल क्यों खारा।
अपनी दया बनाये रखना, बहते नयन यही बस कहना।
अज्ञानी हम स्वामी हो तुम, प्यार हमे दो प्यासे नयना।

सुमरे हरि को चिन्ता छूटे, सोंच मिटे मन हरि को जप ले।
दुख भंजक सब सोंच मिटेगी, कर विश्वास हरी मन जप ले।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान का वह ही मालिक।
बनो लहर नाचों सागर में, छिपा वही जप पहुंचों उस तक।

128.

किस कोने में बैठे हरि तुम, जग को नाच नचाते फिरते।
दिल को यहाँ लगाते फिरते, टूटे दिल आंसू फिर गिरते।
जीवन नदिया बहती जाती, नये नये नित सुपने बुनती।
क्षण में सबकी होली जलती, ठगनी माया पर ना थकती।

इतनी पीड़ा दर्द यहाँ है, ना पसीजता तेरा दिल क्यों?
तू भी हमसे दूर हुआ है, खोज रहे फिर भी तुमको क्यों?
इस विशाल जंगल में खोजें, चल चलकर फिर गिर गिर जावे।
अंखियां खोजे एक सहारा, और न कोई तुम बिन पावे।

लाज राखना इस मेले में, अंखियां रो बेहाल हुई है।
निष्ठुर ना बन इतना छलिया, इस मेले में ठगी हुई है।
अब तो तेरा एक सहारा, दुख दे सुख दे तेरी मर्जी।
नयना रोते तुझे पुकारे, सुन ले अब तो मेरी अर्जी।

हरि हरि ध्यान करे हम हरपल, चाहूँ इसमें बढ़ता जाये।
हरी नाम की पी कर मदिरा, सभी भूल गम लय हो जाये।
दया तुम्हारी चाहें हरदम, बना अजनबी अब ना सोवे।
थाम मुझे ले हाथ बढ़ाकर, ढलता दिन अंखियां यह रोवे।

129.

सुनो हरि हर तुझे बोले, नगमें गा तेरे जी ले।
सदा तू ही यहाँ है सच, तेरी मदिरा हम पी ले।
मिटे अज्ञान जो घेरे, सुने वंशी के स्वर तेरे।
बढ़ा दे हाथ अपना तू, मिले पथ दास हैं तेरे।
लगा दे पार यह नैया, नहीं कोई खिवैया है।
ढरकते नयन से आंसू, मेरे जीवन की आशा है।
तुम्हारा प्यार जब मिलता, उमड़ते नयन में बादल।
तन मन होता सब पावन, बहे धारा वह गंगाजल।
नयनों में मेरे आंसू, लिये वह याद चलते है।
सहारा बस मुझे इनका, यही तो पास लाते है।
बहे नयनों से यह गंगा, नहीं हरि भूल जाना तुम।
मेरी सांसों में बहना, नहीं पल भर विलग हो हम।

130.

हरि हरि सुमरे हरि मनावें, हरि ही तो अज्ञान भगावे।
मेरे देव हरि तुम न रूठो, तुम बिन ज्ञान कहाँ से आवे।
चल चल थकता भूलूं सजदा, कैसे मन को चैना आये।
पाप पुण्य सुख दुख की भाषा, समझे ना आंसू ढरकाये।
उठे लहर सागर में गिरती, आशायें कितनी ले चलती।
स्वप्निल सी सारी यह दुनिया, मोह नहीं फिर भी यह तजती।
ज्ञानी ना मैं कुछ भी जानूँ, प्यासा हूँ मैं मांगू पानी।
प्राण पुकारे मेरे तुमको, छिप ना मेरे औघड़ दानी।
जप ले हरि मन प्यास मिटावे, तड़फे जियरा तू अकुंलावे।
सकल सृष्टि का वह ही मालिक, पकड़ चरण तू क्यों सकुचावे।
जप ले हरि पथ बने सुगम सा, आया जगत न मंजिल जाने।
नयन बहावे हरपल पानी, पागल बन न घूम दिवाने।

हरि बिन पीड़ा किसे दिखाऊँ, अज्ञानी मैं जान न पाऊँ।
इन नयनों से बहता पानी, गहरी कीचड़ उवर न पाऊँ।
बस कुछ ना हरि चलती तेरी, दुख हर लो कठपुतली तेरी।
जनम जनम का दास तुम्हारा, पार लगा दो नैया मेरी।

131.

मेरे मन्दिर में हरि बसना, दिल के सुमन चढ़ाऊँ।
ज्ञान ध्यान तुम सबके मालिक, हरि सुवास मैं पाऊँ।
जीवनदाता जीवन तेरा, ना गुमान में जाऊँ।
नीर बहे जो इन अंखियों से, तेरे चरण चढ़ाऊँ।
तुम बिन कृपा चला ना जाये, अपना शीश झुकाऊँ।
नैया मेरी खे दे खेवट, आंसू हार चढ़ाऊँ।
अज्ञानी अनजानी गलियां, ज्ञान कहाँ से लाऊँ?
अबल नाथ मैं जग के स्वामी, चाह प्यार को पाऊँ।
हरि हरि सुमरें तुमको ध्यावें, गीत तुम्हारे गाऊँ।
अन्तर्यामी जग के पालक, निज पीड़ा दिखलाऊँ।
शरण राखना हरि तुम अपनी, नीर करे यह पूजा।
सदा हमारे दिल में रहना, तुम सा और न दूजा।

132.

क्या पाना और यहाँ खोना, पगले पीड़ा को तो हरना।
अंधियारी रात डराये जब, मन में हरि को जपते रहना।
पल पल में रंग बदलते है, स्वप्निल सारी है यह दुनिया।
किसको पकड़े किसको छोड़े, मिटता तन कर ले याद पिया।
हरि जप मर्जी उसकी चलती, देता विवेक बुद्धि चलती।
हरि बिन तड़फे ना चैन मिले, कितनी जग में करले गिनती।
करूणा का दीप जला दिल में, करूणा सागर वह कहलाता।
जैसी भी तेरी पूजा हो, मन जान वही वर मिल जाता।
हरि नयन बसा ले प्यार बढ़ा, प्यारी यह सारी दुनिया है।
जो हुआ समर्पित हरि हाथो, खेले रोवें ना अंखियाँ है।
हरि जप हरि जप है शान्ति वहाँ, प्यासे को पानी मिले वहाँ।
बैचेन लहर काहे बिलखे, अन्तस में सागर छिपा यहाँ।

133.

ताप हरे सुख पावे जिवड़ा, हरि हरि जप वह प्रियतम प्यारा।
जो भी उसकी शरण गया है, मिटते भय ले जाती धारा।
नयना भीगे, गा हरि को मन, दिल का वह ही सुमन खिलाये।
आनी जानी इस दुनिया में, कातर बन क्यों समय गवाये।

आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में भूल तड़फता।
जो सुमरे हरि को हरपल है, स्वीप्निल दुनिया डर ना लगता।
और न सांचा साथ जगत में, छूटे जाते सभी सहारे।
पीता जो उसकी मदिरा को, नयन बसे मिटते दुख सारे।

जप ले हरि को चैन मिलेगा, दन्श तेरे सब वह ही हरेगा।
सारे जग का वह ही मालिक, जला दीप हरि, तिमिर मिटेगा।
जपता जा मन कभी न थकना, साथ जान ले तेरे सजना।
हरि बिन सफर महादुखदाई, खोल आंख जीवन है सुपना।

134.

जप ले हरि को वह दुख भंजक, नहीं कटेंगे उस बिन संकट।
दौड़ लगा ले जग में कितनी, ताप हरे जप नैया खेवट।
जप ले हरि जपता ही जा, स्त्रोत यही सुख का पागल मन।
अंखियां बरसे, खिले कमल पर, जो जपता हरि को हरपल मन।

सांस सांस में हरि को जपलो, देखो दुनिया चुप हो जी लो।
अपना कौन पराया जग में, लीला उसकी वन्दन कर लो।
जग में दौड़े किसके पीछे, अंखियों के तू नीर दिखावे।
जप हरि को मन शान्ति मिलेगी, उसके बिन ना चैना आवे।

आशायें कितनी ले पकड़े, नयना भी यह रिमझिम बरसे।
पकड़ ना आये कोई यहाँ, चाहत को लेकर दिल तरसे।
बहती लहर लिये चाहत को, अन्तस खोजे ना सागर को।
छोड़े चाहत खोजे सागर, घूमे जग में लेकर पिव को।

135.

लहर न खोजे अन्तस सागर, मिटती भटकन हरि की माया।
हरि का जिसने जाम पिया है, दुख मिटते रोवे ना काया।
सुमरण हरि का मन करता चल, सारी दुनिया करती झिलमिल।
पल पल में हैं रंग बदलते, नाम जपो यह दुनिया स्वप्निल।

जुड़ी रहे अन्तस सागर से, डर नहीं लहर को कहीं रहें।
सब ओर नाचता सागर है, उसकी मर्जी जिस ओर बहे।
पल भर भी ना भूले सागर, जप ले सदा यही है अमर।
कुछ पल का है खेल हमारा, बरसें नयना हैं यह झरझर।

आये यहाँ कहाँ को जाये, पल पल में जियरा घबराये।
हरि का नाम एक है सांचा, जप जप हरि में लय हो जाये।
जप लो हरि को आंखे खोलो, बीत रही कुछ बीत गई है।
हरि यादों में बरसें आंसू, नित होती फिर सुबह नई है।

136.

अनजानी डगर जाये किधर, तुम कृपा करो हरि दो रस्ता।
अज्ञानी हम दो ज्ञान हमें, नयनों से जल मेरे गिरता।
कण कण में यहाँ विराजे तुम, जल में रह कर भी प्यासे हम।
सूनी दुनिया लागे मुझको, ना छिपों प्यार को दे दो तुम।

सूखी पत्थर सी आंखों में, कैसे मैं फूल खिलाऊँगा।
झरने दे करूँ यही विनती, बह कभी तुझे तो पाऊँगा।
हरि हरि जपते रस्ता तकते, मैं चाह रहा तेरा साया।
क्यों रूला रहा मुझको इतना, मैं शरण नाथ तेरी आया।

तपती धरा बैचेन है दिल, क्यों विछुड़ गये कटते ना दिन।
इस रंग बिरंगी दुनिया में, लागे सब नीरस हरि तुम बिन।
हरि हरि बोले तुम बसो नयन, सुमरण तेरा कर लय होवें।
हरि हार गया मैं कृपा करो, तुममें जागे तुममें सोवे।

करूणा के सागर कहलाते, तुमसे ही सब जीवन पाते।
क्या दोष हमारा कह दो तुम, मर्जी तेरी सांसे पाते।
मैं दास तुम्हारा न ठुकरा, मन्दिर अपने हरि रख लेना।
जायेगी ढल यह भी संध्या, अपना हरि प्यार मुझे देना।

137.

जप ले हरि को मन जपता जा, ना और सहारा मत ठुकरा।
सुख शान्ति छिपी मन स्त्रोत यही, मन का खिल जाता है जियरा।
जब साथ यहाँ सारे छूटे, कहते हारे रोवें अंखियां।
हरि याद करे फिर नयन झरे, प्यारी लागे उससे बतियां।

जपले हरि यह दुनिया स्वप्निल, छट जाते है दुख के बादल।
नयनों में हरि की प्रीति बसे, आंखे ना फिर होती बोझिल।
नभ मौन यहाँ कुछ ना बोले, मर्जी तेरी जैसे जी ले।
प्राणों की प्यास समझ ले क्या, विछुड़े उससे कैसे पा ले।

सारी दुनिया करती झिलमिल, लहरें भागे खोजे रसिया।
अन्तस में सागर छिपा हुआ, बाहर दौड़े न मिले छलिया।
जपता जा हरि में ध्यान लगा, सांचा ही कहूँ तेरा पिया।
कर देगा नाव पार तेरी, जप ले हरि को ना जला जिया।

138.

बह ले मन बह हरि में खोजा, सब रंग बदलते पकड़े क्या?
उबले जब इस मन में पीड़ा, फिर देख हाथ में तेरे क्या?
हरि चरण बिना ना ठौर कहीं, जग में भटके ठोकर खाये।
हरि बिन मन समझ नहीं पाये, हरि सुमरे शान्ति यहाँ पाये।

हरि प्यार मिले फिर नयन झरे, सारे जग का वह रखवाला।
हरि भूल घूमते मैं को ले, ना मिटे जलन जलती ज्वाला।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, ना भूल उसे अब शाम ढले।
क्यों वर्तमान में उसे तजे, जपले हरि को दिल कमल खिले।

जीवन यह एक पहेली है, सुख दुख यह सभी सहेली है।
कठपुतली बन हम नाच रहे, अपनी मर्जी क्या चलती है।
जप कर मन विनती करो यहीं, तम हरो उजाला करो मही।
बालक तेरे शरणा तेरी, दो प्यार हमें ले चलो कही।

मन ज्ञान ध्यान का मालिक वह, जो समझ मिले जीवे उसमें।
हरि बिन कह ज्ञान मिले कैसे, सुमरे जाने सब हरि बस में।
प्रियतम प्यारा मन का रसिया, पी जाम खिले तेरा जीया।
जप प्रीति डोर में बांध उसे, क्या अपना वह देगा छैयां।

139.

हरि हरि सुमरो जग में जी लो, सब ज्ञान ध्यान का मालिक है।
मैं हटा जपे जो हरि को है, बन लहर यहाँ वह बहता है।
मन करो समर्पण हरि को ही, सब खेल उसी का चलता है।
मर्जी उसकी आना जाना, कुछ पल का ही तो मेला है।

कल बीता क्या कुछ तेरा है, यह जोगी बाला फेरा है।
हरि की दिल में जब प्रीति बसे, बरसे नयना सब हरि का है।
अनजान लहर बह चले किधर, न जान कोई जग में पाया।
सागर में नाच रही लहरे, ना लहर यहाँ सागर छाया।

तू कौन याद कर ले हरि को, सुखकर्ता वह दुख भंजक है।
हरि हरि जपले उसकी लीला, कण कण में वह ही बसता है।
निर्मोही बन जग में जी ले, क्या मोह करे क्या तेरा है।
बन लहर यहाँ सागर में बह, सब ओर उसी का घेरा है।

140.

हरि सदा जपते रहेगे, नयन से आंसू बहेंगे।
पायेंगे इसमें सब सुख, खोजते तुमको रहेगे।
क्यों यहाँ आये यहाँ हम, तेरे बिना ना हम रहें।
ले रहे सांसें यहाँ क्यों, तेरी कृपा को हम चहे।

प्यार आंखों में समाया, तुम बिना कुछ भी न भाया।
जलन ना मिटती हमारी, नयन में है नीर आया।
सांस यह जपती रहेगी, तुम हो निर्मोही छलिया।
आंख पथ देखें तुम्हारा, आयेगी कब मिलन घड़ियां।

अश्रु को स्वीकार कर लो, अज्ञान में है ज्ञान दो।
तुम जगत के हो रखैया, पार मेरी नाव कर दो।
हरि सेवक मैं तुम्हारा, इस जग से मैं हूँ हारा।
चाहता तेरी कृपा हूँ, अंखियों से बहती धारा।

141.

चाहत तज बह सागर में मन, चलती सागर की समझो मन।
अपना तेरा क्या सोंच समझ, नाचे कठपुतली सा तू बन।
जपे हरि हरि तेरा साहिल, अंखियां फिर ना होगी बोझिल।
दो दिन का यह रैन बसेरा, क्यों उलझ उलझ होता पागल।

मन जपो हरि कट जाये सफर, दन्श जगत के नहीं सतावे।
हरि ही खेले नाचों इसमें, तज मैं को फिर हरि ही पावे।
हरि हरि बोलो उसकी लीला, यहाँ कर रहा वह ही क्रीड़ा।
लहर फिरे ले अपनी दुनिया, दौड़े भागे ले ले पीड़ा।

हरि हरि जपो मिलेगा चैना, जान न कोई और ठिकाना।
बैठ इसी नौका में तू मन, बह ले मन इसमें ही बहना।
झरते आंसू फूल बनेगे, दिल में तेरे कमल खिलेंगे।
अपना कौन पराया जग में, द्वैत मिटे हरि साथ रहेगे।

142.

जपो हरि को द्वन्द सभी तज, सारे जग पर वह ही छाया।
जिसके दिल में हरि बस जाता, दुख पाती ना रोवे काया।
अपना कौन पराया जग में, रोवे और करे मन मैला।
कुछ पल मेला सुपना दुनिया, जपले हरि के हरि क्यों भूला।

हरि हरि जपो यहाँ सुख पाओ, बहती धारा में बह जाओ।
साथ छोड़ता जाता तन भी, कितना भी तुम इसे बचाओ।
जप हरि हरि तू सुपना दुनिया, पागल मन ले ले तू छैया।
जप हरि चैन मिलेगा तुझको, डर बिन पार लगेगी नैया।

हरि हरि सुमरो साथ वही है, नजर उठा हर जगह वही है।
मैं की हरपल होली जलती, सागर नाचे लहर नहीं है।
लहर बहे क्या उसका अपना, नाचे सागर सब है सुपना।
लहर जपे मिट देखे सागर, बहती जाये फिर क्या कहना?

हरि हरि बोलो साथ उसी का, संग और सब छूटे जाये।
किसके पीछे पागल दौड़े, साथ न तेरे कोई जाये।
लिये लहर भागे निज सुपना, हरि को भूले छोड़े जपना।
लहरें भाग रही सागर में, जाती विछुड़ कौन है अपना।

जप हरि हरि बरसेंगे नयना, अन्तर्यामी कुछ ना कहना।
कठपुतली हम नाच दिखायें, अन्तस वह ही सुरति न तजना।
हरि हरि जप मन शान्ति मिलेगी, गोद उसी की सदा मिलेगी।
जैसा राखे उसकी मर्जी, सांच कहूँ बस चुभन मिटेगी।

हरि गाता जा बहता जा मन, स्वप्निल यह सारी दुनिया है।
हरि की दुनिया हरि ही जाने, मैं छोड़ो फिर सुख मिलता है।
हरि हरि कहो उसी में भीगो, बहता जीवन उसमें बह लो।
डोर उसी के हाथों में हैं, सुरति लगा मन तप तुम कर लो।

143.

कौन हो तुम कुछ कहो तो, कौन मैं जो भटकता?
अश्रु यह अंखिया गिराती, प्यार को मैं तरसता।
छोड़ कर मुझ को अकेले, छिप गये हो किस जगह?
तुम बिना नहीं चैन आये, चरण में दे दो जगह।

दीप तेरा मैं जलाऊँ, आरती तेरी करूँ।
मैं करूँ सुमरण तुम्हारा, छोड़ सब तुमको बरूँ।
तुम कृपा रखना सदा ही, अबल हम अज्ञान में।
घूमते अनजान गलियाँ, खोजते संसार में।

तुम प्रभु करूणा के सागर, ज्ञान दो भरे गागर।
नयना बस जाओ मेरे, ना सताये मुझे डर।
तेरी मदिरा को पीकर, भूलूँ मैं सारे गम।
मुझे इतनी शक्ति देना, मैं अबल कुछ भी न दम।

144.

सदा हम तुमको मनाये, दे दो अपनी छैंया।
स्वप्निल तेरी यह दुनिया, चाहें पकड़े बहिया।
बहते क्यों मेरे आंसू, बता दो तुम जग मही।
आज है हम तो यहाँ पर, पता कल का है नहीं।

जगत में कांटे बिखेरे, फूल भी हैं खिलाये।
प्राणों का तू ही प्यारा, तुम बिन न चैन आये।
लाज मेरी राखना हरि, अनजानी यह गलियां।
पार करो मेरी नौका, तुम्ही मेरे खिवैया।

करूणा के तुम हेा सागर, खाली मेरी गागर।
ले इसे नाचूं भरो तुम, बह रहे हैं नीर झर झर।
बालक प्रभु हम तुम्हारे, ना कभी दूर होना।
एक सम्बल है तुम्हारा, पास में सदा रखना।

मर्जी चलती तुम्हारी, मर्जी तेरी आये।
बह रहे हैं नीर लखना, चाह दिल में समाये।
प्यार में रंग रंगीले, सारे ही भीगे हम।
मुझको अच्छा यह लगता, दूरियां हो जायें कम।

145.

नयन से मेरे नीर गिरते, नहीं निकल जाये दम।
चुप रहो नहीं, कुछ तो बोलो, चाहते तेरा प्यार हम।
प्यारी है दुनिया तुम्हारी, नयन से पर अश्रु जारी।
तुमको बता कैसे मनायें, इस जग से मैं हूँ हारी।

दास तुम्हारे अबल हम तो, शक्ति के भण्डार तुम तो।
तुम देख लो नजरें उठा कर, प्राण प्यासे मेघ तुम तो।
मैं आ गया शरण में तेरी, लाज को रखना मुरारी।
जाये बढ़ती प्रीति नित हरी, न कभी भी करना दूरी।

हरि नयन में आंसू हमारे, द्वार तेरे हम खड़े हैं।
चाह रहे तेरी कृपा को, नीर अंखियों से झरे हैं।
हरि तेरी मदिरा को पीकर, जाये खिल मेरी बगिया।
हरि नीर मेरे फूल बन कर, महकायें तेरी दुनिया।

146.

क्या कहें किसको यहाँ हम, घुट रहा तेरे बिना दम।
आँख में आँसू हमारे, मिले कैसे अबल हैं हम।
बहुत भटके इस जगत में, ना बुझी पर प्यास मन की।
कितने जन्मों का प्यासा, आ कर मिलो सुनो मन की।

सृष्टि के तुम हो रचैया, चाहें हम तेरी छैंया।
नयना बस जाओ मेरे, थामों अब मेरी बहियां।
हरि जपें भूले न इकपल, सब जगत की प्रीति झूठी।
प्रीति तेरी हरि बढ़े नित, तुम बिना खुशियाँ हैं रूठी।

हरि जपें जप चैन आवें, तुम बिना ना शान्ति आवे।
तुझे हम कैसे मनावें, दो हमें पथ शाम जावे।
कर कृपा हरि ज्ञान दे दो, ज्ञान के भण्डार हो तुम।
मान जाओ करे विनती, प्यास जन्मों की तुम्ही हो।

147.

जगत पिता तुम सबके पालक, नीर गिरे मैं तेरा बालक।
कहाँ छिप गये मुंह ना मोड़ो, अंखियां हारी रस्ता तक तक।
अबल प्रभु मैं दास तुम्हारा, पार लगा दो मेरी नैया।
मंडराते तृष्णा के बादल, बरसे रिमझिम मेरी अंखियां।

चले बहुत पर चल न पहुँचे, ठगनी माया रस्ता रोके।
फैला कैसा जाल यहाँ पर, बहते आंसू कैसे रोके?
तेरी लीला बड़ी निराली, खोज खोज कर दुनिया हारी।
प्यास नहीं पर मिट पाती है, चाहें कृपा सभी संसारी।

मृगतृष्णा में ना उलझाओ, हरि तुम अपना प्यार बढ़ाओ।
सासों में स्वर गूंजे तेरा, मेरे नयनों में बस जाओ।
पल पल रंग बदलती दुनिया, तू मुझसे छल कर ना छलिया।
दास तुम्हारा प्यार हमें दो, सदा चाहते तेरी छैंया।

148.

हरि हरि जपें हरो दुख सारे, इस जीवन को देने वाले।
शरण तुम्हारी आया हूँ मैं, मुँह न फेरना ओ मतबाले।
गये रूठ क्योंा मोहन मुझसे, आये मुझे न पल भर चैना।
बीते तुम बिन काली रैना, आंसू बहते मेरे नयना।

थक थक गिरूँ तुझी को खोजूँ, बहे नयन चरणो को सींचू।
बसो नयन में हरि तुम मेरे, सदा रहो अंखियों को मीचूं।
हरि हरि जप मन को समझाये, स्वप्निल सब कुछ मिटता जाये।
प्रीति तुम्हारी बढ़े निरन्तर, ना सुपने में फिर दुख पाये।

सावन आये कोयल कूके, कौन तेरे बिन मोहि बूझे।
आंसू मेरे लख लो रसिया, प्यार हमे दो रस्ता सूझे।
निरखूँ हरपल रूप तुम्हारा, मेरे नयनों से ना जाओ।
इस जीवन को देने वाले, विनय प्यार को खूब बढ़ाओ।

149.

मन रोया पर तुम नहीं मिले, जीवन में कैसे फूल खिलें।
अज्ञानी भटक रहा बालक, चाहूँ मैं तेरा प्यार मिले।
मेरे जीवन के तुम सर्जक, अंखियां यह नीर बहाती क्यों।
तुम बिन सूनी दुनिया लागे, मैं पांव पड़ू. रूठे हो क्यों?

दो बून्द प्यार की पाने को, हम तरस गये पर ना पिघले।
जीवन यह सांसे लेता क्यों, हम छले गये छलिया निकले।
तेरी यादों में रैन कटे, हम जपे निरन्तर सब कुछ तज।
इतना तो तुम हरि कर देना, ना नीर खतम हों तुमको भज।

मैं अबल सहारा तेरा ही, अनजान डगर जानूं न कुछ।
सब ज्ञान ध्यान के मालिक तुम, देखूँ तुझ ओर बता दे कुछ।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, हरि तू ही तेा मेरा सुपना।
मेरे नयनों में बस जाओ, मैं खड़ा द्वार बस यह कहना।

150.

हरि मन बहलाऊँ मैं कैसे, तुम ही रूठ गये जब मुझसे।
अंखियां मेरी नीर बहावे, खता हुई क्या कह दे मुझसे।
ठोकर खा खा जग में भटके, नीरस जीवन रस ना बरसे।
कठपुतली हूँ नाथ तुम्हारी, प्यार हमें दे जियरा हरषे।

जियरा मेरा आता भरभर, देखूँ रस्ता मिल ना पाता।
प्रीति हमारी झूठी है क्या, पूंछू तुम से भाग्य विधाता।
पार लगा दो मेरी नैया, तुम बिन और न कोई दूजा।
मेरे जीवन की तुम आशा, सृष्टि करे यह तेरी पूजा।

आदि सत्य तू अन्त सत्य है, वर्तमान का तू ही राजा।
नमन करो स्वीकार हमारा, प्राण पुकारे तू अब आ जा।
जपे हरि हरि मन होवे चंगा, बहे नयन से पावन गंगा।
सब कुछ भूलं बहूँ मैं इसमें, अपने प्यार में रंग ले रंगा।

151.

निशदिन बरसत नयन हमारे, आ मिलो मोहि प्रीतम प्यारे।
तुम बिन जियरा नाहिं लगत है, कैसे समझाऊँ मन प्यारे।
कैसे पाऊँ अबल नाथ मैं, हरि हरि जपूँ तुझे ही पूजूँ।
चाह प्यार तेरा मैं पाऊँ, जल थल नभ में तुमको खोजूँ।

प्यार मिले खिल जाये बगिया, मानो भी पड़ता मैं पैयां।
जनम जनम का दास तुम्हारा, नीर बहावे मेरी अंखियां।
तुम बिन जीना हरि क्या जीवन, अंखियां बरसें जैसे सावन।
प्रीति करूँ मैं जग में किससे, सभी सुनावें दुखड़े गिन गिन।

तेरी लीला हरि सब नाचे, चाहूँ अपना प्रेम बढ़ावे।
स्वप्निल दुनिया रंग बदलती, तेरा सुपना मन को भावे।
हरि हरि जपे न कोई दूजा, स्वीकारों प्रभु मेरी पूजा।
दन्श जगत के भूल यहाँ पर, गाऊँ गीत नयन में बस जा।

152.

आश्वासन मिलते यहाँ बहुत, सुपने चाहत के यहाँ बहुत।
जलती होली हमने देखी, फिर भी न संभले यहाँ बहुत।
ना यहाँ ठिकाना कोई थिर, जी ले जग में बन्जारा बन।
हरि ज्योति जला ले पागल मन, मिटता अंधियारा होता दिन।

ठुकरा ना हरि एक सहारा, हरि जप हरि जप जपता ही जा।
नाच रहे जो भूत प्रेत है, उसे मिटाता जा जपता जा।
सोंच मिटे सब ज्योति जले हरि, मनुआ उसमें खूब रमे फिर।
मिट जाता मैं रह जाता वह, मन हो जाता पार गमें फिर।

हरि हरि जप वह ताप मिटावे, टूटे दिल की औषधि है वह।
करें किनारा रोवे दिल जब, दीप जलावे आशा का वह।
हरि हरि जप ले पागल मनुआ, देख यहाँ तू सुपना दुनिया।
लहरें भाग रही निज धुन में, पकड़ न आये नाचे दरिया।

छिपा हुआ दरिया लहरों में, सब ओर नजारा उसका है।
मैं भुला मुक्ति का मार्ग यही, जानो नाचे वह छलिया है।
हरि हरि जप ले मन प्रीति बढ़ा, आंसू बहते वह उसे चढ़ा।
उसकी मर्जी आना जाना, तू कौन यहाँ वह साथ खड़ा।

153.

ढल रही है शाम अब तो, क्या कहें किसको यहाँ पर।
आ रही है सांस कुछ पल, ना पता जाये किधर फिर।
प्राण यह प्यासे तरसते, मन पिला दे हरी मदिरा।
सत्य मन वह ही सदा है, खिलता मुरझाया जियरा।

हरि जपो उलझो न जग में, चल रहा मन जान सुपना।
कौन अपना है पराया, मिल सभी को है विछुड़ना।
प्रेम गंगा में बहो नित, प्राण प्यासे है सभी के।
जो नहीं अपने यहाँ बस, छोड़ मैं गा गीत हरि के।

हरि जपो मन देख ले जग, हरि बिना ना चैन आये।
मुरझाई तेरी बगिया, जप खिले मन चैन आये।
जपो हरि का नाम सांचा, तपती धरती वह आशा।
जब सताये दन्श जग के, सुमर हरि भागे निराशा।

154.

पियूं मैं नाम की मदिरा, चरण पड़ रो रहा सैयां।
अकेले छोड़ कर मुझको, छिपे क्यों लो पकड़ बैयां?
बुलावें हम तुझे हरपल, बहें यह नीर प्रभु हरदम।
कहाँ खोजे पता न कुछ, बिना तेरे न निकले दम।

तुम्ही हो सत्य जीवन में, दुनिया सारी फानी है।
मेरे रोते यह नयना, बता दे क्या कहानी है?
लगेगी पार यह नैया, डगर अनजान है तो क्या?
बसो इन नयनों में मेरे, डरेगा फिर नहीं जीया।

जपे हरी जायेगा पथ कट, जगत की तू कहानी है।
मेरे पालक तुम सर्जक, तुम्हारे हम बालक है।
दया रखना सदा हम पर, यह अनजानी जग गलियाँ।
तुझे कर याद जिय रोये, प्रभु तू दे दे अब छैंया।

155.

हरि हरि जप मन प्रेम बढ़ेगा, बन बन्जारा कुछ न घटेगा।
आनी जानी इस दुनिया में, प्रेम बढ़े हिय कमल खिलेगा।

हरि हरि जप ले लहर बना तू, लहर नहीं अन्तस सागर तू।
सब कुछ सागर नहीं यहाँ तू, सुरति लगे भ्रम मिटे जान तू।

हरि हरि जपे न हरि को भूलें, उसकी यादों में ही खोवें।
जग से प्रीति करें क्या बोलो, नयना मेरे पल पल रोवे।
सागर रूप नाचता छलिया, माने ना दिल रोवे अंखियां।
ठगनी माया नाच नचावे, संग तेरे मन जप ले छलिया।

फिरें अकेले भरी भीड़ में, लाज रखेगा हरि मेले में।
अन्तर्यामी सबकी जाने, हरि बिन दर्द मिटे न दिल में।
हरि बस जाओ इन नयनों में, तड़फा बहुत न अब तड़फाओ।
चल चल हारा रोये नयना, हरि नित अपनी प्रीति बढ़ाओं।

156.

यह बह रही है जिन्दगी, लिये है सुपने अनेकों।
टूटते जब यह बिलखती, रंग कितने ही अनेकों।
चैन आये नही हरी बिन, पागल बना मन भटकता।
जप सहारा ले हरि मन, क्यों उस बिना तू तड़फता।

स्वप्निल दुनिया है सारी, भागते पागल यहाँ बन।
कुछ पलों का खेल खेले, नीर गिरें जैसे सावन।
प्राण की तो प्यास वह ही, सत्य तो वह ही सदा है।
नाम हरि जिसने लिया है, सहज वह जीवन जिया है।

मन हरी जप सहज बन जा, खेल उसका चल रहा है।
मान कठपुतली हरी की, जान सच क्यों रो रहा है।
नाच ले बन कर लहर तू, नाचता सागर यहाँ है।
छिपा सागर देख अन्तस, तू नहीं सागर यहाँ है।

157.

सांस तेरा गीत गायें, चाहें जीवन में छाये।
नीर बहते हैं नयन से, न कभी सुपनों से जाये।
हरि जपें भूले न इक पल, जग के भूले सारे गम।
पार करो मेरी किस्ती, डूबती न मुझमें दम।

हरि जपें लिपटे न जग में, मिल विछुड़े झूठी कसमें।
कैसे हरि तुझे मनाऊँ, ज्ञान मिले गाऊँ नगमें।
हरि हरि जपें हरि हरि जपें, हरि हर समय तू ही दिखे।
बन कर लहर बहते रहें, अन्तस छिपा सागर लखे।

बन सकूँ सेवक तुम्हारा, बल दो जो पहुँचूँ द्वारे।
लाज रखना तुम हमारे, अनजाना पथ हम हारे।
अश्रु से पूजा करूँ मैं, पास में कुछ भी नहीं है।
तुम जगत के नाथ मालिक, क्या कहें सब कुछ तुही है।

158.

निशदिन बरसत नयन हमारे, ज्ञान हमें दो पहुँचूँ द्वारे।
जपे हरि ले नाम तुम्हारा, नाचें गाये जीवन संवरें।
सारे जग के तुम रखबाले, तुझे भूल कर दुख को पाते।
जीवन के तुम ताप मिटाते, सुमरे तुमको दुख को हरते।

बहती है नयनों से धारा, पहुँचाये हरि मैं तेा हारा।
जनम जनम का दास तुम्हारा, शरणा हूँ जीवन आधारा।
हरि हरि कहते बीते जीवन, सुनूँ सदा तेरी बन्शी धुन।
प्राण इसी में लय हो जाये, नाथ तुम्ही इस जीवन के धन।

हरि हरि बोलें कभी न भूलें, टूटे दिल की तुम ही आशा।
अन्धकार में दीप जलाओ, तुम समर्थ सब मिटे निराशा।
लाज राखना इस मेले में, ले चल मुझको होले होले।
प्यार सदा हरि अपना देना, तुझे बसा नयनों में जी लें।

159.

आंख यह रिमझिम बरसती, प्यार पाने को तरसती।
देख ले आँखे उठाकर, छिप गया क्यों मैं तड़फती।
घूमूँ दुनिया है तेरी, लाज रख मैं नाथ तेरी।
ज्ञान का दीपक जला दो, पा सकूँ मैं राह तेरी।

नयन में सुपने उमड़ते, किसलिये हम हाय जीते?
बेवफा तुम बन गये जब, सांस फिर क्यों हाय लेते।
दीप तेरा मैं जलाऊँ, चाहता मैं तुझे पाऊँ।
न मिले मुझको तू छलिया, गीतों को गा मिट जाऊँ।

पाना क्या खोना क्या है, खेल तेरा चल रहा है।
नाचें कठपुतली बनकर, टूटता मैं ना रहा है।
ले चलो किस्ती हमारी, प्यारी है तेरी छाया।
दास हैं हम नाथ तेरे, मैं शरणा तेरी आया।

160.

सागर में कितनी लहर उठें, ना देखें वह है कहाँ छिपे?
अन्तस को भूली छिपा वही, बड़भागी है जो उसे जपें।
हरि जप अन्तस में ध्यान लगा, कितना भागो ना मिलें पिया।
बिलखे रोये ना कहीं मिलें, हरि जप अन्तस में देख पिया।

जप उसे वही तेरा माली, उस बिन लगता जीवन खाली।
हरि जप ले चैन मिले मन को, लगती जीवन में फिर लाली।
हरि जप हरि जप मन शान्ति छिपी, पीड़ा हरि बिन ना कभी मिटी।
सर्जक पालक वह ही तेरा, बड़भागी वह ना नजर हटी।

हरि जप हरि जप रखबाला वह, तूं छोड़ नाव खेवट है वह।
ब्रह्माण्ड उसी का है सारा, संग उसके बह ले प्यारा वह।
हरि जप हरि जप जपता ही जा, ना छोड़ उसे अपना है क्या?
नयनों के सुमन चढ़ा उसको, खिलता मुरझाया यह जिया।

161.

बह रही है जिन्दगी यह, लिये है सुपने अनेंको।
बह रहा है नयन पानी, रंग कितने ही अनेकों।
हरि बिना न चैन आये, दन्श जग के हैं रूलायें।
डोलती नौका भंवर में, मन हरी बस याद आये।

जपो हरि जपते रहो मन, बाजती सब ओर हरि धुन।
जो शरण हरि की गया है, बहे सागर में लहर बन।
नाम हरि का एक सांचा, क्यों बना जग में उदासा।
लहर सागर को छिपाये, जानों अन्तस है प्यासा।

जपले हरि जपता ही जा, उसको नहीं करना जुदा।
सांस उसके गीत गायें, छवि को नयन में रख सदा।
स्वप्न सा संसार सारा, कौन जीता कौन हारा।
हरि बसे जिसके हृदय में, न डरे ले जाती धारा।

162.

हरि यह विनय है हमें प्यार देना, बालक तुम्हारे दया तुम करना।
चल चल गिरें हम न कोई ठिकाना, जगत में तेरे बिन किसको कहना।
सारे जग के तुम्ही हेा रचैया, पार लगा दो डूबे न नैया।
प्राण पुकारे तुही मेरा साजन, कैसे सजूँ मैं तुम बिन कन्हैया।

जप जप तुम्ही को दिल में बिठाले, बह रहे आंसू चरण में चढ़ा दे।
स्वप्निल जगत यह कुछ पल का मेला, उबल रही पीड़ा तुमको दिखा दे।
प्राण यह प्यासे खोजे तुम्ही को, छिप तू गया क्यों रूला रहा हमको।
बाट निहारूँ मैं रो रही अंखिया, पैयां पड़ू. नहीं कर दूर हमको।

जीवन के दाता पालक तुम्ही हो, झरते है आंसू सोये हुए हो।
लाज को रखना तेरे दर आया, तुम ही नयन में समाये हुए हो।
जगत में भटकता तुमको तड़फता, नयनों से झर झर प्रभु नीर गिरता।
प्यार हमें दे नचा ले तू कितना, सदा साथ चाहूँ खोये न रस्ता।

163.

खोज पी को पी रटो मन, बाजती सब ओर पी धुन।
छोड़ तृष्णा द्वन्द मिटते, देख अन्तस पी छिपा मन।
गीत गा ले मन उसी के, खेल यह जिसने रचाया।
नाचे कठपुतली बन कर, ना किसी ने पार पाया।

पी रटो वह ही सबल है, उस बिना कुछ भी नहीं है।
लहरों का स्वामी दरिया, याद रख दिल में वही है।
पी रटो रटते रहो मन, आस किसकी कर रहा है।
छोड़ो नौका को अपनी, देख पी ले जा रहा है।

कुछ समय का खेल स्वप्निल, पी रटो रटते रहो मन।
नयन से जब नीर बरसे, फिर खिल उठे दिल का सुमन।
पी के शरणा में हो जा, जीवन का वह ही माली।
खिलती मुरझाई बगिया, उसको रट लगती लाली।

164.

हरि हरि कहते बीते जीवन, कान सुने बजती अनहद धुन।
विछुड़ा जाता सारा मेला, जप ले उसको वह सांचा धन।
किसकी याद लिये मन रोया, स्वप्निल दुनिया साथ न कोई।
अपना कौन पराया जग में, जप ले मन हिय शीतल होई।

हरि हरि जप ले हरि में डूबो, आता रेला उसे न भूलो।
अपने वश में नहीं यहाँ कुछ, खेला हरि का हरि को जी लो।
नाचे दरिया लहर यहाँ हम, पता नहीं है कहाँ जा रहे।
देखो अन्तस छिपा वहीं है, जप ले उसको साथ वह रहे।

हरि हरि जपो पकड़ लो दामन, बरसेगे नयना बन सावन।
लहरे सभी भागती जाये, क्षण भंगुर यह सारा जीवन।
ज्ञान ध्यान वह सबका मालिक, पथ भूले को देवे रस्ता।
सौंप स्वयं को हरि चरणों में, जपले उसको हर घट बसता।

165.

हरि हरि जपो कट जाये सफर, न पता नाव यह जाये किधर।
दरिया में बहो लहर बन कर, अन्तस सागर न कोई डगर।
हरि जप हरि जप मन सदा जपो, मिटते सारे भय हरी जपो।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, नहीं भूलो उसे सदा जपो।

इस जग का वही रचैया है, बिन हरि धीरज कैसे लेवे?
उसकी मर्जी जब तक खेले, हरि बढ़े प्यार ना दिल रोवे।
स्वप्निल दुनिया मर्जी हरि की, दिल को समझा ले या रों लें।
जब नीर गिरे झर झर तेरे, डूबो अन्तस में हरि जप ले।

मर्जी उसकी से आये हम, मर्जी उसकी खुलता ताला।
गा गीत उसी के रखबाला, सुख शान्ति मिले पी ले हाला।
हरि हरि गा प्रियतम प्यारा वह, ना लहर यहाँ बहता दरिया।
सब ज्ञान ध्यान का मालिक वह, मैं छोड़ पकड़ उसकी बैया।

166.

गा गीत उसी के देख जगत, कुछ पल का ही तो मेला है।
जब रोम रोम में वह छाये, मिटते सब भय फिर खेला है।
मन जप हरि जप हरि सांच यही, प्यासे प्राणों की प्यास यही।
ले जायेगा तेरी किस्ती, विश्वास करो वह जगत मही।

जपता ही जा मन क्या जग में, मत उलझ जगत की तृष्णा में।
जब चोंच दई चुग्गा देगा, बिन कृपा मिले ना कुछ बस में।
चलता जा जपता जा हरि को, स्वप्निल यह सारी दुनिया है।
तू नीर दिखाये किसे यहाँ, नाचे सब ता ता थैया है।

हरि जप हरि जप देगा प्रकाश, झूठी छूटेंगी सभी आस।
साजन से मिलने लहर चली, देखेगी वह तो सदा पास।
खिल जायेगी तेरी बगिया, मुरझाई बीत गई सदिया।
हरि जप नयनों में उसे बसा, मिल जायेगी उसकी छैया।

167.

हरि हरि जपें तुझे ना भूलें, दुख सुख आयें सबको सह ले।
बस जाओ मेरे नयनों में, प्रीति लिये इस जग में बह ले।
जीवन सर्जक मेरे पालक, कैसे नाथ मनाऊँ तुम को।
अन्तर्यामी घट की जानों, कैसे दर्द दिखाऊँ तुमको?

ना रूठो मुझसे करूणाकर, बहता इन नयनों से पानी।
खोज खोज कर मैं तो हारा, प्यासा तुमसे मांगू पानी।
डर लागे मैं दास तुम्हारा, अबल मुझे दो नाथ सहारा।
डगमग मेरी नौका करती, पार करो प्रभु मैं तो हारा।

हरि हरि जपें मनायें तुमको, जाये कहाँ पता ना हमको।
ढलती शाम पुकारे तुमको, देना प्यार न भूलो हमको।
विरह तुम्हारा प्यारा लागे, जग में बहता आंसू खारा।
डुबो प्रीति में रंग ले मोहन, बहे नयन ले जाये धारा।

168.

निशदिन बरसत नयन हमारे, इन आंखों के तुम ही प्यारे।
बाट निहारूँ सदा तुम्हारी, ना भूलो तुम मोहन प्यारे।
अगम अगोचर पार न तेरा, खोजे मनुआ तू है मेरा।
तुझ बिन कृपा न दीपक जलता, फैला जग में खूब अंधेरा।

कुछ ना जानूं सुन लो मेरी, हरि हरि जपें मनायें तुमको।
बालक हूँ मैं नाथ तुम्हारा, दे दो अपनी छाया हमको।
प्रेम डगर यह प्यारी लागे, मिट जाये ना बन अभागे।
सदा नयन में मेरे रहना, टूट न जायें तुमसे धागे।

इस जीवन के तुम ही मालिक, डुबो हमें तू अपने रंगा।
प्यार मिले मिट जाती शंका, पावन गंगा मन हो चंगा।
प्यार बढ़ा ले भूल न मुझको, अंखियाँ रोवें इस मेले में।
तुम बिन मुझको कुछ न सुहावे, बस जाओ मेरे नयनों में।

169.

किसको सुनायें दर्द हम, सुन ले यहाँ कौन है?
आँखे उठा नभ देखता, ना बोलता मौन है।
आंख बरसी पर न आया, खत्म कर सारी बफा।
ना पता कैसे रिझाये, क्यों हुआ हम से खफा?

झिलमिलाता यह जगत है, रूप कितने बदलता।
छोड़ तृष्णा जप हरी को, वह दुख सारे हरता।
सुखदायक जप ले हरि मन, सन्ताप सारे मिटे।
खेवेगा नौका तेरी, ध्यान ना हरि से हटे।

हरि जपो हरि संग जी लो, साथ में ना भूलना।
बनकर लहर बहो दरिया, दूर ना है जानना।
बहे दरिया रूप हरि का, लहर क्यों नादान है।
हरि जपो मन संग बह लो, डर लगे ना साथ है।

170

नीर मैं किसको दिखाऊँ, छिप गये अज्ञात में।
लाज को रखना हरी तुम, मैं भटकता जगत में।
थक गये दर पर न पहुँचे, क्या बता किस्मत यही।
नाथ तुम हो जगत पालक, थाम लो मेरी बही।

शरण अपनी राख लो तुम, अबल मैं नाथ हारा।
प्यासी दर्शन की अंखियां, खोजता दे सहारा।
द्वार पर पहुँचूँ तुम्हारे, दया का दान देना।
झर रहे है नीर मेरे, ना कभी रूठ जाना।

हरि सदा तुमको मनायें, नयना आंसू आये।
प्रीति ना तोड़ो मुरारी, चाह हम प्यार पाये।
प्राण प्यासे यह तड़फते, नीर रिमझिम बरसते।
आ मिलो कर अब न देरी, नाथ हम पांव पड़ते।

171.

हरि जपो कटता सफर है, और रक्खें ना खबर है।
बह रहे निज चाह में सब, खोज अन्तस हरि जिधर है।
आये हम जायेंगे कब, न जानते जाने है रब।
खेल दो दिन जिन्दगी का, जा रहा मिटता यहाँ सब।

बैचेन क्यों दर्द दिल में, कौन सी है प्यास घट में।
नीर यह अंखियां बहाये, सब पलटते रंग पल में।
हरि जप बरसेंगे नयना, पथ मिलता क्या है कहना।
सब जगत का वह मही है, बन लहर सागर में बहना।

हरि जपो जपते रहो मन, सोंच दुख की सब मिटे मन।
नयन में जब हरि समाये, हृदय का खिलता सुमन मन।
अबल हम वह शक्तिदाता, ज्ञान को वह ही जगाता।
ध्यान कर ना भूल उसको, भाग्य का वह ही विधाता।

172.

कुछ न पाना कुछ न खोना, संजोते फिर भी सुपना।
बरसे नयनों से आंसू, देखते हम कौन अपना।
जप हरि स्वप्निल है दुनिया, छल रहा है हमें छलिया।
प्रीति बिन आये न चैना, मन पकड़ो हरि की बैंया।

हरि जपो जपते रहो मन, फिर मिट सकेगी सब चुभन।
जो बुझा है दिल तुम्हारा, खिल जायेगा हृदय सुमन।
चित्त की चिन्ता मिटाता, व्यर्थ क्यों जी को जलाता।
छटेगा सारा अन्धेरा, क्यों न हरि के गीत गाता।

हरि जपो जपते रहो मन, जान ले सांचा यही धन।
दुखों के बादल उमड़ते, काटता वह बन सुदर्शन।
सांस थोड़ी राह टेढ़ी, मृगतृष्णा में न जाये।
मन करो सुमरण हरी का, ज्ञान का दीपक जलाये।

173.

कुछ किया ना ज्ञान था ना, तू बता कैसे मनाये?
बहते नयनों से आंसू, चाहते हम प्यार पायें।
हरि जपे तुम ही सुनोगे, साथ ना कोई हमारा।
बसते हर घट के भीतर, क्यों बता मैं नाथ हारा?

अबल हम जग के रचैया, चाहें हम तेरी छैयां।
तपे धरा पथ में कांटे, पार करो मेरी नैया।
लाज रखना भटकते हैं, शरण में ले लो मुरारी।
ज्ञान ना अज्ञान में मैं, जला दो दीपक मुरारी।

हरि जपे जपते रहे हम, दो हमको इतना सम्बल।
कठपुतली हम तुम्हारी, नाथ मुझ में कुछ नहीं बल।
मर्जी तेरी आये हम, जायेंगे कुछ न चलेगी।
कौन मैं कुछ पल यहाँ पर, खाक यह उड़ती रहेगी।

174.

जागो मोहन अब तो प्यारे, निशदिन बरसत नयन हमारे।
इस दुनिया के तुम रखबाले, भूल गये क्यों हम तेा हारे।
पाप पुण्य सुख दुख की छाया, मुझे डरावे तेरी माया।
बढ़कर मेरा हाथ थाम लेा, देखो रोती मेरी काया।

तुम बिन कुछ भी नहीं सुहावे, घबराता मेरा यह जीया।
प्यार बढ़े नित करो कृपा प्रभु, बरसें मेरी देखो अंखियां।
इस मेले में भटक रहा हूँ, जनम जनम का मैं हूँ प्यासा।
अपनी दया बनाये रखना, हरि मैं लिये तुम्हारी आसा।

हरि हरि जपें तुझे ही पूजें, ज्ञान नहीं कुछ जग में भटकें।
अज्ञानी हूँ दास तुम्हारा, नीर नयन से मेरे टपकें।
हरि बिन कोई और न दूजा, सदा साथ में फिर क्यों भूला।
नाच नचाये जग में तृष्णा, तुझे पुकारे तेरी लीला।

हरि हरि जपें मनावें तुमको, जाता जीवन रटते तुमको।
खेल यहाँ पर दो दिन का है, आना तेरे घर फिर सबको।
आदि सत्य तू अन्त सत्य है, वर्तमान में तेरी चलती।
देता ज्ञान सभी का चालक, मैं की होली हरपल जलती।

175.

ले चल नौका मेरे खेवट, गिरते नीर नयन से मेरे।
अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी प्राण तुझी को टेरे।
स्वप्निल दुनिया रंग अनेको, ना लगता जिय कुछ तो बोलो।
कैसे तुमको नाथ मनायें, देखो हमको कुछ तो तोलो।

हरि हरि जपें मनायें तुमको, दुख जग में सुख मानूं तुममें।
दीन दयालू करो कृपा अब, अबल प्रभु मैं बल नहीं मुझमें।
लाज राखना इस मेले में, शरण नाथ मैं तेरी आया।
अज्ञानी हूँ कुछ ना जानूँ, फिर भी चाहूँ तेरी छाया।

तपती धरती तुझे पुकारें, ज्ञान हमें दो हम तेा हारे।
तुझ बिन कृपा जले ना दीपक, चाह प्यार की मोहन प्यारे।
झर झर झरती मेरी अंखियां, इस जीवन के तुम ही रसिया।
मेरे नयनों में बस जाओ, तृष्णा मिटती पाऊँ सैंया।

176.

मन गीत सुना यह कटे सफर, छलिया ना जाने छिपा किधर।
उस बिन रोये मेरी अंखियाँ, नयनों से नीर गिरे झरझर।
दिल में है दर्द नयन पानी, मैं हुई प्यार में दीवानी।
कटती रो रो कर रतियां है, घूमूं जग में बन अनजानी।

वह हमें नचावें हम नाचें, बन्शी की धुन प्यारी लागे।
नजरें हम से वह फेर न ले, जिय भर भर आवे डर लागे।
मदिरा उसकी गीतों में हो, दुनिया की रंजिश कुछ ना हो।
बहता जाऊँ मैं लहर बना, सागर मेरे नयनों में हो।

तपती धरती तू प्यास बुझा, मन कोई ऐसा गीत सुना।
तन मन झूमें बरसे पानी, कोयल कूके हरि गीत सुना।
हरि रोम रोम में बस जाये, मन और किधर तू ना जाये।
छवि उसकी ही प्यारी लागे, मैं विनय करूँ ना भटकाये।

177.

आँख में आंसू हमारे, अज्ञान ना त्यागते।
जानते कुछ भी नहीं हैं, कह रहे सब जानते।
जन्म लेते हैं धरा पर, अनगिनत सुपने लिये।
टूटते जब बिखरते हैं, पल लगे ना रो दिये।

घूमते अनजान गलियां, ना पता साथ छलिया।
नाचते हम वह नचाता, नचाता लहर दरिया।
ज्ञान बुद्धि बल है उसका, सोचता सब वही है।
मैं हटा ले स्वप्न दुनिया, जाता लिये वही है।

शान्ति का भण्डार है वह, तप्त मन की छांव वह।
दुखों की आंधी उड़ाता, प्राण की है प्यास वह।
कर समर्पण हरि चरण में, चल रहा खेल उसका।
सदा करो सुमरण हरी का, दीप जले फिर हिय का।

178.

कुछ गीत कहो तो गा दूँ, अपनी मैं व्यथा सुना दूँ।
इस मेले में विछुड़े तुम, दिल लगता नहीं बता दूँ।
आंसू गिरते है टप टप, मेरे जीवन के सर्जक।
तुम बिन जियरा ना लागे, पथ दो पहुँचू मैं तुम तक।

चाहूँ बन्शी धुन सुनना, तेरी यादों में खोना।
मैं अबल नाथ अज्ञानी, बिन कृपा न कुछ भी होना।
तुम करूणा के सागर हो, देखो बरसें है अंखियां।
हरि लाज राखना मेरी, जीवन के तुम ही रसिया।

हरि हरि तुमको ही पूजे, दिन रात मनायें तुमको।
जो नीर बहे नयनों से, वह बहे न भूले तुमको।
हरि हरि जग से मैं हारा, न दीखे कोई किनारा।
तू पार लगा दे नौका, दीखे बस तू ही सहारा।

179

प्रभु दर्शन को तरसे नयना, झर झर झरते मेरे नयना।
अपना प्यार मुझे दे दे तू, चाहूँ हरपल तुझ में बहना।
दास तुम्हारा हूँ मैं प्रभु जी, अपनी आंखो को तुम खोलो।
तोड़ो ना तुम मुझसे नाता, कुछ कहूँ सुनो कुछ तो बोलो।

ना प्यास मिट सकी जन्मों की, चाहत हरि तुमसे मिलने की।
तुझे दिखाऊँ अपना दिल मैं, शरणा तेरी सुन ले मन की।
तुम बिन कुछ अच्छा ना लगता, अंखियां देखें तेरा रस्ता।
मेरे जीवन के तुम माली, सब तेरी चाहत से खिलता।

प्रियतम बनो ना तुम बेदर्दी, नयना झर झर झरते जावें।
चाहत दिल की थके कभी ना, बहते जावे तुमको पावे।
मेरे नयनों में रहो सदा, तेरी दुनिया तुम मात पिता।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, तुम माफ करो यदि हुई खता।

180.

प्रियतम प्यारा वह मन भावन, अंखियां बरसें जैसे सावन।
सकल सिद्धि फीकी पड़ जाती, झरे नयन बाजे जब हरि धुन।
स्वप्निल दुनिया छिपा छलिया, पड़ चरणों में जप ले सैया।
उस बिन चैन न दिल को आवे, पार लगावे वह ही नैया।

सारा है ब्रह्माण्ड उसी का, जप ले उसको वह ही मन का।
मैं की सदा जली है होली, प्रियतम पावे हो जिय हल्का।
हरि हरि जपो नाम है सांचा, मन को काहे करे उदासा।
आनी जानी इस दुनिया को, जपता जा हरि देख तमाशा।

जीवन है यह एक कहानी, ऋषि मुनि हारे कोई न जानी।
सहज बनो बन लहर यहाँ तू, संग तेरे सागर तूफानी।
नयना भीगे हरि से कहना, तेरी मर्जी से ही जीना।
इतनी शक्ति हमें तुम देना, नयन रखूँ ना कभी विछुड़ना।

181.

मेरे जीवन अन्तर्यामी, नदी करा दे पार।
अंखियां रोयें तुम बिन मोहन, तुम मेरे भर्तार।
ऋषि मुनि ज्ञानी करते पूजा, देता उनको ज्ञान।
अंखियां मेरी झर झर बरसे, मुझे करा दे भान।

मन्बुद्धि हूँ अज्ञानी हूँ, चाहूँ फिर भी प्यार।
मेरे देवता तुम ना रूठो, सुन लो मेरी पुकार।
बालक तेरा लाज राखना, बीते न यह बहार।
दशों दिशायें करती पूजा, तू जीवन आधार।

छाया है सब ओर अंधेरा, तेरी रखता आस।
नहीं भूलना इस मेले में, प्राणों की तू प्यास।
शीश झुकाये खड़े द्वार पर, जीवन के श्रृंगार।
मेरे नयना टप टप टपकें, और न कुछ उपहार।

182.

शाम जाती रात आती, न ठिकाना अब कोई हैं।
विमुख मुझसे हो गये जो, चाह क्या ले जी रहे है।
टूटते जाते यहाँ पर, मिलकर सारे ही रिस्ते।
आंख में आते है आंसू, जा रहे अब कुछ न कहते।

मन हुआ बैचेन इतना, जानूँ कैसे यह है सुपना।
ना मना पाये तुझे हम, दिल न माने बहे झरना।
खिल यहाँ हर फूल झड़ता, ले यहाँ अरमान मिटता।
चलती सदियों से गाथा, नयन से नीर बहता।

मिट गई कितनी कहानी, नयन यह रिमझिम बरसते।
तपती धरती मेघ घिरते, जप हरि खुशियां वह लाते।
हरि जपो मन द्वन्द मिटते, सूखी बगिया पुष्प खिलते।
सारे जग का वह ही स्वामी, धन्य जो हरि चरण पड़ते।

183.

किसको कहे अपना यहाँ, मैं खोजता तुम हो कहाँ?
देकर प्रभु इतनी पीड़ा, तुम छिप गये जायें कहाँ?
नीर नयनों से बरसते, नाथ हम तुमको तड़फते।
मर्जी प्रभु तेरी चलती, प्यार पाने को तरसते।

चलते सुमरण तेरा है, इस हृदय में तू बसा है।
विनती करता ना भूलो, मेरी न कोई खता है।
जमी ऊसर फूल खिलते, तेरी कृपा हो जब यहाँ।
मैं मनाऊँ तुझे कैसे, मैं हूँ अबल पाऊँ कहाँ?

हरि जपें तुझे ही खोजें, सब मिटे सुपने हमारे।
बहते नयनों से आंसू, बन सकोगे क्या हमारे।
चल रहे जब भी गिरे हम, थामना विनती यही है।
दास को तुम प्यार देना, नयन से बहती झड़ी है।

184.

मेरे नयना हरि तुम देखों, क्या कहते है कुछ तो समझो।
कितना तुमने दर्द बिखेरा, अंखियां रोये दिल को समझो।
अपना प्यार हरी तुम दे दो, मेरी भटकन को तुम हर लो।
अच्छा लगता तुम बिन कुछ ना, बरसे नयना अब तो लख लो।

नाचू तेरी बन्शी धुन सुन, जगत प्रीति झूठी तू सांची।
निज प्रेम में रंग ले मोहन, नाचूं जैसे मीरा नाची।
बीता जाता है यह सुपना, तुम बिन कहूँ किसे मैं अपना।
पल पल तेरी याद सताये, बहते जाये मेरे नयना।

जनम जनम का साथ तुम्हारा, तुमको भूला हूँ मैं हारा।
अब तो दीप जला दे रसिया, जग हेा जाये रसमय सारा।
सदा नयन में मेरे रहना, नहीं प्रीति का टूटे झरना।
सांसे तेरे ही गुन गायें, मुझसे तुम ना कभी विछुड़ना।

185.

मन गीत सुना जियरा रोये, हरि बिन बतला कैसे जीये?
इस रंग बदलती दुनिया में, बतला कितना आंसू पीयें?
मन हरि हरि कह यह कटे सफर, चाहूँ देखे हरि कभी इधर।
सारे जग का वह रखबाला, नयनों से नीर गिरे झर झर।

तपती धरती हरि ही बरसे, आहट पाने छतियां धड़के।
बगिया मुरझाती बिन प्रियतम, नयनों से आंसू हैं टपके।
कुछ ज्ञान नहीं अज्ञानी हम, पर प्यार हरी ने है खीचा।
मन उसे पुकारूँ मैं रो कर, इन नयनों ने उसको सींचा।

हरि विनय प्यार अपना देना, मेरे नयनों में तुम रहना।
पल भर भी दूर नहीं करना, अपनी छांया में प्रभु रखना।
आंसू का मोल नही जग में, पर इनसे मैं करता पूजा।
कुछ और नहीं जो तुमको दूँ, हरि लाज राख ना है दूजा।

186.

वंशी बजैया रास रचैया, चाह रहा तेरी मैं छैंया।
तुम बिन मेरा जिया न लागे, आ जाओ अब प्यारे रसिया।
बाट निहारूँ जनम जनम से, नीर गिरायें मेरी अंखियाँ।
बेदर्दी तुम बनो न प्रियतम, पडू. तुम्हारे हरि मैं पैंया।

प्यार बढ़ा ले रास रचा ले, बीतेगी फिर हँस हँस रतियां।
निर्मोही बन कर क्या लोगे, नीर बहा ना प्यारे छलिया।
जीवन तेरा कठपुतली हम, जैसा चाहे राखे ना दम।
सकल सृष्टि तेरे गुन गाती, पार करो नैया आंखे नम।

तुमकों पूजूँ गीत सुनाऊँ, बहे नीर दिल तुझे दिखाऊँ।
बोलो खता हमारी है क्या, तड़फ तड़फ कर रैन बिताऊँ।
थक थक देखें नयन हमारे, कब आओगे मेरे द्वारे।
सांस सांस में तुम्ही बसे हो, आओ मेरे प्राण पुकारे।

187.

माँगू क्या मर्जी तेरी, प्रभु खेल तूने क्या रचा?
दर्द हमको दे दिया है, क्या मिल रहा हमको नचा?
बहते नयनों से आंसू, तुमको पुकारे रात दिन।
छोड़ हमको छिप गये तुम, यह ना सही जाती चुभन।

न बनो निर्मोही इतने, देख लो हम तो भटकते।
नीर आंखों से बरसते, प्राण यह तुमको तरसते।
ज्ञान को ना पा सका मैं, जलती सुपनों की होली।
अबल हूँ बस में नहीं कुछ, शरण आया आंख रो ली।

तुम जगत के हो रचियता, नाथ मैं बालक तुम्हारा।
चल गिरूँ बस थाम लेना, जानना न मैं था हारा।
देखते तुझ ओर हम है, चाहते टूटे न नाता।
दीप तम में तुम जलाना, भाग्य के तुम ही विधाता।

188.

मर्जी हरी की नाचते, ना जानते कल हों कहाँ?
बन जाये न कैसा समा, कुछ पल लिये आये यहाँ।
हरि छोड़ कर जाये कहाँ, ना चैन उस बिन है यहाँ।
मन जप उसे वह सत्य है, ना ठौर उस बिन है यहाँ।

तू लहर है सागर वहीं, अन्तस समझ ले है वही।
यहाँ लहर के बस में क्या, मिट जाये सागर तू ही।
सब ज्ञान की बाते करें, कुछ चोट से अंखियां झरे।
कैसे मनाऊँ हरि तुम्हें, जग में लिये भटकन फिरें।

सम्बल तुम्हारा अबल हम, चलते चलाता जानते।
अंखियाँ रोती यह मेरी, प्यार दे यह चाहते।
पाऊँ तुझे खो प्यार में, ना मैं रहूँ फिर है तू ही।
बस जाओ इन नयनों में, मिट पायेगे सत्य यही।

189.

दिन बीते ना आये बालम, अंखियां मेरी नीर बहाये।
जलूँ विरह पूछे ना कोई, ढाढस मुझको कौन बंधाये?
सुन लो मेरी रोवें अंखियाँ, मेरे जीवन के तुम रसिया।
तुम बिन मुझको कुछ न सुहावे, आन मिलो तुम प्यारे सैंया।

नयनों मे मूरति तेरी है, दीखे ना सूरत तेरी है।
क्या लोगे छलकर तुम मुझसे, दासी तो प्रभु यह तेरी है।
नाम की मैं पी रही मदिरा, डर लागे ना आये पीया।
क्या जीवन में रोते रोते, बीतेगी क्या ऐसे घड़ियां।

चलते यहाँ इशारे तेरे, नहीं परीक्षा ले हम हारे।
मन्द बुद्धि अज्ञानी हूँ मैं, चरण पडू. प्रभु तू ही तारे।
लाज राखना तू ही मालिक, खो ना जाऊँ इस मेले में।
प्यासी प्यारे तेरे प्यार की, प्यास मिटा खो जाऊँ तुझमें।

190.

गीत सुना मन हरि ही भाये, अंखियां मेरी नीर बहायें।
हरि की यादें प्यारी लागे, चाहे जिय इसमें खो जाये।
छिपा हुआ वह छलिया देखे, अंखियां मेरी रिमझिम बरसे।
हरि प्यारा मन भीग इसी में, व्याकुल प्राण इसी को तरसे।

कुछ पल खेल जिन्दगी सुपना, किसे कहें हम जग में अपना।
व्यक्त करे सब अपनी पीड़ा, मिले बिछुड़ते बहते नयना।
गा मन हरि हरि चैन मिलेगा, तार उसी से तभी जुड़ेगा।
बनो लहर नाचे यह सागर, छोड़ उसी पर लिये चलेगा।

उसकी मर्जी खेल खिलावे, चाहे जब भी वह ले जावे।
करूणा कर वह याद करो मन, इन आखों से आंसू आवे।
हरि हरि धुन में लीन होय मन, बहता जाये यहाँ लहर बन।
ना कुछ अपना सब कुछ उसका, नीर बह रहे हरि गा ले मन।

191

हरि हरि जप मन प्रीति बढ़ाले, सो मत दिल का सुमन खिला ले।
खिल जाये मुरझाई बगिया, हरि को जप ले नयन बसा ले।
कुछ पल के सब याराने हैं, बीते जाते अफसाने हैं।
मृग मरीचिका में फँस कर मन, कातर बन ना दिल रोवे है।

तेरे हाथ यहाँ क्या जग में, बहते कितने आंसू देखो।
मिटते दुख हरि प्यार बढ़ाले, दिल में उपजे जप सुख देखों।
जिय रोये जप ले मन हरि को, ना समझे पागल मन देखो।
कितना ही चीखें चिल्लाये, जगत हंसे मतलब क्या देखो।

हरि बसते जब रोम रोम में, मन का दीपक तब जल जाता।
उसकी मर्जी से है आना, जायेंगे कुछ जोर न चलता।
आदि सत्य है अन्त सत्य वह, वर्तमान क्यों उसको भूला।
जपता जो मन देख उसी को, जान यहाँ सब उसकी लीला।

192.

ले चल नाविक नदिया गहरी, छोड़ न मुझको इस मझधारे।
बन्शी की धुन सुना सुना कर, ले चल मुझको धीरे धीरे।
तुम बिन पार न होगी नदिया, पार करा दे मुझे खिवैया।
बरस रही हैं आंखे मेरी, मुझसे अब छल कर ना छलिया।

दास तुम्हारा जन्म जन्म का, अपना प्यार सदा ही देना।
तुम बिन रोये मेरी अंखियां, नहीं किनारा मुझसे करना।
हरि हरि बोले हरि हरि गायें, तुमसे हरपल प्रीति बढ़ाये।
मेरे जीवन के तुम खेवट, याद करूँ और आंसू आये।

जग की प्रीति यहाँ सब झूठी, पल पल रंग बदलती दुनिया।
बस जाओ मेरे नयनों में, सफर सुहाना हो कन्हैया।
गीत सदा तेरे ही गाये, आंसू से करता मैं पूजा।
तुम बिन नहीं मिटेगी भटकन, आओ हरि न और है दूजा।

193.

जग सुपना मन लेता सुपना, जीत हार क्या जब सब सुपना।
चैन न आये मन दुख पाये, समझ सकें ना क्यों सब सुपना।
बन बन मिटती यहाँ लकीरें, जान सके ना खोया कित रब।
आंसू की बहती गंगा है, समझ सके ना सुपना है सच।

कौन देखता मन जब सोवे, जागें सोंचे यादें रखता।
पागल बन कर घूम रहा है, क्यों सुपना सा सब ना लगता।
हरि भूला हरि को ना जपता, पागल मैं को क्यों ना तजता।
चालक सारे जग का हरि ही, पकड़ यहाँ मैं को क्यों फंसता।

जप हरि हरि विश्वास करो मन, सब सुपना है व्यर्थ ना डरो।
हरि की मर्जी वह संग तेरे, वही नचावे खेल तुम करो।
हरि हरि जप मिटती सब चिन्ता, अन्तस वही छिपा है छलिया।
जब छूटे सब जग की तृष्णा, ध्यान लगा जप देख ले पिया।

194.

हरि हरि बोलो हरि को जी लो, बहते आंसू उनको पी लो।
खेल यहाँ सब उसका चलता, जैसे राखे वैसे रह लो।
हरि मर्जी से आना जाना, कर मर्जी स्वीकार यहाँ पर।
धूप छांव का खेल यहाँ पर, तप कर मर्जी मान यहाँ पर।

अंखियां नीर बहाये जप ले, कुछ न हाथ में टूटे सुपने।
दे पतवार हरी के हाथों, भाग्य विधाता वह ही अपने।
जियरा रोये मिले न बालम, बीता जाता सारा सावन।
कैसे अपना दिल समझाऊँ, आन मिलो घबराये यह मन।

हरि हरि जप मन वह सुखनन्दन, सारी दुनिया है यह स्वप्निल।
जग की तृष्णा में क्येां उलझे, आज यहाँ थे गये कहाँ कल।
हरि हरि जपो उसे ही खोजो, जाती संध्या कभी न भूलो।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में उसको जी लो।

195.

ढूढते खो जायेंगे हम, ना मिलो मर्जी तेरी।
जिन्दगी के तुम ही मालिक, कहती क्या मैं चल गिरी।
बहती है आंसू की गंगा, नाथ हमें देख लेना।
क्या हमारा भाग्य ऐसा, तरसें आये न चैना।

कितने जन्मों से भटकता, प्राण तुझे ही पुकारें।
मुझसे रूठा मेरा बालम, कैसे यह दिन गुजारे।
दास तेरे हरी कृपा कर, नाचते कठपुतली हम।
बह रही नयनों से गंगा, अब हरो प्रभु सारे गम।

नयन से झरती जो पीड़ा, अपनी बन्शी बजा दे।
खिल उठे मुरझाई बगिया, अब हरि रिमझिम बरस
दे। हरि को जपते रहेंगे, खोजते हरी रहेंगे।
बहेगी नयनों से गंगा, बहते उसमें रहेगे।

196.

हरि हरि जप मन प्यार बढ़ा ले, विरह अग्नि को खूब बढ़ाले।
वैभव सारे फीके पड़ते, अंखियाँ रोवें कमल खिला ले।
जग के दन्श सतावें सह ले, स्वप्निल दुनिया तप यह कर ले।
उसकी मर्जी आना जाना, सुरति उसी की मन तू कर ले।

दो दिन का यह रैन बसेरा, ना समझे मन रोवें अंखिया।
प्रीति बढ़ा ले हरि सुखनन्दन, दुख की टूटे सारी कड़ियां।
जपता जा हो उसे समर्पित, तेरा क्या सोंचो मन पागल।
नयन बसा ले उसकी मूरति, जहाँ ले चले देगा सम्बल।

जग की अनजानी पगडण्डी, जप हरि को वह इसे संवारे।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान सब उसी सहारे।
लहर यहाँ सागर हरि नाचे, बहे लहर हम तू क्या सोंचे।
झिलमिल करती उठे तरंगे, छिपा सभी में हरि ही नाचे।

197.

नयनों से जो झरती पीड़ा, मन ऐसा तू गीत सुना दे।
खिल जाये मुरझाई बगिया, जल रिमझिम रिमझिम बरसा दें।
मेरा बालम रूठ गया जो, तान सुना दे उसे मना दे।
उस बिन चैन न आये मुझको, रोम रोम में प्यार जगा दे।

कठपुतली माना हम उसकी, फिर भी बहते नयन हमारे।
दिल पसीज जाये उसका मन, गीत सुना दे हम तो हारे।
जनम जनम से उससे नाता, वह ही मेरा भाग्य विधाता।
बना हुआ क्यों फिर हरजाई, समझ नहीं यह मेरे आता।

जग की अनजानी पगडण्डी, किसको बोलें किसे पुकारे?
मेरे प्राण पुकारे तुमको, सुन लो अब तो हम है हारे।
दूर होंय दुख बरसे नयना, सुना मुझे धुन ऐसी प्यारी।
छा जाये हरि इन नयनों में, छूटे सब मेरी लाचारी।

198.

दिन बीते हरि तुम ना आये, धीरज मन को कौन बंधाये।
नीर बहावे मेरी अंखियां, काली रातें मुझे डराये।
अगम अगोचर पार न तेरा, दुनिया सारी रैन बसेरा।
बहते आंखों में आँसू हैं, पीड़ हरो प्रभु जग है तेरा।

दीनबन्धु करूणा के सागर, अंखियां मेरी झरती झर झर।
अपना प्यार मुझे तू दे दे, सुना मुझे बन्शी बन्शीधर।
जाती संध्या तुझे पुकारूँ, कैसे तुमको नाथ मनाऊँ।
नाथ अबल मैं अज्ञानी हूं, इन अंखियों से नीर बहाऊँ।

जपूं तुझे दिल पल पल रोवे, बता तुझे हम कैसे खोजे?
डगमग करती जीवन नौका, पार लगा दे तुमको पूजें।
बाट निहारें अंखिया मेरी, निर्मोही ना बन अब छलिया।
दास तुम्हारा जनम जनम का, चरणों को धोवें यह अंखियां।

199.

क्या करूँ मैं ध्यान तेरा, सब जगह तेरा बसेरा।
नयनों से बहते आंसू, सुन मन की मैं हूँ तेरा।
तू जगत का ईश मालिक, कृपा करो तेरे बालक।
चाहे हम प्यार तेरा, ज्ञान मिले पहुँचे तुम तक।

हरि जपें तुझे ही पूजें, नाव मेरी के खिवैया।
देख लो आंखे उठाकर, डूब जाये यह न नैया।
प्यार में खो गई मीरा, बन सका क्यों नहीं पतंगा।
प्रेम में रंग ले मुझे तू, दास तेरा मन हो चंगा।

हरि मुझे तुम माफ करना, घूमता अनजान गलियां।
नयन में आंसू हमारे, पायें कब जाने सैंया।
हरि सदा जपते रहे हम, बहती नयनों से धारा।
दिल से मेरे ना जाना, शरणा तेरी मैं हारा।

200.

चाहते थे प्यार को हम, छिपा तू क्यों छोड़ कान्हा?
नीर आंखों से बरसते, न गुनाह जो प्यार चीन्हा।
तेरे बालक कन्हैया, नाव मेरी के खिवैया।
छोड़ ना मझधार मुझको, तुम लगा दो पार नैया।

मृगतृष्णा में फंसे यहाँ, भागते चहुँ ओर डोलें।
ना पता मंजिल कहाँ हैं, जलते हैं दिल में शोले।
स्वप्न सा संसार सारा, दिल नहीं लगता हमारा।
कूल ना आता पकड़ में, बहती नयनों से धारा।

डगर यह अनजान मेरी, चल गिरता होती केरी।
ज्ञान का दीपक जला दो, तम घना मैं नाथ टेरी।
नयन में आंसू हमारे, चल गिरे पहुँचे न द्वारे।
लाज को रखना हरी तुम, इस जग में तू ही तारे।

201.

बहलाऊँ इस दिल को कैसे, ज्ञान कहाँ से लाऊँ?
नीर बहावें मेरी अंखियां, दिल का दर्द सुनाऊँ।
प्रियतम खोज रही यह अंखियां, डूब प्यार में जाऊँ।
स्वारथ की दुनिया सारी है, किसको नीर दिखाऊँ?

हरि हरि जपता तू अब सुन ले, प्यार तुम्हारा पाऊँ।
मुझसे ना रूठो तुम मोहन, तुमको नाथ मनाऊँ।
पाप पुण्य कर्मो की रेखा, पार न मैं कर पाऊँ।
शीश झुकाये खड़ा द्वार पर, कृपा होय तर जाऊँ।

ले चल मुझको होले होले, मेले में घबराऊँ।
काली रात डरावें मुझकों, मैं रो तुझे बुलाऊँ।
नयनों में मेरे बस जाओ, डर को दूर भगाऊँ।
अज्ञानी हम नाथ अबल है, चाह प्यार को पाऊँ।

202.

तेरे दर पर आये हम, मुझे तुम प्यार को देना।
नयन से नीर बहते है, क्षमा तुम मुझे कर देना।
विधि नहीं जानता मैं कुछ, ना रूठो तम गहरा है।
अबल अज्ञान में हूँ मैं, सहारा एक तेरा है।

बनो निर्मोही न इतने, नहीं लगता हमारा दिल।
बहती नयनों से धारा, तड़फता ईश मेरा दिल।
नहीं अब तुम छिपो छलिया, तुझे मैं खोजती हरपल।
मनाऊँ नाथ मैं कैसे, कहीं संध्या न जाये ढल।

तुम्ही किस्ती के खेवट, दे दे हमको तू मौका।
नयन में नीर मेरे हैं, लगाना पार यह नौका।
यही विनती करूँ छलिया, उठा देखो नजर को तुम।
खाली झोली ना जाऊँ, तुम्हारा प्यार पायें हम।

203.

हरि हरि जपो मिलेगा चैना, जप ले तपती धरा यहाँ है।
बहते रहे जगत में नयना, जपो अश्रु से सुमन खिलें है।
किससे करनी यहाँ शिकायत, निभा यहाँ हँस या तू रोकर।
जीते सब अपनी चाहत ले, देख रहा सब नभ चुप होकर।

हरि से प्रीति बढ़ा पागल मन, लगा ध्यान अन्तस सुखनन्दन।
ले जाती है धारा तुमको, डर न लगे घबराये ना मन।
करूणा सागर नाम उसी का, देगा भर वह तेरी गागर।
कर विश्वास हरी को जप ले, ध्यान लगा सुन ले बन्शी स्वर।

कठपुतली हरि की हरि भूले, दुनिया देख इसी मे खोये।
डोर हाथ में उसके नाचे, सुरति रहे डर नहीं सताये।
जप हरि हरि मन, तू जपता जा, प्यार बढ़ाकर तू चलता जा।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, नेह लिये निर्भय चलता जा।

204.

क्या करे शिकवा किसी से, रूठ तुम मुझसे गये जब।
नीर नयनों से निकलते, तुम सुनोगे जाने न कब?
चल रहे ले नाम तेरा, जानूं सागर यह गहरा।
नाव मेरी डगमगाती, आस तेरी दे सहारा।

इस जगत के तुम रचैया, नाथ मैं बालक तुम्हारा।
घूमता अनजान गलियां, बहती नयनों से धारा।
इस जग में तुम जो रूठे, न सुनेगा कोई मेरी।
निज चरण में जगह दे दो, जन्मों जन्मों से चेरी।

लाज को रखना हरी तुम, जाती ले मुझको धारा।
चैन आये मुझे प्रियतम, प्यार दे मैं नाथ हारा।
सदा हो सुमरण तुम्हारा, नयन से हरि तुम न जाना।
जाम तेरा पी मगन हो, भूल जाऊँ सब जमाना।

205.

दर्शन की यह प्यासी अंखियां, खोज नहीं मैं तुमको पाऊँ।
कण कण में तुम बसे हुए हो, कैसे अपनी प्यास बुझाऊँ।
पाप पुण्य सुख दुख को देखूँ, बहते आंसू कैसे रोकूँ?
अज्ञानी हूँ दास तुम्हारा, दीप जला अंधियारा रोकूँ।

मेरा क्या सब कुछ है तेरा, खेल यहाँ चलता सब तेरा।
कठपुतली बन नाच रहे हैं, ना जाने कब होय सुबेरा।
स्वप्निल जब यह सारी दुनिया, जला रहा दिल क्यों फिर छलिया।
प्यार तुम्हारे खो जाऊँ मैं, इतना तो कर दे तू रसिया।

अपना प्यार सदा तुम देना, अपनी छैयां में प्रभु रखना।
मेरे सर्जक तुम हेा पालक, बहते मेरे देखो नयना।
जलूँ विरह में जलता जाऊँ, जब तक हरि तुमको ना पाऊँ।
बहती रहे नयन से गंगा, अन्तहीन पथ तुझे मनाऊँ।

206.

हरि हर तुझे पुकारूँ सुन ले, अपना प्यार मुझे तू देना।
तुम बिन रोयें मेरी अंखियां, मुझको पड़े नहीं है चैना।
तेरी माया यहाँ नचाती, पल पल अंखियां नीर गिराती।
मैं अज्ञानी कुछ ना जानूँ, कैसे भेजूँ तुमको पाती।

सुख दुख के तू खेल खिलावे, चाहत जगा जगा भटकावे।
बनो न निर्मोही तुम इतने, छिपे कहाँ हो तू ना पावे।
गिरे नीर हरि मेरे झर झर, खोज रहे हैं गया तू किधर।
अपरंपार तुम्हारी माया, सुना मुझे दो बन्शी के स्वर।

जीवन माना है इक सुपना, यहाँ दन्श पर जग के लगते।
पियूं नाम की मदिरा तेरी, यही सहारा दुख को हरते।
कृपा मिले खिल जाये बगिया, इन नयनों में आंसू आये।
लाज राखना इस मेले में, देना शक्ति तुझे हम पाये।

207.

जो भी है सहना ही होगा, हँस या रो तप करना होगा।
स्वप्निल दुनिया रंग बदलती, देख देख सब जीना होगा।
बहती जाती जीवन नदिया, अन्तहीन न कोई किनारा।
छोड़ा जिसने हरि हाथों में, लिये जा रही हरि की धारा।

कितने देख यहाँ पर सुपने, टूटें बिखरें रो मत पगले।
हरि हरि जप धारा में बह ले, मन के खेल हरि में जी ले।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान भी उसका खेला।
नीर बहें हरि चरण चढ़ा दे, याद उसे कर प्यारा छैला।

हरि हरि जप हरि सबका मालिक, नैया पार करे बन नाविक।
उसकी मर्जी यहाँ नचावे, बन जा मन तू उसका सेवक।
हरि हरि जप वह ज्ञान जगावे, विनय करो ना वह उलझावे।
उसे बसा लो इन नयनों में, छूटे चिन्ता हरि ही भावे।

208.

आवाज तुझे मैं दूँ, तुम माफ करो अवगुन।
तेरी सब यह माया, मैं कौन यहाँ ले सुन।
तुम बिन जिय ना लगता, दुख दर्द यहाँ डसता।
दुख भंजक नाम तेरा, दुख हर लो दुखहर्ता।

चरणों में पड़ते हम, सुख का दाता तूही।
हरि लाज रखो मेरी, मेरा साहिल तू ही।
पी लूँ तेरी मदिरा, गम निशा ना हो कही।
हरि प्यार मिले तेरा, ले चल फिर मुझे कहीं।

पायें कैसे तुमको, चाहें तेरा सम्बल।
हरि देख हमें तुम लो, नयनों से गिरता जल।
हरि नीर गिरें मेरे, यादें तेरी आती।
करूणा के सागर तुम, दो जला ज्ञान बाती।

209.

हरि हरि गायें तुझे मनायें, बीतेगी यह काली रैना।
लिये वासना जग में हारा, टूटे सुपने आया रोना।
एक सहारा तेरा केवल, नैया मेरी पार लगा दे।
बहते इन आंखो से आंसू, प्यारी बन्शी मुझे सुना दे।

मन्दिर अपने मुझे जगह दो, करूँ सदा मैं तेरी पूजा।
कुछ ना तुम बिन अच्छा लगता, नहीं और कोई भी दूजा।
थक कर गिरे थामना हमको, करूणा सागर, तुम कहलाते।
छाया है सब ओर अंधेरा, कृपा होय पथ को दर्शाते।

जीवन एक पहेली माना, ऋषि मुनि हारे कुछ ना जाना।
मिटे लहर सागर के संग जब, नाचे सागर बस यह जाना।
माना स्वप्निल सारी दुनिया, अपना हमें बना लो छलिया।
ज्ञान मिले मिट बहूँ तुझी में, सत्य तुही भर आई अंखियां।

210.

जीवन यह क्यों सांसे लेता, तुम बिन हरि मैं ना रह पाऊँ।
विछुड़ गये जब से तुम मोहन, रोऊँ हरपल नीर बहाऊँ।
इस जीवन के तुम ही स्वामी, तुम ही सर्जक तुम ही पालक।
नीर बहाती मेरी अंखियां, कृपा करो मैं तेरा बालक।

घना अंधेरा अज्ञानी मैं, दीप जला दो मेरे घट में।
तुमको पाऊँ नैन बिछाऊँ, सफल होय जीवन इस जग में।
हरि हरि जपें करें हम पूजा, मेरे इन नयनों में बस जा।
नहीं डरायें काली रातें, रोम रोम में मेरे छा जा।

बन्शी तेरी सदा बज रही, जल में प्यासी यहाँ फिर रही।
कण कण में तू बसा हुआ है, क्यों अंखियां ना खोज पा रही।
कैसे पूजा करूँ तुम्हारी, पथ ना दीखे चल चल गिरता।
पांव पड़ू. मैं दास तुम्हारा, इन नयनों से पानी गिरता।

211

जो हरि चाहे वह ही होता, तेरे सोचे क्या मन होता?
कितना सोचा कितना पाया, मर्जी हरि की क्यों ना जीता?
कर स्वीकार मिला जो कुछ भी, चैन मिलेगा तेरे दिल को।
करनी किससे यहाँ शिकायत, समझे क्यों ना स्वप्निल जग को।

बन बंजारा जग में जी ले, जाता तन यह भी ना अपना।
चलता जा जपता जा हरि को, सारा जग तो है इक सुपना।
आज यहाँ कल होय कहाँ पर, हरि की लीला हरि ही जाने।
आया मर्जी नाच यहाँ पर, कठपुतली है जान दिवाने।

दर्द लिये तड़फे कितना दिल, नीर गिरें नयनों से रिमझिम।
कर कर जतन यहाँ तू हारा, जी हरि मर्जी मिट जाते गम।
हरि हरि जप है एक सहारा, ले जायेगी तुझको धारा।
डर न लगेगा तूफानो में, संग तेरे जब खेवन हारा।

कौन यहाँ कुछ पल तू खेले, सब है वही समर्पण कर ले।
मर्जी उसकी चले यहाँ पर, लहर बना सागर में बह ले।
हरि हरि जप सुख पायेगा मन, बहे नयन हरि चरण चढ़ा दे।
ले जायेगा तेरी नौका, यह पतवार उसी को दे दे।

212

हरि पुकारे हम तुझी को, तुम कहो जायें कहाँ?
लाज को हरि राखना तुम, कोई न तुम बिन यहाँ।
उठ रहे मन में अनेको, क्या हो संकल्प किसका?
जाती ले हमको धारा, जोर न चले किसी का।

मैं नहीं तू ही यहाँ है, दर्द दरिया बहा है।
पर सहा जाता नहीं यह, चरण पड़ता जहाँ है।
कोई राजा रंक ज्ञानी, अज्ञान ले दुखी है।
मति कुमति का खेल चलता, देखता तू मही है।

धूप छाया खेल दुनिया, जा रहा छला छलिया।
पाप क्या है पुण्य क्या है, रोती मेरी अंखियां।
तू मुझे रख ले शरण में, हरि नयनों में बसना।
कुछ न जानूं दास तेरा, प्यासा पानी देना।

213

बहते आंसू बहते जाये, पर प्यार तुम्हारा हरि पायें।
मर्जी तेरी से आये हम, कब पता नहीं तू ले जाये।
मैं कौन करूँ तुमसे शिकवा, मर्जी से यहाँ नचाता है।
पूछा ही नहिं तूने कुछ भी, दिल रोता जी घबराता है।

कैसे कह तुझे मनाये हम, तू मेरा भाग्य विधाता है।
नयनों से बहती है गंगा, दिल मेरा तुझे बुलाता है।
मृगतृष्णा में फंस जिय रोवे, ढूंढता कोई सहारा है।
पाना क्या ले जाना है क्या, क्षण भंगुर जग यह सारा है।

स्वप्निल है यह सारी दुनिया, कछ पल का चलता स्वप्न यहाँ।
दुख में पल जब भारी होते, मांगे हरि से दे प्यार यहाँ।
तेरी माया रोती काया, नयनों से नीर बरसते हैं।
हरि बसो हृदय प्यासा जिवड़ा, ऋषि मुनि सब तुझे तरसते है।

214

मन चाहे है उड़ना, पर उड़े कहाँ जाये?
दीखे ना पथ कोई, दिल विवश हुआ रोये।
हरि कृपा चाहते हम, नयनों से बहता जल।
हरि हार गये हैं हम, हरि कृपा करो दो बल।

जग के पालक सुन ले, बालक तेरे लख ले।
बगिया तेरी खिलते, दे प्यार पीड़ हर ले।
सुन ले तुही सहारा, मैं बहूँ बीच धारा।
आंसू किसे दिखायें, दीखे नहीं किनारा।

क्या चाह जिन्दगी की, स्वप्निल सारी दुनिया।
दो पल खुशियाँ दे दे, ना छल मुझको छलिया।
तुमको हम रहे मना, मिट जाये मेरे गम।
लो शरण मुझे अपनी, दो प्यार नयन यह नम।

215

सोचता मन क्या यहाँ है, तू नहीं उसका जहाँ है।
कोई न जाने जगत में, खेल यह क्या चल रहा है।
कितनी योनी रंक राजा, सब दिखाते हैं तमाशा।
मन्द बुद्धि कोई ज्ञानी, स्वप्न सब मिटती न आशा।

आये ले जाये वह ही, प्यार मन हरि से बढ़ा ले।
बीतेगी काली रैना, जख्म दिल के तू मिटा ले।
नीर नयनों से है बहते, लख विवशता यहाँ रोते।
सौप दे पतवार उसको, धन्य हरी मर्जी बहते।

सारे लेते है सुपने, टूटते फिर नयन बहते।
स्वप्न उसका सभी उसका, बस न कुछ यह जान जपते।
जप हरि ले जाती धारा, जो मिला हरि ही सहारा।
स्वप्न सा कुछ पल यहाँ हैं, छोड़ मैं हरि खेल सारा।

जपो हरि हरि सोच मिटती, सत्य क्या ना कौन है तू।
जैसी भी रचना रच दी, क्या नहीं कठपूतली तू?
वह है कण कण का मालिक, ज्ञान उपजे ज्ञान दे रब।
अश्रु चरणों में चढ़ा दे, जान ले हरि ही यहाँ सब।

216

कितने आये सब विछुड़ गये, जीवन गाये नित राग नये।
क्या पकड़े छोड़ सभी उसका, हरि खेल खिलाये नये नये।
हरि खेल रहा कठपुतली तू, मैं छोड़ यहाँ बस बह ले तू।
हरि जैसा राखे तू रह ले, मर्जी उसकी तप कर ले तू।

हरि हरि जप यह बरसे नयना, जाने सब वह फिर क्या कहना।
मन प्रीति बढ़ा हरि कटे सफर, दुनिया सारी है इक सुपना।
सुख दुख का चलता खेल यहाँ, दुख देख देख रोती अंखियां।
जो नहीं यहाँ अपने वश में, हरि जपो ले चलेगा नैया।

हरि हरि जप वही सहारा है, उस बिन होता सब खारा है।
डर लगता निज परछाई से, देता तब वही सहारा है।
जप हरि हरि कुछ पल खेल यहाँ, जायेगा फिर ना पता कहाँ।
जप शक्ति मिलेगी इस दिल को, कर उसे समर्पण वही यहाँ।

217.

हरि मुझे रख लो शरण में, दास तेरा रो रहा है।
घूमता अनजान दुनिया, दिल नहीं बस में रहा है।
नयन से आंसू निकलते, पूछता यदि मुझे मिलते।
क्या गुनाह कहो हमारा, तुम बिना हम तो तड़फते।

दर्शन को प्यासी अंखियां, तुम बसो मेरे नयन में।
पीऊँ हरि तेरी मदिरा, न विछुड़ना रहना दिल में।
प्यार दे बस प्यार चाहूँ, प्यार में ही डूब जाऊँ।
तेरी दुनिया तू जाने, मैं अबल ना समझ पाऊँ।

खिलती मुरझाई बगिया, नयन से गिरें है झड़ियां।
तन मगन हो नाचता है, जब छाते दिल में रसिया।
नयना बहते याद कर ले, मन जपो वह पीड़ हर ले।
और ना कोई ठिकाना, तप यह मन हरि को जप ले।

218.

किसे सुनाये दास्ता को, भीगी मेरी अंखियां।
तुमसे भी कुछ न कह सकें, क्यों छिपते हो छलिया।
ले दर्द हम तो फिर रहे, अनजानी है दुनिया।
दीदार तो होगा कभी, राह देखती अंखियां।

तू कौन है मैं कौन हूँ, कोई तो है नाता।
नजरें उठा कर देख ले, क्यों फिरता है बचता।
आये कहाँ से जा रहे, कुछ जानते ना यहाँ।
दो पल मिले हमको खुशी, आंसू बरसते यहाँ।

चलने को चलता हूँ मैं, थक गया अब है न दम।
नयन से बहे आंसू है, तुम बिन रहे अब न हम।
पिला मुझे हाला कोई, मैं भूलूं सारे गम।
तुम बसो नयनो में हरी, पुकारते तुमको हम।

219.

निशदिन बरसत नयन हमारे, पहुँच न पाऊँ तेरे द्वारे।
जुगत लगा दे ऐसी कोई, दर्शन पाऊँ हम तो हारे।
दर दर डोलूं नीर बहाऊँ, तुम बिन उलझ उलझ मैं जाऊँ।
मुझे थाम ले हाथ बढ़ा कर, आँसू का मैं हार चढ़ाऊँ।

कुछ न पास यह झोली खाली, मुझे डरावें रातें काली।
आंख उठाकर मुझे देख लो, कर दो कृपा दास हूँ माली।
कुछ भी मेरा नाथ यहाँ ना, सब तेरा दुख दूर भगाऊँ।
हरि गुन गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, अनहद बाजे लय हो जाऊँ।

हरि हरि जपता मन्दिर तेरा, तुझ बिन कृपा न होय सुबेरा।
करूणा सागर करो कृपा तुम, प्यारा है बस तेरा डेरा।
आदि सत्य तू अन्त सत्य है, प्राण पुकारे रोंवे अंखियां।
मुझको अपनी शरण राख लो, पड़ू. नाथ मैं तेरे पैंया।

220.

चलेगे हम चलाये जब तक, न और हमें कोई ठिकाना।
जब भी जगत में भूले तुझे, बहे नयन मुश्किल था जीना।
जन्मे जगत, पाला इसी ने, जो भी मिला कुछ था न बस में।
आंख बरसी ले चाह रोये, कुछ पल यहाँ, रहना न जग में।

सागर बहे क्या बस लहर का, देखे लहर सब कुछ वही है।
मर्जी सागर की जान बहो, लहर समझे तप तो यही है।
लहर बह सागर ही ठिकाना, कण कण में, बन ना बेगाना।
जपो उसे आयेगा चैना, मर्जी इसकी चले जमाना।

जपता जा खेले यह सागर, प्रीति बढ़ा यही है रचैया।
ज्ञान यही दे जप ले इसको, मन न समझता रोती अंखियाँ।
जप ले इसे अन्तस यही है, साथ है पर आंखे बही है।
जानो मन बीतेगा सुपना, जपो उसे फिर डर न कहीं है।

221.

हरि में जीना, हरि में मरना, चैन मिले मन जीवन सुपना।
इतना जग से मोह करे क्यों, छूटे तन यह भी न अपना।
हरि से मन जब प्रीति लगाई, क्यों अंखियां यह भर भर आई।
दो दिन का यह रैन बसेरा, मन हो जा हरि की शरणाई।

जप हरि पार करेगा किस्ती, कौन यहाँ तू चलती उसकी।
अपना कौन पराया जग में, जप ले हरि को दुनिया उसकी।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में उसकी चलती।
कितनी चाह लिये जीवन में, हरि बिन कृपा न पूरी होती।

ज्ञानी कोई यहाँ अज्ञानी, खेल खेलते सब ही अपना।
हरि बिन सूना सूना लागे, अंखियां रोवे मिटे न सुपना।
हरि तुम बस जाओ नयनों में, बीतेगी यह काली रैना।
अन्तर्यामी दिल की जानो, पड़ू. पांव क्या तुमसे कहना।

222.

हरि भज हरि भज जाने वह सब, शीश झुका चलती उसकी सब।
कल की मन क्या चिन्ता करता, देखे सब आंसू बहते जब।
उस बिन पार न होवे नैया, अनजाना सब रोवे अंखियाँ।
जायें कहाँ आये कहाँ से, पता नहीं जाने कन्हैया।

हरि हरि भज कट जाये रैना, उस बिन आये कभी न चैना।
उसके चले यहाँ इशारे, कौन यहाँ तू जग है सुपना।
माया उसकी कितनी योनी, सुख दुख भोगें जग के अन्दर।
बस कितना मन देख यहाँ ले, नयन बहाये आंसू झर झर।

हरि हरि भज दिल को समझाले, कह दे और कहाँ हम जावे?
लाज राखना इस मेले में, तुमको भजें तुझी को पावें।
बहती इन नयनों से गंगा, मेरे जीवन का तू सुपना।
दास तुम्हारा शरण राख लो, और कहूँ क्या तन ना अपना।

223.

तेरी चौखट पर मस्तक रख, तुझे बुलावें हरि तू आ जा।
बहते हैं नयनों से आंसू, अपना प्यार हमें तू दे जा।
अगम अगोचर पार न तेरा, माया तेरी सबको घेरा।
हरि दर्शन की प्यासी अंखियां, ना जाने कब होय सुबेरा।

तेरे गीतों को मैं गाऊँ, जप तुमको मैं मन बहलाऊँ।
ऋषि मुनि हारे तेरे सम्मुख, अज्ञानी मैं कैसे पाऊँ?
मन जप मन जप जपता ही जा, तेरा खेवनहार वही है।
कभी खुलेगी उसकी आंखे, वही यहाँ तू यहाँ नहीं है।

स्वप्निल दुनिया कुछ पल खेले, दुनिया रंग बदलती जी ले।
बिन जप चैन न आये दिल को, उलझ जगत में कितना रो ले।
हरि हरि जपो मुक्ति का दाता, वह ही तो है भाग्यविधाता।
उस बिन और कहेगा किसको, जपले दिल का कमल खिलाता।

हरि जप मन पी उसकी हाला, टूटेगा फिर दुख से नाता।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, उसे भूल क्यों पानी लाता।
दे पतवार उसी के हाथों, बना लहर सागर में बह ले।
नाचे सागर लहर यहाँ क्या, जान यहाँ मन हरि में जी ले।

224.

लड़खड़ायें जब कदम यह, हरि मुझे सम्भालना।
मैं नहीं सब कुछ तुही है, जानना न भूलना।
जगत में अज्ञान बिखरा, ज्ञान पाऊँगा कहाँ?
तुझ कृपा बिन ना मिले यह, रंग लगता ना यहाँ।

हरि जपें जपते रहे हम, नयन से आंसू बहें।
प्यार अपना हमें देना, सांस यह जब तक बहे।
अजनबी दुनिया तुम्हारी, नाचे कठपुतली बन।
डोर तेरे हाथ में हरि, ना खिले तुम बिन सुमन।

लाज रखना तुम नियन्ता, तुम्हारी सारी मही।
बहते नयनों से आंसू, तुम बिना कुछ भी नही।
लो शरण बालक तुम्हारा, ले चलो हमको वहाँ।
कर्म शुभ हो नयन तुम हो, दे हमें कोना वहाँ।

225.

कितने सुख कितने दुख जग में, ना तृप्त हुआ दौड़ा इसमे।
सुपने उठते नित नये रहे, पाया क्या मन तड़फा इसमें।
किसे पीछे भागे पागल, मन तड़फा इसमें।
किसके पीछे भागे पागल, मन ढूंढ रहा किसका सम्बल?
बैचेन जिया पर ना माने, यह बहा रहा है हरपल जल।

हरि हरि जप शान्ति मिले इसमें, जग प्रीति न कर दुख है इसमें।
जो मिला निभा ले तप कर ले, मन जान नहीं कुछ भी बस में।
स्वप्निल दुनिया मेला दो दिन, क्यों होता पागल मिटता तन।
सब नाच रहे मैं लिये यहाँ, तू इसे मिटा बन्जारा बन।

हरि हरि जप यह हरि की लीला, नाचे तू जाने कुछ भी ना।
बस एक सहारा हरि ही है, मन जान चैन इस बिन है ना।
हरि ध्यान करो है ज्ञान यही, उपजे विवेक तन करे वही।
पड़ जा मन तू हरि के चरणों, तू क्या नाचे सब जगह वही।

226.

मन रोया हरि तुमको खोया, कैसे समझाऊँ मैं दिल को।
तड़फा जग में मैं उलझ उलझ, दे दिशा भूल ना हरि हमको।
हरि कृपा मिले पथ पाऊँ मैं, नयनों में तुझे समाऊँ मैं।
ना भटकूँ जग की तृष्णा में, दे प्यार तुझे हरि पाऊँ मैं।

तुम बिना लगता ना यहाँ जिया, तुमको ढूंढू छिप गया कहाँ।
तपते दिल को दे शीतलता, तुम बिन मिलता ना चैन यहाँ।
नयना यह सूख न पाते हैं, बहती आसूं की है धारा।
हरि कृपा मुझे अपनी दे दो, मैं अबल नाथ देखो हारा।

ना रूके नयन का पानी है, ऐसा भी तू क्या दानी है।
तुम आंख उठा कर तो देखो, दो पल की यह जिंदगानी है।
ले दर्द लिये हम चलते है, नयनों से अश्रु निकलते हैं।
बस चाह यही इस जीवन की, दिल में रहते हम रोते है।

227.

हरि जपो वह ही सहारा, उस बिन हर कोई हारा।
ज्योति हरि की हिय जले जब, ना बहे फिर अश्रु खारा।
वासना हमको रूलाती, मन न समझे जले छाती।
कौन अपना है पराया, जप हरि को दिन क्या राती।

हरि जपो वह ज्ञान देगा, खो गया पथ राह देगा।
बहे नयनों से आंसू, दिल जले वह शान्ति देगा।
हरि जप उसकी ही लीला, कौन तू डरता जो जिया।
चल रही मर्जी उसी की, जाये ना पूछे छलिया।

मन्द बुद्धि कोई ज्ञानी, यह जगत की है कहानी।
बस चले किसका यहाँ है, नयनों से आता पानी।
हरि जपो ज्ञानी वही है, हरि जपो दानी वही है।
ज्ञान जो हृदय में उपजे, तन तो बस करे वही है।

228.

हरि जपो जपते रहो मन, ज्ञान देगा कौन उस बिन।
मन्दबुद्धि कोई ज्ञानी, उस बिना खिलता न जीवन।
स्वप्न सी दुनिया समझ ले, जप उसे अमृत को पी ले।
राह तपती मिले छैया, मान हरि से प्यार कर ले।

हरि जप हरि की ही लीला, मैं मिटा मन मान कहना।
जानो कठपुतली उसकी, सुरति मन में सदा रखना।
नयन में हरि बसा पागल, चलता जा दुनिया स्वप्निल।
मन करे किससे शिकायत, बहे नदिया कुछ यहाँ पल।

पी अमी प्याला हरी का, खेल सुख दुख का यहाँ मन।
जप हरि जपता ही जा मन, नयन झरे जैसे सावन।
खिल जाये तेरी बगिया, तपता दिल मिलती छैया।
छोड़ो मैं नाचे सागर, बन लहर संग देख सैंया।

229.

मिले यहाँ पल पकड़ नहीं चल, पकड़े पर यह मन तेा चंचल।
विछुड़ा जाता सारा मेला, साथ आज जो नहीं यहाँ कल।
बहती लहरें हाथ न आयें, मिल मिल यहाँ विछुड़ वह जाये।
कर कर याद यहाँ रो कितना, हरि बिन चैन न दिल को आये।

पी पी रट वह प्यारा तेरा, छटता तम फिर होय सुबेरा।
आनी जानी यह दुनिया है, पकड़े किसको रैन बसेरा।
खेल खिलावे हमको छलिया, चले न बस जब रोए अंखिया।
पड़ जा हरि चरणों में पागल, पार लगावे तेरी नैया।

हरि हरि जप कुछ और नहीं बस, मर्जी उसकी मन तू बह ले।
कितने रंग जगत में छलके, आंख खोल कर मन तू लख ले।
हरि हरि जपो चैन वह मन का, प्यास मिटेगी जल पी उसका।
बरसेंगे नयनों से आंसू, सुमन खिले मुरझाये तन का।

230.

हरि जपो हरि हरि जपो मन, सत्य तो वह ही सदा है।
कौन पौछे नीर उस बिन, जप हरि को संग सदा है।
जाये कट काली रैना, हरि जपो मन मान कहना।
बन जा कठपुतली उसकी, लिये सुरति बहते रहना।

बह लहर बन जिन्दगी में, जानो मन जीवन सुपना।
ज्ञान भी मन जान कितना, बस यहाँ चले है कितना।
कितने टूटे स्वप्न मन के, न कोई गिनती यहाँ है।
छोड़ तृष्णा जप हरी को, नाच सब उसका यहाँ है।

मिल गया जो दर्द दिल को, मन करो स्वीकार उसको।
अपनी मर्जी न यहाँ पर, चाहता हरि समझ उसको।
लहर तू सागर हरी है, जान मन उसकी कड़ी है।
जो बहे आंसू नयन से, चढ़ा उसको पिव वही है।

231.

नयनों में मेरे आंसू है, जीवन में तुम बिन कुछ ना है।
तुम पार लगा दो यह नैया, कुछ जानूं ना तू खेवट है।
तुम नचा रहे मैं नाच रहा, कैसे आंसू अपने पोछूँ?
चरणों का मुझे बना सेवक, दिल रोता कह किससे पूछूँ।

अन्तर्यामी तुम जानो सब, मेरे दिल की सुन ले तू रब।
तू पिला मुझे अपनी हाला, तू आ मेरे सुपनों में अब।
कैसी दुनिया तूने रच दी, नयनों में बादल उमड़ रहे।
पल भर का नही ठिकाना है, ले यहाँ वासना विलख रहे।

हरि कृपा सदा अपनी रखना, अनजानी है जग की गलियाँ।
आना जाना तू ही जाने, मेरी रोती है यह अंखियां। हरि
करें सदा तेरी पूजा, तुम दास बना लो हरि अपना।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, कट जायेगा सारा सुपना।

232.

हरि ओम ओम हरि ओम ओम, दिन बीत रहे बोले न कौन?
तू आग लगा दिल में ऐसी, तुम बिन न रहूँ बोले न कौन?
नयनों से बहते आंसू हैं, न नजर उठा देखे मैं कौन?
अज्ञानी पर बालक तेरा, निष्ठुर बन ना तू देख कौन?

हरि ओम गीत तेरे गायें, गाते गाते लय हो जायें।
तुम कृपा सदा अपनी रखना, ले याद नयन आंसू आये।
इस जग के तुम ही पालक हो, कैसे तेरा गुणगान करे।
कटती राते ना अब तुम बिन, कर रहे प्रतिक्षा याद करें।

जीवन की यह बहती नदिया, तू छोड़ छिप गया क्यों छलिया।
क्या गुनाह मेरा कुछ तो कह, यह रोती हैं मेरी अंखियां।
तुम बसो हृदय दो प्यार हमें, चाहूँ दे दे अपनी छैयां।
तपते मारग में चैन मिले, तुम कृपा करो पड़ता पैयां।

233.

जपते ही रहते सदा तुझे, खा खा चोटे हम यहाँ बुझे।
तू देखे ना देखे मर्जी, मैं कौन यहाँ जो कहूँ तुझे?
तुमको जपते आता चैना, बीतेगी प्रभु जी यह रैना।
तुझ प्रीति रंग में भीगूं मैं, इतनी तो मेरी सुन लेना।

तू आदि सत्य है अन्त सत्य, तू वर्तमान का भी राजा।
जैसा भी नाच नचाये तू, चाहूँ मेरे दिल में बस जा।
मैं बना लहर बहता जाऊँ, शिकवा न करूँ कोई दिल से।
तू सदा साथ तो मेरे है, कर कृपा ज्ञान पाऊँ तुमसे।

छलती तेरी माया छलिया, मेरी रोती रहती अंखियां।
तू प्यार हमें अपना दे दे, पड़ता हरि मैं तेरे पैंया।
कर रही प्रतीक्षा आंखें है, सांसे तेरा गुनगाती है।
हरि भूल न जाना कभी हमे, कर याद आंख यह रोती है।

234.

समय उड़ रहा पंख लगा कर, अंखियां मेरी झरती झरझर।
कैसे खोजूँ मैं कन्हैया, छिपा हुआ हर घट के भीतर।
तेरी यादें लागे प्यारी, तुमको भूले हुए भिखारी।
मृगमरीचिका मैं हम फंसते, नयन बहावे आंसू खारी।

हरि हरि जपे सहारा तू ही, बहती किस्ती डगर न कोई।
पार लगा दे मेरे खेवट, अंखिया जी भर भर कर रोई।
मेरे सर्जक मेरे पालक, इस जग का तू ही संचालक।
बालक तेरा कुछ ना जानू, दिल मेरा करता है धकधक।

लाज राखना दास तुम्हारा, अबल नाथ मैं तुम बिन हारा।
बस जाओ मेरे नयनों में, बजे यहाँ दिल का इकतारा।
सांस सांस में तुझे उचारें, जीवन मेरा तुही संवारे।
शरण तुम्हारी सदा रहूं मैं, तूफानों से तुही उबारे।

235.

हरि जपे जपते रहेंगे, बीत जायेगी उमरिया।
मैं लहर सागर तुही है, बस ना मेंरा सांवरिया।
तुम कृपा रखना सदा ही, चाहते ना प्यार हो कम।
प्यार को दिल में लिये हम, बह सके तुमको जपे हम।

नाचे कठपुतली बन कर, डोर तेरे हाथ में है।
नयन में जब नीर आये, देखना सर्जक तुही है।
कर रहा संसार पूजा, शक्ति का तू नाम दूजा।
मैं रिझाऊँ तुझे कैसे, अश्रु से मैं करूँ पूजा।

दिल जला जलता रहा है, छिपा क्यों जाने कहाँ है?
छोड़ कर मझधार हमको, तू मजा लेता रहा हैं।
ढल रही है शाम अब तो, आ मिलेंगे अब तुझी को।
नीर नयनो ने बहाया, हरि मनायेगे तुझी को।

236.

तुम दीन बन्धु करूणा सागर, जो रीती वह भर दे गागर।
हरि प्यार तुम्हारा पाने को, मेरे आंसू झरते झर झर।
कितने जन्मों से भटक रहा, तेरा कुछ भी ना पता चला।
जब मिटे लहर होती सागर, दिल में प्रकाश की ज्योति जला।

नयनों में आंसू आते हैं, पग पग पर ठोकर खाते है।
तेरा हम पता कहाँ पूछें, तू संग विवश बन रोते है।
हरि करे सदा पूजा तेरी, नयनों में मेरे रहो सदा।
तुमसे हरि प्रीति बढ़े हरपल, पल भर भी होना नहीं जुदा।

तू आदि सत्य है अन्त सत्य, यह वर्तमान तेरा खेला।
इतना हरि ज्ञान मुझे दे दो, तू साथ मेरे न है भूला।
हरि कृपा सदा रखना अपनी, लहरे तेरी बहता पानी।
उठती गिरती मिटती तुझमें, दे प्यार चाह बस यह दानी।

237.

इस जिन्दगी को कैसे मनायें, चाहूँ यही मैं पथ को दिखाये।
मिल जा छलिया पड़ता मैं पैया, नयनों में मेरे आंसू आये।
अंखियां रोती सुन ले तू खेवट, अज्ञानी मैं, बालक तुम्हारा।
पार लगा दे मेरी यह नौका, देख हमें ले बहती है धारा।

नयनों में सुपने दिल में आशा, टूटते जब यह बनता तमाशा।
आग लगा दी जलता यह दिल अब, देखूँ गगन को लेकर निराशा।
हरि हरि गाऊँ तुझी को मनाऊँ, भूल यह सुपना तुमको रिझाऊँ।
रैन बसेरा न रहना यहाँ है, दे ज्ञान हरि मैं तुझी को पाऊँ।

जपते तुमको मिटे दन्श सारा, बह जाता जल आंखो का खारा।
बस जा नयन में भूले सभी गम, प्राणों का मोहन तू ही प्यारा।
तुझी को पुकारे झोली खाली, कैसे बता जीवन को संवारे?
चाह कृपा की दे दे तू छलिया, देखो हमें खड़ा तेरे द्वारे।

238.

तेरी है महफिल प्याला खाली, गिरता नयन जल भूलो न ज्ञानी।
अपना मुझे लो दास तुम्हारा, तुम सा नहीं कोई और दानी।
बीते रातें गीतों को गाते, चाह प्यार की पड़ता मैं पैया।
अपना बना ले दिल को खिला दे, देख हमें ले रोती है अंखियां।

स्वप्निल दुनिया कुछ पल का मेला, डरूँ मैं सारे भय को मिटा दे।
ले चल यह किस्ती पार लगा दे, दिल में मेरे तू ज्ञान जगा दे।
जपूँ तुझे मैं आता है चैना, बरसे रिमझिम मेरे यह नयना।
बहती रहती पावन यह गंगा, जायेगी कट काली यह रैना।

तुमको जपेगे जपते रहे हम, प्यार तुम्हारा हो ना कभी कम।
मेरा सहारा तू ही बचा है, जो दर्द दिल में तुमको कहें हम।
करूँ नमन मैं तेरी है दुनिया, नचाता जैसा नाचता छलिया।
इस दिल में रहना जाना कभी न, बहूँ बन लहर संग रहना सैया।

239.

क्या गलत यहाँ क्या सही यहाँ, बहता नयनों से नीर यहाँ।
पैमाने सबके अलग अलग, हरि भज उस बिन ना चैन यहाँ।
पीड़ा का सागर उबल रहा, सुपने ले ले मन मचल रहा।
इस छोटी सी जिंदगानी में, कुछ मिले खुशी मन तड़फ रहा।

मन को समझाना ही होगा, विष को भी मन पीना होगा।
इस रंग बदलती दुनिया में, दुख सह कर भी हंसना होगा।
हरि भज हरि भज वह संग तेरे, दुख में जब जब यह नीर झरे।
कर याद उसे ही पागल मन, जग से आशा क्या यहाँ करे।

स्वारथ का सब जग में मेला, स्वारथ में मीत सभी होते।
मन निभा सभी हिय प्यार लिये, दुख तभी मिटे जब हरि जपते।
हरि हरि जप लो दुनिया उसकी, कहाँ जाये यहाँ यह किस्ती।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, उसको भूला अंखियां रोती।

240.

क्या यहाँ निवारण दुख का है, चिन्ता मन हरपल करता है।
स्वप्निल सारा यह जगत यहाँ, फिर भी मन को डर लगता है।
सुख दुख का खेल यहाँ चलता, ना रूके कभी चलता रहता।
हरि नयन बसे तब चैन मिले, उस बिन यह दिल जलता रहता।

हरि हरि जप मन छूटे चिन्ता, ले चले यहाँ वह किस्ती को।
दी चोंच वही चुग्गा देगा, पतवार सौंप दे तू उसको।
हरि जप ले ज्ञान वही देगा, जो ज्ञान उपजता तन करता।
बिन कृपा विवेक न जगता है, दुखभंजक वह दुख को हरता।

हरि हरि भज गा ले उसके स्वर, अंखियां भीगेगी यह तेरी।
सब पाप हरे पावन वह जल, हरि नयन बसा कर ना देरी।
तू लहर पता न जाये किधर, अन्तस में तार जुड़े उससे।
जो भजे हरि देखे संग वह, कहना क्या बोल न तू मुख से।

241.

जीवन के इन गलियारों में, क्या खोज लिये मैं भटक रहा।
नयनों से बहते आंसू है, सुपने ले ले दिल मचल रहा।
आंखे मिल जाती अन्धे को, दिल से जो भी करता पूजा।
सुमरण हरि का जो भी करता, दुख मिटते नहीं और दूजा।

स्वीकार करो उसकी मर्जी, देगा विवेक उसकी चलती।
मैं कौन यहाँ हरि खेल यहाँ, विखरे कांटे अंखियां झरती।
हरि हरि जप चैन मिलेगा मन, बन सके तेा मनुआ दृष्टा बन।
बस यहाँ नहीं कुछ भी तेरे, वह तुझे नचावे नाचो मन।

अज्ञानी को दे ज्ञान वहीं, दुख भंजक वह दुख को हरता।
करूणा का सागर कहलाता, जो जपे हृदय से हिय बसता।
माया तेरी हम नाच रहे, इन अंखियों से है नीर बहे।
हरि प्रीति बढ़े तुमसे हरपल, मैं दास तुम्हारा यही चहे।

242.

मैं नहीं तपस्वी आवारा, ले जाती मुझे जहाँ धारा।
इन नयनों में बस आंसू हैं, मैं कदम कदम पर हूँ हारा।
हरि कृपा मिले बस चाह यही, अज्ञानी ज्ञान तुम्ही दे दो।
मर्जी तेरी तू नचा रहा, पर अपना प्यार मुझे दे दो।

प्यासा हूँ मुझे पिला पानी, नयनों से बहता है पानी।
तुम ही तेा मेरे सर्जक हो, तुम बिन न सुने कोई दानी।
कितने जन्मों से घूम रहा, संग मेरे फिर भी भूल रहा।
तुझ कृपा मिले तो प्रीति बढ़े, बन लहर जलध में तैर रहा।

तृष्णा के झंझावत में फंस, तुमको भूला जी भर रोया।
हरि मुझे जगह चरणों में दो, क्यों सेवक बन ना मैं जीया।
हरि हरि कहे कट जाये सफर, मर्जी तेरी ले चले जिधर।
सदा नयन में हरि तुम रहना, ना करूँ शिकायत बन्शीधर।

243.

मिलें हमें खुशियों के दो पल, आ गये यहाँ इसलिये रूके।
पर आंख उठा कर देखा ना, दो शब्द जबां से कह न सके।
आंसू हैं मेरे नयनों में, न देख तुम्हारी मर्जी है।
बन नियति खिलौने नाचे हम, क्या तेरी मेरी मर्जी है।

लिये प्यार की प्यास यहाँ हम, घूम रहे इस जग के अन्दर।
हरि बिन प्यास मिटेगी यह ना, सुलग रहा मन अन्दर अन्दर।
जप ले मन हरि सांचा प्रियतम, उसे भूल ना वह ही है धन।
आनी जानी इस दुनिया में, किसका पकड़े पागल दामन।

हरि हरि जप वह ज्ञान जगावे, अंधियारा पथ राह दिखावे।
सारे जग का वह रखबाला, क्यों ना उसकी शरणा जावे?
हरि भज हरि भज चैन वही है, ले जायेगा किस्ती तेरी।
बहते जो नयनों से आंसू, चरण चढ़ा मन बन हरि चेरी।

स्वप्निल दुनिया छलता छलिया, अपना क्या बरसें यह अंखियां।
बहे लहर बन जो सागर में, मिल जाती फिर हरि की छैया।
मन हरि हरि गा ध्यान लगा हरि, मिटता जाता यह तन सारा।
सदा सत्य वह सदा रहेगा, जपो बहा ना आंसू खारा।

244.

नयन में जब हरि बसेगा, व्यर्थ उलझन से बचेगा।
खेल दो पल का यहाँ है, हरि भजो जी ना जलेगा।
चले जा जब तक यहाँ दम, हरि जपो जपते रहो मन।
नैया उस बिन पार न हो, देख ढलता जा रहा दिन।

कहता तू किसको पीड़ा, कौन सुनने को यहाँ है?
हरि इशारे चल रहे हैं, छोड़ सब उसका जहाँ है।
कौन अपना है पराया, स्वार्थ ही सब ओर छाया।
ना पकड़ तू कूल कोई, बहे जा सब हरि की माया।

हरि जप यह दिल का चैना, देख जगत आये रोना।
बस नहीं अपना यहाँ है, मन बसा ले हृदय सजना।
लहर बन कर बहे जाओ, जा रही ले तुझे धारा।
पड़ो चरण हरि के तू मन, न बहेगा आंसू खारा।

245.

करने को कुछ भी नहीं यहाँ, करने को पर यह भाग रहा।
मन काम क्रोध मद लोभ लिये, ले कर दुनिया में भटक रहा।
स्वप्निल सी दुनिया में भटकें, आशाएँ ले ले कर तरसें।
नयनों से आंसू ना सूखें, मन विवश हुआ ना यह हरषे।

पीड़ा को लख जियरा तड़फे, ना माने मन अंखियां बरसे।
सब खेल उसी का हरि लीला, मैं छोड़ बहो तब दुख बिनसे।
हरि हरि गा मन हरि हरि जप ले, मेहमां यहाँ कुछ पल का है।
दुनिया उसकी खेला उसका, तू नाच रहा कठपुतली है।

ले भूख प्यास को हम डोले, जब मिटे क्षुधा ना तब रोवे।
चलता जा चलती सांसे है, पर जान सुपन सा सब खोवे।
ना चैन मिले जब दिल तपता, हरि गा मन दे वह शीतलता।
हरि प्रीति लिये जब नयन बहे, मुरझाया सुमन यहाँ खिलता।

246.

तुम बिन रोवे मेरी अंखियां, पार लगा दे मेरी नैया।
मेरे खेवट रूठ न मुझसे, बहते आंसू पड़ता पैंया।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, जियरा मेरा करता धक धक।
खोजूँ कहाँ न जानूं पथ को, अंखियां हरि रस्ता तक तक।

ज्योति जला दे पथ दिखला दे, प्यासा हूँ जल मुझे पिला दे।
सदा करूँ मैं तेरी पूजा, मन्दिर का कोना अपना दे।
जाता जीवन दो दिन जीना, चाहूँ तेरी हाला पीना।
तुम बिन मेरी अंखियां रोये, ऐसा जीवन भी क्या जीना?

तुझे पुकारूँ आ जा मोहन, रास रचा तू ही जीवन धन।
सुना बांसुरी नाचे तन मन, गूंजे बजती जो अनहद धुन।
नचा रहा तू बना मदारी, करूणा का मैं सदा भिखारी।
करूणा सागर तुम कहलाते, आया हूँ मैं शरण तुम्हारी।

247.

हरि ओम ओम हरि ओम ओम, इस जीवन का क्या कहो मोल।
तुम बिन रोती रहती अंखियां, कुछ कहो हरि तू मुख से बोल।
हरि पार लगा दे यह नैया, बालक तेरा पड़ता पैंया।
अज्ञानी मन्द बुद्धि मैं हूँ, प्रभु चाह रहा तेरी छैयां।

हरि तुझे कहाँ कह मैं खोजूँ, इन अंखियों से तुमको सीचूं।
कण कण पर राज्य तुम्हारा है, दे प्यार यही बस मैं सोचूं।
ऋषि मुनि ज्ञानी करते पूजा, तपती धरती दे शीतलता।
हरि बसो हृदय में तुम मेरे, मैं हाथ जोड़ विनती करता।

इस जीवन के तुम स्वामी हेा, कर्ता भर्ता हर्ता तुम हो।
तुम कृपा सदा अपनी रखना, मेरे जीवन की आशा हो।
बहते नयनों से आंसू है, बहता जाऊँ इस धारा में।
न कभी रूकूँ पाऊँ तुमको, हरि सदा रहो इन नयनों में।

248.

जानते कुछ भी नहीं है, उसे पुकारो राम राम।
जन्म ले रोता पुकारे, दूध हमें दे राम राम।
जीतता कोई यहाँ है, हारे कोई राम राम।
कौन तू तेरी अकड़ क्या, जपो उसे मन राम राम।

शान्ति का सागर वही है, जप ले मन तू राम राम।
दुख दरिया जग में बहता, शान्ति का है स्त्रोत राम।
राम ही सच हम यहाँ क्या, बन जा सेवक राम राम।
आये जग में नाचें हम, उसकी चलती राम राम।

कोई ज्ञानी मन्द बुद्धि, खेल उसका राम राम।
अपना क्या सब कुछ उसका, ज्ञान दे जपो राम राम।
आ रही सांसें न जाने, छीने कब वह राम राम।
मन समर्पित हो उसी के, वह ही स्वामी राम राम।

बनो लहर दरिया नाचे, कौन तू जपो राम राम।
जैसा राखे हरि मर्जी, जप ले मन तू राम राम।
चैन उसमें ही छिपा है, खोलो नयना राम राम।
जगत में कितना भटक ले, प्राणों का पी राम राम।

249.

दुःख हरो तुम दुख के हर्ता, इस जीवन के तुम ही भर्ता।
तुम बिन रोयें मेरी अंखियां, खोजूँ कहाँ न मुझको दिखता।
मैं हूँ अबल शक्ति के दाता, सारा ज्ञान तुझी से आता।
अपनी कृपा बनाये रखना, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।

कभी रूठ ना जाना मुझसे, गिरता इन नयनों से जल है।
तेरा प्यार सदा मैं चाहूँ, मेरे जीवन का तू धन है।
कण कण में हैं वास तुम्हारा, चहुँ दिश खोजे मनुआ हारा।
अन्तस सदा जल रही बाती, उसे लखे होता उजियारा।

कर कर जतन ऋषि मुनि हारे, थक कर गिरे खड़ा वह द्वारे।
उसकी लीला नाच नचावे, मैं को ले सब कोई हारे।
हरि भज हरि भज और नहीं सुख, लहर बना बह इस दरिया में।
सदा साथ में जान मुसाफिर, शान्ति मिले पावे अन्तस में।

250.

फिर रहे मन को लगाते, पर मन नहीं लगता यहाँ।
कैसे समझाऊँ इसको, यह झूठ है सारा जहाँ।
प्यार पायें हरि तुम्हारा, न बहे फिर आँसू खारा।
शरण में प्रभु हूँ तुम्हारी, करो कृपा प्रभु मैं हारा।

चल रहा चल चल गिरूँ मैं, अबल मैं तुमको कहूँ मैं।
दास तेरा लाज रखना, बहे नयना हरि कहूँ मैं।
नयन में तुम बसो मेरे, छूटे फिर गम के घेरे।
मात पिता सब तुम्ही हो, सुनो तुम तुमको पुकारे।

प्यार पाऊँ गुनगुनाऊँ, गीतों को तेरे गाऊँ।
बीत जायेगी उमरिया, मैं तुझे दिल की सुनाऊँ।
आदि तू ही अन्त तू ही, सत्य तू ही है सदा।
भाग्य के मेरे विधाता, तू ज्ञान दे दे संग सदा।

251.

बह रही नदिया न जाने, जा रही ले कर कहाँ?
दर्द दिल में बह रहा जो, कौन सुनता है यहाँ?
हरि पुकारे हम तुझी को, इस जग के स्वामी तुम।
नयन मेरे रो रहे है, प्यार मिले चाहे हम।

अन्धेरा डरता जियरा, तुम बिना हो ना सुबह।
मेरी नैया के खेवट, पार कर दो नाव यह।
कितने सुपने संजोये, भूल कर खूब रोये।
छोड़ती तृष्णा न पीछा, कर कृपा ज्ञान आये।

सिर झुकाये हम खड़े हैं, नाथ दे दो सहारा।
कुछ पलो की ले खुशी को, दौड़े संसार सारा।
नेह हरि तुम से बढ़े नित, नयन में सदा रहना।
लागे मुझको संग मेरे, लहर बन मुझे बहना।

252.

बहूँ लहर सा जीवन दाता, दो ज्ञान जुड़े तुझसे नाता।
मैं नहीं यहाँ तू ही नाचे, नयनों से पर पानी आता।
न कोई किनारा बहूँ सदा, भूलूं न कभी तू साथ सदा।
अज्ञानी बालक हूँ तेरा, नयनों में मेरे रहो सदा।

यह प्राण सदा ही तुझे रटे, तुम बिन बोलो हम किसे कहे।
तुम ही तेा भाग्य विधाता हो, कृपा तेरी हम सदा चाहे।
अनजान डगर मैं बहूँ किधर, ना जानू चाहूँ साथ मगर।
हरि प्रीति बढ़े नित नित तुमसे, मैं नहीं यहाँ तू सदा इघर।

बहते नयनों से आंसू है, हरि लाज हमारी तुम रखना।
इस दुनिया के तुम मालिक हो, तुम अपना प्यार मुझे देना।
तेरी मर्जी स्वीकार करूँ, चरणों में पड़ा तुम्हारे हूँ।
हरि सुरति रहे बस तुझमें ही, मैं तो तेरी कठपुतली हूँ।

253.

पाना और यहाँ क्या खोना, दो दिन जीना हरि को भजना।
बीतेगी यह काली रैना, बन जायेगा सुन्दर सुपना।
बन बन्जारा जग में जी ले, रैन बसेरा दो दिन का है।
जन्में शिशु को दूध वही दे, हरि मर्जी क्यों ना माने है।

हरि की यादों में मन खो जा, चलता उसका खेल यहाँ है।
दुनिया उसकी वह ही जाने, जप उसको मन चैन वहाँ है।
चले यहाँ इशारे उसके, देखों मैं को हटा दिवाने।
तू है कौन समय का पुतला, मर्जी माने या ना माने।

कहने को कुछ नहीं यहाँ है, सुख दुख में वह सदा साथ है।
लहर बहे जैसे सागर में, देखे ना चल रहा साथ है।
लहर पकडने लहर दौड़ती, पकड न पाती अश्रु गिराती।
अन्तस वही उसे ना जपती, मिटते भय जब बढ़ती प्रीति।

254.

अपने अपने शौक यहाँ है, अपने अपने है पैमाने।
किसको किसकी फिकर यहाँ है, हरि झूम झूम गा दीवाने।
हरि नेह लगा है साथ वही, वह संग तेरे पर जाने ना।
जैसे सागर में लहर बहे, अन्तस में सागर देखे ना।

हरि जप हरि जप चलता ही जा, तपते दिल को दे शीतलता।
सुमरन मन उसका हरपल कर, सुखदायक जेा उसको जपता।
इस दुनिया की है रीति सदा, स्वारथ से ही सब टकरावे।
किसके पीछे जग में भागे, न हाथ कोई तेरे आवे।

हरि जप हरि जप है साथ वही, ना कभी विलग दे साथ वही।
दुख सुख में साथ सदा तेरे, जप ले उसको दे ज्ञान वही।
उसकी कठपुतली हम, नयनों से नीर गिरे रिमझिम।
ना चैन मिले उस बिन पागल, जप ले उस बिन कुछ भी ना हम।

255.

कहने को कुछ भी नहीं यहाँ, फिर भी हरपल कहते जाते।
अपने हाथो कुछ नहीं यहाँ, पर कुछ पल के स्वामी बनते।
नयनों से बरसे आंसू है, माने ना मैं किससे पूछूँ?
जलता रहता यह दिल मेरा, पी मिले नयन को तब पोछूं।

छल करो नहीं अब तेा छलिया, बहती हैं मेरी यह अंखियां।
ढलती जाती है शाम यहाँ, हरि पार करो मेरी नैया।
मन लगता नहीं हमारा है, इस जग से प्रभु मैं हूँ हारा।
हरि मुझे शरण लो तुम अपनी, बहता नयनों से जल खारा।

बन दीपक पथ को दर्शा दो, अन्धकार को दूर भगा दो।
जले ज्ञान की बाती हरि हर, पांऊँ तुमको प्यार मुझे दो।
छिपा नयन में नाथ समुन्दर, दर्द हिलोरें लेता अन्दर।
अपना प्यार मुझे हरि तुम दो, बहते मेरे आंसू झर झर।

256.

आंसू से नयना भीगे है, प्यार तुम्हारा हम चाहे हैं।
विनय सदा तुम दिल में रहना, नाम तुम्हारा ले जीते हैं।
दुनिया भागी चली जा रही, अन्तहीन न कोई किनारा।
तृष्णा नाच नचाये हरपल, बहती है आंखों से धारा।

देना ज्ञान तुम्हारे बालक, जग की इन सकरी गलियों में।
कृपा बिना ना चल पायेंगे, लाज राखना इस मेले में।
सांस सांस में तुझे उचारें, तुम बिन जीवन कौन संवारे।
सर्जक पालक सब कुछ तुम ही, नैया मेरी तू ही तारे।

खिले तुम्हारी बगिया में हम, नहीं भूलना गिरता पानी।
अपना प्यार मुझे तू दे दे, तुम सा और न कोई दानी।
सदा रहूँ मैं सेवक तेरा, गिरूँ चरण में रैन बसेरा।
अज्ञानी मैं कुछ ना जानूं, खिले पुष्प वह बल है तेरा।

257.

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, प्राणों का प्यारा ओम जपो।
वह दुख भन्जक दुख दूर करे, विश्वास करो मन ओम जपो।
तपते दिल को दे शीतलता, जो भी उसका सुमरण करता।
इस रंग बदलती दुनिया में, मन चैन मिले जो हरि भजता।

कर्ता भर्ता हर्ता जब वह, मन चिन्तित तब क्यों होता है?
उसकी मर्जी जब चले यहाँ, सुख दुख में मन क्यों जीता है?
जो उपजे ज्ञान करे वह तन, जो मिली योनि वह जीता तूं।
देगा विवेक हरि भज ले मन, हरि भूल बहावे आंसू तू।

दो दिन का रैन बसेरा है, तृष्णाओं ने मन घेरा है।
हरि भजन करो मिटती तृष्णा, कुछ वश ना स्वप्निल दुनिया है।
सुख से जीवन का कटे सफर, हरि हरि गाओ मन चैन मिले।
जग से रखता मन क्या आशा, हरि भज किस्ती को लिये चले।

258.

बहती यह मेरी अंखियां, जप ले मन तू ओम ओम।
दुख हर्ता सुख का दाता, जप ले मन तू ओम ओम।
दिल में रहे ओम जिसके, व्यर्थ कभी ना वह डरता।
पी जिसने हरि की हाला, सांस सांस में हरि जपता।

इस जग में सब रूप हरि के, क्यों होता भय से पागल।
ले जाये तुझको धारा, नाम हरी का गंगाजल।
चाहें सब प्यार हरी का, जाने न पर हरि नचाये।
जपो नाम परम पावन है, जप दुख से मन तर जाये।

जप दिल की चुभन मिटाये, जपो शान्ति मन में आये।
खेल चले सारा उसका, लहर क्या सागर नचाये।
बहती जाती हरि धारा, जप ले क्यों हुआ उदासा।
हरि लीला हरि ही जाने, जप ले उसे रह न प्यासा।

259.

किसको सुनाएँ दास्ता, सब भूला वास्ता।
निर्मोही बन गया वह, नहीं रखता वास्ता।
जायेगी सब ही गुजर, आंसू में नहाते।
ना देख तुम हमें सके, तुमको ही चाहते।

आंखों में बहते नीर, तुमको है क्या पड़ी?
मिला वह मोड़ कौन सा, अंखियां थी जो लड़ी।
दीपक जला जो दिल में, यादें नहीं मिटती।
एक बार तो देखता, ना प्यास यह बुझती।

ढलती जाती शाम यह, क्या नहीं मिलो कभी?
कसम भुला दी क्या सभी, नहीं हो जुदा कभी।
यह प्यार तो रहे सदा, हो जायेंगे जुदा।
न भूल बहते नीर है, तुम मेरे थे खुदा।

260.

शान्ति मिले जप ले हरि मनुआ, दिल को समझाना ही होगा।
रंग बदलती इस दुनिया में, नीर बहें वह पीना होगा।
जप ले शान्ति मिलेगी इससे, यहाँ राह सब अनजानी है।
मर्जी सागर की लहर बहे, नाचे सागर तूफानी है।

मैं छोड़ यहाँ हरि हरि जप ले, बन लहर जलध में लहराये।
ले चले जहाँ राखे जैसा, मन सुमरण कर हिय में पाये।
हरि हरि जप मन इसमें ही सुख, जग में कितनी दौड़ लगा।
बहता दुख का दरिया जग में, मन चैन मिले हरि प्रीति जगा।

जप ले हरि देगा ज्ञान वही, अनजाने पथ पर साथ वही।
वह आदि सत्य है अनत सत्य, वह वर्तमान में कहाँ नहीं।
जप हरि हरि पार करेगा नैया, जान ले मन तेरा खिवैया।
बन कर लहर यहाँ बहता जा, मिल जायेगी उसकी छैयां।

261.

मौन हुए तुम अश्रु बहे यह, हरि शरणा मैं तेरी आया।
पार लगा दो मेरी नैया, नचा रही हरि तेरी माया।
अगम अगोचर पार न तेरा, अन्धकार ने मुझको घेरा।
कृपा मिले तेा ही पथ पाऊँ, छटे अंधेरा होय सुबेरा।

तुम ही मेरे जीवन के धन, हरि हरि सांस रटे यह हरपल।
तुम बिन रोये मेरी अंखियां, देख हमें लो नाथ हम अबल।
प्यार सदा हम चाहें तेरा, तपती धरती मांगे छाया।
मुझे रूलाती तेरी माया, अज्ञानी कुछ जान न पाया।

हरि हरि एक सहारा तू ही, बीतेगी यह काली रैना।
मेरे नयनों में बस जाओ, जहाँ ले चलो कुछ ना कहना।
प्रीति बढ़े हरि टूटे बन्धन, मिट जाता सब जग का क्रन्दन।
बना लहर सागर में नाचे, सागर ही तो है सुखनन्दन।

262.

मन नहीं लगता हमारा, नयनों से बहती धारा।
क्यों हुआ निष्ठुर बता दे, बन सका क्यों ना दुलारा।
अज्ञानी बालक तेरा, कौन तुम बिन ज्ञान देवे।
ज्ञान मिले हरषे जियरा, रूठ हमसे यों न सोवे।

हरि जपते तेरी लीला, करता सब तू ही क्रीड़ा।
दर्द इस दिल में उफनता, माफ करो हर लो पीड़ा।
बाग तेरा खिल रहे हम, नयन यह रिमझिम बरसते।
प्यार पायें हम तुम्हारा, प्यास दिल में ले तरसते।

हरि जपें तू ही सहारा, कहाँ जायेंगे न जाना।
उठती गिरती लहरों में, मैं नहीं न मैने जाना।
नयन में हरि बसो मेरे, मैं नहीं तुम ही रहो हरि।
चरण में पड़ते तुम्हारे, ले चलो किस्ती हमारी।

263.

पाना और यहाँ क्या खोना, देखो मन तू जीवन सुपना।
बैचेनी की उठे तरंगे, कैसे कम हो बहते नयना।
हरि हरि जप बस मार्ग यही है, सुनने को न और कोई है।
जो बहता हरि की धारा में, जैसा राखे रहे वहीं है।

अपने हाथों नहीं यहाँ कुछ, तप कर हरि मर्जी में हो खुश।
ज्ञान जगावे जपले हरि को, हरि की कृपा मिले जिय हो खुश।
आये धरती जीवन जीते, सुख दुख की घूंटो को पीते।
जैसा ज्ञान जगे घट भीतर, मन क्या सोंच नहीं वह करते।

जप ले मन वह कृष्ण कन्हैया, पार लगावे तेरी नैया।
सकल सृष्टि का वह संचालक, उस बिन कोई नही खिवैया।
जप मन जप मन सुन अनहद धुन, बाज रही जप उसे सुनो मन।
मिट जायेगे दुख यह सारे, जब बस जाते हैं हरी नयन।

264.

हरि ओम कहो हरि ओम कहो, हरि ओम कहो तुम कौन कहो।
बहती आंसू की गंगा है, क्यों मौन हुए तुम बता कहो।
कण कण में बसे हुए तुम हो, फिर भी तुम छिपे हुए हो क्यों?
माया तेरी हम ठगे गये, जिय घबराता तू सोता क्यों?

मन ओम कहो वह ही प्यारा, दुख दूर करे सृजन हारा।
जो नीर बहें हरि यादों में, ले चले पास हरि के धारा।
सब रूप वही खेला उसका, जप ओम मिले वह पिव तेरा।
सागर में जैसे लहर उठे, छूटे ना साथ सदा तेरा।

अज्ञानी को दे ज्ञान वही, जप ले मन है सब ओर वही।
सुमरन मन हरपल करता जा, अन्तस तेरे में छिपा वही।
बन अबल नीर से कर पूजा, क्या लहर समझ सागर आगे।
हरि को जिसने भी यहाँ जपा, जुड़ जाते फिर हरि से धागे।

265.

हरि सुनो तुम आवाज, दु:ख का कितना साथ।
तुम बिन रोये अंखियां, ना छोड़ मेरा हाथ।
इस जीवन के स्वामी, नयन से बहे पानी।
हरि हाथ लाज तेरे, दे कृपा मुझे दानी।

छिप गया कहाँ छलियां, पड़ता तेरे पैंया।
ले चल दे प्यार मुझे, रोती मेरी अंखियां।
बस जा नयनों में आ, अनजान गली टेरे।
ऋषि मुनि ज्ञानी पूजें, नयनो से नीर गिरे।

ना कूल हाथ आवे, जीवन बहता जावे।
बस एक सहारा तू, जीवन को समझावें।
हरि हरि जपते तुमको, ना भूल कभी हमको।
आंखों में है पानी, दे प्यार चाह हमको।

266.

हरि बालक हूँ मैं अज्ञानी, जानूं ना कुछ बस ओम जपूं।
तुम लाज राखना हरि मेरी, विनती करता मैं तुझे जपूं।
मैं अबल नयन में नीर लिये, आता तेरे दर पर मैं हरि।
ठुकरा ना देना मिले प्यार, बस चाह यही है मेरी हरि।

चाहत ले ले कर मैं जीया, टूटी जी भर भर कर रोया।
तुमको भूला इस जंगल में, अमृत छोड़ा विष को पीया।
हरि ओम ओम हरि ओम ओम, बोलो तेा कुछ क्यों हुए मौन।
हरि पार लगा दो यह नैया, तू नहीं सुने तो सुने कौन।

दो ज्ञान बनूं सेवक तेरा, हरि कृपा सदा मुझ पर रखना।
जो कुछ है वह सब कुछ तेरा, दुख भंजक तुम दुख को हरना।
हरि हरि जपे कट जाये सफर, नयनों से नीर गिरे झर झर।
अन्तर्यामी जग के पालक, सुन लो मेरी प्यारे हरि हर।

267.

मन उड़े कहीं ठौर न पाये, दिल रोता कैसे समझाये?
प्रीति डोर में बांधो हरि को, लहर बना फिर बहता जाये।
जाने लहर नहीं मैं सागर, मर्जी सागर हमें नचाये।
सुमरन रहे सदा हिय भीतर, मिटे स्वयं सागर गुन गाये।

काम यहाँ के रहे अधूरे, ढलती जा रही हरपल शाम।
मन भजले तू हरि का नाम, बन जाते सभी बिगड़े काम।
हरि को भज ले प्रीति बढ़ा ले, दुख मिटते मिल जाती छैंया।
तेरे किये न होगे पूरे, करता वह ही पड़ जा पैयां।

हरि हरि जपो वही है स्वामी, प्यासा क्यों तू पी ले पानी।
उस बिन प्यास बुझेगी ना मन, उस जैसा ना कोई दानी।
हरि हरि जपो न और डगर है, कितना उलझो अन्त यही है।
बसा नयन में बह ले जग में, उस सा नहीं ठौर कोई है।

268.

आ रही सांस यह जब तक, रिझायेगे तुझे हम हरि।
नयन से आ रहा पानी, मर्जी देखो ना तुम हरि।
बालक हम तुम्हारे हैं, नचाये नाचते वैसे।
नहीं जाने कहाँ जाये, बरसते नीर सावन से।

कृपा चाहे तुम्हारी हम, अबल है देख लो हरि तुम।
जग के तुम ही कर्ता हो, कहे किसे तेरे बिन हम।
जपे हरि प्यार दे अपना, बीते सुख से फिर सुपना।
अज्ञानी ना कुछ जानूं, बहते यादों में नयना।

शरण में हरि तुम्हारी हूँ, न ठुकरा तुम मुझे देना।
जलाना ज्ञान का दीपक, मर्जी तेरी में बहना।
देखे लहरें सागर में, लहर क्या है सभी सागर।
बसो हरि नयन में मेरे, जिधर देखूँ तुही हरि हर।

269.

पार करा दे मुझको नदिया, पांव पड़ू मैं तेरे सैंया।
नौका मेरी डगमग डोले, बहती हैं यह मेरी अंखिया।
दिल में मेरे बसा हुआ तू, फिर भी मुझसे छिपा हुआ तू।
बीतें कैसे काली रातें, निष्ठुर इतना बना हुआ तू।

जपूं तुझे मैं प्रीति न छोड़ू, सब आशाएँ तुझसे जोड़ू।
शरण राख ले मुझको अपनी, दे दे प्यार तुझे ना छोड़ू।
जाऊँ कहाँ न मिले किनारा, कैसे माने खेवनहारा।
रोते रोते गुजरें रातें, रूठ गया क्यों मेरा सहारा।

तेरी यादों में मैं डूबूं, हरि हरि जपूं तुझे ही पूंजू।
माफ मुझे तुम कर देना हरि, ना जानूं मैं कैसे खोंजू।
जलूं विरह में तू ना आये, अग्नि मुझको लगे यह प्यारी।
मेरे दिल से कभी न जाना, जल जाऊँ मैं इसमें सारी।

270.

लो मुझे अपनी शरण में, पड़ू तुम्हारे मैं चरण।
आंख खुली आये जग में, हरि चाहते तेरी किरण।
तुझ कृपा की चाह सबको, सब घूमता जीवन यहाँ।
बरसे नयनों से आंसू, हरि छिप गये हो तुम कहाँ।

दर तुम्हारे का भिखारी, राख ले मुझको मुरारी।
मैं अबल जानूं न कुछ भी, नयन से हैं अश्रु जारी।
सब जगत के तुम रचैया, चाहूँ मैं तेरी छैंया।
ढूंढते ज्ञानी मुनी जन, रोती है मेरी अंखियां।

नाव बहती जा रही है, आये यहाँ जाये कहाँ?
एक बस तेरा सहारा, तेरे बिना जाये कहाँ?
फूल तेरे बाग के हम, प्यार मिले चाहे माली।
खिलती मुरझाई बगिया, करो कृपा लगती लाली।

271.

ले चलो किस्ती हमारी, इस जग से मैं हूँ हारी।
मैं पड़ू तेरे चरण में, लाज रख लो तुम मुरारी।
खोजता पर हूँ अबल मैं, थक हारे मेरे नयना।
सब मिटे तृष्णा हमारी, तुम ही नयनों में बसाना।

बना लहर बहता जाऊँ, ना कभी सागर भुलाऊँ।
ले चलो मर्जी जहाँ भी, संग मेरे तुमको पाऊँ।
हरि जपूं जपता रहूँ मैं, चल रही यह सांस जब तक।
टूट जाये यह न धागा, पहुँच जाऊँ मैं चरण तक।

आधि व्याधि सबने घेरा, जलता दिल मेरा छलिया।
मैं मनाऊँ तुझे कैसे, बैठा क्यों रूठा सैंया।
थाम लो बाहें हमारी, प्यार दे दो तुम मुरारी।
कुछ समय की रात बाकी, बीते न आ जा मुरारी।

272.

मन ओम कहो मन ओम कहो, मन खूब रटो मन ओम कहो।
तपती धरती दे शीतलता, शिशु बन पुकार मन ओम कहो।
सुख क्या जग में बिन ओम जपे, मृग तृष्णा मिटती ओम कहो।
दो दिन का रैन बसेरा यह, जप ले उसको मन ओम कहो।

वह आदि सत्य है अन्त सत्य, कुछ पल का खेला ओम कहो।
ले जायेगा तेरी किस्ती, डर ना जपता जा ओम कहो।
ना काटेगी फिर तन्हाई, बरसे अखियां मन ओम कहो।
खिल जायेगी तेरी बगिया, जपता जा मन तू ओम कहो।

छूटे जाते सब कूल यहाँ, जप ओम साथ है सदा यहाँ।
उस बिन ना चैन मिले दिल को, फिसले गिरता मन यहाँ वहाँ।
इस जग से क्या रखता आशा, अपनी हर लहर लिये आशा।
मिल मिल कर सभी विछुड़ जायें, जप ओम न रोती फिर आशा।

273.

हरि बिन होय न कोई काजा, क्यों भटके हरि शरण आ जा।
पल पल रंग बदलती दुनिया, प्रीति बढ़ा हरि में लय हो जा।
हरि हरि जपो न कोई दूजा, करले मन उसकी ही पूजा।
नीर गिरावे क्यों अंखियों से, सत्य नाम हरि का मन पी जा।

हरि हरि जप मन क्या उसके बिन, दौड़ रही लहरें ले कुछ पल।
अन्तस मन हरि ज्योति जला ले, मैं लेकर बनता तू पागल।
जप हरि हरि बह ले दरिया में, संग तेरे क्यों रोवे पल में।
दिल में जब हरि ही बस जाता, सदा रहे हरि की बाहों में।

सारी दुनिया है यह स्वप्निल, हरि हरि जप वह सांचा है धन।
किसको पकड़े हाथ न आये, जप ले हरि वह ही सुख नन्दन।
देखे कौन जगत की लीला, पागल मन उसके संग हो जा।
कुछ पल के रंग हो हरि के संग, शाश्वत हरि को मन तू जी जा।

274.

हरि सुमरन कर हरि भज ले मन, और यहाँ क्या पागल है धन।
सुख दुख आंख मिचौनी चलती, शाश्वत तो मन वह ही है धन।
खेले जग में बन कर छैला, ठोकर लगती मिटे न रोना।
पल पल रंग बदलता यह जग, छोड़ नहीं मन हरि को जपना।

जप ले हरि को हिय सुख उपजे, सांच कहूँ दुख सारे मिटते।
हरि नौका में बैठ गया जो, जहाँ ले चले फिर वह बहते।
तू क्या है सब खेल उसी का, जीना मरना कुछ ना बस का।
बहे नयन से आंसू जो भी, याद उसे कर सब कुछ उसका।

हरि हरि जप मन प्रीति बढ़ा ले, सोते जगते हृदय बसा ले।
ले जायेगा तेरी नौका, दिल का अपना सुमन खिला ले।
उठती गिरती आशा में मन, पल भर भूल नहीं हरि को मन।
स्वप्निल सारा खेल चल रहा, जप हरि चैना पायेगा मन।

275.

हरि दर्शन को अंखियां प्यासी, लोग कहें क्यों भया उदासी।
उस बिन जीवन नीरस लागे, कृपा मिले पाऊँ अविनासी।
यादें उसकी प्यारी लागे, नयना मेरे नीर बहावें।
विरह अग्नि में भस्म होय तन, बढ़े प्रीति इसमें ही खोवें।

हरि हरि जपें न हरि को भूलें, सांसों में हरि का स्वर गूजे।
इस जीवन के हरी खिवैया, अन्तिम सांसों तक हम पूजे।
हरि हरि गाये हरी मनाये, हरि ना रूठो आंसू आये।
इस जीवन के तुम हो मालिक, कृपा मिले तो ही पथ पाये।

प्यार हमे दे भूख इसी की, इस बिन रोती रहती अंखियां।
अज्ञानी मैं बालक तेरा, नहीं भूल पड़ता मैं पैयां।
बहती जाती जीवन धारा, दीखे इसका नहीं किनारा।
बसो नयन में बहूँ लहर बन, जहाँ ले चलो वही किनारा।

276.

जीवन क्या है मृत्यु यहाँ क्या, तन मिटता फिर जीव कहाँ है?
करते सब अपनी परिभाषा, ऋृषि मुनि हारे छिपा कहाँ है?
देखे कौन जगत की लीला, सो कर भी वह देखे सुपना।
लौट चलो मन ध्यान वही कर, देखे जो संग उसके रहना।

हरि हरि जप वह ताप हरेगा, संग तेरे वह पीड़ हरेगा।
दे पतवार उसी के हाथो, नैया तेरी लिये चलेगा।
हरि हरि जप सुपना सारा जग, जप उसके बिन दुख ही है दुख।
उसकी मर्जी में बह ले मन, क्या सुख है फिर क्या माने दुख।

जीवन उसका मर्जी उसकी, जैसा चाहे हमें नचाये।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, ज्ञान ध्यान सब उससे पायें।
कुछ पल खेल खेल ले छैला, संग तेरे भूलो ना जपना।
उस बिन नीर न पोछे कोई, मानो ना मानो यह कहना।

277.

आंसू से भीगी अंखियां हैं, देखो तेा आंखों की लाली।
खिले तुम्हारी बगिया में हम, प्यार हमें दे दो तुम माली।
सर्जक मेरे पालक मेरे, दिशा हमें दो भटक रहा रथ।
तुम बिन सूना सूना लगता, दीखे ना कुछ अंधियारा पथ।

इन प्राणों की प्यास तुही है, चरण मिले बस चाह यही है।
जीवन यह क्यों सांसे लेता, तुम बिन हरि कुछ यहाँ नहीं है।
पीते रहे तुम्हारी मदिरा, ढल जायेगा जीवन सुपना।
मेरे नयनों में बस जाओ, बहूँ लहर सा ना कुछ कहना।

अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढ रहा पागल मन मेरा।
संग मेरे पर नहीं निहारूँ, तृष्णाओं ने मुझको घेरा।
हरि हरि जप मन तृष्णा मिटती, पार करे तेरी वह किस्ती।
प्रीति बढ़े मन सुमन खिले तब, ना सुख उस बिन अंखियां रोती।

278.

दिन जाते हैं ऐसे , उड़ता कपूर जैसे।
न खोज तुमको पाया, क्या न मिलोगे मुझसे?
चाह तेरी लिये हम, जाती नहीं उदासी।
गंगा नयन से बहती, फिर भी रहती प्यासी।

मिले जो प्यार तेरा, सब दूर हो अंधेरा।
तुम सृष्टि के रचियता, देना मुझे सहारा।
प्रभु दास हम तुम्हारे, कृपा बनाये रखना।
अनजानी यह गलियां, पथ में प्रकाश करना।

नैया मेरी के खेवट, तुम बिन कहता किससे।
नयन से नीर गिरते, न रूठ अब तू मुझसे।
करूणा के तुम सागर, दे मुझे दया अपनी।
अब शाम ढल रही है, रूकता नयन न पानी।

279.

धैर्य हमें दे ज्ञान हमें दे, ले चल नौका धीरे धीरे।
अपने बल मैं चल ना पाऊँ, तुम ही तेा हो खेवट मेरे।
बहती आंखों से गंगा है, नाम तुम्हारा आधारा है।
तुमको कैसे नाथ मनाऊँ, तू मेरा सृजन हारा है।

जीवन है क्यों सांसे आती, अंखियां रोवें यह दिन राती।
घना अंधेरा भटकू जग में, कृपा होय जल जाये बाती।
मेरे मालिक भूल हमें ना, अंखियां मेरी झरती झर झर।
तुम बिन बोलो कहूँ किसे मैं, बाट निहारूँ छिपे हो किधर।

नाच नचाती भूल भुलैया, रोती रहती हैं यह अंखियां।
तुम बिन ज्ञान कहाँ से पाऊँ, शरण तुम्हारी पड़ता पैंया।
हरि हरि जपें ध्यान हो तेरा, नयनों में हो तेरा डेरा।
जहाँ ले चलो मर्जी तेरी, दिल में रहना सदा सबेरा।

280.

मन ओम जपो मन ओम जपो, जग में दुख इनसे दूर हटो।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, पकड़े क्या मन हरि ओम रटो।
तपते दिल को दे शान्ति वही, मन मान छिपा हर जगह वही।
आंसू से कर उसकी पूजा, शिशु बन पुकार वह जगत मही।

पकड़े क्या सब छूटा जाता, क्या लाया जो पल पल रोता।
लीला हरि की मन जान यहाँ, हरि मर्जी में ना क्यों बहता।
मन ओम जपो दे ज्ञान वही, जो ज्ञान मिले तन करे वही।
मन पड़ जा हरि के चरणों में, कर्ता हर्ता सब जगह वही।

मन ओम जपो मन ओम जपो, ढलता दिन मन दिन रात जपो।
जग के ना दन्श सतावेंगे, जपता जा मन हर समय जपो।
चाहे भूखा केवल रोटी, प्यासे को मिल जाये पानी।
तपता दिल चाहे शीतलता, नयनों से बहता है पानी।

जप ओम न उस दिन छाँव यहाँ, लहरे भागे न रूकें यहाँ।
जप ओम लहर देखे अन्तस, खेले सागर सब ओर यहाँ।
जपता जा मन तू ओम ओम, श्वासों में गूंजे ओम ओम।
ले चले वही किस्ती ना डर, जप ओम ओम जप ओम ओम।

281.

कुछ कह दो तुम यह आंखें नम, तुम भाग्य विधाता हो मेरे।
तुम बिन रोती रहती अंखियां, यह प्राण तुझी को हैं टेरे।
तुम सकल जगत के स्वामी हो, मैं शरण तुम्हारी हरि हर हूं।
तुम लाज रखो इस मेले में, तेरे दर यहाँ भिखारी हूँ।

नयनों में नीर छलकते है, पाने को प्यार तड़फते है।
कह दो क्या खता हमारी है, तुम देख हमें लो रोते हैं।
कैसे इस दिल को समझायें, तुमको हरि हर कैसे पाये?
अज्ञानी मैं विधि ना जानूं, कर कृपा याद में खो जायें।

सांसों में सुमरण तेरा हो, नयनों में तेरी मूरति हो।
ले चलो जहाँ मर्जी तेरी, बल दो ना मुझे शिकायत हो।
ना उलझा ज्ञानी मैं न नाथ, चरण में रखता तेरे माथ।
इस भूल भुलैया से ले चल, यह ज्ञान रहे तू सदा साथ।

282.

आंसू बहते पर कह न सके, ना ज्ञान हुआ हम तुझे जपें।
पीड़ा में रात गुजरती है, दुःख की अग्नि में हिया तपे।
हरि तेरी लीला तू जाने, मैं तो रोता हूँ फबक फबक।
चलता सब खेल इशारों पर, कब कृपा होय पहुँचू तुम तक।

हरि बालक हूँ मैं तो तेरा, तुम अपनी छांव सदा देना।
गिरता चल चल अज्ञानी मैं, हरि थाम मुझे तुम ही लेना।
क्या कहना तुम अन्तर्यामी, नयनों से बहता है पानी।
अनजानी गलियां घूम रहा, दे प्यार मुझे अपना दानी।

हरि प्रीति बढ़े तुमसे हरपल, ना समझ सका दुनिया जंगल।
नयनों से बहते आंसू है, बिन कृपा नहीं होवे मंगल।
हरि दास तुम्हारा लाज रखो, मैं घूम रहा इस मेले में।
करूणा का हुआ भिखारी मैं, बस जाओ मेरे नयनों में।

283.

दिल नहीं लगता हमारा, हो गया तू बेखबर।
कैसे समझाये इसको, फेर ली तूने नजर।
नयन में आंसू छलकते, प्यार को हम तड़फते।
क्या खता कह दो हमारी, प्यास ले हम भटकते।

तुम सर्जक तेरा बालक, जी रहा अज्ञान में।
ज्ञान का दीपक जला दो, कर कृपा हूँ अबल मैं।
गीत तेरे ही उठे हरि, तुमको मनाते रहें।
न रूके नयनों के आंसू, प्यास तेरी ले बहें।

सारे जग के तुम स्वामी, शरणा हरि तुम्हारी।
लाज मेरी राखना तुम, द्वार का मैं भिखारी।
सासों में सुमरन तेरा, ना कभी होना जुदा।
नयन में हरि बसो मेरे, न भूलूं संग हो सदा।

284.

हरि मर्जी मन तू रहना, उसको जपते रहना।
ज्ञान का वह ही प्रदाता, जप तम हरते रहना।
हरि जपो वह शान्ति देगा, नाव को ले चलेगा।
करो मन विश्वास उस पर, पीड़ा सभी हरेगा।

बहो लहर बन हरि जप मन, नचाता सागर तुझे।
देख अन्तस छिपा सागर, प्यास ना उस बिन बुझे।
याद कर हरि बन पतंगा, समर्पित मन हो चंगा।
शमा उसकी जल रही है, नयन से बहती गंगा।

स्वप्निल संसार सारा, हंसता कोई रोता।
मानता न दिल यह पागल, उलझे जग में जलता।
पीड़ जो दिल में उमड़ती, जप बरसता मेघ बन।
सांस अन्तिम तक वही धन, जपो हरि को सदा मन।

285.

पीड़ा से व्याकुल है यह तन, गीत सुना दे कोई तू मन।
झरना बहे यहाँ खुशियों का, गा हरि को वह ही सुखनन्दन।
दो पल की खुशियों की खातिर, भटक रहे हम जग के अन्दर।
आशाओं के महल बना कर, सुलग रहे हैं अन्दर अन्दर।

बुझती प्यास न बहता पानी, हरि जप वह ही जग में दानी।
मांग यहाँ मन कृपा उसी की, उसके सम्मुख सब अज्ञानी।
हरि के बालक हरि बल चलते, नीर गिरें हरि भूले रिमझिम।
मन हरि प्यार सदा ही करना, मगन सदा रहना जप हरदम।

करो विनय हरि बसों नयन में, गया हार ना मुझमें है दम।
खता नहीं मैं अपनी जानूं, ज्ञान मुझे दो मिट जाये तम।
ले चल मर्जी जैसे तेरी, ज्ञान रहे यह तू है संग में।
विवश डोलता मैं इस जग में, शीश रखूँ मैं तुझ चरणों में।

286.

सूखा पत्ता कब झड़ जाये, देखे डाल न रस मिट जाये।
गिरे प्रतीक्षा कब जाने ना, डाली पर कांपे घबराये।
हरि हरि जप बस यही सहारा, जपे वही बस वह तर जाये।
छूटे सारी जग की तृष्णा, जिसके दिल में हरि बस जाये।

शान्ति नहीं जग में मन हरि जप, सबके अपने अपने सुपने।
किन आंखों में झांक रहा तू, जप ले हरि को बस यह अपने।
क्या सोचे सब खेल हरी का, चलो वह चलाये जब तक चल।
देख जरा आती सांसों को, विछुड़े कब ना जाने पागल।

बसा उसे दिल में हरि हरि जप, उस बिन ना मन में शान्ति मिले।
दो दिन का खेल चले जाना, तप हरि मर्जी जो यहाँ चले।
कैसे इनकी कीमत आंकू, हरि हरि जप बहे नयन आंसू।
जग में ना इनकी कीमत है, जपते हरि जाने क्या आंसू?

287.

गिरे आंसू गिरते ही रहें, तेरी यादों में सदा बहें।
अनजान मुसाफिर गलियों का, तेरी किरपा को सदा चहें।
डगमग मेरी नौका डोले, तुम बिन बोलो किसको बोले।
प्रभु चरण तुम्हारे पड़ते हैं, ले चल मुझको होले होले।

अज्ञानी हूँ बालक तेरा, मेरा ना कुछ सब कुछ तेरा।
यह दर्द सहा जाता ना अब, कैसे पाऊँ तेरा डेरा?
हरि तुझे जपें बीते रैना, ना खफा कभी मुझसे होना।
कहो क्या हाथ मेरे है कुछ, बस प्यार मिले बीते सुपना।

इस जंगल में तू ही साथी, अंखियां मेरी पल पल रोती।
सब ओर निहारूँ मैं तुमको, कैसे भेजूँ बोलो पाती?
हरि शीश झुकाये यहाँ खड़े, देते रहना अपनी छाया।
पीड़ा दिल की कह दी तुमसे, देखो रोती है यह काया।

288.

हरि मन जपे नही क्यों पागल, देख देख जग होता चंचल।
दुख का दरिया यहाँ बह रहा, पकड़ उसे तेरा वह संबल।
कर ले मन विश्वास उसी पर, बह ले बन कर लहर यहाँ पर।
जाने ना ले जाये सागर, जप ले उसको रहे जहाँ पर।

बरसे नयना बन जब सावन, नहीं भूल वह तेरा साजन।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, जपो उसी को भागे दुख मन।
पी पी रट प्यारा वह ही है, इन प्राणों की प्यास वही है।
बनो पतंगा जलो शमा पर, सबसे प्यारा यज्ञ यही है।

हरि हरि गा मन उसमें खो जा, हरि लीला लख मन चुप हो जा।
याद उसे कर बहती गंगा, यहाँ समर्पित हरि को हेा जा।
ले जायेगी धारा तुमको, पाये न दुख जपे जो हरि को।
बरसे इन नयनों से आंसू, प्यारे लगे जपे जो हरि को।

289.

ज्ञान वही है ध्यान वही है, जप ले मन सब जगह वही है।
उस बिन रोती रहती अंखियां, जप ले मन हरि चैन वही है।
छूटे जाते कूल यहाँ सब, पकड़ पकड़ कर मन तू हारा।
क्यों ना हरि से प्रीति लगाता, ले जाती है हरि की धारा।

हरि हरि जपो न भूलो इक पल, क्यों मन तू होता है चंचल।
पार करेगा तेरी नौका, पकड़ उसी का मन तू संबल।
हरि हरि जप मन हरि जपता जा, नहीं ठिकाना कोई जाने।
बना लहर बहता सागर में, लीला हरि की सब में माने।

हरि हरि जप मन हरि सर्जक है, उसकी मर्जी राखे जब तक।
मिटे स्वयं पावे तब हरि को, मैं जब तक ना मिले तभी तक।
हरि सुमरों मन चैना पावे, जग के सारे दर्द मिटावे।
स्वप्निल सारी यह दुनिया है, पड़ू हरि चरणा हरि को पावे।

290.

कितनी पीड़ा में कटी रात, पूछी न तुमने दिल की बात।
जायेगा बीत स्वप्न सा बन, फिर होगी यह ना मुलाकात।
जग में खोया हरि को भूला, देगा मेरा अब कौन साथ।
नयनों से बहते हैं आंसू, नभ देखूँ कुछ न अपने हाथ।

हरि हरि जप करूणा का सागर, अन्तिम पल तक दे भर गागर।
जब नयन बसे हरि की मूरति, बिन खेवट नैया जाती तर।
हरि जप प्राणों की प्यास यही, अब है कल का कुछ पता नहीं।
झुक जा मन हरि के चरणों में, उस बिन जग में ना चैन कहीं।

आना जाना उसकी मर्जी, कठपुतली बन नाचे उसकी।
तन करे वही जो मिले ज्ञान, जप ज्ञान प्रदाता हो हरि की।
पतवार यह अपनी हरि को दे, बहते आंसू उनको पी ले।
दो दिन का रैन बसेरा यह, हरि हरि गा मन हरि को जी ले।

291.

गीत गा ले तू हरी के, बरसते हैं यह नयन।
छोड़ तृष्णा जप हरी को, चिन्ता मिटती जप मन।
ढलती जाती है संध्या, जगत में कौन अपना?
क्या शिकायत है किसी से, सबका अपना सुपना।

ले रहा मन याद किसकी, नयन से आंसू झरें।
जपो हरि को मुक्तिदाता, दुख सभी वह ही हरे।
जप हरि आयेगा चैना, बीते काली रैना।
हरि बसेंगे जब नयन में, मन तू इसमें बहना।

हरि जपो मन हरि जपो मन, सांचा है बस यह धन।
ना सतायें दन्श जग के, पी रटो हेा कर मगन।
बह रहा रोके ना रूकता, कोशिश कितनी करता।
सुमर हरि को पड़ चरण में, ले चले वही करता।

292.

जप ले नाम हरी का प्यारा, जाये कहाँ जाने न जप ले।
हरि हरि जप मन में सुख आये, दूर होय दुख हरि को जप ले।
हरि हरि जपो छिपा है छैला, अपना मन तू कर ना मैला।
तेरे हाथों नहीं यहाँ कुछ, पेट भरे ना हरि की लीला।

हरि हरि जप वह ज्ञान प्रदाता, मन तू जोड़ उसी से नाता।
स्वप्निल सारी है यह दुनिया, देखे सब फिर भी भरमाता।
शान्तिस्त्रोत वह मन हरि जपले, याद लिये हरि की तू बह ले।
सदा संग में जप ले हरि को, दीप जला मन हरि को जी ले।

हरि हरि जप जाये ले किस्ती, उस बिन अंखियां हरपल रोती।
दो दिन का यह रैन बसेरा, जप ले उसको मन दिन राती।
जपो हरि को आनन्दघन वह, बाजे अनहद उसको तू सुन।
मृगतृष्णा में भटक नहीं मन, ध्यान लगा उसमें ही सब गुन।

293.

खोजा ना पी, मन भरमाया, उलझ उलझ जग में घबराया।
मंजिल वही जहाँ हरि चाहे, ज्ञान नहीं यह मन क्यों आया?
नीर नयन ने सदा बहाये, छोड़ा ना मैं हम शर्माये।
जप ले हरि को वह सुखदाता, जहाँ रहे हरि को तू पाये।

लहर बना सागर में बहता, जपता जा हरि अन्तस पाये।
बड़ी लहर कोई है छोटी, छोड़ उसी पर नाच नचाये।
हरि हरि जप मन हरि हरि जप मन, तेरा क्या सब जायेगा छिन।
उठती गिरती लहर यहाँ पर, जप हरि को सेवक हरि का बन।

हरि हरि जप हरि की ही लीला, जैसा ज्ञान मिले तन कीन्हा।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, कुछ भी और नहीं मन कीन्हा।
तन भी उसका मन भी उसका, जान यहाँ उसका ही खेला।
कौन यहाँ तू खेले कुछ पल, छोड़ो मैं झुक नाचे छैला।

294.

मन ओम कहो या राम कहो, जो मन भावे पर उसे जपो।
जपता है कौन उसे देखो, दिन रात देखता उसे जपो।
हरि लीला कुछ ना जाने हम, बन लहर बहो मन उसे रटो।
बहती जाती नैया तेरी, सुमरो उसको दिन रात रटो।

सुख दुख का खेल यहाँ चलता, जाने ना हम क्या होगा कल।
उसकी यादों में नीर बहे, मन हो जाता वह गंगा जल।
मन अपना कौन पराया है, सब में वह ही तो छाया है।
सिर झुका सृष्टि के आगे मन, मिटती जाती यह काया है।

दुख कितने ही हम यहाँ घिरे, इन नयनों से है नीर गिरे।
मन पकड़ यहाँ हरि का दामन, मिटते दुख नैया पार करे।
जपते जपते मन खो जाये, नयनों में हरि जब बस जाये।
ना रहे यहाँ तू हरि नाचे, जिवड़ा ना फिर यह घबराये।

295.

हरि गीतों को मैं गाऊँ तुमको मैं सदा मनाऊँ।
बहता हूँ नदिया तेरी, यदि कृपा मिले तो पाऊँ।
नयना यह बरसे रिमझिम, तुम आ मिलो मोहि साजन।
ना लगता तुम बिन जियरा, कटती रातें तारे गिन।

सारे जग का मालिक तू, अंखियों से नीर गिराऊँ।
तुझमें ही सुरति रहे यह, हरि प्यार चाह मैं पाऊँ।
अनहद बाजे जो हरपल, ना उससे ध्यान हटाऊँ।
मृगतृष्णा में ना फंसकर, तेरे चरणों में आऊँ।

अज्ञानी बालक तेरा, आंसू का हार चढ़ाऊँ।
स्वर उठे ना जानूं कैसे, पर फिर भी तुझे बुलाऊँ।
दीखे न कुछ अंधियारा, ना रूके नीर घबराऊँ।
ले चल यह मेरी किस्ती, आंसू ही बस शर्माऊँ।

296.

जो दर्द दिल में बह रहा, सुन ले यहाँ पर कौन है?
नजरें उठा कर देखता, नभ भी यहाँ पर मौन हैं।
अज्ञानी मैं जानूं न कुछ, बालक तेरा कुछ तो झुक।
दीपक जला दो ज्ञान का, मैं आ सकूँगा द्वार तक।

हरि प्यास तेरी ही बढ़े, सुमरन तुम्हारा ही चले।
नयनों के नीर ना रूके, यह तन विरह में है जले।
तेरे चरण में सिर रखूँ, यह पीड़ दिल की मैं कहूँ।
बोलो कसूर मेरा क्या, जो दूर तुमसे मैं रहूँ।

हरि को जपूँ जपता रहूँ, तुम को मनाता मैं रहूँ।
ढलती जाती संध्या यह, मैं चाहूँ प्यार में बहूँ।
नयनों में नीर तुम छिपे, मेरा न कुछ भी बस चले।
प्यासा पिला दे जल मुझे, तेरा है बाग हम खिले।

297.

हरि हरि जपूं मिला दे कोई, याद लिये मैं उसकी रोई।
इस जंगल में भटक रहा मैं, नहीं सुने पर मेरी कोई।
जनम जनम से उससे नाता, रूठ गया क्यों भाग्य विधाता।
झर झर मेरे आंसू गिरते, पता नहीं मैं उसका पाता।

अनजान डगर मिले सहारा, नहीं गिरे फिर आंसू खारा।
जिस पर कृपा हरि की होती, छट जाता फिर सब अंधियारा।
अनहद बाज रहा है हरपल, सुने नहीं यह मन है चंचल।
मृगतृष्णा में उलझ उलझकर, गिरता है इन नयनों से जल।

नयना मेरे बरसे रिमझिम, तुझे पुकारूँ सुन ले मोहन।
गाऊँ तेरे गीतों को ही, तुमसे ही आता यह जीवन।
जपे तुझी को मेरी सांसे, शरण तुम्हारी तुझे मनाऊँ।
बसो नयन में ना घबराऊँ, शक्ति तुम्हारी पा चल पाऊँ।

298.

हरि हरि जप चैन मिलेगा मन, हरि सागर लहर यहाँ तू बन।
संग तेरे साथ सदा चलता, बहता जा मन बन्जारा बन।
ना नीर नयन के रूकते हैं, यह रंग बदलती दुनिया क्या?
कुछ पल खेले फिर चले कहाँ, मन देख जगत में रक्खा क्या?

हरि हरि जप इस जग में जी ले, मन नाम सहारा तू ले ले।
ना हाथ यहाँ अपने है कुछ, हरि मर्जी से मन तू रह ले।
आ आ कर लहरें, भाग रही, घुटते रहते अन्दर अन्दर।
दो पल की खुशियों की खातिर, हम घूम रहे जग के अन्दर।

सुपने क्या ले सब हरि के बह, कठपुतली बना नचावे वह।
मन नाच विवश सब नाच रहे, न भूल तेरे घट में है वह।
हरि हरि जप ध्यान करो उसका, तपती धरती पर दे छैंया।
दे ज्ञान दिखावे पथ तुझको, पड़ जा मन तू उसके पैंया।

299.

वह चले गये वह छोड़ गये, फिर आंख उठा कर ना देखा।
टूटी वह डोर बंधे जिससे, कैसा कर्मों का यह लेखा?
हरि भज हरि भज बन लहर यहाँ, बस तेरे क्या हरि नाचं यहाँ।
सागर में लहर बना नाचे, मन चैन मिले तू नहीं यहाँ।

इस रंग बदलती दुनिया में, किस को पकड़े मन प्यार करे।
सब खोज रहे अपने सुख को, सुख जप हरि को वह ताप हरे।
आना जाना दुनिया मेला, क्या बस अपने खेले छलिया।
जब बहे नयन से आंसू बन, हरि चरण चढ़ा देगा छैंया।

हरि हरि जप शान्ति नहीं उस बिन, कर याद उसे ले चले वही।
बन्जारा बन जग में जी ले, तू आज यहाँ कल पता नहीं।
हरि हरि जप मन हरि हरि ही जप, ना दन्श सतावेंगे जग में।
अपनी मर्जी क्या हरि मर्जी, पतवार उसी के हाथों में।

हरि हरि जप नयन बहे आंसू, कह हरि को मैं तुझको सौंपू।
बल मुझको बस इतना दे दे, मर्जी तेरी मैं ना झेपूं।
नयनों में जिसके हरी बसे, चुप हो जाये कुछ नहीं कहे।
हरि की कठपुतली बन नाचे, हरि का सब कुछ वह यहाँ कहे।

300.

ओम जपो मन ओम जपो मन, चाहत जग से नहीं रखो मन।
मिलना और विछुड़ना मेला, पकड़े क्या पागल तू ना बन।
जाये बहती लहर कहाँ पर, सुमरो हरि सब जगह नहीं डर।
क्या खोजे पागल मन तय कर, अन्तस तेरे छिपा हरी हर।

जपता जा चलता जा जग में, हरि ही है बस एक सहारा।
जपे उसे टूटे सब बन्धन, ले जाती है उसको धारा।
अपनी अपनी यहाँ वासना, सुख का लिये हुए सब सुपना।
टूटे सुपने नियति यही है, ओम जपो शाश्वत में रहना।

जप ले मन तू चैन मिलेगा, सारे तेरे दन्श हरेगा।
ज्ञान ध्यान सबका मालिक वह, नैया तेरी लिये चलेगा।
आना जाना मर्जी उसकी, कुछ पल खेले उसकी चलती।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, नैया हरि मर्जी से बहती।

301.

जो पीड़ उबलती इस दिल में, उसको बोलो क्या यहाँ कहें?
हरि ओम ओम हरि ओम ओम, वह सत्य कहें या झूठ कहें।
बहते आँसू यह ना रूकते, यहाँ कितने अबल जाना क्या?
थक हार नहीं जब कुछ दीखे, हरि भूले याद न आता क्या?

जप ओम अमी का है प्याला, जो पीता उसने ही जाना।
जग के वैभव क्या उस सम्मुख, हरि कृपा मिले उसने जाना।
मन हरि जप ले सुख एक यही, मिट जाते इससे सारे दुख।
सर्जक वह ही पालक वह ही, देगा छैया पायेगा सुख।

शाश्वत हरि ध्यान लगा ले मन, जप उसको नयन बसा ले मन।
हरि यादो में जो नीर बहें, मुरझाया सुमन खिला ले मन।
मन हरि भज तू पाये सुख को, तृष्णा मिटती जाये घर को।
नयनों में जिसके हरी बसे, करती सब सिद्धि नमन उसको।

302.

जप ले मन बहती किस्ती, चैन मिले अंखियाँ रोती।
नाम का ले ले सहारा, मैं मिटा क्यों भय न तजती।
जा रहा मिटता सभी कुछ, तू नहीं हरि आज भी कल।
कर भजन उसका सदा मन, जान ले तू कुछ यहाँ पल।

मन्दबुद्धि कोई ज्ञानी, कह रहे अपनी कहानी।
खेल हरि का रंक राजा, बह रहा नयन से पानी।
हरि जप समझा ले मन को, नाचे कठपुतली उसकी।
जो उपजता ज्ञान मन में, तन करे बन जा हरी की।

हरि जपो जपते रहो मन, जान ले खेवट वही मन।
पकड़ ले दामन उसी का, ना डरे तूफान से मन।
तम हरे वह ज्ञान देगा, शूल पथ के वह हरेगा।
नाम प्यारा हरि जपो मन, साथ तेरे वह रहेगा।

303.

हरि जप हरि जप कर ले मन तप, तेरा क्या सब कुछ है वह रब।
मन बहे नयन से आंसू जब, हरि याद करो देखे वह सब।
हरि बिन ना चैन मिले जग में, लहरे उठती गिरती हरपल।
सब साथ यहाँ जब तज जाते, हरि संग रहता तेरे हरपल।

जप सदा साथ है वह तेरे, उसको भूला आंसू गेरे।
पतवार सौंप दे तू उसको, चलता जा तू धीरे धीरे।
सुपना दुनिया छलता छलिया, ना छोड़ उसे देगा छैया।
ना और ठिकाना जान यहाँ, पड़ जा मन तू हरि के पैंया।

जिसके नयनों में हरी बसे, वह गिरे उठे ना उसे तजे।
देखे हरपल है साथ वही, छूटे सब तृष्णा उसे भजे।
हरि जप ले जायेगी धारा, कर ले विश्वास सृजनहारा।
शिशु रोवे दूध पिलावे माँ, शिशु भी उस बिन जानो हारा।

304.

शरण में आये तुम्हारे, ओम हरि हरि ओम ओम।
दीखते ना राज्य तेरा, मैं अबल हरि ओम ओम।
डगमगाती मेरी किस्ती, पार कर दो ओम ओम।
सारे जग का तू रखैया, भूल न मोहि ओम ओम।

नयनों में आंसू हमारे, हम पुकारे ओम ओम।
ले चलो यह नैया मेरी, बनो खेवट ओम ओम।
कैसे खोजूँ ज्ञानी मैं न, दे कृपा हरि ओम ओम।
मेरे पालक देख दाता, रूठ ना तू ओम ओम।

करो सुबेरा तम घनेरा, इंतजा हरि ओम ओम।
थक गया हारा मुसाफिर, चरण रज दे ओम ओम।
दुनिया चलती तू चलाता, कौन मैं हरि ओम ओम।
अब तो देखो दर्द दिल का, ओम हरि हरि ओम ओम।

प्रीति तुझमे बढ़ती जाये, थाम ले तू ओम ओम।
जाऊँ मिट बन कर पतंगा, बन शमा तू ओम ओम।

305.

प्यासी अंखियां तरसे नयना, तुम बिन जिय लगता ना रसिया।
आ जा मेरी प्यास बुझा दे, आँसू से भीगी है अंखियाँ।
जनम जनम का तुमसे नाता, छिपा कहाँ मुझसे शर्माता।
अपनी मदिरा मुझे पिला दे, नाम मुझे तेरा ही भाता।

ले चल मुझे जहाँ तू चाहे, प्रीति न कम तुमसे हो पाये।
सुमरण करूँ रात दिन तेरा, नयन मे हरि तू ही समाये।
दास तुम्हारा न ठुकराना, मैं अनाथ तुम बिन यह जाना।
पार लगा दे मेरी नैया, बीत रहा है सब अफसाना।

चाहें तेरा प्यार सदा हम, नीर बहें अंखियों से हरदम।
पावन यह गंगा लगती है, नयनों में रहना हरपल तुम।
ढले शाम तू आ जा अब तो, हरि हरि जपें मनाये तुमको।
आंसू का मैं हार चढ़ाऊँ, जो भी दिया समर्पित तुमको।

306.

ले चलो नौका हमारी, दास तेरे हम मुरारी।
जी रहे अज्ञान में हम, दुख हरो तुम चक्रधारी।
सारे जग के तुम मालिक, देखो यह अंखियां बहती।
मिले जब तेरी कृपा है, सहज ही फिर नाव बहती।

ऋषि मुनी तुमको जपे है, रात दिन पूजा करें है।
शक्ति न मुझमें मैं हारा, दे शरण दर पर खड़े है।
सुरति हरपल हरि रहे बस, मैं लहर सागर तुही है।
जैसा भी मुझे नचाये, मैं न कुछ हरि बस तुही है।

ज्ञान का दीपक जला दो, दूर हो अज्ञान सारा।
साथ मेरे तुम सदा हो, किसलिये मैं नाथ हारा?
प्यार को पाऊँ तुम्हारे, लाज रखना हम तो हारे।
नयन रोते हैं हमारे, आस तुम पर हम पुकारे।

307.

छनक छनक छन पायल बाजे, छवि नयनों में तेरी नाचे।
पागल रहूँ प्रीति में तेरी, रास रचा ले ना अब सोंचे।
कितना तूने दर्द बहाया, कांटो में भी फूल खिलाया।
मीरा हुई तुम्हारी चेरी, हँस हँस उसने नीर बहाया।

छलिया छल कर ना अब आ जा, सोये वह अरमान जगा जा।
दो दिन का यह रैन बसेरा, मुरझाया जो सुमन खिला जा।
हरि हरि गायें तेरी लीला, गीत उठाये दिल की पीड़ा।
नयनों में मेरे बस जाओ, तुमसे करूँ सदा ही क्रीड़ा।

हरि हरि नाम तुम्हारा प्यारा, मेरा तो है तुही सहारा।
नीर बहावें मेरी अखियां, बहूँ याद कर प्यारी धारा।
ढलती शाम न छिप तू छलिया, बीत जाये न ऐसे घड़ियां।
आ जा आ जा दिल का रसिया, पड़ू तुम्हारे हरि मैं पैंया।

308.

व्यर्थ यह भी व्यर्थ वह भी, अब कहो तुम क्या करोगे?
बहती जो तेरी अंखियां, शान्ति क्या तुम न चाहोगे?
सत्य क्या मन देख दुनिया, छलता हरपल है छलिया।
चले क्या मर्जी किसी की, धूप छाया खेल दुनिया।

बिन जपे ना चैन आवे, नयन से आंसू बहावे।
जानो कठपुतली उसकी, क्यों न अपना सिर झुकावे।
आया जब उसकी मर्जी, जाये ले चलती उसकी।
ज्ञान जैसा हृदय उपजे, तन करे सब समझ मन की।

साथ तेरे जान ले मन, बिन जपे आये न सावन।
ज्ञान देगा जग रखैया, ले चले उसकी लहर बन।
नाम का ले ले सहारा, जग में हर कोई हारा।
नयनों में बसते हरि जब, बहता ले जाती धारा।

309.

बरसे नयना रिमझिम रिमझिम, मिलन घड़ी आये तड़फे दिल।
कब होगा यह मिलन हमारा, जपूं तुम्हारी माला हरपल।
नयनों में मेरे बस जाओ, रूठो ना अब और सताओ।
तड़फे जल बिन मछली जैसे, विरह तुम्हारा प्यार जताओ।

दो दिन रैन बसेरा छैला, डसती मुझको हरपल रैना।
दूर हुए ना लागे जियरा, जग में तुम बिन भी क्या रहना।
पियूँ तुम्हारी मदिरा हरपल, सागर तू मैं बहूँ लहर बन।
छूटे चिन्ता तेरी माया, जी लूँ मैं तेरा सेवक बन।

जीवन तेरा कुछ ना मेरा, ज्ञान मिले तेा होय सुबेरा।
गहरा तम हरि ज्योति जला दो, दूर होय फिर दुख का घेरा।
जपते जपते जीवन बीते, अंखियाँ चरण तुम्हारे सींचे।
अज्ञानी हूँ खफा न होना, चाहूँ नयन कभी ना मीचे।

310.

देखे रोती अंखियां पर चुप, कहने का अधिकार नहीं कुछ।
कैसे तुझे मनाऊँ बोलो, अज्ञानी मैं ज्ञान नहीं कुछ।
ले चल मुझे भुलावा देकर, कुछ पल को तेा धीरज आये।
पार लगा या नाव डुबा दे, इन आंखों में आंसू आये।

सारे जग का सर्जक पालक, सारा यह ब्रह्माण्ड नचाये।
नयनों से बहते आंसू है, लीला तेरी समझ न आये।
खेलें रोवे मर्जी तेरी, किसको अपना दर्द दिखायें?
कहाँ छिप गया देकर धोखा, अंखियां हरदम नीर बहाये।

पीव मिले ना जियरा भटके, जलती ज्वाला में यह झुलसे।
विवश हुआ चहुँ ओर निहारे, मौन हुआ नभ क्यो ना बरसे।
द्वार खड़े हम खड़े रहेंगे, मर्जी तेरी वहाँ बहेंगे।
उठा आँख को हमें देखले, नीर बहें क्या सदा बहेगे?

311.

हरि ओम कहो मन ओम कहो, जैसा राखे मन यहाँ बहो।
बस एक सहारा वह जग में, वह ताप हरे हिय उसे गहो।
उस बिन रोती रहती अंखियाँ, कितनी ही जगत पकड़ बैयां।
हरि प्रीति बढ़े हिय कमल खिले, मिट जाते दुख मिलती छैयां।

हरि हरि जप वह ही सांचा धन, सारी दुनिया है यह स्वप्निल।
हरि जप अन्तस में ज्ञान जगे, मिटते भय ले जाता साहिल।
नाम हरी की पी ले मदिरा, क्या पकड़े सब कुछ है मिटता।
हरि जपे जो स्वयं को देखे, क्या हम सब कुछ हरि में बहता।

हरि हरि जप चलता जा जग में, आंसू बहें चढ़ा वह पग में।
उस बिन सुने न कोई तेरी, मन गा ले उसके ही नगमें।
हरि जप मन वह शान्ति प्रदाता, भाग्य विधाता वह ही तो है।
मन्दबुद्धि ज्ञानी सब जग में, वह ही तो सबका सर्जक है।

मन हरि हरि जप कर ले पूजा, समझो उसकी यहाँ क्या रजा।
कठपुतली मन जान यहाँ तू, मर्जी उसी की दे जो सजा।
हरि हरि जप मन जपता ही जा, नदिया उसकी बहता ही जा।
यहाँ शिकायत क्या करनी मन, अपनी खेले सब लिये रजा।

हरी समाये नयनों में जब, ज्ञान जगे हरि ताप हरे वह।
मैं नही रहे यहाँ रहे हरि, दीप जले तम दूर करे वह।
हरि की लीला हरि का खेला, मन क्यों करता तू मन मैला।
पड़ जा हरि के चरणों में ही, ले जायेगा तुझको छैला।

देख यहाँ सच क्या चलती है, हरि की मर्जी आना जाना।
कुछ पल के मेहमां बने है, गा ले हरि फिर तो खो जाना।
हरि हरि गा मन चैन मिलेगा, अन्तिम क्षण तक साथ रहेगा।
घबरायेगा ना जिय तेरा, सेवक हरि का यदि बनेगा।

312.

जीवन नदिया बहती जाये, नहीं किनारा कोई पाये।
बहना होगा यहाँ लहर बन, बह ले हँस या नीर बहाये।
नदिया हरि की यहाँ बह रहा, सुख दुख खेला यहाँ चल रहा।
बस में तेरे क्या है पगले, कभी हँसे तू कभी रो रहा।

हरि हरि जप मन चलता सुपना, बसा नयन में आवे चैना।
दो दिन खेले खेल यहाँ पर, भीगे नयना भूले जपना।
हरि हरि जप तेरा वह साहिल, पार लगावे हँस हँस नैया।
जग में मन तू उलझ उलझ कर, गिर गिर पड़ता रोती अंखियां।

जपो हरि मन तेरा सहारा, छटता मन का सब अंधियारा।
जले ज्ञान की बाती हिय में, नही बहे फिर आंसू खारा।
हरि हरि जप मन सुमर उसी को, देख रहा वही सभी को।
हरि चरणों में पड़ जा तू मन, दे विवेक ले चले तुझी को।

313.

चाहते कितनी लिये हम, फिर रहे कितने लिये गम।
ना लगाते दिल हरी से, बरसते हैं नीर रिमझिम।
हरि भज ले सुपना दुनिया, छलता है हमको छलिया।
ना ठिकाना और कोई, चैन मिले रोती अंखियां।

हरि भजो साथी वही है, ज्ञान दे ज्ञानी वही है।
जो उपजता ज्ञान मन में, तन करे सब कुछ वही है।
दिल लगा गा गीत हरि के, बीतेगी काली रैना।
कल नहीं थे कल न होंगे, बह ले हरि मर्जी बहना।

हरि जपो मन हरि जपो मन, शान्ति का सागर वही मन।
जगत में कितना उलझ तू, सुन दिल की करता क्रन्दन।
हरि जपो कर ले समर्पण, जाये मिल उसकी छैंया।
डगमगाये नाव तो मन, जान लेना वह खिवैया।

314.

हरि हरि जपें रिझायें तुमको, बहते आंसू देखो हमको।
नाथ तुम ही मेरे सहारे, प्यार मिले तेा पायें तुमको।
तेरी लीला हरि हम नाचे, किसको अपना दर्द दिखायें?
रूठ न जाना हरि तुम मुझसे, याद करूँ और आँसू आये।

अगम अगोचर पार न तेरा, खोजता मैं तेरा बसेरा।
नीर नहीं नयनों के रूकते, काली रातें करो सुबेरा।
तुम बिन मेरा जिय घबराये, वीणा टूटी स्वर ना गाये।
बन्शीधर तू सुना दे बंशी, जिसको सुन जियरा हर्षाये।

अनजानी गलियां मैं भटकूँ, किससे पता तुम्हारा पूछूँ?
अबल नाथ मैं शक्ति प्रदाता,दे बल नीर नयन के पोंछू।
हरि हरि जपूँ तुझे मैं हरपल, धुल जाये जीवन के सब मल।
बस जाओ नयनों में मेरे, सदा रहो संग मेरे हरपल।

315.

पार करा दे मुझको नदिया, दर्द सहा ना जाता रसिया।
नीर बहा यह अंखियां हारी, निष्ठुर ना बन तू अब छलिया।
तेरा बगिया फूल बने हम, फिर भी झरती मेरी अंखियां।
पत्थर दिल तुम बनो न इतने, गिरूँ नाथ मैं तेरे पैंया।

पल दो पल का मेला माना, आंसू से यह भरा खजाना।
क्या थी कमी रूलाये हमको, भाग्य विधाता तुमको माना।
अज्ञानी मैं बालक तेरा, ना जानूँ कब होय सुबेरा।
बहते इन नयनों से आंसू, अन्धकार ने मुझको घेरा।

चल चल गिरूँ डगर ना पाऊँ, कैसे इस दिल को समझाऊँ?
कितना रूठो तुझे मनाऊँ, तुम बिन और कहाँ मैं जाऊँ?
अपना प्यार मुझे तू दे दे, झोली लिये खड़े हम द्वारे।
ढल ना जाये यह अब संध्या, बहे नीर रो तुझे पुकारे।

316.

हरि हरि बोलो नयना खोलो, हरि की लीला हरि को जी लो।
पार लगावेगा वह नैया, सुमरण उसका हरपल कर लो।
हरि जप कट जायेगी रैना, उस बिन कभी मिले ना चैना।
जितना उलझे जग में पागल, बहते रहें सदा यह नयना।

हरि सागर तू लहर यहाँ बन, संग तेरे जप उसे यहाँ मन।
कर ले मन विश्वास उसी पर, चलती उसकी जान यहाँ मन।
क्या तेरा तन भी ना अपना, दुनिया दो दिन रैन बसेरा।
हरि जप शान्ति मिलेगी मन को, तृष्णाओं ने हमको घेरा।

बन जा मन तू दास हरी का, अपना क्या सब यहाँ हरी का।
ले जाती हरि धारा हमको, कहाँ जायें पता ना कल का।
हरि जप मन ज्ञान वही दे, उसके बिन अंखियां यह रोती।
फूल खिले दिल का सुवास दे, वही ले चले तेरी किस्ती।

317.

हरि हरि बोलो हरि हरि बोलो, बहता जीवन खुद को तोलो।
आये यहाँ जाये न पूछें, बस तेरे क्या आंखे खोलो।
दुनिया चले सदा ही ऐसे, मन समझा ले, हरि को जप ले।
देगा तुझको ज्ञान वही मन, अन्तस उसकी ज्योति जला ले।

बन जा मन तू हरि का सेवक, इस नगरी में नाच नचाये।
सदा साथ जप ले मन उसको, वही ले चले जैसा भाये।
मगन होय पी हरि की मदिरा, मिटता तम होता उजियारा।
जग में काहे व्यर्थ उलझता, जप ले, ले जाये हरि धारा।

जप हरि मन तू प्रीति बढ़ाले, नयनों में हरी छवि बसा ले।
सागर वह ही चले हरी की, लहर बना मन हरि को जप ले।
गीत हरी के गा मन हरपल, पार लगावेगा वह नैया।
खेवन हार वही जप उसको, उस बिन रोती रहती अंखियां।

आज यहाँ हम कल ना होगे, टूटें कितने सुमन खिलेंगे।
नीर नयन के मन कर अर्पण, और पास क्या उसे जपेगे।
हरि हरि जप मन बीते रैना, दुनिया हरि की हरि में बहना।
दो दिन जैसे खेल खिलाये, जप मन हरि चरणों में पड़ना।

318.

नयना भीगे बाट निहारें, कब आवेगा मेरा रसिया?
जनम जनम का दास तुम्हारा, मुझको दे दो अपनी छैया।
तरसे प्यार को पर न पाया, जीवन मेरा यह मुरझाया।
छिपे गगन में रोवे अंखियां, कैसी रच दी तूने माया।

बीत रहे दिन आंखों में जल, कैसे तुमको नाथ मनाऊँ।
पता ठिकाना मैं ना जानूँ, फिर भी तुमको सदा रिझाऊँ।
कर कर याद रो रही अंखियां, कहाँ छिप गये मेरे कान्हा।
तेरी बन्शी को सुनने को, तड़फ रहे हरि तुमको चाहा।

पीड़ा हर लो बालक तेरे, तुम ही तो हो सर्जक मेरे।
अबल नाथ मैं शक्ति प्रदाता, देखो अंखियां आंसू गेरे।
हरि हरि जपते प्रीति बढ़ाओ, खेवट मेरे ले चल किस्ती।
डगमग करे न दीखे कुछ भी, सुन लो प्रभु जी मेरी विनती।

319.

हरि प्यार का प्यासा फिरूँ, कर्मों का बोझा ले फिरूँ।
मैं थक गया हारा हरी, चरणों में तेरे मैं गिरूँ।
नयनों से गंगा बह रही, ले चल उसी में हम बहें।
अब सहा जाता नहीं गम, तुमको बता कैसे कहें?

हरि देख लो नजरें उठा, बालक तुम्हारे रो रहे।
क्या है कहो मेरी खता, तुम बिन भटकते फिर रहे।
नयन में हरि को बसा मन, डोर उसके हाथ में है।
कर सदा सुमरन उसी का, जान मन क्या हाथ में है?

न कटे उस बिन यह रैना, वह सहारा जान ले मन।
गम न कर जपते रहो मन, जान ले सब स्वप्न यह मन।
मन जपो हरि साथ वह ही, ले चले जैसे हो मर्जी।
नयन के आंसू चढ़ा दे, बह ले जो उसकी मर्जी।

320.

हरि कृपा करो हरि कृपा करो, मेरे नयनों में सदा रहो।
आनन्द तुही इस जीवन का, सुमरण तेरा हिय बसे रहो।
तुम बिन जियरा यह अकुलावे, अंखियां मेरी भर भर आवे।
अज्ञानी बालक तेरा मैं, हरि कृपा करो तुमको पावे।

बहती जीवन की नदिया यह, न मिले किनारा कोई यहाँ।
तुम बसे रहो इन नयनों में, मर्जी तेरी ले चलो जहाँ।
पाप पुण्य सुख दुख का मेला, कर्मों का है पड़ा झमेला।
पार करूँ मैं नदिया कैसे, मुझे सहारा दे दो छैला।

अगम अगोचर पार न तेरा, यह भटक रहा मनुआ मेरा।
बहते आंसू हरि कृपा करो, मिटे यहाँ तम होय सुबेरा।
शरण तुम्हारी लाज राखना, बहता इन नयनों से पानी।
तुम बिन कोई नहीं रखैया, प्यासा तुही पिलाये पानी।

321.

कैसी दुनिया जाने ना हम, लिये दर्द को भटक रहे हम।
शरण तुम्हारी सृष्टि रचैया, नयना मेरे बरसे रिमझिम।
दास तुम्हारा जनम जनम का, कुछ ना जानूँ मिटे भरम ना।
कृपा तुम्हारी मिल जाये हरि, चाह यही बस जाओ नयना।

बहती धारा यहाँ बहे हम, प्यारा मिले होवे कुछ कम गम।
मेरे भाग्य विधाता तुम हो, मुँह ना मोड़ो नाथ अबल हम।
सुख दुख पाप पुण्य का खेला, बरस रहे है मेरे नयना।
पार लगा दे मेरी किस्ती, पड़ू चरण में तुम बिन कुछ ना।

दो दिन का यह रैन बसेरा, कटते पल ना तम ने घेरा।
टूटें सुपने अंखियां रोवे, समझे ना पागल मन मेरा।
मिट जाती है सारी तृष्णा, जप ले हरि मन आवे चैना।
बहे लहर बन कर सागर में, जाने सागर यहाँ लहर ना।

322.

मन समझ करना यहाँ क्या, नाम ले जीना यहाँ है।
बने कठपुतली हरी की, नाचते उसका जहाँ है।
चाहता जैसे नचाये, बस न कुछ अपने यहाँ है।
आये जग में जाये जब, पूछे न जाना कहाँ है?

मन जप हरि कटती रैना, नाम ले उसी का बहना।
न लहर बलशाली सागर, प्यार से इसे ही जपना।
जाये ले वही ठिकाना, ज्ञान का वह ही खजाना।
शान्ति आये जप हरी को, बन लहर मन यहाँ बहना।

हरि जपो मन हरि जपो मन, आखिरी दम तक यही धन।
छोड़ जाते संग साथी, चैन आवे जप हरी मन।
कौन अपना है पराया, खेल हरि का हरी माया।
स्वप्निल सारी यह दुनिया, जप ले हरि मिलती छाया।

323.

हरि जपे जपते रहेंगे, कितना रूठो पर जपेंगे।
एक तुम ही तेा सहारा, तुम बिना किसको कहेंगे?
न गुनाह ऐसा किया जो, छिप गया तुमको न पांता।
नाचता जैसे नचाता, प्यार तू दे दे विधाता।

सूखे न आंसू नयन के, जानते ना राज क्या है?
वन पथिक हम घूमते है, जाने न मंजिल कहाँ है?
दिल दिखाये तुझे कैसे, न पता इस दिल में क्या है?
बहती आंसू की गंगा, याद तेरी तू छिपा है।

दीन बन्धु जग के कर्ता, दर्द दिल का मुझे साले।
जानूँ न तेरा ठिकाना, इस जग को तू ही पाले।
देखो रोती है काया, ईश अपरम्पार माया।
नाथ सर्जक तुम हमारे, शरण मैं तेरी आया।

324.

कितना रो ले मन विलख विलख, बिन जपे हरि नहीं मिटते दुख।
हरि की लीला हरि का खेला, जपले हरि को मन पावे सुख।
हरि जप हरि जप मन जपता जा, बस एक सहारा वह जग में।
खाते ठोकर चलते चलते, यह प्राण पुकारे फिर पल में।

हरि हरि जप मन को शान्ति मिले, हरि कृपा मिले तो भ्रान्ति मिटे।
तू कौन सौंप हरि हाथों में, बन लहर न सागर ध्यान हटे।
मर्जी उसकी बह ले जग में, आयें जाये मर्जी उसकी।
दे ज्ञान वही जप ले उसको, कठपुतली है हम तो उसकी।

हरि हरि बोलो हरि को जी लो, दो दिन का रैन बसेरा यह।
प्राणों की प्यास यही है मन, दिल में बस जाये मेरे यह।
यह नियति खिलाती खेल सदा, मरना जीने से नहीं जुदा।
हरि की सुवास ले जी ले मन, वह आदि अन्त है सत्य सदा।

325.

पल पल में सब परिवर्तन है, पकड़े मन तू किस पल को है।
हरि जप ले बन लहर यहाँ पर, सारी दुनिया यह स्वप्निल है।
आज बना जो अपना तेरा, कल को बेगाना हो जाता।
पागल बन ले उसकी यादें, आंसू की नदिया में बहता।

मन जप हरि को सत्य वही है, पागल बन ना शान्ति वहीं है।
दो दिन रैन बसेरा है यह, ले जाती धारा हरि की है।
हरि जप हरि जप ज्ञानी वह ही, इस जीवन का वह ही माही।
ज्ञान जगे जो वही करे तन, जान यहाँ मन तू कुछ नाहीं।

हरि हरि गाओ बीते रैना, मृगतृष्णा में मन ना फंसना।
प्रीति बढ़े हरि दूर हटे भय, जपता जा हरि मर्जी बहना।
जीवन में किससे है शिकवा, हरि जप हरि जप जपता ही जा।
खेल खिलावे खेल रहा हरि, मन हरि के चरणों मे पड़ जा।

326.

स्वीकार करो तेरा सेवक, दिल मेरा यह करता धक धक।
पथ में प्रभु तुम करो उजाला, पहुँचू प्रभु तेरे चरणो तक।
नयनों से जल मेरे गिरता, प्रभु चरण पखारूँ मैं तेरे।
कुछ पल जो मिली हमें सांसे, हरि बसो नयन में तुम मेरे।

मैं करूँ सदा पूजा तेरी, तुम बिन न और कोई दूजा।
हरि प्रीति सदा बढ़ती जाये, इस दिल में हरि तू ही बस जा।
लीला तेरी मैं ना जानूं, इन नयनों में आँसू आये।
कितने कांटे बिखरे जग में, पर फूल यहाँ पर महकाये।

स्वप्निल है यह सारी दुनिया, छल क्यों करता मुझसे छलिया।
आंसू नही नयन के रूकते, प्यार मुझे दे पड़ता पैया।
खो जाऊँ ना इस मेले में, चलता जाऊँ धीरे धीरे।
कृपा बरसती रहे सदा प्रभु, पहुँचा मुझको प्रभु जी तीरे।

327.

आशा क्या रक्खे मन जग से, सबके अपने अपने रस्ते।
मिले साथ जो कुछ पल चल ले, पकड़ यहाँ ना दिल है जलते।
हरि हरि जप मन चैन मिलेगा, ऋषि मुनि उसको जपते रहते।
नचा रहा वह नाच रहे हम, जप उसको मन दुख सब हटते।

हरि प्यारा वह सदा साथ है, गा ले मन तू उसके नगमे।
स्वप्निल दुनिया यह सारी है, जपो उसे मन रस है उसमें।
हरि जप हरि जप हरि की लीला, अपना मन क्यों करता मैला?
शीश झुका मन हरि चरणों में, ले जायेगा तुझको छैला।

हरि हरि जप हरि खेल यहाँ है, जाने न कल जाये कहाँ पर।
बहे नयन से आंसू जो मन, उसे चढ़ा सब जगह यहाँ पर।
उलझा जग में हरि को भूला, क्यों मन विष की बेल बो रहा।
जपता जा हरि सब कुछ वह ही, सभी दिशा में वही बह रहा।

328.

ले चलो अंगुली पकड़ कर, मोहन तुम धीरे धीरे।
बहता नयनो से पानी, दर्शा पथ पहुँचू द्वारे।
थक गिरूँ न सम्भल पाऊँ, आस तुमसे ही लगाऊँ।
मैं अबल तेरा सहारा, नीर नयनों से गिराऊँ।

न कोई मंजिल ठिकाना, बह रहा बस तुझे माना।
इस जगत के तुम रचैया, मैं शरण प्रभु प्यार देना।
दिल नहीं लगता हमारा, बहती आंखों से धारा।
ना कभी तुम रूठ जाना, एक तुम ही हो सहारा।

प्रीति मन हरि से बढ़ा ले, वह लगावे पार नैया।
डर मिटे ना हरि जपे बिन, जान मन वह ही खिवैया।
जाये कट काली राते, नयन में उसको बसा ले।
बहती है हरि की धारा, मन बहो अमृत को पी ले।

329.

उठ रहे हरि गीत तेरे, ले चल नदिया के तीरे।
जहाँ जलती ज्योति तेरी, अंखियां आंसू यह गेरे।
ऋषि मुनि करते सब पूजा, इस सृष्टि का सृजन हारा।
हरि प्यार पाऊँ तुम्हारा, सब मिट जाये दुख सारा।

तुम रूठ नहीं हरि जाना, बहती आंखों से धारा।
लो मुझे शरण में अपनी, बन सकूँ तेरा दुलारा।
सुमरण हो सदा तुम्हारा, इस जग से प्रभु मैं हारा।
दीनबन्धु करूणा सागर, तेरा ही मुझे सहारा।

हरि से मन प्रीति बढ़ा ले, दिल में मन उसे बसा ले।
कट जाये काली राते, जिय हरषे मन अजमा ले।
दो दिन का रैन बसेरा, मन पकड़ उसे न डरेगा।
हरि मोह हरे सुख देगा, जीवन का कमल खिलेगा।

330.

हरि की कृपा मिलती रहे, यह जिन्दगी चलती रहे।
रूठ ना जाना कभी भी, इन नयन से आंसू बहें।
चल गिरे हरि थाम लेना, प्रभु अबल हैं हम क्या कहें?
सूखते ना नयन आंसू, तुमको बता प्रभु क्या कहे?

अपना क्या हमे नचाये, ज्ञान दे तो ज्ञान आये।
सदा हो सुमरण तुम्हारा, नयन मेरे नीर आये।
दास मैं तो हूँ तुम्हारा, जानूं ना कुछ मैं हारा।
जानता न लीला कोई, मांगते तुमसे सहारा।

खेल दो दिन कुछ यहाँ पल, चलता सुख दुख का पहिया।
शरण में रख लो मुरारी, पड़ता हरि तेरे पैंया।
बह रहा नयनों से पानी, भीख मुझको दे दे दानी।
नयन में बस जाओ मेरे, बीत जाये सब कहानी।

331.

तुझे रोकर सुनाऊँ मैं, सुनो तुम दास्ता दिल की।
सभी कुछ है तुही मेरा, जलन मिटती नहीं दिल की।
अंधेरा सब तरफ छाया, जगत में हाय भरमाया।
जला दो ज्ञान का दीपक, रोती मेरी यह काया।

बने हम फूल बगिया के, तुम्हारा बाग है माली।
मुझे तू प्यार अपना दे, नहीं जाती नयन लाली।
सहारा तू मुझे दे दे , थका मैं चल नहीं पाऊँ।
नयन से गंगा बहती है, नहीं कुछ और शर्माऊँ।

यह दुर्गम पथ अनजाना, कहाँ जाये पता ना हम।
बहे यह आँख तो देखो, न मुझ से प्यार करना कम।
प्रभु कुछ पल जो है बाकी, बसो नयन में तुम मेरे।
नहीं मैं अब रहूँ प्यासा, पड़ा मैं द्वार पर तेरे।

332.

हरि बोलो मन हरि बोलो मन, पकड़े क्या बहता यह जीवन।
हरि को अर्पण नीर यहाँ कर, वह ही सर्जक जीवन का धन।
जपता जा हरि दुनिया स्वप्निल, आयेगा इस मन को चैना।
लहर बनो दरिया यह उसका, उसकी मर्जी से ही बहना।

जप ले हरि वह शान्ति प्रदाता, सबका भाग्य विधाता वह है।
अपना कौन पराया जग में, खेल यहाँ सब उसका ही है।
सोचे क्या जप सोच मिटावे, जपता जा वह मन पर छाये।
बहती है हरि की ही धारा, जप ले मन तू फिर हर्षाये।

प्यार मिले हरि मन कर विनती, यहाँ खेलते धरती उसकी।
आये हम ले जाये कब वह, नहीं कर सका कोई गिनती।
मन हरि जप हरि जप जपता जा, बन्जारा बन जग मे जी ले।
दो दिन का यह रैन बसेरा, अर्पण सब मन हरि को कर ले।

333.

दुख हरो तुम नाथ हमारे, शरण तुम्हारी आये द्वारे।
अगम अगोचर पार न तेरा, प्राण पुकारे तुम हो मेरे।
तुम ही सर्जक तुम ही पालक, जियरा मेरा करता धक धक।
लाज राखना इस मेले में, दर्शा दो पथ पहुँचू तुम तक।

कठपुतली मैं नाचूं हरपल, अंखिया झरती रहती झर झर।
तेरी प्रीति बिना सुख नाहीं, चरण पड़ू सुन ले बन्शीधर।
इन नयनों में तुम बस जाओ, और नहीं मुझको तड़फाओ।
आती सांस छोड़ जाये कब, मेरे मोहन अब तो आओ।

गिर गिर पड़ू पुकारूँ तुमको, तुम बिन बता कहूँ मैं किसको।
पार लगा दे मेरी नौका, प्यार मांगता दे दे हमको।
आंसू से भीगी आँखें है, नमन करो स्वीकार हमारा।
अज्ञानी हूँ कुछ ना जानूं, छैंया दे दे मैं तो हारा।

334.

हरि हरि जप ले स्वप्निल दुनिया, छलता मुझको हरपल छलिया।
जान यहाँ तू नहीं वही है, शिकवा किससे पकड़ो बैंया।
दिल में हरि की ज्योति जला ले, नयनों में मन हरी बसा ले।
आना जाना चलती उसकी, कौन यहाँ तू खूब समझ ले।

दो दिन रैन बसेरा जग में, संग कोई ना चले यहाँ पर।
उलझ रहा तृष्णाओं में मन, हरि को भूला जले यहाँ पर।
किसका साथ रहा इस जग में, अपने सुपने सभी रहे ले।
पल दो पल का साथ यहाँ पर, मान यहाँ मन हरि को जी ले।

सबकी अपनी राह अलग है, अंखियां रोये कुछ न समझ है।
जितने साधन मिला यहाँ जो, चल ले मन मन्जिल तो वह है।
तेरे हाथ नहीं कुछ देखे, तज अभिलाषा हरि में बह ले।
ले अपनी इच्छा को रोवे, चिन्ता छूटे हरि को जी ले।

कितनी योनी जन्मे मिटती, देखे ना आंखे यह झरती।
ले अपनी पीड़ा सब घूमे, जप हरि अंखियां उस बिन रोती।
जप मन हरि हरि शीश झुका ले, दिल में उसका प्यार जगा ले।
बीतेगी सुख से यह रैना, शिकवे तज हरि को अपना ले।

335.

मांगते तेरी कृपा को, तुम मुँह नहीं प्रभु फेरना।
बदलता पल में जमाना, मुझको नहीं तुम छोड़ना।
नहीं मिला भटके जग में, गुजरें रातें तारे गिन।
नहीं हो सके प्रिय तेरे, अंखियां बरसती रात दिन।

क्यों हमें उलझा रहा है, प्यार को हम तरसते है।
कहलाते करूणा सागर, नयन मेरे बरसते हैं।
मैं जी रहा अज्ञान में, दे ज्ञान तुझे पाऊँ मैं।
पाप क्या है पुण्य क्या है, देख जग घबराऊँ मैं।

आ मिल ढलती है संध्या, अब तो रहा जाता नहीं।
जल बिन तड़फे है मछली, प्रभु देख ले दिल में तुही।
चरण में मस्तक झुका है, ले चल प्रभु मेरी नैया।
अबल हूँ बालक तुम्हारा, जल रहा तुम बिन खिवैया।

336.

दिल में मेरे हरि रहना, एक पल ना विलग होना।
मुझ पर छाया अन्धेरा, प्रभु उसे तुम दूर करना।
जा रही यह जिन्दगी है, ना हमें कल की खबर है।
बाधाएँ आती मग में, ले चले मर्जी जिधर है।

दास हैं हम तेा हरी के, नयन आंसू झर रहे हैं।
नयन में हरि बसो मेरे, चाह यह ले जी रहे हैं।
तुम अगोचर देखते सब, कह रहा कण कण कहानी।
प्राण प्यासे हरि पुकारे, तुम पिला दो नाथ पानी।

क्या करे शिकवा किसी से, छिपता क्यों तू छलिया बन।
नाथ हम बालक तुम्हारे, नाच रहे कठपुतली बन।
ज्ञान देना ईश हमको, जी रहे अज्ञान में हैं।
पा सकूँ तेरी चरण रज, देख नयना बह रहे हैं।

337.

मान जाना ना बुरा तुम, हम तो नियति के हैं दिये।
कुछ कह दिया कुछ सुन लिया, इस जगत से फिर चल दिये।
देखूँ नयनों में आंसू, ना पोंछ पाया मैं यहाँ।
जल रहा दिल देख दुनिया, तू छिप गया जाने कहाँ?

सोचता दिन रात मन तू, दुखो की घूटें पी रहा।
सोच मिटे जप ले हरि मन, शाश्वत सदा वह ही रहा।
जैसा नचाये नाच ले, कठपुतली यहाँ मान ले।
भाग्य का वह ही विधाता, मैं मिट रहा यह जान ले।

जप ले आयेगा चैना, खेले हरि हरि की लीला।
दर्द है हरि याद कर ले, आता पीछे से रेला।
हरि जपो जपते रहो मन, बह रही धारा लहर बन।
करता जो सुमरण हरि का, फिर खिले है दिल का सुमन।

338.

मन लगाते फिर रहे हैं, मन नहीं लगता हमारा।
कैसी यह दुनिया बनी, देख कर करता किनारा।
जिन्दगी की शाम आती, ढलती करते प्रतीक्षा।
दिल जले कैसे बुझायें, पा सके न इतनी शिक्षा।

दे खुशी या गम हमें दे, खुशी तेरी तू चलाये।
बहते नयनों से आंसू, दिल बता कैसे लगायें।
दर्द कितना बह रहा है, तू बता क्यों सो रहा है।
पीड़ सबकी हरि हरो तुम, स्वप्न सा सब चल रहा है।

ना विलग होना कभी भी, हृदय में मेरे समाना।
मेरे सर्जक हो प्रभु तुम, एक पल भी ना भुलाना।
बहती आंसू की गंगा, नाचे कठपुतली बन कर।
बस विनय मेरी यही है, प्यार पाऊँ मैं हरी हर।

339.

मैं पराजित गर्व क्या है, आ रहा तेरी शरण में।
बहते नयनों से आंसू, कर कृपा पाऊँ चरण मैं।
दीनबुन्ध करूणा सागर, ले फिरूँ मैं रीति गागर।
मैं अबल ज्ञानी नही हूँ, मुझको ले चल पथ दूभर।

अब सहा जाता नही गम, ना तुम परीक्षा और लो।
राह में तेरी खड़े हम, नजरें उठा कर देख लो।
हरि तुझे जपते रहे हम, प्रीति को हरपल बढ़ाना।
ढलती देखो यह संध्या, हृदय में मेरे समाना।

बहती जीवन की नदिया, दीखे न कोई किनारा।
नयन में हरि बसो मेरे, तुम बनो मेरा सहारा।
सांस तेरे गीत गायें, भक्ति का वरदान दे दो।
स्वप्न सा सारा जगत यह, इन पलों में प्यार दे दो।

340.

जो तूने चाहा वही हुआ, मैं कौन हूँ यह तेरा जहाँ।
बस चाह प्यार मुझको देना, मर्जी तेरी ले चलो जहाँ।
नयनों से नीर बहें मेरे, मैं खोज नहीं तुमको पाऊँ।
बालक मैं नाथ तुम्हारा हूँ, दो ज्ञान मुझे तब ही पाऊँ।

अपनी हरि कृपा सदा रखना, गिर गिर उठते रहते प्रतिपल।
बिन कृपा नहीं चल पाये हम, तुम शक्ति प्रदाता देते बल।
मेरा क्या सब कुछ है तेरा, कुछ पल का ही तो है डेरा।
स्वप्निल यह सारी दुनिया है, फिर भी तृष्णाओं ने घेरा।

नाचे हम कठपुतली बन कर, बरसे मेरे नयना रिमझिम।
सुमरण तेरा हो हरी सदा, अन्तिम पल तक जब निकले दम।
बस जाओ मेरे नयनों में, ना और मुझे अब तड़फाओ।
जनम जनम का दास तुम्हारा, अब छिपो नहीं तुम आ जाओ।

341.

मान मन दुख तज यहाँ पर, चरण में झुक जा हरी के।
वह ही स्वामी इस जग का, गीत गा ले मन उसी के।
कौन तू मर्जी उसी की, चाहता वैसे नचाये।
बहते नयनों से आंसू, याद कर उसमें नहाये।

बस नहीं कुछ चल रहा जग, रंग पल पल में बदलता।
बह रही लहरे यहाँ पर, कूल पर ना हाथ आता।
जप हरि मन आता चैना, कुछ पलों का जान नाता।
टूटते रिश्ते यहाँ पर, कूल पर ना हाथ आता।

कौन अपना है पराया, जा रही मन देख काया।
नयन में हरि को बसा ले, जाये मिल उसकी छाया।
हरि जपो जपते रहो मन, ना यहाँ पर और है धन।
बहे जा धारा उसी की, जप मिटे दुख मान ले मन।

342.

कितने बने मिटे क्या गिनती, छोड़ गणित कर हरि से विनती।
पार लगा दे मेरी नौका, फंसी भंवर में मेरी किस्ती।
जिसने लिया सहारा हरि, पत्थर भी तिर जाते जग में।
मिटते भय कर प्यार उसी से, बना लहर बहता सागर में।

हरि हरि जप मन किससे कहना, स्वप्निल दुनिया हरि में बहना।
बहती धारा रूके नहीं यह, संग तेरे सुमरण मन करना।
जप ले हरि दे ज्ञान वही मन, ज्ञान मिले जो करे वही तन।
मैं की हरपल होली जलती, कौन यहाँ तू हरि प्यारा बन।

हरि हरि जपो वही पथ देगा, दुख तेरे सारे हर लेगा।
नहीं सुने वह कौन सुनेगा, तन भी तेरा यहाँ मिटेगा।
हरि हरि जप मन नयन बसा ले, हरि की लीला शीश झुका ले।
कुछ पल का यह रैन बसेरा, हरि शाश्वत जप मन लय कर ले।

343.

दिल बता कैसे लगाये, दर्द को कैसे छिपाये?
बहती आंसू की गंगा, तू बता कैसे मनाये?
जानता न पथ तुम्हारा, ज्ञान का दे दो सहारा।
अंधी गलियों में भटकता, देखो मुझको मैं हारा।

पार करो मेरी नैया, तुही तो मेरा खिवैया।
डगमगाती नाथ है यह, बहती है मेरी अंखियां।
तुम ही तेा सर्जक मेरे, तुही दाता मैं भिखारी।
तुम न मुझसे रूठ जाना, शरण में ले लो मुरारी।

नयन झरते देख ले तू, प्यासा जल मुझे पिला दे।
तू न देखे कौन देखे, तम घना दीपक जला दे।
बीतेगी यह भी रैना, नयनों में मेरे बसना।
दिल नही लगता हमारा, चाह हरि तुम प्यार देना।

344.

जो बात मन में तेरे, जाने कोई नहीं।
छलके तेरा नूर है, पी पाते हम नहीं।
ले चल पकड़ हमको तू, चल पाये हम नहीं।
देखे जाती जिन्दगी, नहीं छोड़ना कहीं।

नयन में नीर तुम नहीं, हम भटके सब कहीं।
गुजरेगी कैसे रात, तुम बिन तो कुछ नहीं।
पायल बजे न मौन है, जानूं ना कौन है?
रोते नयन कहते है, यह ढलती शाम है।

जा कर ना आये कभी, रंग तेरा सब कहीं।
क्यों दर्द हमें दे रहा, प्यासे हैं हम मही।
तेरी करे है इंतजा, बढ़ हमको थाम लो।
बरसे मेरे नीर हैं, परीक्षा न और लो।

345.

हरि रूप हैं अनेको, हरि खेल चल रहा है।
कोई यहाँ रहा पी, कोई पिला रहा है।
मन जप ले तू हरिहर, पथ में लगे नहीं डर।
करो भरोसा उसका, बहो लहर तू बन कर।

दो दिन का है सुपना, माने ना मन उलझा।
इसे मनाये कैसे, जप मग सबको सूझा।
मन पी हरि की मदिरा, हर घूंट में वही हो।
भूलें जग की पीड़ा, हरि नयन में बसे हो।

हरि हरि जपो सहारा, तेरी रोती अंखियां।
उस बिन सुमन खिलेना, जप देगा वह छैया।
शाश्वत सदा वही है, खेले वह छलिया।
कठपुतली बन नाचे, मन पड़ उसके पैया।

346.

मन हरि जप, जपता जा जग में, और सहारे टूटे मग में।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, उसे बसा मन अपने दिल में।
कौन साथ किसके रहता है, यह जग तो बस इक धोखा है।
मन हरि जप ले शान्ति वही है, प्यासे प्राणों की हाला है।

जीवन है अनबूझ पहेली, समझ न आये अंखियां रोली।
तृष्णा हरपल नाच नचावे, जलती रहती इनकी होली।
दौड़े किसके पीछे पागल, लहरें हाथ न कोई आये।
लिये वासना अपनी अपनी, इस दरिया में बहती जाये।

बिखरे हुए यहाँ पर सुपने, मन हरि जप ले जग में चल ले।
हरि को भूले मिले न चैना, कितने जतन यहाँ पर कर ले।
सागर बहता बहो लहर बन, हरि सागर प्यारा इसका बन।
दो दिन का यह रैन बसेरा, सुख बरसे जायेगा सब छिन।

347.

क्षण भंगुर से प्रीति यहाँ क्या, जाये विछुड़ न पता यहाँ कब।
मन हरि जप शाश्वत वह ही है, धारा उसकी ले जाये रब।
आये कहाँ से जाये कहाँ, लहर बनो नाचे यह सागर।
सदा साथ विश्वास करो मन, जायेगी भर तेरी गागर।

दुख का दरिया यहाँ बह रहा, जप उसको मन सुख से जी लो।
हरि हरि बोलो हरि को जी लो, चैन मिलेगा अमृत पी लो।
स्वप्निल दुनिया रंग बदलती, जप ले मन तू प्यारे रब को।
सारे जग का वह ही स्वामी, प्रीति बढ़ा ले भूल जगत को।

जप हरि हरि सी ले जख्मों को, नयन बसा ले प्यारा वह ही।
जीवन नदिया बहती जाये, मिटते भय जाने सब वह ही।
उस बिन कोई नहीं खिवैया, यहाँ रो रही तेरी अंखियां।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, तपते दिल को देता छैया।

348.

जपते ही रहे तुझे हरपल, हरि थामों तुम मेरी बैयां।
न पता तुम्हारा मैं जानूं, मेरी रोती रहती अंखियाँ।
तू खेल खिलाये खेल रहा, दुख का दरिया है यहाँ बहा।
प्यासा मैं तेरी करूणा का, देखो ना नयना नीर बहा।

देना विवेक ज्ञानी तू ही, मेरा खेवट तो बस तू ही।
किस्ती को पार लगा देना, प्यासी अंखियां प्यारा तू ही।
बहता हूँ तेरी नदिया में, बस जा दिल में तुमको मानूं।
कठपुतली तेरी नाच रहा,मैं अबल नाथ कुछ ना जानूं।

सागर तू बहूँ लहर बनकर, छोड़ू न तुझे हरि मैं जपना।
मेरे नयनों में तुम बसना, पल भर को विलग नहीं होना।
सब भूलू इस दुनिया के गम, ले चल मेरा तू साहिल है।
आंसू से भीगी अंखियां है, बस प्यार मिले यह चाहत है।

349.

कब से बैठी दीप जलाये, बालम तुम ना मिलने आये।
विरह सहा ना जाता तेरा, क्यों मुझको हरपल तड़फाये?
बहते आंसू तू देखे ना, कैसे अपना प्यार जतायें?
ढल जायेगी जीवन संध्या, पर तुमको हम नहीं भुलाये।

याद तुम्हारी प्यारी लागें, अपना मुझे बना ले रसिया।
बहती मेरी आँख देख ले, छल कर ना मुझसे ओ छलिया।
जनम जनम से नाता तुझसे, कहाँ छोड़ छिप गया बता दे।
प्यार हमें मिल जाये तेरा, ऐसी मुझको राह दिखा दे।

बहती आंसू की गंगा है, चाहूँ इसमें बहती जाऊँ।
नहीं मिलो तुम मुझसे सजना, नाम तुम्हारा ले मिट जाऊँ।
नयनों में मेरे आंसू हैं, यादे ले कर मैं हूँ जीती।
तुम्ही बसे मेरी धड़कन में, कम ना करना मुझसे प्रीति।

350.

तेरे बालक हम प्रभु हैं, तुम कृपा रखना सदा।
चल न पाऊँ बिन सहारे, ना कभी होना जुदा।
घूमते अज्ञान में हम, ज्ञान का वरदान दो।
तम घना अनजान गलियाँ, पाऊँ तुझे साथ दो।

देखते तुझ ओर हम, बिखरा पड़ा गम यहाँ।
नीर बहते हैं नयन से, छिप गये हो तुम कहाँ।
मैं मनाऊँ प्यार पाऊँ, नयन में बसो मेरे।
बीत जायेगी उमरिया, चरण में पड़ू तेरे।

जिन्दगी की शाम आती, कैसे भेजूँ पाती।
न ठिकाना तेरा जानू, पार करो यह किस्ती।
करता पूजा तुम्हारी, नयन से अश्रु जारी।
तुम मुझे रख लो शरण में, छांव मिले तुम्हारी।

351.

यह जग तेरा है प्यारा, बहे नीर फिर क्यों खारा।
माने ना बैचेन हृदय, आ नयनों का तू प्यारा।
खोज रही मेरी अंखियां, नहीं छिपो मेरे रसिया।
तुम बिन सब सूना लागे, पड़ू नाथ तेरे पैंया।

दीन बन्धु करूणा सागर, मिलता प्यार भरे गागर।
एक सहारा तेरा ही, नीर गिर रहे है झर झर।
आ मोहन तुझे पुकारे, बनते निर्मोही हारे।
कैसे बीतेगी रैना, देखो हमें खड़े द्वारे।

ज्ञानी न भटका न जग में, नाच रहा नाच नचाया।
खता बता क्या है कह दे, तू सर्जक तेरी माया।
ढल रही शाम आ जा अब, तेरे बालक कन्हैया।
पार करो मेरी नैया, शरण तुम्हारी दे छैंया।

352.

हरि इतना बल मुझको देना, मेरी सांसों में तुम बहना।
पल भर भी नहीं भुलाऊँ मैं, मेरे नयनों में तुम बसना।
डगमग करती मेरी नौका, मैं संभल नहीं पाता हारा।
अंखियां यह रोती मेरी हैं, लीला तेरी अपरम्पारा।

मैं कहाँ जाऊँ जले यह दिल, क्यों नाथ हुए मुझसे ओझल?
दे प्यार मुरारी मैं चाहूँ, इन नयनों से गिरता है जल।
डगमग डगमग नौका होती, यह देख देख अंखियां रोती।
कैसे मिलेगा प्यार तेरा, अरमानों की होली जलती।

अपनी बन्शी को मुझे सुना, बहता है आंखो से झरना।
सारे जग के तुम रखबाले, खोजें तुमको प्यासे नयना।
दे प्यार मुझे ले चल हारे, गिरता इन आंखों से पानी।
मेरे दाता तुम ही दानी, प्यासा मैं पिला मुझे पानी।

353.

मन हरि जप चलता जा जग में, नहीं यहाँ पर कोई मंजिल।
दो दिन का यह रैन बसेरा, समझ यहाँ ले दुनिया स्वप्निल।
चिन्ता छूटे मन हरि जप ले, सबकी सुन ले भूल नही रब।
जैसी होनी हिय में उपजे, अपनी अपनी कहें यहाँ सब।

किससे करनी यहाँ शिकायत, लिये वासना अपनी घूमें।
हरि के रूप हरी ही नाचे, ज्ञान वही दे जप मन झूमे।
वह सागर तू बना लहर है, जाये कहाँ न तुझे खबर है।
जपता जा आयेगा चैना, जप ले वह तो सदा सत्य है।

हरि हरि जप हरि ही है प्यारा, बहती है आंसू की धारा।
जो भी जपता हरि को जग में, मिटते दुख ले जाती धारा।
सबका सर्जक जान वही मन, जप कट जाते सारे बन्धन।
कर विश्वास बसा ले दिल में, जप ले हरि को वह सुखनन्दन।

354.

ना जानूं कुछ अंखियां रोई, बन ना मुझसे तू निर्मोही।
टूटी वीणा ले मैं फिरता, उठ जायें स्वर पथ दे मोही।
करो कृपा हम बालक तेरे, अंखियां मेरी आंसू गेरे।
अगम अगोचर पार न तेरा, प्राण पुकारें तुम हो मेरे।

चल चल गिरूँ थाम तुम लेना, बल ना मुझमें बल तुम देना।
लीला जानी किसने तेरी, रूकता नहीं नयन का बहना।
पार लगा दे मेरी नौका, दिल मेरा करता है धक धक।
घूम रहा मैं भ्रमित हुआ हूँ, पहुँचूंगा कैसे चरणों तक।

दीनबबन्धु करूणा के सागर, क्यों फिर मेरी खाली गागर।
मुझको को रख लो नाथ शरण में, नीर गिर रहे मेरे झर झर।
द्वार खड़ा हूँ प्यार मुझे दे, रूठ न मुझसे छैयां तू दे।
बहे नीर यदि नही मिलो तुम, इस नदिया में बह जाने दे।

355.

मन हरि भजन करो सुख पाओ, जीवन के सब ताप मिटाओ।
बहती आंसू की गंगा जो, उससे अपना सुमन खिलाओ।
नहीं किनारा बहता जीवन, चैन नहीं यहाँ हरि भजन बिन।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, ले जायेगा वह साहिल बन।

स्वप्निल दुनिया छलता छलिया, कौन यहाँ मैं रोती अंखियां।
कठपुतली उसकी बन नाचे, लाये ले जाये वह रसिया।
बनती मिटती लहर यहाँ है, खो जाती सब गई कहाँ है?
नयन बसा ले मन हरि सूरति, सारा उसका खेल यहाँ है।

छोड़ यहाँ मैं जप ले हरि मन, प्रियतम प्यारा वह सांचा धन।
अन्तिम पल तक साथ निभावे, खो जाता फिर सारा क्रन्दन।
हरि हरि जप चलता जा जग में, कठिन राह साथी वह मग में।
जिसने उसका दामन पकड़ा, मिट जाते भय रहता संग में।

356.

सोचता मन क्या यहाँ है, जान ले उसका जहाँ है।
नाचे कठपुतली बन कर, ना पता जाना कहाँ है?
हरि जपो मन स्वप्न दुनिया, रोती हैं तेरी अंखियाँ।
उस बिना ना चैन आये, छलता है हमको छलिया।

देखते ही देखते सब, झड़ सूखते पत्ते यहाँ।
क्या पकड़ना है समझ ले, मन जान हरि का है जहाँ।
जप हरि कट जाये रैना, बन लहर सागर में बहना।
कौन अपना है पराया, हरि सुमरन करते रहना।

ना शिकायत कर किसी से, रूप हरि धर धर के आवे।
मन पकड़ हरि के चरण को, बीत काली रात जावे।
जप सहारा मन वही है, ना ठिका उस बिन कहीं है।
उसकी मर्जी खेले वह, कौन तू जाना वहीं है।

कौन जो जपता है हरि को, नयनों के आंसू तो देखो।
दर्प जो दिल में उफनता, पीड़ उसकी ध्यान देखो।
स्वप्न सा सारा जगत है, जगत में मन समझ चलना।
जप हरि बहते है नयना, याद करो आये चैना।

357.

मिटता तन मन करो हरि भजन, सोचे क्या यह दुनिया स्वप्निल।
तृष्णा के चंगुल में फंसते, बहते है नीर यहाँ हरपल।
पल दो पल के सब याराने, मिटते जाते सब अफसाने।
प्राणों की है प्यास यही, हरि प्यारा सो ना दीवाने।

कल क्या हो किसने यह जाना, सब हरि की ही यह माया है।
पतवार सौंप हरि हाथों में, ले जाती हरि की धारा है।
पग पग पर कांटे विछे हुए, चल चल गिरते दिल यहाँ जले।
प्रियतम प्यारा हरि को जप ले, तेरी किस्ती को लिये चले।

कितने ही रूप लिये नाचे, तेरा क्या मन तू क्या सोचे।
कठपुतली हरि की नाच रहे, मर्जी डोरी जब भी खीचे।
बन लहर यहाँ सागर वह ही, सुमरन कर ले संग रहता है।
पथ में बस वही सहारा है, जप ले प्राणों का प्यारा है।

358.

गा गा तुझे रिझाऊँ मोहन, आंखे खोलो जाता जीवन।
तेरे बिन लगता नीरस सब, कहाँ छिपे ढलता है यह दिन।
नयनों से है नीर बह रहे, सुलझा दो उलझे जीवन को।
तृष्णा हरपल नाच नचाये, तम फैला दे दो प्रकाश को।

तुम बिना खोजूँ कहाँ पानी, प्यासे प्राण पिला दे पानी।
जनम जनम का दास तुम्हारा, ढलती जा रही जिन्दगानी।
सकल सृष्टि के स्वामी हो तुम, विनय यहाँ अब ना तड़फाओ।
नयनों से है नीर बह रहे, आ कर मेरी प्यास बुझाओ।

फूल तुम्हारी बगिया के हम, जाती नहीं नयन की लाली।
अपनी शरण मुझे तुम रख लो, प्यार मिले लग जाती लाली।
मेरे प्राण पुकारे तुमको, मेरे नयनों में बस जाओ।
खोलूँ नहीं ढाक उन्हें लूं, तरसा बहुत नहीं तरसाओ।

359.

गिरते आँसू बैचेन हुई, किस्मत क्या बनी न तुझे मिली।
माना मैं अबल, तुम तो सबल, दो प्यार हमें यह खिले कली।
ढूंढू मैं कहाँ तेरा जहाँ, छिप गये कह दे जाऊँ कहाँ?
मेरे प्राणों का तुही दिया, ना पता कहाँ हो शाम यहाँ।

नयनों में नीर लिये फिरती, नभ के तारों को मैं गिनती।
रसिया रस से भर दे गागर, यादें तेरी ले मैं रोती।
सूना सूना सा सब लागे, तेरे बिन पायल ना बाजे।
कर माफ यदि है खता कोई, रोंया रोंया तुमको पूजे।

आ प्यार मुझे दे दे अपना, सुख से बीते फिर यह सुपना।
मैं तड़फ रही तू मिले नही, नयनों का ना रूकता बहना।
ले दर्द यहाँ फिरते है हम, न मिटे मेरे इस दिल का गम।
तू आँख उठा कर देख मुझे, आंखें मेरी कितनी है नम।

360.

जिन्दगी की शाम जाती, कैसे भेजूँ मैं पाती?
न ठिकाना तेरा जानूं, आंख यह दिन रात रोती।
ले मुझे अपनी शरण में, चैन पल भर भी न आया।
देखते ही देखते सब, मिटता है तेरी माया।

इस जग का तू ही पालक, रोते क्यों तेरे बालक।
प्यार अपना दो मुझे प्रभु, देखे पथ नयन एक टक।
जैसी मर्जी तुम्हारी, जोर अपना क्या यहाँ है?
बहते नयनों से आंसू, देख ले तेरा जहाँ है।

तुम बिना नीरस लगे सब, बहता है आंसू खारा।
तुम ही तो मेरे सर्जक, चाहते तेरा सहारा।
न बनो निर्मोही इतने, प्यार दो दिन रात जलती।
जायेगी ढल यह संध्या, चाह तेरे चरण पाती।

361.

ना जान सके पहचान सके, हरि अपनी कृपा सदा रखना।
जग की अनजानी गलियों में, बहते हैं यह मेरे नयना।
बालक तेरे दे ज्ञान हमें, तम फैला उजियारा कर दे।
न सुने कोई हम कहें किसे, जीवनदाता हमको पथ दे।

हरि प्यार मिले यह कटे सफर, बैचेन दिल हुआ है भारी।
बस जाओ मेरे नयनों में, ना रूके नीर मेरे जारी।
हरि प्रीति बढ़े मेला दो दिन, तन भी जायेगा यह सब छिन।
प्रभु बनो नहीं तुम निर्मोही, कटती है राते तारे गिन।

मुँह कभी फेरना ना मुझसे, प्रभु फूल तुम्हारी बगिया के।
इन सांसों में बस तुम्ही बहो, भूलूं गम सारी दुनिया के।
हरि प्रीति बढ़े यह नयन झरे, प्यारे आंसू यह लगते है।
बह जाऊँ मैं इस गंगा में, विनती तुमसे हरि करते है।

362.

तुम कृपा रखना सदा हरि, ज्ञान का दीपक जलाना।
तम यहाँ बिखरा पड़ा है, ना कभी नजरें चुराना।
देखते तेरी तरफ हम, नाथ जानों है अबल हम।
दे हमें इतना तो बल, तेरी रजा में हो न गम।

नीर नयनों से निकलते, ढूंढते हम तुझे फिरते।
न ठिकाना तेरा जानूं, देखते नभ हाथ मलते।
क्या शिकायत है किसी से, छिप गया तू भी कहीं है।
बहती आंसू की गंगा, नाथ दिल बस में नहीं है।

लाज को हरि राखना तुम, दास है हम तो तुम्हारे।
प्रेम मिल जाये तुम्हारा, न बहेगे आंसू खारे।
बस जा नयनो में मेरे, तुम बिना कुछ भी नहीं हम।
प्राण प्यासे जल पिला दे, देख ले यह आंख है नम।

363.

किसने पूछा मैं क्यों आया, फिर दिया मुझे जग का साया।
नयनों से नीर बहे मेरे, जग देख देख कर हर्षाया।
सुर हैं अनेक सबके सुपने, न साथ कोई कहते अपने।
छिप गये नाथ तुम कहें किसे, गलती क्या प्यार किया हमने।

हरि तुझे पुकारे हम हरपल, तू ही तो है मेरा सम्बल।
तुम बिन रोयें मेरी अंखियां, तुम आन मिलो ना मुझमें बल।
तृष्णा भी रंग भरे हरपल, मन को करती रहती चंचल।
ना चैन मिले तुम बिन छलिया, गिरता रहता नयनों से जल।

हरि जला प्रेम की बाती तू, मैं बनूँ पतंगा पाऊँ तू।
मैं हार गया हरि नयन बसो, तेरी दुनिया को जाने तू।
हरि बना मुझे अपना सेवक, दे दे मुझको अपनी छाया।
इन प्राणों की हो प्यास तुम्ही, मैं शरणा तेरी हरि आया।

364.

हरि ओम जपो मन ओम जपो, मन जप उसको दुख दूर करो।
दुनिया यह रंग बदलती है, ना पकड़ इसे हरि प्रीति करो।
सब रूप हरी के खेल करे, जप उसे नहीं मन भूल करो।
नहीं उलझ अनेको झंझावत, मन रूप एक हरि चयन करो।

हरि हरि गा हरि को नयन बसा, हरि लीला को तुम नमन करो।
यह रैन बसेरा दो दिन का, शाश्वत हरि उससे प्रेम करो।
उस बिन न कोई ठिकाना है, ब्रह्माण्ड उसी का सारा है।
मैं मिटे होय निर्मल आंखें, जप ले मन वही सहारा है।

हरि प्रीति बढ़े हिय सुमन खिले, मृग तृष्णा में उलझा ना मन।
दी चोंच वही चुग्गा देगा, बिन कृपा मिले ना करो जतन।
हरि जपो अन्त तक वह साथी, ना और यहाँ कोई भी धन।
हरि कृपा मिले तो ज्ञान जगे, नैया ले जाता खेवट बन।

365.

को हम को हम को हम को हम, हरि हर हरि हर हरि हर हरि हर।
जीवन जीवन जीवन जीवन, तू ही सब मैं तेरा चाकर।
हरि लाज रखो मांगू तुमसे, ना तुझे कहूँ तो कहूँ किससे?
सर्जक तुम ही पालक तुम ही, इन नयनों से आंसू बरसे।

तेरा हरि प्यार मुझे दे दे, कट जायेगी फिर यह रैना।
चरणों की भक्ति मुझे दे दे, यह बरस रहे मेरे नयना।
यह इन्द्र धनुष सारी दुनिया, छलता रहता हरपल छलिया।
अज्ञानी मैं बालक तेरा, अब सता नहीं पड़ता पैंया।

ले चल मुझको तू दीवाने, गिरता हरपल मैं अनजाने।
तुम थामो अब मेरी बैया, बरसे नयना क्यों ना माने।
तेरे हाथों जीवन धागा, तू नचा मजा अपना ले ले।
जो बहे नयन से आंसू हैं, विनती मेरी उनको लख ले।

366.

नित नित देखूं रूप तुम्हारा, चाकर मुझको रख ले छलिया।
जीवन तेरा तू ही पालक, तेरे बिन रोवें यह अंखियां।
सुनूँ बांसुरी झूमे तन मन, बरस रही यह मेरी अंखिया।
मुझे डरावें काली राते, बना सेवक पडू. मैं पैया।

सुन्दर छैला सुन्दर दुनिया, कृपा मिले बरसे रस रसिया।
दास बना लो मुझको अपना, उठे गीत बरसे यह अंखियां।
खोजूँ पिव पिव कहाँ छिपा तू, बदले रूप तड़फती अंखियां।
अज्ञानी कुछ भी ना जानं, मांगू प्यार मुझे दे रसिया।

बस जाओ मेरे नयनों में, तृष्णा से अब मुझे हटाओ।
दास तुम्हारा जनम जनम का, ना मुझसे अब आंख चुराओ।
ज्ञान हमें दो करता पूजा, तेरे मन को मैं भा जाऊँ।
तुम बिन सारा जीवन नीरस, किसको अपनी पीड़ दिखाऊँ?

367.

सोचता तू क्या यहाँ मन, जाने न होंगे कहाँ कल?
इतना सोचे क्या पावे, व्यर्थ में जलता यहाँ दिल।
हरि जपो मन शान्ति आवे, तम विचारों का हटावे।
नयना लड़ जाये हरि से, फिर नहीं कुछ और भावे।

जप हरि करूणा का सागर, जाये भर तेरी गागर।
जगत का वह ही रचैया, जप उसे अंखियां रही झर।
हरि बिना बैचेन यह दिल, जान ले मन है यही पथ।
जल रही दिन रात होली, शान्ति का मन है यही पथ।

हरि जपो जपते रहो मन, ढल रहा है देख ले दिन।
वही शाश्वत है यहाँ पर, पल मिले कुछ जा रहे छिन।
हरि जप आयेगा चैना, रोये ना तेरे नयना।
सौंप दे पतवार उसको, नाम ले उसका ही बहना।

368.

चल अकेला चल यहाँ तू, भूल ना हरि मन यहाँ तू।
प्रीति हरि से तू बढ़ा ले, दन्श मिट जाये समझ तू।
जग उसी का वह चलाये, जैसा उसके मन भाये।
कौन तू पागल समझ ले, अश्रु कितने ही गिराये।

जपो हरि का नाम प्यारा, तज मैं ले जाये धारा।
कौन किसका है यहाँ पर, सुख मिले हरि ले सहारा।
प्रीति जग से क्या करे मन, बह रहे सब अपनी ले धुन।
जिसने हरी नाम गाया, खिले दिल का फिर सुमन मन।

तप यह दुख हँस के सह ले, विष मिले उसे हँस के पी ले।
बस यहाँ कुछ भी नहीं है, स्वप्न सा जग इसे जी ले।
नाचे कठपुतली उसकी, कर सुरति हरि हाथ धागा।
दिल दिखा दे उसे अपना, मिलती कृपा भाग्य जागा।

369.

बोल मत चुपचाप चल ले, प्यार दे पर मांग तज दे।
मान दुख ना स्वप्न दुनिया, हरि चरण में शीश रख दे।
कौन अपना है पराया, सभी जगह हरि ही छाया।
लड़ स्वयं से क्यों बिलखता, देखो जायेगी काया।

नयन आंसू बस नहीं कुछ, नाम ले हरि का करो कुछ।
दे उसे पतवार अपनी, दिल में आये चैना कुछ।
झुको यहाँ झुकना सब कुछ, क्या अकड़ मिटता सभी कुछ।
जा रही यह जिन्दगी है, जप हरि सुख पाये गा कुछ।

खेल जैसे हरि खिलाये, न कभी पर दिल से जाये।
कर उसे स्वीकार स्वामी, पथ वही तुझको दिखाये।
पीड़ दिल में नयन आंसू, रूठे न विनती करो मन।
मन सदा उससे झरे रस, प्राण प्यासे ना सता मन।

370.

गा ले कुछ गीत मिलन के तू, अंखियां रोई ना समझे तू।
कैसे समझाऊँ मैं बालम, जब बना हुआ हरजाई तू।
यादें तेरी लेकर जीती, आंसू की घूंटों को पीती।
बन गया हाय क्यो निर्मोही, देखे ना कैसे मैं जीती।

नाचूं झम झम बरसे सावन, ऐसा तू रास रचा प्यारे।
सब दिशा कहे संदेश यही, विछुड़े प्रेमी बहिया गेरे।
तू नींद चुराई खेल करे, पायल रूठी सजना तुम बिन।
कैसे होवेगा अब संगम, अंखियां मेरी बरसे निशदिन।

दिल का ना दर्द सहा जाता, रोते रोते ना मैं थकता।
पी पी अपने पी को रटता, प्यासा पंछी नभ मैं उड़ता।
प्रभु नयन बसो ले चलो कहीं, नयनों से पानी है गिरता।
मैं जनम जनम की दासी हूँ, चाहूँ आ जा अब तो मिलता।

371.

गा गीत उसी के बहता जा, मर्जी उसकी ले चले जहाँ।
कितनी योनी जग में घूमे, सबका अपना है यहाँ जहाँ।
लाये ले जाये वह जग में, ना जान सके क्या है घट में।
कुछ भी तो नहीं यहाँ बस में, पड़ जा मन हरि के चरणों में।

झुक करो विनय सुख मिलता, बिन उसके यह दिल जलता है।
सुमरन कर हरि का कष्ट मिटे, नयनों से पानी बहता है।
हरि जपो तुझे दे पथ वह ही, भूला उसको आंखें रोई।
छल करे मगर पथ एक यही, अमृत बरसे तू क्यों सोई।

कितना खोजो ना खोज सके, पाया उसने मिट हरी जपे।
बहती आंसू की गंगा में, हरि जपे न बोले कहाँ छिपे?
मिटना हरि की ही यादों में, क्या पाना है क्या खोना है।
विनती कर दास बना ले वह, सुख हमने बस यह जाना है।

372.

यह नीर गिरे इनको लख ले, मैं गीत लिखूं रस को भर दे।
तेरी हरि चाहूँ प्रीति सदा, ना भूल मुझे छैया दे दे।
मेरे प्राणों में तुम्ही बसे, रोआं रोआ हरि तुझे जपे।
मैं दास तुम्हारा अपना लो, यह कटे न रतिया कहाँ छिपे?

दुर्गम पथ फैला अन्धकार, ना जाने बतियां होगी कब?
ना जले मिटन मेरे हिय की, कैसे समझाऊँ यह दिल अब।
प्यारा तू तुझसे प्यार करूँ, बहती किस्ती न देख डरूँ।
बस जाओ मेरे नयनों में, सब कछ भूलूं मैं तुझे बरूँ।

अंखियां रोती ना मुझको तज, जीवन तेरा तू ही मालिक।
अज्ञानी पर बालक तेरा, हरि बना मुझे अपना सेवक।
दिन आता है ढल जाता है, न पता तुम्हारा मिलता है।
प्रियतम तू प्रीति जगा इतनी, जल जाये पतंगा आता है।

373.

सोचता मन क्या क्या है, जा रहा यह कारवां है।
आज हँसता जो यहाँ पर, कल न जाने वह कहाँ है?
नाम जप मन हो सुगम पथ, राह में विषधर अनेको।
हरी जिनके मन समाये, ना डसेंगे दन्श उनको।

नाम जप वह है अमी रस, ना सुरति पीकर अघाती।
हरि मदिरा जिसने पीली, प्यारी गंगा नयन बहती।
हरि जपो सांचा यही धन, जाता जायेगा तन छिन।
यह बदलती रंग दुनिया, प्रीति किससे है यहाँ मन।

हरि जप ले जाये तुमको, वह करेगा पार किस्ती।
जगत पालक वह खिवैया, भूल उसको आंख रोती।
हरि जप स्वप्निल है दुनिया, जपो उसे ले तू खुशियाँ।
दो दिनो का है बसेरा, न बिलखते बीते घड़ियाँ।

374.

तू नहीं संग ना भरे रंग, कैसे कह प्यास बुझाऊ मैं?
जल में रहकर भी मैं प्यासी, नयनों से नीर गिराऊँ मैं।
दो प्यार उठे हरि स्वर मेरे, सुन लो इतनी हरि तुम मानो।
अंखियां रोती रहती तुम बिन, घट घट की तुम सब की जानो।

ना छोड़ भंवर में डर लागे, तेरा ही एक सहारा है।
इस जीवन के सर्जक तुम ही, न गुनाह प्यार जो चाहा है।
यह नीर बहें खोजे तुमको, जल थल नभ में तुम छिपे हुये।
ले दर्द विचरता दिल मेरा, ना छिपो कहाँ पर चले गये।

तेरी हरि कृपा सदा चाहूँ, गीतो को मैं तेरे गाऊँ।
जीवन जीना जो कुछ दीन्हा, सन्तोष करूँ तुम को पाऊँ।
तुम बिन चैन न आवे दिल को, अंखियां मेरी रिमझिम बरसे।
जनम जनम से प्यासे नयना, दर्शन को हरि तेरे तरसे।

375.

लगता ही ना दिल किसे कहे, जब बालम मुझसे रूठ गया।
ना रिझा सके अंखियां बरसे, मुझ पर कैसा यह जुल्म हुआ।
ले याद तुम्हारी रेाते है, निर्मोही आंखे फेरे है।
क्या लेगा निर्मोही बन कर, ना भूल सदा हम तेरे है।

अपना तू प्यार मुझे दे दे, इन सांसों का तू मालिक है।
छल कर ना मुझसे तू छलिया, बहती नयनों से धारा है।
नयनों में आंसू दिल में गम, पाऊँगा कैसे ना है दम।
जग की अनजानी है गलियां, ना पता कहाँ जायेंगे हम।

मेरे खेवट ना छोड़ मुझे, डूबी जाती मेरी नैया।
इसको अब पार लगा दे तू, बहती मेरी देखो अंखियां।
स्वीकार करो मेरे आंसू, ना दर्द सहा जाता हारे।
मेरी विनती स्वीकार करो, कर रहा प्रतीक्षा मैं द्वारे।

376.

हरि ओम जपो मन उसे रटो, मेला दो दिन का नहीं तजो।
उस घर जाना उसकी दुनिया, कर याद उसे दुख सभी तजो।
प्रियतम प्यारा तू क्यों हारा, सुमरन हरपल मन सदा भजो।
स्वप्निल दुनिया क्या पकड़ यहाँ, सुख पाये जिय मन सदा भजो।

बन लहर बहो नदिया उसकी, जहाँ जायेगा चले उसकी।
पतवार सौप दे तू अपनी, अपना क्या सब मर्जी उसकी।
हरि हरि गाओ यह कटे सफर, नयनो से नीर गिरे झर झर।
नयनों में जब हरि बस जावे, ना दन्श सतावे मिटते डर।

तपती धरती जपो नाम हरि, सुख शान्ति प्रदाता सदा वही।
मन रोम रेाम हरि हरि गाये, तृष्णा छूटे कर जतन यही।
जप ले मन हरि धन एक यही, वह नचा रहा हम नाच रहे।
वह सकल सृष्टि का मालिक है, मन जपो उसे चित शान्त रहे।

377.

अपनी हरि कृपा सदा रखना, बहते हैं मेरे दो नयना।
तू पार लगा दे नैया को, मैं पडू. चरण में यह कहना।
न दीखे किनारा मैं हारा, ले शरण मुझे बहती धारा।
मेरा पालक सर्जक तू ही, दे प्यार नीर ना हो खारा।

क्या गुनाह हमारा जाने न, तेरा हम प्यार सदा चाहें।
नयनों से बहते आंसू हैं, बिन कृपा नहीं मिलती राहे।
याचक दर का ना लौटाना, थक हारा दर पर मैं आया।
नयनों में मेरे आंसू है, हरि रूला रही तेरी माया।

क्या चाहत ले हम जीते है, सुपने हरपल हम बुनते हैं।
दो दिन का रैन बसेरा यह, टूटे फिर सिर को धुनते है।
मेरे नयनों में बस जाओ, तृष्णा छूटे तुम छा जाओ।
प्यासे प्राणों की प्यास तुही, अमृत बूंदों को बरसाओ।

378.

मिट रहा सब देख ले मन, क्या यहाँ सुपने सजाता।
भूल कर हरि की डगर को, दुख उठाता राख पाता।
प्रीति हरि से मन बढ़ा ले, जाते कट सारे संकट।
इस जग का वही स्वामी, जपे जा मिट जाते झंझट।

एक वह ही है सहारा, गीत उसके तू उठा मन।
नाव होगी पार तेरी, न जलेगा जिय तेरा मन।
पथ में मन संग वहीं है, जप उसे विश्वास कर ले।
साथ तेरे वह सदा है, भूल ना मन याद कर ले।

ना शिकायत कर किसी से, ले रहे निज वासना सब।
मन पकड़ हरि के चरण को, वह मदारी खेलता सब।
हरि जपो जपते रहो मन, जायेगी मिट यह रैना।
ढलता दिन कुछ है बाकी, प्यार से जप दुख न रहना।

379.

प्रीति अपनी हरि बढ़ा दे, तम गहन इसको मिटा दे।
इस जग का तू ही मालिक, मैं भटकता पथ दिखा दे।
लाज रखना तुम मुरारी, बनूँ मैं बंशी तुम्हारी।
जो हरी स्वर तू उठाये, डूबूं मैं उसमें सारी।

चरण पाऊँ मैं तुम्हारे, बह रही है नयन धारा।
सुरति न विसरे तुम्हारी, एक बस तेरा सहारा।
तुम करो स्वीकार आंसू, सूख जाये न यह मांगू।
ले चलो इसमें बहाकर, एक तेरा प्यार मांगू।

तुम बिना मैं चल ना पाऊँ, मैं नहीं तुमको भुलाऊँ।
ना छिपो दे दर्द छलिया, कह मुझे कैसे मनाऊँ?
फूल तेरे बाग के हम, न बचा नजरें तू माली।
प्यार अपना तू हमें दे, जाये खिल मेरी डाली।

380.

पाने को कुछ भी नहीं यहाँ, ना भूख मिटे तन मिटे यहाँ।
कैसी दुनिया तेरी हरि हर, नयनों से बहते नीर यहाँ।
अपने चरणों में तू रख ले, व्याकुल मन प्रीति मुझे दे दे।
दुख के बादल फट जायेगे, हरि अपना प्यार मुझे दे दे।

जप ओम ओम मन शान्ति यही, नौका तेरी फिर रूके नहीं।
पतवार सौंप दे मन उसको, खेवट तेरा सब जगह वही।
बरसे नयना हरि को जपना, बस एक सहारा है वह ही।
जायेगा छोड़ कहाँ उसको, कण कण में व्यापक है वह ही।

मन जप ले हरि को चैन वही, दुख का दरिया जग में बहता।
जिसके दिल में हरि बस जाता, मिटते दुख हरि सुमरन करता।
अन्तिम पल तक जप ले हरि मन, ना और किनारा कोई है।
बन लहर बहो सागर वह ही, फिर लगे साथ सब वह ही है।

381.

ज्ञानी बने फिरे इस जग में, ज्ञानी वही जान ले तू मन।
अज्ञानी बन कर ले पूजा, ले जायेगा वह ज्ञानी बन।
हरि हरि जप तू नही यहाँ वह, कुछ पल सांसे जायेगी वह।
बहे नयन से आंसू तेरे , उसे चढ़ा दे सब कुछ है वह।

हरि हरि जप मन चैन मिलेगा, किस्ती तेरी लिये चलेगा।
जप ले मन पथ सुगम बनेगा, तेरे सब दुख वही हरेगा।
मन कठपुतली उसकी बन जा, समझ इशारे तू तो कुछ ना।
स्वप्निल दुनिया क्यों भरमाया, जप हरि उस बिन कष्ट मिटे ना।

हरि हरि जपो न भूलो पल भर, अखियां झरती रहती झर झर।
जैसा राखे मर्जी उसकी, उस बिन मिटता कभी नहीं डर।
सुमिरन कर इस जग में चल ले, तू ना कुछ बस इतना कह दे।
नीर बहें हरि चरण चढ़ा दे, कृपा मिले वह ही छैंया दे।

382.

हरि हरि बोलो नयना खोलो, प्यासे प्राण हरी को जी लो।
बरसे रस मन सुन ले अनहद, तज मैं को मन हरि को पा लो।
हरि बिन सुख ना है इस जग में, पल पल रंग बदलते अपने।
क्यों दुख पावे आस लगावे, छोड़ो हरि पर मिटते सुपने।

हरि हरि जप मन रैन बसेरा, छिपा उसी में सदा सुबेरा।
खेले पल पल रूप बदल कर, जीते वह ही वह ही हारा।
लीला उसकी खेल खिलावे, कभी रूलावे कभी हंसावे।
हरि बिन पीड़ न दिल की जावे, जप उसको मन चैना आवे।

शाश्वत वह ही सर्जक वह ही, नयन बसा ले सब कुछ वह ही।
बहे यहाँ जा लहर बना तू, जाने मैं ना सब कुछ वह ही।
कुछ पल मेला जप ले छैला, क्यों मन तू करता है मैला।
आना जाना मर्जी उसकी, मिट जा मन सब उसका खेला।

383.

पा सके ना हरि तुझे हम, जी रहे हैं क्यों यहाँ हम।
दास हूँ मैं तो तुम्हारा, शरण में रख लो मिटे गम।
जगत की अनजान गलियां, तुम छिपो न पकड़ो बैयां।
ले चलो दीखे न कुछ भी, रोती है मेरी अंखियां।

सांसे क्यों लेता जीवन, तुम बिना कुछ भी न मोहन।
बांसुरी अपनी सुना दो, मगन होवें प्राण सुन धुन।
फिर रहा हूँ मैं भटकता, दीखे न कोई किनारा।
प्यासी दर्शन को अंखियां, नाथ तुम दे दो सहारा।

प्यार तेरा चाहता मैं, भाग्य के मेरे विधाता।
जल पिला फिरूँ मैं प्यासा, सृष्टि के तुम ही रचियता।
गीत गाऊँ हरी तेरे, बीतेगी काली रैना।
बहते नयनों से आँसू, विनय इतनी देख लेना।

384.

ले चल मुझको कन्हैया, नयन से है नीर बहता।
प्यार पाऊँ मैं तुम्हारा, दर तुम्हारे बैठ जपता।
जी नही लगता हमारा, तुम बिना मैं नाथ हारा।
मैं कहाँ जाऊँ बता दो, एक बस तेरा सहारा।

ज्ञानी मैं न हूँ अबल हरि, थामों बहियां मेरी हरि।
नयन से आंसू बहे जेा, चाहता धोयें चरण हरि।
ढल रहा दिन रात आती, मैं जला पाया न बाती।
माफ कर देना मुझे तुम, दे सका न तुमको पाती।

शीश मैं रक्खूं चरण में, राख ले मुझको शरण में।
मिट रही सारी कहानी, देख लूं कुछ हो मगन मैं।
हरि जपू मैं करूं पूजा, तुम बिना ना और दूजा।
सांस तेरे गीत गाये, नयनों में मेरे बस जा।

385.

हरि हरि गाऊँ प्यार बढ़ाऊँ, अबल नाथ मैं गिर गिर जाऊँ।
मेरे स्वामी रूठ कभी ना, तुम बिन कृपा संभल न पाऊँ।
इन आंखों से बहता पानी, अपना प्यार हमें दे दानी।
अपना मुझे बना ले सेवक, बीते सुख से यह जिंदगानी।

तुम बिन चैन न आवे दिल को, पाये तुमको पता न हमको।
बहते नयना करे प्रतीक्षा, गुण कुछ भी ना तरसे तुमको।
बालक तेरा दूर न करना, शरण मुझे तुम अपनी रखना।
चल कर गिरूँ नाथ मैं पथ पर, थाम प्यार से मुझको लेना।

प्रीति तुम्हारी बढ़ती जाये, नहीं रूके नयनो का पानी।
इस मेले में लाज राखना, मिटती जाती सभी कहानी।
कठपुतली तेरी मैं नाचूं, मैं हूँ कौन यहाँ जो जाचूं।
मैं को मिटा रजा सब तेरी, मर्जी तेरी मैं क्या सोचूं।

386.

बने मिटे सब शौक यहाँ पर, हरि बिन अंखियां रोई झर झर।
सांचा धन हरि मन तू भज ले, उसे बिन शान्ति नहीं पथ दूभर।
हरि हरि बोलो हरि के जी लो, स्वप्निल दुनिया मन समझा लो।
अपना कौन पराया जग में, खेल खिलाये खेल खेल लो।

हरि हरि गा मन बन ना पागल, रैन बसेरा दो दिन का है।
पता नहीं जाये कित नौका, खेवन हार छिपा बैठा है।
जपता जा मन याद उसे कर, सुखदायक वह मंगल कारी।
पीड़ा तेरी सभी हरेगा, जपते ऋषि मुनि सब नर नारी।

बहें नयन से आंसू तेरे, पल पल रंग बदलती दुनिया।
चरण चढ़ा हरि आवे चैना, किससे शिकवा देखे छलिया।
हरि हरि गा मन प्यारा वह ही, जो भी भूला रोया वह ही।
दे पतवार उसी के हाथों, लिये चले डर ना सब वह ही।

387.

ऐसा कोई गीत सुना दो, मुरझाया जो कमल खिला दो।
अन्तर्यामी मेरे स्वामी, नैया को हरि पार लगा दो।
चल चल गिरूँ नहीं कुछ दीखे, नीर नयन से झर झर बरसे।
अगम अगोचर पार न तेरा, प्राण प्यार को हरपल तरसे।

जीवनदाता मेरे पालक, अंखियां रोये देखूं इक टक।
मिलो नहीं बहता यह पानी, स्वीकारो यह पहुंचे तुम तक।
अज्ञानी मैं दास तुम्हारा, शरण राख लो मैं तो हारा।
वीणा रूठी स्वर ना बजते, बजाओ तुम तेरा सहारा।

मैं ना कुछ सब कुछ तुम ही हो, लीला जांनू नहीं तुम्हारी।
फंसा भंवर में तुझे पुकारूँ, सुन लो मेरे कृष्ण मुरारी।
तेरा बालक मुंह न फेरना, देख मुझे ले बहते नयना।
अज्ञानी हूँ ज्ञान मुझे दो, मेरे इस दिल में तुम रहना।

388.

स्वप्न दुनिया खेल हरि का, करे शिकायत क्या तू मन।
भाग्य जैसा भी बनाया, जी ले उसी के साथ मन।
जपो हरि दे ज्ञान वह ही, दुख हरे दे शान्ति हमको।
नाचे कठपुतली उसकी, बस यहाँ क्या देख जग को?

घूमें कितनी ही योनी, भाग्य लेकर वह स्वयं का।
क्या शिकायत मन करे तू, मैं हटा सब खेल हरि का।
हरि जपो मन हरि जपो मन, जान ले सांचा वही धन।
साथ छूटे जा रहे सब, पकड़ो मन हरि का दामन।

हरि पुकारो बस पुकारो, कुछ भी न अपने हाथ है।
उसकी जब मिलती किरपा, लगता सभी कुछ साथ है।
हरि चरण को मन पकड़ ले, जाये मिल उसकी छाया।
ताप तेरे सब हरेगा, जप ले सुख पावे काया।

389.

गीत अपने गा यहाँ पर, खो जायेंगे अस्तित्व में।
मन करे किससे शिकायत, सब जी रहे निज चाह में।
हरि जपो दे ज्ञान हमको, दुख जगत में देख सबको।
प्रीति मन हरि से बढ़ा ले, लाता ले जाये सबको।

सौंप दे पतवार उसको, बहती है उसकी धारा।
स्वप्न सा सब खेल सारा, जप हरि को तू क्यो हारा?
आज हैं न होयेंगे कल, जपो हरि जो कुछ मिले पल।
चैन आयेगा न उस बिन, प्राण प्यासे तू पिला जल।

न पता हो जाये क्या कल, हरि जपो जपते रहो मन।
बन बन्जारा तू जी ले, ज्ञान हरि का नाचता तन।
करो समर्पण हरि आगे, तू नहीं वह ही यहाँ है।
जाये ले तेरी किस्ती, मन जपो अन्तिम ठिकां है।

390.

हरि तुम बिन यह रोये अंखियां, निष्ठुर बन ना मेरे सैया।
प्यार मुझे तू अपना दे दे, मुझको रख ले अपनी छैयां।
जिय घबरावे रोवे नयना, कहूँ किसे मैं अपना बयना।
काटूं राते तारे गिन गिन, तड़फावे न मान ले कहना।

जग की बतियां नहीं सुहावे, छिपे कहाँ हो पता न जानूं।
सूखा सुमन खिलावे तू ही, अज्ञानी मैं रोना जानूं।
बहता इन नयनों से पानी, फूल बाग के तेरे माली।
अपनी शरण राख ले मुझको, लग जाये जीवन में लाली।

तेरा जीवन तू ही मालिक, चिन्ता मैं क्यों करता पथ पर।
ले चल मुझे जहाँ है मर्जी, नयन देख ले झरते झर झर।
अबल नाथ मैं तो हूँ हारा, करूँ प्रतीक्षा मैं पल पल में।
बस जाओ मेरे नयनों में, ना तरसाओ इस जंगल में।

391.

हरि को मन रे काहे जपे ना, उस बिन जिय को कुछ ना भाये।
फिरे मीन क्यों जल में प्यासी, नयना झर झर नीर गिराये।
किसके पीछे भागे पागल, तेरे हाथ न कोई आये।
बड़ी लहर है कोई छोटी, अपने अपने नगमें आये।

सागर खेले यहाँ लहर तू, अन्तस तेरे यही नचाये।
जपता जा वह सदा साथ है, मिटे भरम वह नयन समाये।
जप ले मन हरि खेवट वह ही, पार करेगा नौका वह ही।
ढलती संध्या ना घबरा तू, हरि पुकार ले सब कुछ वह ही।

प्यारा वह प्यारी हरि यादे, सुमर उसे दुख मिटते सारे।
हारे को हरि नाम यहाँ है, पड़ जा मन तू उसके द्वारे।
आना जाना उसकी मर्जी, उसके आगे एक न चलती।
ज्ञान वही दे जप ले उसको, साथ सदा मन कर ले विनती।

392.

हे राम राम हे राम राम, आ जाओ घनश्याम।
तुम बिन रोयें मेरी अंखियां, यह ढल न जाये शाम।
कृपा करो तुम दुख के हर्ता, दुख को हरो तुम राम।
जनम जनम का दास तुम्हारा, फेरो न मुंह को राम।

बगिया सूखी रोये नयना, बरस जाओ हे राम।
मुरझाया जो फूल खिला दो, पड़ता चरण मैं राम।
तुम बिन मेरा जिया न लागे, देख लो अब तो राम।
अंखियां खोजे कहाँ छिपे हो, प्यार चाहें दे राम।

प्यार मिले महके फिर बगिया, खिल जाये यहाँ शाम।
बहते नयना तुमको खोजे, छिपना नहीं तुम राम।
प्यासे प्राण पिला दे पानी, दिल में तुम्ही हो राम।
जपता रहूँ तुझे मैं निशदिन, बसो नयनों में राम।

393.

मन पकड़ो हरि का दामन, बहा नहीं आंसू खारा।
स्वप्न सा यह खेल सारा, जाती ले सबको धारा।
आना जाना खेले वह, देख ले बस कुछ न अपना।
उपजता जो ज्ञान मन में, तन करता क्या है अपना।

ज्ञानी कोई मन्दबुद्धि, योनी कितनी ही आई।
दर्द कितना है जगत में, देख कर यह आंख रोई।
कौन तू जपले उसी को, जप ले तुझे वह ज्ञान दे।
जाये ले तेरी नौका, पतवार उसको सौंप दे।

चलती सब मर्जी उसकी, डोरी उसी के हाथ है।
नाचे कठपुतली उसकी, मन तू समझ क्या हाथ है?
कर याद हरि बहे आंसू, देता सुख दुख यह छलिया।
शक्ति का भण्डार वह ही, पकड़ो मन उसकी बैयां।

394.

वीणा कुछ गीत उठा लेगी, किरपा तेरी हरि हो जाये।
बहते आंसू पथ को देखे, चाहूँ न कभी यह रूक जायें।
हरि प्रीति बढ़े तुम हृदय बसो, सुपना मेरा ना शर्माये।
जग में चल चल कर मैं हारा, जियरा मेरा हरि घबराये।

करूणा के सागर दया करो, क्यों छिपे हुए तुम क्षमा करो।
सर्जक पालक सब कुछ तुम ही, सारी पीड़ा को दूर करो।
दो ज्ञान करें शुभ कर्म सदा, ना होना मुझसे कभी जुदा।
तेरे मन्दिर का सेवक बन, सुमरन तेरा ही करूँ सदा।

हरि हरि कहते बीते जीवन, सुखनन्दन तू तुझसे जीवन।
हरि डोर हाथ में है तेरे, ले चलो सुनूं बंशी की धुन।
प्यासे प्राणों की प्यास तुही, खेला सब जग का छुई मुई।
बस जाओ मेरे नयनों में, तेरी यादे ले मैं रोई।

395.

आ रहा दिन जा रहा है, सुनो तुम मेरी कहानी।
याद कर मैं तुझे रोया, नयन से बह रहा पानी।
कर रहा तेरी प्रतीक्षा, तू कहाँ पर छिप गया है।
प्यार अपना मुझे दे दे, जलता यह दिल मेरा है।

तुम बिना किसको कहूँ मैं, सुन ले मेरी तू तारे।
तेरे बालक हम प्रभु जी, न बहा आंसू यह खारे।
कौन अपना है पराया, खेले तू बहते नयना।
चाह पाये प्यार तेरा, बीते यह सुख से सुपना।

दर्द हम किसको दिखायें, देखे नहीं कोई यहाँ।
आँख मेरी रो रही है, जानूं नहीं तुम भी कहाँ।
शीश चरणों में रखूं मैं, मैं खड़ा हूँ द्वार तेरे।
लाज को हरि राखना तुम, चल रहा तेरे सहारे।

396.

किसको सुनाये दर्द हम, सुने कोई पर कौन है?
नजरें उठा कर देखता, नभ देखता यह मौन है।
चाहा तुझे देखा नहीं, क्या बनी किस्मत हमारी।
थक गये कर कर प्रतीक्षा, नयन से हैं अश्रु जारी।

न सुनो मर्जी तुम्हारी, दर्द लिये हम जायेंगे।
ढलती है देखो संध्या, फिर तुम्हे ना पायेंगे।
आंख में आंसू हमारे, प्यार नहीं होगा यह कम।
आग सीने में सुलगती, नहीं बुझे ना फिर भी गम।

गीत गाती नियति अपने, मिट गई कितनी कहानी।
याद आ जाये हमारी, नहीं लाना नयन पानी।
स्वप्न सा सारा जगत है, खेल यहाँ खो जायेगे।
जो रचा है भाग्य हरि ने, नहीं मिटा हम पायेगे।

397.

हरि तुम राखो लाज हमारी, इस दिल में तुम रहो मुरारी।
अपनी बन्शी मुझे सुना दो, झूमें मन खो जाऊँ सारी।
जग पालक तू जग का दाता, तू ही मेरा भाग्य विधाता।
नजर उठा कर हमें देख लो, तुम बिन मेरा जिय घबराता।

सांसे तेरे ही गुन गाये, तुझसे हरपल प्रीति बढ़ाये।
इस जीवन के तुम ही स्वामी, छिपों नही हम अश्रु बहाये।
मेरे नयनों में बस जाओ, सुपनों से भी कभी न जाओ।
बीतेगा यह सुपना सारा, इस सुपने में रास रचाओ।

बहती इन नयनों से धारा, खे दे नैया मैं तो हारा।
चरण पड़ू मैं प्रभु तुम्हारे, संकट मोचन नाम तुम्हारा।
लिखता रहूं तुझे मैं पाती, यादे तेरी हरपल आती।
अबल तुझे मैं खोज न पाऊँ, शरण तुम्हारी अंखियाँ रोती।

398.

छिपो नहीं तुम कृष्ण मुरारी, प्यार मुझे दे मैं हूँ तेरी।
अपना मुझे बना ले छलिया, नाचूं छम छम तुझ पर बारी।
जनम जनम की दासी तेरी, सुपनों में मुझको तू दीखे।
क्या लेगा तू छलकर मुझसे, बहते नीर नहीं तू देखे।

तारे गिन गिन रैन बिताऊँ, कैसे मैं दिल को समझाऊँ।
बसे हुए मेरी सांसों में, याद करूँ मैं नीर गिराऊँ।
तेरा हरपल नाम होठ पर, चाहें देखे अंखियां जी भर।
खोजू कैसे पता न जानूं, अंखियां मेरी आये भर भर।

बहती जाती है जिंदगानी, राह देखती हूँ मैं तेरी।
झर झर मेरे आंसू बरसे, चाहूँ डूबूं इसमें सारी।
प्रीति तोड़ ना प्यार मुझे दे, बरसे अंखियां देख इन्हे ले।
इन नयनों में रहो सदा तुम, विनती मेरी हरि तू सुन ले।

399.

बना हुआ है वह निर्मोही, झर झर नीर गिरे हैं मेरे।
दर्द छिपा जो दिल के अन्दर, कौन हरे उसको मन मेरे।
बहते नीर नहीं वह देखे, कहें किसे किस्मत के लेखे।
फिर भी बना पुजारी उसका, चैन न उस बिन जग क्या देखे।

हरि हरि गाओ ध्यान लगाओ, नाम अमी है यह पी जाओ।
छट जाते सब दुख के बादल, जपो इसे फिर मन सुख पाओ।
दो दिन दुनिया रैन बसेरा, पीछे से आता है रेला।
प्राणों की ना प्यास मिटेगी, जप ले हरि को प्यारा छैला।

हरि हरि जप मन चैन मिलेगा, किस्ती तेरी लिये चलेगा।
पिया नाम का प्याला जिसने, मस्त हुआ गम सभी मिटेगा।
हरि हरि बोलो हरि को जी लो, स्वप्निल जग ना उसको भूलो।
ताप हरे सुखदायक हरि जप, इस सुपने को सुख से जी लो।

400.

क्या पाना और यहाँ खोना, जप हरि बीते सुख से सुपना।
तृष्णा के जंगल में फंस कर, क्यों विलख विलख कर है रोना?
मन गा कुछ हरषे यह जियरा, बहता जा यह हरि का दरिया।
वह नचा रहा हम नाच रहे, मन चैन मिले जप ले छलिया।

स्वप्निल दुनिया जाते यह पल, न हाथ में आये करो जतन।
मन बहो समर्पित हो हरि के, खिल खिल जायेगा हृदय सुमन।
ज्ञानी कोई है मन्दबुद्धि, सुख दुख का फैला यहाँ जाल।
मन पड़ जा हरि के चरणों में, ना घबराये मिटता मलाल।

लाये ले जाये हरि खेला, हरि की लीला बस क्या अपना।
मैं मिटे होय ना मन मैला, जागे जो ज्ञान वही होना।
मन उसे जपो मन यहाँ मिटो, मिट कर ही उसको पाना है।
उसकी मर्जी स्वीकार करो, सब कुछ ही तो बह जाना है।

401.

असफलता की लिये कहानी, रोई मैं ना नजर उठाई।
बना हाय क्यों तू हरजाई, गल्ती क्या थी जान न पाई।
तुम बिन कोई नहीं ठिकाना, नीर झरें मिलने को तरसे।
बना मुझे अपना दिल तड़फे, प्यार मिले यह जीवन हरषे।

तेरी दुनिया तू ही स्वामी, अपना मुझे बना ले छलिया।
नयनों के आंसू सूखे ना, ले ले शरण पड़ू मैं पैयां।
पी पी रटूँ पीव नहिं आवे, नयना रिमझिम नीर गिरावे।
दे अपने मन्दिर का कोना, सांसे तेरे ही गुन गावें।

बीत रहे जीवन के यह पल, बालक तेरा करो नहीं छल।
प्यासा हूँ जल मुझे पिला दे, चला न जाता ना मुझमें बल।
नमन करो स्वीकार हमारा, पकड़ ले चलो मेरी बैंया।
बसो नयन में हरि तुम मेरे, मिटे दंश दे अपनी छैया।

402.

बने सन्त फिर भी रोते है, तुम बिन हम कैसे जीते है?
पीड़ा देखी नहीं हमारी, आंसू को हरदम पीते हैं।
अबल यहाँ मैं अन्तर्यामी, प्यासा मुझे पिला दे पानी।
सकल सृष्टि के मालिक हो तुम, तुम सा नहिं कोई भी दानी।

दर दर डोलूं तुमको खोजूं, पाऊँ कहाँ मैं कुछ न जानूं।
लाज राखना इस मेले में, एक सहारा तेरा मानूं।
बंशी बजा सुनूं बांसुरी, धुन तेरी सुनने को आतुर।
बीती जाती देखो संध्या, नयना बरसे मेरे झर झर।

जीवन सुपना रैन बसेरा, ना जाने कब होय सुबेरा।
आस लगाये तेरी बैठे, तृष्णाओं ने मुझको घेरा।
हरि हरि जपूं नयन बस जाओ, जग में नहीं मुझे उलझाओ।
दास तुम्हारा स्वामी मेरे, प्रेम दीप में जला मिटाओ।

403.

चल मन उड़ चल नील गगन में, पंख नहीं घबराऊँ दिल में।
कैसे पाऊँ तुमको प्रियतम, बरसे अंखियां यह पलपल में।
बहा जा रहा नदिया तेरी, नहीं किनारा कोई जानूं।
मिल जाये बस प्यार तुम्हारा, घबराये ना दिल यह जानूं।

तुझे जपूं जपता मैं हरपल, आज यहाँ होवेंगे ना कल।
पल पल रंग बदलती दुनिया, सारी दुनिया है यह स्वप्निल।
मिटे यहाँ मैं तुमको पाऊँ, बसो नयन में चलता जाऊँ।
बीतेंगे सुख से फिर यह पल, चाह यही है प्रीति बढ़ाऊँ।

जीवन तेरा तू ही मालिक, शरण राखना तेरा सेवक।
मन्द बुद्धि अज्ञानी हूँ मैं, देना प्यार सदा मैं बालक।
हरि हरि गाये गीत तुम्हारे, कृपा करो पहुँचे हम द्वारे।
तुम ही मेरे भाग्य विधाता, चल चल कर हरि हम तो हारे।

404.

नाथ यही मैं तुमसे चाहूँ, शीश चरण रख तुझे मनाऊँ।
सदा मिले प्रभु प्यार तुम्हारा, मर्जी तेरी खुशी मनाऊँ।
तेरी धारा यहाँ बह रहा, क्षमा मुझे कर अज्ञानी मैं।
बहते नयनों से आंसू हैं, कहूँ न तुमसे कहूँ किसे मैं।

दीनबन्धु करूणा के सागर, अपनी दया बनाये रखना।
लगे मुझे तुम सदा साथ हो, नहीं जले दिल बरसे नयना।
अबल मैं हूँ सबल तुम्ही हो, भाग्य विधाता तुम हो मेरे।
नचा मुझे जैसे हो मर्जी, नहीं कभी मुझसे मुँह फेरे।

अंखियां रोवें देख हमें ले, करूँ कर्म शुभ ज्ञान यही दे।
अनजाना पथ अन्धकार है, दीप जला कर तू प्रकाश दे।
मन्द बुद्धि अज्ञानी हूं मैं, भूल नहीं पर तेरा बालक।
इतना ही हरि तुम से चाहूँ, नीर देख ले पहुँचे तुम तक।

405.

सोचता क्या मन यहाँ है, सांस दी जीना यहाँ है।
कर ले मन हरि की पूजा, चैन उस बिन ना यहाँ है।
मन भटक तृष्णा का जंगल, ना कभी हो पाया मंगल।
प्रीति कितनी करो जग से, ना रूकेगा नयन से जल।

हरि जपो सुख शान्ति दाता, भाग्य का तेरा विधाता।
दे उसे पतवार अपनी, ले चले वह डर न लगता।
सब उसी की है कहानी, जान ले मन वह ही ज्ञानी।
नाचे कठपुतली बन कर, मिट रही सारी कहानी।

हरि जपो हरि प्यार कर ले, ना बहे फिर नीर खारा।
कर भरोसा वह सहारा, स्वप्न सा यह खेल सारा।
लाता ले जाये सबको, देख सब भूलो न हरि को।
तू नहीं वह ही यहाँ है, छोड़ो मैं जप ले हरि को।

हरि जपो मन हरि जपो मन, ज्ञान दे जो वह करे तन।
मन्द बुद्धि कोई ज्ञानी, जोर क्या जप ले हरी मन।
हरि जपो कर ले जतन मन, ध्यान को न छोड़ एक पल।
जायेगा हृदय सुमन खिल, जप उसे जो भी मिले पल।

406.

जीवन में मिल जाये खुशियां, आंसू से भीगी हैं अंखियां।
तुम भी क्यों मुझसे खफा हुए, पकड़ो हरि तुम मेरी बैयां।
दास तुम्हारा नहीं भूलना, चरणों की दे हमे तू धूल।
लगा उसे मस्तक पर नाचूं, मिट जायें सब दिल के शूल।

तेरी लीला मैं भरमाया, चाह रहा मैं तेरी छाया।
अवरूद्ध हुए मेरे सब स्वर, क्या कहूँ रो रही है काया।
इस जीवन के स्वामी हो तुम, नाचे कठपुतली बन कर हम।
बहते आंसू को देख जरा, तू छिपा सहा जाता न गम।

आंसू का कोई मोल नहीं, सिर झुका खड़ा तेरे द्वारे।
यादों में जो भी नीर बहें, बस वही हमें लगते प्यारे।
हरि प्रीति तुम्हारी बढ़े सदा, मेरे नयनों में बस जाओ।
मैं हारा थका मुसाफिर हूँ, इन गलियों में न उलझाओ।

407.

थक गये ना चल सके हम, लो शरण मे राम मुझको।
बन सके न तेरे प्यारे, माफ करना ईश हमको।
मैं अबल हूँ नीर बहते, सृष्टि के तुम तो रचियता।
घूमता अनजान गलियां, प्यार पाने को तरसता।

तेरी बन्शी की सुनुं धुन, आस मैं कब से लगाये।
नयन से है नीर बहते, प्राण प्यासे जल पिलाये।
जिन्दगी का तू खिवैया, रोती यह मेरी अंखियाँ।
छिप गया तू छोड़ मुझको, प्यार दे मैं पडू. पैया।

गीत अपने गा यहाँ पर, खो रहे सब ही जगत में।
मन सुना तू गीत ऐसा, चैन आये व्यथित दिल में।
हरि मैं बालक तुम्हारा, प्यार अपना ईश दे दो।
अर्चना स्वीकार कर लो, छांव अपनी नाथ दे दो।

408.

गीत अपने गा यहाँ पर, खो जा रहे सब ही यहाँ।
कुछ पलो के हैं हंसी गम, मन याद कर जिसका जहाँ।
बस यहाँ कितना समझ ले, गिरते सदा आंसू यहाँ।
नाचे कठपुतली बनकर, नचाता है हमको यहाँ।

जी रहा मन भूल शाश्वत, लेता क्या जग में सुपने।
नयन में हरि को बसा ले, सुख बढ़े की प्रीति जिसने।
बह रही अंखियां किनारा, दीखता ना इस जगत में।
पकड़ो मन हरि का दामन, ना लगेगा डर सफर में।

चाहते सबकी अलग है, तू क्या शिकायत मन करे।
साथ ना कोई अकेले, जप ले हरी मन क्यों डरे।
पी यहाँ हरि नाम प्याला, जानो अच्छी है हाला।
नैया ले जाये सुख से, बन केवट तुझको लाला।

409.

क्या ठीक यहाँ क्या गलत यहाँ, हरि नचा रहा हरि खेल यहाँ।
मन पड़ जा हरि के चरणों में, उस बिन ना जग में चैन यहाँ।
जपता जा हरि दे शान्ति वही, तृष्णा की कोई थाह नही।
पल पल जग रंग बदलता है, जप ले हरि को है साथ वही।

स्वप्निल दुनिया छलता छलिया, मन छोड़ नहीं उसकी बैयां।
सांसे आती यह सब उसकी, तू कौन यहाँ रोवे अंखियां।
हरि जप हरि जप जपता ही जा, दे ज्ञान वही उस बिन कुछ ना।
अनगिनत योनिया इस जग में, कर्तार वही देखे क्यों ना।

बहता जा मन हरि धारा में, मैं छोड़ मिट रहा पल पल में।
तू यहाँ बासुरी स्वर उसके, पड़ जा मन हरि के चरणों में।
ले चले वही खेला उसका, टूटे सुपने यह जिय रोता।
हरि जपो प्राण की प्यास बुझा, जप ले मन तू क्यों अब सोता।

410.

आज यहाँ हम कल ना होंगे, लेते सुपने हम तड़फेंगे।
मन हरि के चरणों में पड़ जा, तप उसकी मर्जी जी लेगे।
मन हरि जप प्यारा वह ही, शान्ति मिले सुखदाता वह ही।
कितना जग में यहाँ भटक ले, मिटे न तृष्णा साथी वह ही।

नयन बसा मन हरि की मूरति, सुमर नयन का दे दे पानी।
ना इससे बढ़कर कुछ भी है, बीती जाती सभी कहानी।
आये मर्जी उसकी चलती, जाये अपनी एक न चलती।
कौन यहाँ मैं खेला उसका, बह ले नदिया उसकी बहती।

खेल खिलाये सुख दुख के वह, छिपा हुआ बैठा देखे वह।
बहे नीर बस उसे पुकारो, वही सुनेगा सुखदायक वह।
सुपना जीवन सुख से बीते, पकड़ यहाँ मन हरि का दामन।
दुख के बादल फट जायेंगे, नाम जपो हरि का वह पावन।

411.

गीत सुना मन आये साजन, याद उसे कर अंखियां रोई।
मिले न बालम जावे सावन, प्रीति दिवानी पागल होई।
पथ में बैठी राह निहारूँ, कैसे अपना भाग्य संवारूँ।
निर्मोही ने छल जो कीन्हा, उस पर मैं तो तनमन बारूँ।

चहुँ दिश भटके मेरा जियरा, रो रो किसे कहूँ वह मेरा।
बालम निकल गया हरजाई, उस बिन लागे ना यह जियरा।
बहते आंसू में बह जाऊँ, बिन बालम मैं रह ना पाऊँ।
पडू. पांव मैं तेरे साजन, पथ दर्शा दे तुमको पाऊँ।

जल बिन मछली जैसे तड़फे, सावन जैसे अंखियां बरसे।
जपूं नाम की माला तेरी, मिलने को यह नयना तरसे।
आ बस जा मेरे नयनों, ढलती संध्या कुछ पल बाकी।
पड़ी द्वार पर हरि हर तेरे, देखो चाह यही है बाकी।

412.

कौन मैं हूँ कौन तू है, मैं लहर सागर तुही है।
भूल कर पहचान अपनी मैं , भटकती मूल तू है।
पाना क्या है खोना क्या, प्रीति सागर की न तजना।
तज उसे ना चैन आये, संग सागर नहीं बिसरना।

नाच कितना लहर बन कर, जप उसे सुख शान्ति दाता।
सत्य वह उसमे बसेरा, प्रीति कर हिय सुमन खिलता।
हरि जपो कटता सफर है, सत्य पथ मन बस यही है।
आज नाचे कल नहीं है, नाच ले शाश्वत वही है।

प्रीति मन हरि से बढ़ा तू, नाच रहा वह है अन्दर।
खेल उसका डर यहाँ क्या, क्यों गिराता नीर झर झर।
लीला उसकी खेले वह, जपो हरि जपते रहो मन।
बीतेंगे यह सारे पल, छोड़ो मैं तप कर ले मन।

413.

नमन ले लेा चमन तेरा, तुम सदा हरि कृपा रखना।
सूखे न आंसू नयन के, नयनों में मेरे बसना।
पियूं मैं हरि नाम प्याला, लगती यह अच्छी हाला।
तू पिला दे मुझे इतनी, भूलूँ गम सारे लाला।

कुछ भी तेरा न पता है, तुझे खोजूँ मैं कहाँ पर?
तुम सुना दो बांसुरी को, झर रहे है नीर झर झर।
चल गिरूँ उठता फिर फिर, याद तेरी ले भटकता।
दिल नहीं लगता हमारा, नयन से है अश्रु गिरता।

कर अकेला छिप गये तुम, दर्द को कैसे दिखाये।
देखो यह रोती अंखियां, पास ना तुम कहाँ जाये?
जगत स्वामी देख ले अब, नाथ दिल घबरा रहा है।
पार करो मेरी नौका, दास तेरा रो रहा है।

414.

हरि को जप जपते रहो मन, याद करो मिटे क्रन्दन।
हरि जपो सुखदाता वह है, भूलो ना कर ले जतन।
पाने की क्या है तमन्ना, चला रहा हमें चलना।
अपनी मर्जी क्या यहाँ है, जान ले जीवन सुपना।

बनता क्यों जग में तमाशा, भाग्य का वही विधाता।
तम में दीपक वह जलाता, ज्ञान को वह ही देता।
सांसे बहती खेल उसका, जान न अनजान गलियां।
मन पकड़ ले हरि का दामन, जाये ले तुझे छलिया।

आज हैं यहाँ कल कहाँ पर, शिकवा क्या मन यहाँ पर।
पड़ जा मन हरि के चरण में, हरि सुमर न डरे जिय फिर।
हरि को जप जपते रहो मन, ज्ञान जागे करता तन।
मिटता मैं सब खेल हरि का, सावन से बरसे नयन।

खेले उसमें सत्य वह ही, आदि वही अन्त वह ही।
मन लगेगा जप ले उसको, प्राण प्यासे जल वह ही।
जहाँ में ज्ञानी मन्दबद्धि, चलती सबकी कहानी।
अंखियों में सुपने हजारों, भूलते दुनिया फानी।

हरि को जप जपते रहो मन, बाजे चहुँ ओर हरि धुन।
हरि को जप ले साथ तेरे, मिटे भय जानो यह मन।
कौन अपना यहाँ पराया, जपो हरि रोती काया।
बुझता दीपक जगमगाता, जो शरण हरि की आया।

415.

कर सको तो माफ करना, तड़फते हम तो यहाँ।
तेरी दुनिया तू सुन्दर, बना ना सेवक यहाँ।
घूमता ले वासनाएँ, उठे जल में बुलबुला।
फूटता ना जोर चलता, चल रहा यह सिलसिला।

हरि जला दे ज्ञान बाती, जपूँ दिन और राती।
चल थका मैं नाथ हारा, नीर यह अंखियां बहाती।
इस जग के तुम मालिक, नाचता ब्रह्मण्ड सारा।
नाचे कठपुतली बन कर, जोर ना कुछ भी हमारा।

जो जगावे ज्ञान मन में, तन करे, तेरा सहारा।
हरि बसो मेरे नयन में, बन सकूँ तेरा दुलारा।
प्रीति तेरी बढ़े हरपल, न बहेगा आंसू खारा।
अर्चना स्वीकार कर लो, नाथ मैं बालक तुम्हारा।

416.

हरि शरण मुझे अपनी रख लो, न रूके नयन का पानी है।
दर का मैं भिखारी अबल प्रभु, मुंह फेर न तू तो दानी है।
भीगी अंखियों को देख जरा, कितने जन्मों से भटक रहा।
ढलती संध्या अब तो आ जा, व्याकुल मन को दे शान्ति जरा।

जीवन सुपना तज मन चिन्ता, क्या पाना और यहाँ खोना।
डर मिटे बसा ले हिय सजना, जग में चलता जा हरि जपना।
हरि की मर्जी आये जाये, ना पता चले कब खो जायें।
लीला हरि अपरम्पार यहाँ, गुन सकल सृष्टि उसके गाये।

हरि बना मदारी दुनिया का, वह नचा रहा है हम सबको।
सब जीव चाहते प्यार सदा, ना शान्ति मिले हरि बिन हमको।
प्रभु करें अर्चना हाथ जोड़, मिट जायें सब दुख के घेरे।
बस जाओ तुम इन नयनों में, यह प्राण तुझी को हैं टेरे।

417.

हरि सुने या ना सुने तू, चलती सब मर्जी तेरी।
कौन मैं जानूं न आया, प्यार चाहता सब तू ही।
चरण में पड़ू. तुम्हारे, शरणा हूँ आया द्वारे।
लाज तेरे हाथ में है, इस जग में हम तो हारे।

जपता माला तुम्हारी, सांस तेरे गीत गायें।
खोजती अंखियां तुझे है, तुझ बिना न कुछ भी भाये।
हरि पुकारेंगे सदा ही, तुम बिना जायें कहाँ हम।
छोड़ ना मुझको अकेला, आंख मेरी हो रही नम।

उबले जब दिल में पीड़ा, देखूँ नभ तारे गिनता।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, आँख झरती नाम जपता।
सहारा मेरा तुही है, इस जगत का सृजन हारा।
ले चलो नौका हमारी, बन खेवट मैं तो हारा।

418.

ओम ओम ओम ओम, किस तरह रीझे बता?
नयन से बहे गंगा, जाने न तेरा पता।
देख ले नजरे उठा, इस जग का तू मालिक।
प्यार दे मुझे अपना, राह देखूँ एक टक।

दीखता ना किनारा, मुझे दे दे सहारा।
करा दे पार नदिया, बहती आंसू धारा।
बगिया का तू स्वामी, लगती तुझसे लाली।
जिस पर होती कृपा, न होती रात काली।

ले चलो मुझे छलिया, पड़ता तेरे पैंया।
झिलमिल करती दुनिया, रोती मेरी अखियां।
शरण में रख ले मुझे, बना लो दास अपना।
सांस जो कुछ पल मिली, बीते सुख से सपना।

419.

गा गा मैं तुझे बुलाता हूँ, बस चैन इसी में पाता हूँ।
नजरे ना फेरो तुम मुझ से, तेरी यादों में जीता हूं।
अन्तर्यामी सुख के दाता, सबके तुम भाग्य विधाता हो।
यह पार लगा दो प्रभु नौका, जीवन के तुम ही खेवट हो।

अंखियां रोये तुम छिपे कहाँ, जिय डरे और यह व्याकुल है।
बहती आंसू की गंगा है, तुम बिन न कोई सहारा है।
हरि जपे और हम सुख पाये, चाहें नयनों में बस जाये।
तू प्रीति बढ़ा दे हरि ऐसी, बन यहाँ पतंगा मिट जाये।

अपनी हरि कृपा सदा रखना, बालक तेरे अज्ञानी है।
शुभ कर्म करूँ मैं सदा यहाँ, वर दे दे तू तेा दानी है।
तेरी यादों को नीर लिये, यह सफर करें ना रूके कभी।
मेरे नयनों में बस जाओ, मुझसे ना होना जुदा कभी।

420.

ढलता दिन और ढलें रातें, मैं कौन लिये पृथ्वी नाचें।
सुख दुख के पिंजड़े फंस कर, जिवड़ा रोवे कैसे जांचे?
आ तुझे बुलावें सांवरिया, मेरी रोती रहती अंखियां।
तृष्णा के सागर में फंसकर, यह डूब रही मेरी नैया।

न दीखो पर है राज तेरा, कैसे खोजूं न पता तेरा।
बैचेन हुआ जग में डोलूँ, तू मुझे पिला अपनी मदिरा।
हरि नाम तुम्हारा पावन है, अंखियां धोवे गंगाजल है।
हरि शरण रखो मुझको अपनी, यह भटके मनुआ पागल है।

हरि दास तुम्हारा जन्मों से, जानूं न कटे कैसे बन्धन।
हरि कृपा तुम्हारी हो जाये, मिट जाये सारा फिर क्रन्दन।
कर लो स्वीकार नमन मेरा, अज्ञानी तेरा बालक हूँ।
चरणों में नाथ जगह दे दो, मैं दर्द लिये सब गाता हूँ।

421.

शरण तुम्हारी मैं गिरधारी, तन मन तुझ पर सब कुछ वारी।
छिपो नहीं तुम मुझसे छलिया, इन नयनों से आंसू जारी।
अगम अगोचर पार न तेरा, चहुँ दिश भटक रहा मन मेरा।
नाथ अबल मैं अन्तर्यामी, कृपा करो हरि मिटे अंधेरा।

निशदिन तेरी करूँ मैं पूजा, तुम बिन और न कोई दूजा।
अखियां रोये याद तुझे कर, ना निर्मोही बन मैं खोजा।
छोटा जीवन अंखियां सावन, फिरता रीती मैं ले गागर।
नभ में आंख लगाये बैठा, बरसे कब भर जाये गागर।

झरे नयन मैं करूँ समर्पण, दीनबन्धु करूणा के सागर।
पार लगा दे मेरी नौका, जियरा मेरा आता भर भर।
नयनों में बस जाओ मेरे, ना भटकूँ जग की गलियों में।
प्यारा प्रियतम बस तू ही है, छले न माया पांव पड़ू मैं।

422.

हरि भज मन सुख का सागर है, पार लगावेगा वह नैया।
पकड़ा जिसने हरि का दामन, दुख से ना रोती फिर अंखियां।
मन हरि हरि जप बस क्या तेरे, माटी का तू बना खिलौना।
जैसे नाच नचाये नाचे, करो समर्पण हरि को जपना।

ज्ञान जगावे हरि को जपले, ना भटकेगी तेरी नैया।
उसका जीवन उसको दे दे, ना बरसेंगी दुख से अंखियां।
सुख मिलता सब जगह वही है, सुपना दुनिया बात सही है।
दुख के पल भारी होते है, मिटते दुख जप सत्य यही है।

जप ले हरि हरि आवे चैना, नहीं मिटेगा उस बिन रोना।
उसकी कृपा होय तम छटता, नहीं भूल मन जपते रहना।
बसा नयन हरि शीश झुका ले, वास करे जर्रे जर्रे में।
दो दिन का सारा जीवन यह, नाव सौंप हरि के हाथों में।

423.

सोच रहा मन क्या तू पागल, जीवन तेा उड़ता सा बादल।
अब हैं यहाँ कहाँ कल होंगे, कहाँ मिले धरती का आंचल।
मन हरि जप हरि की ही लीला, खेल खिलावे करता क्रीड़ा।
स्वर उसके बाजे यह बन्शी, उसे भूल रोवे यह जिवड़ा।

हरि बिन कोई नहीं ठिकाना, साथ न होता कभी जमाना।
पल दो पल की यारी सबकी, नहीं रूके अंखियों का बहना।
मन हरि जप ले शान्ति मिलेगी, नैया तेरी सहज बहेगी।
छोड़ो मैं स्वीकारो हरि को, अंधियारे में ज्योति जलेगी।

सर्जक पालक ज्ञानी वह ही, जगे ज्ञान तन करता वह ही।
प्रीति बढ़ा मन हरि से पागल, जहाँ ले चले मन्जिल वह ही।
जप ले मन ना छोड़ उसे तू, वही सहारा जीवन पथ में।
अंखियों का जल उसको दे दे, पड़ जा मन हरि के चरणों में।

424.

जीवन यह क्यों सांसे लेता, नहीं प्रयोजन फिर भी बहता।
स्वप्निल सारी यह दुनिया है, जीव यहाँ क्यों दुख में रहता।
दीप जलाते हम आशा के, बुझते देख देख कर रोते।
चलती रहती यही कहानी, कुछ पल जाते हम बुझ जाते।

मन हरि भज कुछ सुकुल मिलेगा, मैं को छोड़ो सहज बहेगा।
इस जग का मालिक वह ही है, कुछ पल मेहंमा नहिं रहेगा।
बरसे शान्ति सुधा मन जप ले, पार लगावे तेरी नैया।
फूल बने पथ के सब कांटे, जप ले रोती तेरी अंखियां।

प्यासे प्राण पिला मन पानी, बही जाती यह जिन्दगानी।
तपे धरा बन मेघ बरसता, जप हरि जाने नहीं कहानी।
आना जाना उसकी मर्जी, दिल का अब तो खोल झरोका।
छिपा है अन्तस जपो मन तू, पार लगावेगा वह नौका।

425.

सजती ही रहती मधुशाला, आये ना आये हम साकी।
तेरी मस्ती में कमी नही, बगिया तेरी हरपल महकी।
चाहा तुमको मुँह को फेरा, मेरी नजरों से देख जरा।
यह प्यार हमारा अमर सदा, गिरते आंसू को परख जरा।

बहती सांसे क्या कहती है, मैं रोया सोच जरा दिल में।
पल पल में रंग बदलता जग, तू भी पलटी पीड़ा दिल में।
सब खुशियां तेरी तुझे मिले, अपनी तो यह अंखियां झरती।
ले जाये कहाँ हवा हमको, नयनो में मेरे तू बसती।

मिट जाऊँ याद लिये तेरी, आंसू से जीवन रंग डाला।
मैं जपूं सदा तेरी माला, चाहत है पिला मुझे हाला।
न कभी मेरी अंखियां सूखी, जीवन की चाह यही बाकी।
नयनों से दूर कभी ना हो, दे प्यार मुझे मेरा साकी।

426.

हरि अपनी कृपा सदा रखना, मैं विनय करूँ बहते नयना।
बालक तेरा मैं अज्ञानी, नौका को पार लगा देना।
हरि कृपा बिना ना ज्ञान मिले, खोये पथ की ना दिशा मिले।
तुम आंख उठा कर तो देखो, कैसे मेरा यह जिया जले।

जीवन तेरा तू ही दाता, मैं कौन यहाँ जी घबराता।
स्वामी तू सारे जग का है, नही रूठ कभी आंसू आता।
बन्शी बाजे जियरा नाचे, सुख दुख सब तेरे हाथों में।
हरि प्रीति बढ़े हरपल मेरी, बस जाओ मेरे नयनो में।

नैया डोले डगमग मेरी, कैसे इस दिल को समझाऊँ?
दीखे न कोई किनारा जब, तब सुमरण कर मैं सुख पाऊँ।
सब कटे सफर कुछ रहे न डर, तेरा हरि नाम प्यारा है।
हरि रूठ कभी ना तुम जाना, केवल तू ही आधारा है।

427.

कुछ रहा गया सब खेल चला, इस जग में किससे करें गिला।
संध्या अब ढलती जाती है, जाना हरि घर ना उसे भुला।
हरि हरि जप ले सांचा प्रियतम, वह साथ रहे तेरे हरपल।
मन उसे भूल ना सुखसागर, नयनों से गिरता रहता जल।

हरि हरि जपे नहीं तुझे तजें, अपना हरि प्यार मुझे देना।
मैं धूल तुम्हारे चरणों की, नहिं रूकता अंखियों का बहना।
अन्तर्यामी जग के पालक, क्या कहूँ तुझे तू संचालक।
कठपुतली हम तेा तेरी हैं, नाचू छम छम तुमको तक तक।

मेरे नयनों में हरि रहना, अच्छा तेरे बिन ना लगता।
ना छोड़ अकेला तू मुझको, देखों कैसे यह जिय घुटता।
हरि शीश झुका स्वीकारों तुम, देने को कुछ भी पास नहीं।
प्रभु फूल अर्चना के सूखे, पर बाट निहारूँ कहूँ यही।

428.

मन मिटे मिले हरि जपता जा, बस नाम सहारा जग में है।
तृष्णा में उलझ उलझ कर यह, चहुँ ओर भागता फिरता है।
पाना खोना क्या स्वप्निल सब, सुख ले जी ले हरि जप ले मन।
अपनी मर्जी क्या हरि मर्जी, मैं छोड़ो हरि का प्यारा बन।

हरि जप हरि जप जपता ही जा, तप यह ही है उसका बन जा।
आये जाये उसकी चलती, कठपुतली हरि की तू बन जा।
ज्ञानी कोई है मन्दबुद्धि, सबको ना मिलती एक बुद्धि।
कितनी योनी जग में घूमें, जप ले हरि मिलती ज्ञान बुद्धि।

जप ले सुख का सागर है वह, दुख मिटते दुख भंजक है वह।
बस नाम सहारा इस जग में, केवट बन ले जायेगा वह।
हरि हरि जप ढलता जाता दिन, छिन जायेगा तेरा यह तन।
हरि प्रीति बढ़ा हिय सुमन खिले, सब उसका खेला हरि का बन।

429.

हे जगत ईश ले चलो कहीं, नयनों में रहना सदा तुही।
प्रभु शक्ति तुही मैं नाथ अबल, नयना रोये तुम छिपो नहीं।
बालक तेरा मैं अज्ञानी, दे भीख मुझे झोली खाली।
हरि प्रीति बढ़े निशदिन तेरी, बगिया तेरी सुन ले माली।

प्रभु आये हम मर्जी तेरी, ना जाने क्या मेरी गलती।
कठपुतली बन हम नाच रहे, अंखियां आंसू से है झरती।
अपनी प्रभु कृपा सदा रखना, दास तुम्हारा नहीं तजना।
जो ज्ञान हमें दो करूँ वही, देखो तुम झरते है नयना।

जीवन तेरा मालिक तू ही, फिर किन सुपनों में मैं खोई।
इस धूप छाँव के मेले में, पड़ तृष्णा में मैं तो सोई।
हरि दीप जला दो अंधियारा, नैया का तू खेवन हारा।
हरि राख शरण में तू मुझको, दे मुझे सहारा मैं हारा।

430.

आज यहाँ कल यहाँ न होगे, फिर यह आंसू ना बरसेंगे।
प्रीति लगाई तुमसे ऐसी, जीवन भर हम तेा तड़फेगे।
आँख उठा ना देखा तुमने, प्यार किया था कितना हमने।
बन हरजाई क्या कर डाला, टूट गये जो देखे सुपने।

स्वर वीणा के अब ना उठते, अंखियां नभ में किसको खोजे?
छोटी सी इस जिंदगानी में, मनुआ हरि को क्यों ना पूजे।
सुपना दुनिया रैन बसेरा, खेल खिलावे हमको छलिया।
सुख दुख के इस मेले में मन, पड़ जा मन तू हरि की पैयां।

जाता जीवन सब परिवर्तन, जप ले मन वह ही सांचा धन।
चैन न आवे रोवें अंखियां, जपले हरि को उसका जा बन।
जीवन नदिया बहता पानी, कूल छूटते कदम कदम पर।
पकड़े हाथ न आवे कोई, नीर गिरे अंखियों से झर झर।

हरि हरि जप बहता जा मन तू, हरि नाचे मैं मिटा यहाँ तू।
मन्जिल वह ही जहाँ ले चले, चलती क्या अपनी बह ले तू।
हरि हरि जप मन करो समर्पण, उसकी तू कठपुतली जा बन।
सुरति करो उसमें मन हरपल, ज्ञान जगे वह ही करता तन।

431.

हरि सदा मनाये हम तुमको, सांसे मेरी तुमको जपती।
आंखों का पानी सूखे ना, धो सकूँ चरण विनती करती।
संताप मिटे हरि कृपा मिले, यह रोते नयना तू ले सुन।
तपती धरती बरसे जल बन, कानों में बजती अनहद धुन।

खेवट मेरे ना भूल मुझे, बालक तेरा अज्ञानी हूँ।
अनजान गली मैं भटक रहा, रूठो ना मुझसे डरता हूँ।
क्यों मीन रहे जल में प्यासी, क्यों रहूँ उदासी तुझमें रह।
हरि ज्ञान जगे मिटते सब भ्रम, जो ज्ञान जगे तन करता वह।

प्यारा है तेरा नाम सदा, हरि खोज नहीं तुमको पाऊँ।
मैं मिटे कृपा हो जब तेरी, मिट मिट कर ही तुमको पाऊँ।
जल चढ़े नयन का चरणों में, ले चलो जहाँ मर्जी तेरी।
हरि ध्यान तुम्हारा हो हरपल, छवि रहे नयन में बस तेरी।

432.

क्या गलत हुआ क्या सही हुआ, जो हुआ ईश मर्जी तेरी।
तू नचा रहा हम नाच रहे, कठपुतली हम तेा है तेरी।
बहते आंखों से आंसू हैं, तेरा हम प्यार सदा चाहें।
मैं भटक रहा इन गलियों में, दे ज्ञान मिले मुझको राहें।

करूणा सागर मेरी आशा, तू पार लगा दे नौका को।
डगमग डगमग यह डोल रही, घबराता जिय अब मिलने को।
क्या खता हुई जो भूल गया, कैसे समझाऊँ इस दिल को।
चरणों में तेरे पड़ता हूँ, थक हार देखता मैं नभ को।

हरि सुमरन तेरा हो हरपल, मेरे नयनों में बस जाओ।
डूबे यह प्राण रहें तुझ में, इस दिल से कभी नहीं जाओ।
यह सफर सभी कट जायेगा, बिन प्यार चैन ना पायेगा।
बन सकूँ दुलारा मैं तेरा, यह फूल तभी खिल जायेगा।

433.

हरि भज इस बिन है कुछ भी ना, अंखियां रोवे पर दीखे ना।
बिन हरि प्रीति न चैन मिलेगा, स्वप्निल दुनिया मन जाने ना।
हरि हरि जप ले प्रीति बढ़ा हरि, नाच लहर बन सागर है हरि।
तेरा कुछ ना नाचे सागर, मन सन्तोष करो जप ले हरि।

प्यार बढ़ा ले तेरा सर्जक, इसकी मर्जी नाचे जब तक।
वह ही ज्ञानी बुद्धि जगावे, बिन हरि कृपा न पहुँचे उस तक।
हरि हरि गा मन सुन अनहद धुन, काहे जग से प्रीति बढ़ाये।
सबके अपने अपने सुपने, काहे उसमें फंस फंस जाये।

हरि हरि गा मन बन्जारा बन, बहता जा बह हरि की नदिया।
कौन यहाँ तू खेल रहा वह, आवें भर भर तेरी अंखियां।
हरि बिन कृपा न हरि गा पावे, चरण पकड़ ले मन वह छलिया।
हरि हरि जप मन मर्जी उसकी, जहाँ ले चले तेरी नैया।

434.

बिछुड़ा पीव मोहि मिल जावे, गीत सुना मन ऐसा कोई।
आवे याद न आवे चैना, अंखियां मेरी निशदिन रोई।
उस बिन सूना सूना लगता, पथ पर ठोकर खा कर गिरता।
छल कर मुझसे छिपा कहाँ वह, इन नयनों से पानी गिरता।

सुमरन उसका प्यारा लागे, जियरा उस बिन काहे जीवे।
मिट जाऊँ ले नाम उसी का, उस बिन कुछ न मोहि को भावे।
प्यासी अंखियां हरि दर्शन को, जियरा मेरा उसको तरसे।
जलूं विरह में मिले न प्रियतम, अंखियां मेरी हरपल बरसे।

निर्मोही वह प्यारा छलिया, चरण पकड़ ले देगा छैया।
बाट निहारूँ खोजूँ उसको, क्यों भूला वह मुझको रसिया?
मन जप ले हरि सुख का सागर, पार लगावे वह ही नैया?
पकड़ा जिसने हरि का दामन, ना दुख से फिर रोती अंखियां।

435.

कुछ पल की मिल जाये खुशियां, मिट जाऊँ गीतों को गा कर।
तेरी दुनिया तू ही मालिक, अंखिया झरती मेरी झरझर।
हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, इस जीवन के तुम ही मालिक।
नजर उठा कर हमें देख लो, देखूं पथ ना आये अब तक।

फूल तुम्हारी बगिया के हम, झरता आंखों से पानी है।
नमन करो स्वीकार हमारा, बालक तेरे अज्ञानी है।
ले चल मेरी नैया खेवट, जियरा मेरा करता धकधक।
नयन बहाये आंसू मेरे, शरणागत रख आया मै थक।

ऋषि मुनि योगी ध्यान लगाते, विरह तुम्हारा हरपल जलते।
मुझको प्यारा जला इसी में, पड़ू. चरण में विनती करते।
तुम बिन कुछ भी मोहि न भावे, इतना ही वर मुझको देना।
जब तक जीवन जपूं तुझे मैं, बाट तुम्हारी देखे नयना।

436.

नयन प्यार तेरा पाने को, तड़फे छल क्यों करता छलिया।
पल पल जीवन दूभर लागे, आ जा पड़ता तेरे पैंया।
सकल सृष्टि के स्वामी हेा तुम, प्यार हमें दे आंसू आता।
अन्तर्यामी सुख के दाता, जिय मेरा काहे घबराता।

अंधियारे में दीप जला दो, पार करो नौका खेवट बन।
कष्ट हरो हे संकट मोचन, अंखियां बरसे यह सावन बन।
अंखियां रो रो लाल हुई है, आशा में कब होय सुबेरा।
अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढे तुमको पर मन मेरा।

पक्षी उसमें कलरव करते, मुरझाई बगिया खिल जाती।
जीवन में आता बसन्त हरि, जब भी कृपा तेरी होती।
हरि हरि गायें तुझे मनायें, सुपनों में भी तू ही आये।
थक हारा मैं तुझे पुकारूँ, शरण राख ले आंसू आये।

437.

हरि दर्शन को घूम रहा मैं, रंग बदलता सब पल पल में।
किसे कहूँ मैं अपना बोलो, तन भी यह ना मेरे बस में।
हरि तुम मुझसे प्रीति बढ़ा लो, सफर कटे तेरी यादों में।
नयना मेरे रिमझिम बरसे, बस जाओ मेरी सांसो में।

आ जा मोहन सूनी बगिया, तुम बिन रास न होवे रसिया।
बजा बांसुरी छम छम नाचूं, देखो बहती मेरी अंखियां।
अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढे फिर भी मन यह मेरा।
खड़ा राह में करूँ प्रतीक्षा, देख हमें लो होय सुबेरा।

गिरूँ जहाँ मैं तुम्ही थामते, न हम फिर भी तुम्हे जानते।
अपनी कृपा सदा तुम रखना, देख हमें लो नयना बहते ।
हरि हरि जपते बीते जीवन, मुझ अज्ञानी के तुम हो धन।
नयनों में हो छवि तुम्हारी, सुने कान यह बन्शी की धुन।

438.

आस लगाये बैठा कब से, स्वामी मेरे तू ही पालक।
तुम बिन रोये मेरी अंखियां, बहे नीर यह पहुँचे तुम तक।
इस जीवन को देने बाले, प्यार हमें दे दे मतबाले।
सकल सृष्टि के मालिक हेा तुम, देखो पड़े पैर में छाले।

ज्ञानी तू ही ज्ञान हमें दे, अंधियारे में कर प्रकाश दे।
बालक तेरे नहीं भुलाना, बढ़े प्रीति मुझमें यह वर दे।
हरि दर्शन को प्यासी अंखियां, कितनें बीते जनम न जाना।
खिले फूल जो मुरझाया है, गाऊँ सदा तेरा तराना।

जनम जनम से साथ तुम्हारा, बना हुआ फिर भी बन्जारा।
दृष्टि मिले तो खुशियां झरती, साथ सदा ना दूर किनारा।
मन हरि हरि गा लय हो उसमे, प्रियतम तेरा भूल उसे ना।
साथ सदा मन जप ले उसको, उसमें रम जा भय रहते ना।

439.

सोचता क्या मन यहाँ है, यह नहीं तेरा जहाँ है।
डोर उसके हाथ में है, याद कर वह छिप गया है।
जप उसे जपते रहो मन, ना सुरति टूटे कभी मन।
जगत उसका खेल उसका, नाचे कठपुतली हम बन।

तृष्णा से जिय न जलाये, हरि भजन कर चैन आये।
स्वप्निल सारी यह दुनिया, जपो मन फिर गुनगुनाये।
हरि जपो मन सुख इसी में, जप मन मिट जाये चिन्ता।
भाग्य का वह ही विधाता, जप उसे मन चैन आता।

जप ले मन शाश्वत वह ही, सब कुछ पल पल में मिटता।
ना सताते जगत के दुख, हरि यहाँ जो याद करता।
धूप छाया खेल दुनिया, देखो मिटती है काया।
तप्त राहें ले कृपा हरि, जाये मिल तुझको छाया।

440.

माटी भी खशबू देती है, हरि कृपा तुम्हारी हो जाये।
नयनों में मेरे सदा रहो, यह चाह प्यार तेरा पायें।
जग के पालक करूणा सागर, अंखियां मेरी झरती झर झर।
घूंमू अनजानी गलियों में, बस एक सहारा तू हरि हर।

बगिया तेरी हम खिले यहाँ, तुझ ओर निहारूँ मैं माली।
इन आंखों को तो देख जरा, न मिटती कभी मेरी लाली।
हरि हरि गायें तुझे मनायें, जीवन सरिता बहती जाये।
प्यार सदा हरि मुझको देना, चाहूँ नयनों में बस जाये।

तेरी लीला मैं हूँ बालक, मेरी छाती करती धक धक।
कहाँ पुकारूँ छिपा छोड़ कर, मिले कृपा पहुँचूं चरणों तक।
बहते नयना आ सजना, मुझे प्यार का पाठ पढ़ा दे।
शमा जल रही हरपल तेरी, बनूँ पतंगा राह दिखा दे।

441.

गीत तेरे मैं नहीं कुछ, दर्द ले कर फिर रहा हूँ।
मांगता मैं प्यार तेरा, छाँव तेरी चाहता हूँ।
धूप छाया खेल दुनिया, छिपा खेले खेल छलिया।
जपे तुमको सांस मेरी, देख ले बह रही अंखियां।

बहता हूँ तेरी नदिया, जहाँ राखे वह ठिकाना।
तुम रहेा दिल में नहीं तेा, दुखों का बनता खजाना।
नयनों में बसना मेरे, सफर मे हो गीत तेरे।
बीतेगी यह भी घड़ियां, भूलना नहीं तुम मेरे।

हरि जपूँ जपता रहूँ मैं, सिर झुका कर विनय करते।
प्रीति हरपल हरि बढ़ाना, बस न मेरे अश्रु गिरते।
मैं बालक हूँ तुम्हारा, दुख भंजक मैं तो हारा।
सारे जग के तुम हो स्वामी, नाम तेरा ही सहारा।

442.

इस मेले में ठगे गये हम, जियरा लागे ना है अब दम।
ठगनी माया नाच नचावे, नयना मेरे बरसे रिमझिम।
अगम अगोचर पार न तेरा, करूँ प्रतीक्षा होय सुबेरा।
इन नयनों से आंसू गिरते, कह दे मुझको मैं हूँ तेरा।

हरि हरि प्यार बढ़े हरि हर पल, शरण राख ले बहता है जल।
माना स्वप्निल सारी दुनिया, काटे कटते ना तुम बिन पल।
पीड़ा अपनी किसे दिखायें, तुम बोलो ना आंसू आये।
बनूं पतंगा जलूं शमा पर, प्यार लिये तेरा मिट जायें।

दास तुम्हारा जनम जनम का, कठपुतली बन नाचूं जग में।
ज्ञान जगावे नाच वही हो, फिर रोता क्यों मैं पल पल में।
देखूँ तेरी ओर प्रभु मैं, अपना प्यार सदा तुम देना।
नयनों में तेरी मूरति हेा, अन्तिम तेरा मिले बिछौना।

443.

हरि की मर्जी आना जाना, जप ले बीते सुख से सुपना।
बतला क्या तेरे हाथों में, जो ज्ञान जगे वह ही करना।
जप ले हरि का तू प्यारा बन, लय हो उसमें दुनिया स्वप्निल।
सुख शान्ति छिपी बस उसें ही, गिरता रहता नयनों से जल।

जब बसती नयन हरी मूरति, तृष्णा के बादल छट जाते।
नैया को वह ही लिये चले, मैं मिटता सब दुख मिट जाते।
हरि जप ले मन पागल ना बन, कुछ पल सांसे आती जाती।
हरि ध्यान लगा सुमरन कर मन, तू देख यहाँ अंखियां झरती।

हरि हरि जप ले उसकी लीला, मैं छोड़ मिटे सारी पीड़ा।
कठपुतली उसकी नाच रहे, ले डोर हाथ करता क्रीड़ा।
हरि जप ले मन में शान्ति वहीं, ना माने मर्जी भटक कही।
अंखियां रोवे मन रट सजना, उसके बिन ना है ठौर कहीं।

444.

मन छोड़ पकड़ हरि को जी ले, जो ज्ञान मिला उसको पीले।
तेरा क्या बता नहीं तन भी, मिटता जाता हरि हरि जप ले।
हरि जप चलता जा इस जग में, उसकी कठपुतली है जग में।
सुमरन उसका ना छोड़ कभी, मन डोर उसी के हाथों में।

हरि जप हरि जप मन प्यार बढ़ा, बहते आंसू हरि चरण चढ़ा।
ना सुरति कभी उसकी छूटे, जैसा राखे सन्तोष बढ़ा।
तप बह मन उसकी मर्जी में, मन जपता जा हरि की लीला।
तू नहीं वही करता क्रीड़ा, बस तेरे क्या समझो छैला।

जो बुद्धि जगे तन करे वही, मांगो हरि से सुख छिपा वही।
उस बिन रोती रहती अंखियां, जप ले हरि को वह छिपा यहीं।
तृष्णा के बादल घूम रहे, मैं मैं करते हम टूट रहे।
हरि के चरणों में पड़ जा मन, मिट जाये तू हरि खेल रहे।

445.

मन हरि भजन करो जग माही, उस बिन इस जग में सुख नाहीं।
बहें नयन हरि चरण चढ़ा दे, अपना समझो कुछ भी नाहीं।
जैसा राखे उसकी मर्जी, कृपा मिले तब ही सुख पाई।
दन्श लगे पल पल में जग के, सुमर उसे पागल तर जाई।

इस पल का आनन्द उठा ले, जप ले हरि को प्रीति बढ़ा ले।
नैया ले जाये खेवट बन, दुनिया स्वप्निल शीश झुका ले।
बहें नयन से आंसू तेरे, याद उसे कर रखबाला वह।
आये जाये कौन पूछता, इस जीवन का मालिक है वह।

मन हरि जप हरि को जपता जा, मैं छोड़ो उसमें कुछ भी ना।
जपो प्रीति हरि में बढ़ जाये, क्षण भंगुर की फांस लगे ना।
हरि हरि जप पथ दीप यही है, उबल रहा सब ज्ञान यही है।
मैं को छोड़ पकड़ हरि दामन, प्राणों की भी प्यास यही है।

446.

काहे मनुआ अंखियां मीचे, जप ले हरि को नयना बरसे।
जप ले प्यारा नाम यही है, दुर्लभ ऋषि मुनि इसको तरसे।
जग में जब जब ठोकर खाये, दिल रोता तब कौन चुपाये?
जप ले हरि को वह दुख भंजक, स्वामी सबका करे सहाये।

जपो हरि अनजान यह गलियां, जाने न कित छिपा है छलिया।
जप ले नाम समझ मन प्यारा, मिल जायेगी तुझको छैयां।
स्वप्निल दुनिया क्या पाना है, जप हरि को बहते जाना है।
बस में कुछ ना सब कुछ धोखा, हरि का नाम लिये मिटना है।

नाच नचावे कठपुतली हम, क्यों जाने ना कितना है दम।
नियति लिये सुख दुख को भोगे, पल पल बरसे नयना रिमझिम।
जप ले मन हरि जपता ही जा, देख सत्य यह तन अपना ना।
ज्ञान जगावे वैसा नाचे, जप हरि को मन दीप जला ना।

जप हरि हरि मन हरि की लीला, तू है कौन करे वह क्रीड़ा।
मिटा स्वयं को तप यह कर ले, बहो लहर बन मिटती पीड़ा।
उसके ही सब चले इशारे, लाये ले जाये वह छलिया।
पकड़ यहाँ मन हरि का दामन, पार लगेगी सुख से नैया।

तू है कौन खिलौना उसका, सुमर उसे अमृत को पी ले।
बहे नीर हरि को ही दे दे, हरि हरि गा मन हरि को जीले।
हरि हरि जप हरि मन पर छाये, अंधियारे में दीप जलाये।
डगमग करती इस नौका को, बन खेवट वह पार लगाये।

कुछ पल जीना उसको पीना, दुनिया उसकी किसको कहना।
जपता जा मन ज्ञान वही दे, उसका दास बने मन रहना।
अंखियों में छवि नाचे उसकी, कान सुने बजती अनहद धुन।
सारे जग के वैभव फीके, हरि चरणों में पड़ जा तू मन।

447

दुनिया जंगल हरि भज पागल, लिये सहारा हरि चलता जा।
जाये किधर खो जाये लहर, मन सोच छोड़ हरि जपता जा।
हरि हरि जप ले सुख का दाता, सबका ही भाग्य विधाता वह।
नाचे उसकी कठपुतली बन, मन जप ले सदा सहारा वह।

हरि हरि जप ले मन विनय करो, वह पार लगावेगा नैया।
सुख दुख की नगरी में घूमें, तपते दिल को मिलती छैयां।
हरि नयन बसे डर दूर भगे, जब प्रीति हरी मन बस जाये।
सागर संग जाने लहर कभी , फिर लहर कभी ना घबराये।

हरि हरि गाओ हरि चरण पड़ो, मैं छोड़ो इसको सदा तजो।
उसकी मर्जी आना जाना, तू कौन यहाँ मन सदा भजो।
दे ज्ञान वही मन वह होना, मन चरण हरी के ना तजना।
जप उसे खिलेंगे पुष्प बहुत, मन उसे समर्पित हो बहना।

448.

मर्जी हरि की वही चलावे, याद करे हम आंसू आवे।
प्यारा तेरा नाम सदा है, बालक तेरे दर पर आवे।
देख हमें ले नयनन आंसू, नजरें अपनी फेर नहीं तू।
जीवन सारा तुमसे आता, सारे जग की नियति हुआ तू।

जप ले मन हरि करे उजाला, सारे जग का वह रखबाला।
बना लहर जो बहता जाये, तप करे पाये नन्दलाला।
स्वप्निल दुनिया जलता है दिल, काटे ना कटते है यह पल।
रास रचा हरि सुना दे बन्शी, नाचूं छम छम दिन जाये ढल।

हरि मन जप ले हरि की लीला, जप ले मिट जायेगी पीड़ा।
करो भजन हरि बहती किस्ती, लगे नहीं डर देखो क्रीड़ा।
मन तू कौन जगत है उसका, जप ले ज्ञान वही दे सुख का।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, जप ले हरि जिय होवे हल्का।

449.

ओम जपो मन ओम जपो मन, पकड़ो दामन नहीं तजो मन।
पार लगावेगा नैया को, सुमरन कर ले सदा भजो मन।
जपता जा मन उसकी लीला, करता वह इस जग में क्रीड़ा।
अंखियां रोवे उस बिन हरपल, जप ले ओम मिटेगी पीड़ा।

बन्जारा बन भटक रहे है, जपो ओम मिटते झंझट सब।
सोच सोच कर पागल होता, जपो ओम रखबाला है रब।
ओम ओम गा गीत उसी के, लिये चलेगा केवट बन के।
ज्ञान वही दे तुझे चलावे, चरण पकड़ मिटते दिन दुख के।

सांस सांस में बजे यही धुन, बरसे नयना जैसे सावन।
फीके पड़ते जगत भोग सब, छा जाता जब वह इन नयनन।
ओम ओम मन सदा उचारो, प्यास प्राण की सदा पुकारो।
सुख से बीतेगी यह घड़ियां, दास बनो ना उसे विसारो।

450.

दिल बता कैसे लगाये, पास ना तुम नीर आये।
खोजता अनजान गलियां, चाहता हूँ प्यार पायें।
तुम जगत के नाथ मालिक, दास मैं तो हूँ तुम्हारा।
बहते नयनों से आसूं, ले चलो दे कर सहारा।

दीनबन्धु करूणा सागर, देख ले अंखियां रही झर।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, बिन कृपा मिलता नहीं घर।
प्राण प्यासे नयन बरसे, तपे धरती मेघ बरसे।
देख लो नजरे उठाकर, कुछ मिले पल तुझे तरसे।

द्वार तेरे हम खड़े हैं, जायेगी ढल यह संध्या।
पा सके तुमको नही हम, माफ करना रोवे अंखियां।
मैं जलूं जलता रहूँ बस, ना विरह को तुम मिटाना।
मिट सकूँ यह शक्ति देना, ना रहे कोई निशाना।

451.

सुख दुख का चलता खेल यहाँ, मन हरि भज ले पा चैन यहाँ।
हरि सुरति लगे सब सोच मिटे, बहता जाये बन लहर यहाँ।
नाचे सागर तू कौन यहाँ, मैं मिटा उसी का जान जहाँ।
किससे करना शिकवा जग में, हरि चरण चढ़ा बस नीर यहाँ।

लाये ले जाये स्वामी वह, दे ज्ञान वही जो चाहे वह।
कठपुतली हम तेा उसकी हैं, कर सुरति डोर पर पकड़े वह।
हरि हरि गा मन यह कटे सफर, अन्तिम जाना उसके ही घर।
हरि हरि जप प्यारा लागेगा, फिर नहीं सतावे कोई डर।

हरि हरि जप मन जपता ही जा, मन समझ यहाँ कुछ ना अपना।
जो दिशा मिले चलता ही जा, परिवर्तन सब कुछ बस में ना।
हरि हरि जप ले हरि पीड़ हरे, दुख और न कोई दूर करे।
हरि हरि जप उसमें लय हो जा, सागर देखो यह खेल करे।

452.

प्यार पाने को तड़फते, मेरा नहीं तेरा जहाँ।
गिरते पल में खा ठोकर, बतला हमें खोजे कहाँ?
छिप गये हो किस जगह पर, न पता हम तेरा पातें।
ले चलो अनजान गलियां, नाथ तेरे पांव पड़ते।

तुम कृपा बिन हो न मंगल, घूमता फिरता मैं जंगल।
देख लो नजरें उठा कर, ईश जायेगा सुमन खिल।
कुछ मिले पल रूठी खुशियां, बरसे है मेरी अंखियां।
दास को अपना बना लो, जाये मिल तेरी छैयां।

नाव मेरी डगमगाती, खेवट बनो पार कर दे।
अर्चना करता रहूँ मैं, फूलो से झोली भर दे।
प्रीति अपनी हरि बढ़ाना, सुपनों में तुम ही आना।
दिल नहीं लगता यहाँ पर, नयन में मेरे समाना।

453.

चल उड़ चल मन कित जायेगा, अन्त जहाँ है वही आयेगा।
कितने सुपने देख यहाँ पर, चैन ठौर अपने पायेगा।
बहती जाती जीवन नदिया, ना रूकती बहती है अंखियां।
जप ले नाम उसी का प्यारा, तपते दिल को मिलती छैयां।

हरि हरि जप हरि ही की लीला, जप इससे मिट जाती पीड़ा।
अंधियारे में नाम सहारा, चैन न इस बिन करता क्रीड़ा।
हरि हरि जप ना थक जपता जा, रैन बसेरा दुनिया कुछ ना।
दुख के बादल छट जायेगे, पकड़ चरण हरि जग है सुपना।

हरि हरि जप हरि नयन बसा ले, मिटता सब मन शीश झुका ले।
आती जाती देख सांस को, मिटा स्वयं को हरि को जी ले।
हरि जपो ठौर ना दूजा, नीर बहें कर उन से पूजा।
खिले सुमन हिय दूर भगे दुख, जपो नाम हरि प्याला पी जा।

454.

मन ढूंढ रहा क्या पाना है, शाश्वत में मन लय करना है।
क्षण भंगुर स्वप्निल दुनिया में, सुख का बस यही खजाना है।
पग पग पर दन्श लगे जग में, आंसू बहते है नयनन में।
हरि प्रीति बढ़े गम सभी मिटे, कर्ता न बनो पड़ चरणन में।

हरि की लीला कठपुतली हम, वह नचा रहा हम नाच रहे।
कल क्या होगा हरि ही जाने, ना सदा कभी यह सांझ रहे।
हरि हरि जप ले मन चैन यही, वह ही छाया सब जगह वही।
उसकी मर्जी आना जाना, दो पल मेहमा फिर नहीं कही।

हरि हरि जप शान्ति मिले मन को, देगा विवेक जप ले हरि को।
दुख के बादल छंट जाते है, जपता जो रहा सदा हरि को।
बन लहर यहाँ हरि हरि जप ले, तू कौन यहाँ जो कुछ भी कह।
हरि की मर्जी में हो राजी, मैं मिटा करो तप सब ही वह।

455.

हरि हरि गा सब हरि की लीला, बस मिटे यहीं मन की पीड़ा।
तू कौन स्वयं को सौपं उसे, कर रहा जगत में वह क्रीड़ा।
हरि बिन न कोई ठिकाना है, बहता है सब बह जाना है।
थामा जिसने हरि का दामन, मैं मिटे नहीं कुछ पाना है।

परिवर्तित जग के रंग बहुत, जब शूल लगे मन दुखे बहुत।
हरि याद करो आंसू आये, जप ले जप में है शक्ति बहुत।
हरि हरि जप मन जपता ही जा, जो ज्ञान मिले चलता ही जा।
कठपुतली बन उसकी नाचो, अभिमान छोड़ पग में पड़ जा।

हरि हरि जप मन का कमल खिले, बह रही हवाएँ लिये चले।
मन नयन बसा उसकी मूरति, सब जग उसी का खेल चले।
मन पड़ जा हरि के चरणों में, ले चले वही दुनिया स्वप्निल।
हरि हरि गाओ हरि सुमरन कर, बिन उसके सुन्दर हो ना पल।

456.

उठे सदा तेरी धुन हरपल, नयन बहाते रहें सदा जल।
बसी रहे छवि इन नयनों में, धोता चरण रहूँ मैं हरपल।
कर न सकूं कुछ, कुछ ना जानूँ, प्यार मुझे दे तुमको मानूँ।
बालक तेरा ले चल मुझको, अंधियारे का दीपक जानूँ।

प्रीति बढ़े बीते यह जीवन, रूठ न जाना मुझसे साजन।
अगम अगोचर पार न तेरा, करूँ प्रतीक्षा तारे गिन गिन।
जाऊँ मिट ले नाम तुम्हारा, प्रीति बढ़े हरि हरपल तुझ में।
मिटे और हरि सारे सुपने, ज्ञानी मैं ना पडू. चरण में।

जीवन तेरा तुझसे आता, तू ही सबका भाग्य विधाता।
देख नयन से आंसू आता, प्यार हमें दे तुझे मनाता।
बल न मुझमें देख ले छलिया, दे दे मुझ को अपनी छैया।
पडू चरण में तुझे पुकारूँ, पार करा दे मुझको नदिया।

457.

करूँ सदा हरि विनती तुमसे, इन नयनों में तुम बस जाओ।
जहाँ ले चलो मर्जी तेरी, मिटे शिकायत तुम ही छाओ।
नाचूँ लहर बना सागर में, क्या बल है मेरा सागर में?
सुरति तुम्हारी बनी रहे बस, लगे साथ तू हरपल मुझमें।

ज्ञानी मैं ना प्यार चाहता, सर्जक मेरा भाग्य विधाता।
तुझे कहूँ ना किसे कहूँ मैं, सुन ले नीर नयन से आता।
दास तुम्हारा ना ठुकराना, मेरा सम्बल एक तुम्ही हो।
तुम बिन रोती रहती अंखियां, मुझे बता दो छिपे कहाँ हो?

जपता हरि हर हरपल तुमको, प्रीति बढ़े मिट पाऊँ तुमको।
विरह अग्नि हरि बढ़ती जाये, बनूं पतंगा पा लू तुमको।
ताप मिटे मन पी अमृत जल, भाग न मृगतृष्णा में है जल।
दूर भगे दुख जप सुखनन्दन, याद करो मन चढ़ा नयन जल।

458.

प्रीति यहाँ पल पल परिवर्तित, तेरी दुनिया तुझे समर्पित।
मुझे शरण में अपनी रख लो, दास तुम्हारा मन यह चिंतित।
दे अपने मन्दिर का कोना, जाये बीत उमरिया सारी।
जिय मेरा तो भर भर आये, दुनिया से मैं तो हूँ हारी।

अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी पूजें सब न नारी।
इस मेले में लाज राखना, बसो नयन में कृष्ण मुरारी।
माटी के हम बने खिलौने, सृजन हार कौन नहीं जाने।
अनजानी गलियों में भटके, बहते आंसू तुझे बखाने।

हरि हरि हर लो मेरी पीड़ा, नाम जपूँ तड़फे यह जिवड़ा।
जब भी कृपा तुम्हारी होती, बगिया खिलती होती क्रीड़ा।
हरि हर गायें तुझे मनायें, नैया मेरी पार लगाये।
चाह प्यार तेरा हम पाये, इन नयनों में आंसू आये।

459.

मन हरि भजन करो सुख पाई, अन्तस वह जप दुख मिट जाई। डगमग होती इस नौका को, खेवट बन वह पार लगाई। मन जप सब हरि की ही लीला, नाच नचावे करता क्रीड़ा। डोर हाथ में उसके नाचे, ध्यान डोर पर बिसरे पीड़ा।

जप मन उस बिन नहीं सहारा, तड़फे दिल ना मिले किनारा।
नयन बहाये आंसू हरपल, जप ले मन बनो हरि दुलारा।
हरि हरि बोल जोड़ मन रिश्ता, कटे सफर फिर डर ना लगता।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, सर्जक तेरा भाग्य विधाता।

हरि हरि भज मन गा उसके गुन, वही सुने ना हो निराश मन।
उस बिन कोई और सुने ना, सभी बह रहे ले अपनी धुन।
हरि हरि जपो नाम है प्यारा, कोई रूप जप लागे प्यारा।
अन्तस उसकी ज्योति जला ले, साथ जब तब कौन है हारा?

460.

झुक गया मैं झुक गया मैं, राख ले अपने चरण में।
अब न उठने की तमन्ना, नीर छलके, हैं नयन में।
प्यार की बस भूख मुझको, दास मैं तो हूँ तुम्हारा।
देखो बहते हैं आंसू, इस जग से मैं तो हारा।

गीत मैं गाऊँ तुम्हारे, करो कृपा पहुँचू द्वारे।
ज्ञानी मैं न अबल हूँ मैं, तुझ बिना न कोई तारे।
हरि बसो नयन में मेरे, पार हो जाये यह नैया।
प्रीति में लय हो तुम्हारी, भूलूँ सब जब तू रखैया।

गूंजती हरि धुन सदा है, क्यों हुआ मुझसे खफा है।
मैं भटकता फिर रहा हूँ, क्यों हुआ मुझसे जुदा है।
न फंसा तृष्णा में मुझको, चाहता बस प्यार दे दे।
याद ले तेरी मिटूँ मैं, भक्ति का वरदान दे दे।

461.

यहाँ विवशता में पड़ कर तू, लुटा रहा है कितने मोती।
हरि को भूला याद उसे कर, उस बिन प्यास कभी ना बुझती।
सबका रखबाला वह ही है, नाचे कठपुतली उसकी हैं।
सुख दुख के वह खेल खिलावे, डोर हाथ में उसके ही है।

हरि जप शान्ति मिलेगी मन को, कर्ता ना बन पकड़ चरण को।
आना जाना खेल उसी का, तू है कौन देख इस पल को।
ज्ञानी वह ही बुद्धि जगावे, तू काहे को मन इठलावे।
करी विधाता सारी रचना, अज्ञानी भी वह उपजावे।

जप हरि हरि वह सुख का दाता, अंधियारे में ज्योति जलाता।
स्वप्निल जग ले स्वप्न उसी का, नीर बहें पर दिल सुखपाता।
हरि हरि जप कुछ पल का खेला, विछुड़ा जाता सारा मेला।
सिर रख दे हरि के चरणों में, लिये चलेगा तुमको छैला।

462.

हरि जपे जपते रहे हम, जप हरि हो जायें लय हम।
ना खता कोई हमारी, नाचे कठपुतली बन हम।
नयन में आंसू हमारे, रख ले सेवक को द्वारे।
बीत जायेगी उमरिया, तुम बिन हम रोये प्यारे।

तेरी लीला हूँ बालक, चल रहा पर मैं गया थक।
दे दे अपना तू दामन, आ सकूँ मैं तुझ चरण तक।
स्वप्न दुनिया छले छलिया, ढूंढू दो पल की खुशियां।
नयनों में बस जाओ तुम, तप्त दिल को मिले छैयां।

नमन को स्वीकार कर लो, तम यहाँ है दूर कर दो।
बन सकूँ तेरा दुलारा, नयन सूने प्यार भर दो।
सारी दुनिया का मालिक, नीर गिरें पहुँचे तुम तक।
प्राण प्यासे हैं तड़फते, जल पिला मैं हूँ गया थक।

463.

बह रहे हैं नीर देखो, मेरी नैया तुम खे दो।
जानते कुछ ना विवश हम, कर्म हो शुभ ज्ञान दे दो।
खोजें सुख वह तुम्ही हो, जले दीपक जब कृपा हो।
नाचे कठपुतली बन हम, बिन कृपा वर्षा नहीं हो।

प्रीति हरि बढ़े ही जाये, दास को यह दान देना।
दुख अनेको स्वप्न दुनिया, चाहता तेरा विछौना।
तुम मेरे दिल में रहना, जायेगा मिट गम घेरे।
बजती अनहद की जो ध्वनि, प्राण भीगे तुझे टेरे।

नाम तेरा ही सहारा, लहर सा हरि बहे जाऊँ।
साथ तू फिर क्या किनारा, जप तुझे मैं को मिटाऊँ।
बहती यह सांसे जब तक, याद में यह झरे नयना।
प्यार हरि अपना बढ़ाना, नयनों में मेरे बसना।

464.

मन हरि भज हरि को ही जी ले, जो जख्म लगे हरि से सीले।
दो दिन का यह रैन बसेरा, हरि भज शान्ति सुधा को पीले।
पल में होता महिमा मंडित, पल में होती महिमा खंडित।
रंग बदलती इस दुनिया में, मन यह होता रहता रंजित।

शाश्वत सागर लहर यहाँ हम, जाये कहाँ न जान सके हम।
साथ सदा जप समझ बढ़ा ले, खेला उसका कठपुतली हम।
होनी बैठी पांव पसारे, मन हरि जप तू काहे डर रहा।
नाम सहारा मन तू ले ले, मिटता मैं हरि खेल चल रहा।

जीवन दाता जप सुखदाता, उस बिन चैन कभी ना आता।
तृष्णा के जंगल में फंसकर, मन तू काहे नीर बहाता।
मैं छोड़ो हरि सुमरन करले, प्रीति बढ़ा मन हरि हरि जप ले।
दन्श सतायेंगे ना जग के, हरि को अपने नयन बसा ले।

465.

हरि को जप जग से तर जाई, जतन करो मन वह सुखदाई।
नाम उसी का प्यारा जग में, जप ले डर सारे मिट जाई।
फैला तृष्णा का जंगल है, गहन अंधेरा भटके मन है।
हरि बिन कृपा न हो उजियारा, जप ले वह ही आनन्दघन है।

जप ले हरि हरि दिशा मिलेगी, तेरी नैया पार लगेगी।
मुरझाई जो बगिया तेरी, जप ले हरि को खूब खिलेगी।
जप हरि हरि मन भूल न जाना, जप ले शाश्वत सत्य वही है।
सब का रखबाला हरि ही है, प्राणों की भी प्यास यही है।

जप हरि हरि सब हरि की लीला, काहे मन को करता मैला।
कर विश्वास उसे जपता जा, देखेगा हरपल संग छैला।
हरि हरि जपो मनाओ उसको, बहे नीर कर याद उसी को।
स्वप्निल सब कुछ मिट जाना है, जप सुख के पल छोड़ न उसको।

466.

हरि सुनो विनती हमारी, चाह तेरा प्यार पाये।
खोजता अनजान गलियां, दिल बता कैसे लगाये।
दुख हरो तुम दुख के हर्ता, कर कृपा जो चैन आये।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, पास ना तुम नीर आये।

तुम जगत के ईश मालिक, देख ले अंखियां रही झर।
ले चलो दे कर सहारा, बिन कृपा मिलता नहीं घर।
द्वार पर तेरे खड़े हैं, जायेगी ढल यह संध्या।
पा सके तुमको नहीं हम, दर्द यही रोवे अंखियां।

मैं जलूँ जलता रहूँगा, ना विरह मेरा मिटाना।
बन पतंगा जाऊँ मिट पर, चाहता हूँ प्यार पाना।
अबल हूँ तुम प्यार दे दो, शाम जाती नीर लख लो।
जाओ बस नयनों में तुम, नमन को स्वीकार कर लो।

467.

ढूढ़ते फिरते ठिकाना, तृप्त मन हो पर न जाना।
दुनिया मे रंग अनेको, मन भटकता क्यों न माना?
हरि जपें मन शान्त होवे, जप तुझी में लीन होवे।
चाहते मिट जायें सारी, कठिन पल है कुछ न जाना।

सफर कैसा ना खबर है, पास जल ना पी सके हैं।
हरि कृपा होवे तुम्हारी, याद में नयना झरे है।
अतृप्त मन ज्ञान दे दे, तृप्त हेा वह राज दे दे।
फिर रहा बन कर भिखारी, अब न ठुकरा प्यार दे दे।

बगिया यह कितनी प्यारी, ढूंढता फिरता ठिकाना।
क्यों जलन मिटती नहीं है, गुजर जाता है जमाना।
हरि चरण में राख अपने, हम गीत तेरे गा रहे।
बीत जायेगी उमरिया, कुछ भी शिकायत ना रहे।

तेरा बालक तू पालक, आंख रोती धड़कता दिल।
बन सकूँ तेरा दुलारा, तड़फता दुनियां यह स्वप्निल।
हरि जपे जपते रहे हम, नयन से गिरता रहे जल।
प्रीति ना कम हो कभी भी, आ नयन में तोड़ ना दिल।

468.

उड़ उड़ जाये ठौर न पाये, कैसे इस मन को समझाये।
प्रीति डगर की राह अनूठी, मिटे तभी मन उसको पाये।
मन हरि हरि जप मिटा स्वयं को, नीर बहे कर अर्पण उसको।
बन्जारा तू क्या है तेरा, कठपुतली तू देख स्वयं को।

हरि हरि जपो हरी की लीला, काहे को मन करता मैला।
आना जाना उसकी मर्जी, बस तेरे क्या खेले छैला।
स्वप्निल दुनिया छलता छलिया, पड़ जा मन उसके तू पैयां।
तुझे डरावे रात अंधेरी, उस बिन पार लगे ना नैया।

जप ले मन हरि यही सहारा, लिये जा रही हरि की धारा।
छोड़ यहाँ मैं पी अमृत को, शाश्वत वही सदा मैं हारा।
बहता जा बन लहर यहाँ तू, ध्यान न तज मन सुमरन कर ले।
उसका नाम बहुत है प्यारा, नयन बसा मन चरण पकड़ ले।

469.

अपनी अपनी नियति लिये सब, घूम रहे इस जग के अन्दर।
अपना प्यार हरी तुम देना, नहीं सूखता नयन समुन्दर।
प्यासे प्राण पिला तू पानी, इस जीवन का तू ही माली।
सूखे बगिया रोवे अंखियां, आ जा तुम बिन जीवन खाली।

यहाँ विवश सब अपने घेरे, कृपा मिले तो तुझको टेरे।
बहता जीवन बहता जाये, मैं मिटती सब हरि ही घेरे।
हरि हरि गा मन सुन उसकी धुन, कठपुतली बन करो जतन मन।
डोर हाथ उसके नाचे तू, उसे भूल ना जप ले तू मन।

जपता जा बस वह ही पालक, उस बिन कोई नहीं है खेवट।
अंधियारे में ज्योति वही है, जपले हरि वह हरता संकट।
वही किनारा वही सहारा, मिटे लहर हरि खेला सारा।
दो दिन का यह रैन बसेरा, जप हरि बहे न आंसू खारा।

470.

पी पी रटूँ न देखे छलिया, खो जाऊँ मैं रहे न जीया।
मन तू गीत सुना दे कोई, आवे याद मिले जो रसिया।
जग में भटक भटक मैं हारा, लाल हुई रो रो यह अंखियां।
नीर बहें ले चलो वहाँ पर, जहाँ छिपा है प्यारा छलिया।

मैं क्या सब कुछ खेल हरी का, जीवन क्या बस यह दो दिन का।
दर्द भरा दिल लेकर घूंमू, बस जा दिल में तू ही मन का।
कट जायेगी रैना सारी, जपूं तुझे ना भूल मुरारी।
दास तुम्हारा न ठुकराना, सृष्टि अर्चना करती सारी।

नयन बसे छवि मिटे सभी सुधि, जग कर्ता हरि सब कुछ जाने।
द्वार खड़ा हूँ हाथ जोड़ कर, कृपा तुम्हारी हम पहचाने।
जपता पार लगा दे नैयां, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
अंखियां रो रो हार चुकी है, कैसे पाऊँ तुमको सैंया।

471.

जीवन है यह बहती धारा, इसका कोई नहीं किनारा।
ले जाये वह बहना होगा, मन हरि जप ले वही सहारा।
हरि हरि जप अन्तस में वह ही, बाहर भीतर खेले वह ही।
जल में रह कर फिर भी प्यासी, किस्मत कैसी जाने हरि ही।

पल पल रंग बदलती दुनिया, उड़ उड़ जाये हरि बिन जीया।
शूल लगे हर पल इस जग में, अंखियां बरसे तड़फे जीया।
नाम सहारा ले मन हरि का, उस बिन जख्म भरे ना दिल का।
चरणों में गिर जा मन उसके, शाश्वत वह प्यारा बन उसका।

हरि हरि जपो चैन आवेगा, मिटता मैं हिय सुख पावेगा।
आना जाना उसकी मर्जी, कौन यहाँ तू भ्रम टूटेगा।
लहर बना बह जप हरि हरि मन, सुन बजती उसकी अनहद धुन।
सुरति रहे मन हरपल उसकी, अंखिया गेरे नीर यही धन।

472.

ले चलो दे कर सहारा, नाथ हम बालक तुम्हारे।
तुम कभी ना रूठ जाना, आता मैं तेरे द्वारे।
मेरी नाव के खिवैया, तुम बिन रोती यह अंखियां।
बह रहा मझधार में हूँ, थामो तुम मेरी बैयां।

प्रीति प्रभुजी बढ़े तेरी, मैं हूँ कठपुतली तेरी।
जपूँ प्यारा नाम लागे, लो शरण में हो न केरी।
दीन बन्धु दुख के हर्ता, इस जग के तुम ही भर्ता।
नयन में तुम बसो मेरे, नयन से है नीर गिरता।

तृष्णा में मन है डोले, प्यासा है नहीं मिले जल।
प्रभु कृपा हो जब तुम्हारी, प्यासे को जाता मिल जल।
तू ही शाश्वत तेरी लीला, बीच में पड़ लेता पीड़ा।
पतवार तेरे हाथ में, ज्ञान दे रो रहा जिवड़ा।

473.

शाश्वत चुन या क्षण भंगुर चुन, मर्जी तेरी कुछ सोच जरा।
पग पग पर दन्श लगे जग में, जप शाश्वत पा मन चैन जरा।
कोई है लहर बड़ी छोटी, सब भाग रही निज ले मस्ती।
पकड़ो न आये हाथ कोई, यह देख देख अंखिया रोती।

जप हरि शाश्वत उसकी लीला, वह नाच नचावे कर क्रीड़ा।
आना जाना सब खेल चले, मैं छोड़ हटेगी मन पीड़ा।
सब क्षण भंगुर यह भी तो तन, जप हरि को वह ही शाश्वत मन।
मन समझ इशारे उसके तू, कर सुरति उसी की बह ले मन।

पल में सब रंग बदलता है, मन ज्ञान यही हरि भजता है।
कठपुतली उसकी नाच रहे, दे ज्ञान वही तन करता है।
सुमरो हरि शाश्वत तजो नहीं, धारा उसकी ले जाये कहीं।
बन लहर बहो इस सागर में, संग वही लगे डर नहीं कही।

474.

खिले तुम्हारी बगिया में हरि, अपनी कृपा बनाये रखना।
दर्द बहुत आनन्द तुम्ही हो, अपना प्यार सदा तुम देना।
सुख दुख की जग आँख मिचौनी, नहीं किनारा अंखियाँ बहती।
नाम तेरा बस यह सहारा, सुखसागर मैं करता विनती।

इन नयनों में तुम बस जाओ, सुने कान संगीत तुम्हारा।
ना भटकाओ तृष्णाओं में, मेरे जीवन का आधारा।
तेरा जीवन कौन यहाँ मैं, बहती नयनों से है गंगा।
ऋषि मुनि ज्ञानी सभी तड़फते, तुम बिन कृपा न हो मन चंगा।

बन्शी की धुन मुझे सुनाकर, पार लगा दे जीवन नैया।
दास तुम्हारा न ठुकराना, देखो बहती मेरी अंखियां।
उठी लहर लय हेा सागर में, जीवन का तो सत्य यही है।
संग मेरे तू मिटे बोध ना, प्यार तुझे दे चाह यही है।

475.

सुख की आशा में मन डोले, ले चल मुझको होले होले।
हरि पार लगा मेरी नैया, कह तुम बिन हम किसको बोले।
सुनने को कोई नहीं यहाँ, दिल की पीड़ा कैसे खोले।
अन्तर्यामी जग के पालक, देखो आंसू यह क्या बोले।

इस जीवन के तुम ही सर्जक, तुम ही तो भाग्य विधाता हो।
कठपुतली बन कर नाच रहे, दो प्यार हमें तड़फाते हो।
सूनी बगिया ना फूल खिले, बोलो तुमसे किस तरह मिले।
अज्ञानी मैं कुछ ना जानूं, पर आशा तेरा प्यार मिले।

मैं अबल नाथ बालक तेरा, चरणों में अपने रख लो हरि।
ढलती जाती संध्या देखो, जिद छोड़ों देखो अब तो हरि।
तू शाश्वत मैं क्षण भंगुर हूँ, नयनों में तुम बस जाओ हरि।
श्वासों में गीत उठे तेरे, दो ज्ञान वही पाऊँ मैं हरि।

476.

कोई बड़ा नहीं है छोटा, सुपना नयनों का ना टूटा।
प्रीति में अपनी रंग मोहन, जंगल राज यहाँ सब खोटा।
बसो नयन में चैन मिले तब, कोई चाह रहे ना बाकी।
धोये चरण नयन का पानी, देखू सब में तेरी झाँकी।

पाप पुण्य सुख दुख की छाया, पार लगा दे मैं घबराया।
पड़ू चरण में दास बना ले, मुझ पर रखना अपना साया।
कर्म करूँ शुभ ज्ञान तू ही दे, अन्तस की पीड़ा को हर ले।
जग में तेरे चले इशारे, जानूँ संग तू सब भय हर ले।

अज्ञानी पर बालक तेरा, अपनी कृपा बनाये रखना।
अंधियारे में दीप जलाना, विनय करूँ बहते यह नयना।
कुछ न जानू दास तुम्हारा, याद लिये मैं लय हो जाऊँ।
हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, तेरे सुमरन से बल पाऊँ।

477.

खोना है क्या पाना है क्या, हरि राखे जैसे है रहना।
दे दिल को शान्ति वही हरि जप, मन देख जगत है इक सुपना।
सुख दुख का चलता खेल यहाँ, कितना बस में तू जान यहाँ।
हरि हरि जप ले समझाले मन, जो ज्ञान जगे तन करे यहाँ।

हरि हरि जप खेल सभी उसका, हरि नयन बसा प्यासी अंखियां।
अन्तिम पल तक दे साथ वही, ना भूल उसे प्यारा रसिया।
विश्वास करो मन हरि जप ले, ना भटके नैया तप कर ले।
आना जाना खेले छलिया, पल यहाँ मिले कुछ हरि भज ले।

ले नाम सहारा ब्रह्म वही, यह सुरति रहे सब जगह वही।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, मर्जी उसकी जा रहा वही।
जपले मन सागर नाच रहा, क्या जोर लहर का कभी रहा।
बन लहर करो हरि का सुमरन, फिर लगे साथ वह सदा रहा।

478.

गम यहाँ बहुत स्वप्निल दुनिया, यह देख देख रोवे अंखियां।
दो प्यार हमें बस चाह यही, बीतेंगी सुख से फिर घड़ियां।
अपनी हरि कृपा सदा रखना, नयनों में तुम मेरे बसना।
सांसो में हो संगीत तेरा, मैं दास तुम्हारा न तजना।

मेरे खेवट ना भूल मुझे, तुम छिपे कहाँ रोवे अंखियां।
बालक तेरा नैया डोले, पड़ता हूँ मैं तेरे पैयां।
जग के कर्ता भर्ता हर्ता, मैं हाथ जोड़ विनती करता।
तुम शरण रखो मुझको अपनी, इन अंखियों से है जल गिरता।

सूखे ना नयनो के आंसू, बिन तेरे कहो कहाँ जाये?
हरि सांस गीत तेरे गाये, जपते जपते लय हो जायें।
कठपुतली तेरी नाच रहा, इन अंखियों से है नीर बहा।
बस चाह प्यार की मिल जाये, लागे सब तू ही खेल रहा।

479.

मन साध शून्य क्या सोच रहा, बन ब्रह्म यहाँ खेल रहा।
केवल्य यही मिट जा तू मन, शाश्वत वह ही वह सदा रहा।
जप नाम सहारा शून्य ध्यान, क्यों दुख पाता करता गुमान।
मैं मिटा सुरति कर ले उसकी, छाया वह ही सब ओर जान।

आशा के पंख लगा उड़ते, ताने बाने बुन बुन जीते।
हरि प्रीति बिना ना चैन मिले, ठोकर खा खा अंखियां मलते।
हरि भज ले इसमें चैन छिपा, जप ले नैया के लिये चले।
उस बिन रोती रहती अंखियां, जप कांटो में भी फूल खिले।

घबराये जब जब यह मनुआ, सुमरन कर संग तेरे छलिया।
चलती उसकी कठपुतली हम, हरि हाथ डोर देगा छैंया।
ज्ञानी कोई है मन्दबुद्धि, बतला दे तेरे क्या बस में।
हरि हाथ जोड़ दे ज्ञान वही, जो ज्ञान जगे हो इस तन में।

480.

हरि ओम जपो मन उसे रटो, बस नाम सहारा जग में है।
टूटे जग की कड़वाहट से, मन शान्ति उसी से पाता है।
आया कहाँ से जाये कहाँ, खेला कुछ पल का चलता है।
हरि ओम जपो दे ज्ञान वही, मन चैन न उस बिन पाता है।

क्षण भंगुर सब पल में मिटता, जग से ना प्रीति कभी करना।
हरि प्रीति बढ़ा हिय सुमन खिले, शाश्वत हरि में मन लय करना।
मन अथक कहानी इस जग की, उसकी सुगन्ध चहुँ दिश बटती।
वह ही माली कर नमन उसे, देखो तेरी बगिया खिलती।

हरि हरि जप ले हरि की लीला, कर रहा यहाँ वह ही क्रीड़ा।
पतवार सौंप हरि हाथों में, मिट जायेगी सारी पीड़ा।
आये आंसू मन उसको जप, पड़ चरणों में हरि को ना तज।
उसकी दुनिया जैसा राखे, दे ज्ञान वही तू उसको भज।

481.

बन्शी बाजे हरषे जियरा, तपते दिल को देता छैयां।
करो विनय मन सदा उसी से, नहीं रूला पड़ता मैं पैंया।
छोड़ छिप गये तुम भी मुझको, सुने न कोई जीवन रूखा।
क्या कसूर जो मुझसे रूठा, नयनों का पानी ना सूखा।

अज्ञान घना बालक तेरा, पथ दिखला दे गिरता है जल।
नीर नहीं नयनों के सूखे, धड़के दिल कैसे पाऊँ मिल?
सब ओर खेलता है तू ही, अंखिया मेरी फिर क्यों रोई?
पार लगा दे मेरी नैया, हरि बनो नहीं तुम हरजाई।

जग की प्रीति यहाँ सब झूठी, मेरे दिल से कभी नहीं जा।
मूंदू आंखे कभी नहीं जा, नयनों में तू मेरे बस जा।
लहर बना मैं बहता जाऊँ, सदा संग तेरा मैं पाऊँ।
सुमरन तेरा हेावे हरपल, जपते तुमको लय हो जाऊँ।

माफ करो हरि दोष हमारा, अज्ञानी हूँ कुछ ना जानूं।
पड़ा चरण में हरि मैं तेरे, तुम बिन कृपा न हो कुछ मानूं।
प्यासे प्राण पिला दे पानी, सारे जग का तू ही दानी।
अंखियां रोवे तुझे पुकारे, न तड़फा थोड़ी जिन्दगानी।

482.

बहता जाता जीवन हरि हरि, प्यासी अंखियां तुम बिन हरि हरि।
अज्ञानी ज्ञान तुही देता, नयनों से जल बहता हरि हरि।
हरि पार लगा दो यह नैया, सागर गहरा रोवे अंखियां।
मेरे खेवट ना भूल मुझे, शरणगत मैं पड़ता पैयां।

मेरे सर्जक मेरे पालक, जियरा मेरा करता धक धक।
कुछ दीखे ना अंधियारे में, मैं थका राह तेरी तक तक।
अपने मन्दिर में तुम रख लो, अपना हरि प्यार मुझे दे दो।
मैं सदा करूँ तेरी पूजा, नित प्रीति बढ़े इतना कर दो।

मैं हार गया बल ना मुझमें, बहता हूँ गा तेरे नगमे।
हरि नयन बसे सब पीड़ मिटे, तू ही तेा नाच रहा सब में।
हरि हरि हरि हरि हरि हम गाये, गाते गाते लय हो जाये।
ना खता पता मालिक तू ही, देखो नयना आंसू आये।

483.

सोचता मन क्या यहाँ है, तू नहीं हरि का जहाँ है।
वह नचाता नाचता है, बस बता कितना यहाँ है?
हरि सुमर ले हरि सुमर ले, छूट जाये व्यर्थ चिन्ता।
नयन रोवे याद कर ले, क्यों नहिं तू मेरी सुनता।

धैर्य जो दे करे आशा, जप सहारा जान वह ही।
जप उसे जपता चला जा, प्राण प्यासे प्यास वह ही।
जप हरि बरसेगे नयना, न यहाँ मन जग से कहना।
दिल में उसकी याद लिये, इस जग में चलते रहना।

हरि जपो शाश्वत वही है, कुछ यहाँ पल फिर नहीं है।
मन लगा ले प्रीति हरि से, देख ले सब कुछ वही है।
जप हरि कट जाये रैना, ध्यान में मन सदा रहना।
पीड़ सबकी वह मिटाये, जप हरि मन जपते रहना।

484.

नगमे रोये तू ना आवे, कैसे इस दिल को समझावे।
बना हुआ तू क्यों हरजाई, आ जा अब तो क्यों तू सोवे।
फूल नहीं मुरझाई बगिया, क्या कसूर जो रोवे अंखियां।
जनम जनम का दास तुम्हारा, शरणागत पड़ता मैं पैया।

अपना प्यार मुझे तू दे दे, धरती तपती वारिस कर दे।
बाट निहारे मेरी अंखियां, अब तो मेरी प्यास बुझा दे।
तुझे मनाऊँ हरपल छलिया, माने ना क्यों दे दे छैया।
प्यार तुम्हारा मिल जाये तो, टूटे सब कर्मों की कड़ियां।

सुपने खोये खाली अंखियां, कह दो तुम बिन कैसे जीये।
ज्ञानी मैं ना बसो नयन में, देख देख हम तुमको जीये।
तुझे पुकारे अंखियां रो रो, प्रियतम प्यारा ले चल हारा।
मेरे खिवैया रूठ न जाना, तुम बिन कोई नहीं सहारा।

485.

इस जगत की प्रीति ढलती, आँख यह दिन रात रोती।
किसे हम अपना बनाये, नियति हरपल चाल चलती।
जप हरि जपते ही रहना, मन इसी में सदा बहना।
नाचता सागर लहर तू, कौन तू मैं को न रखना।

हरि जपो वह ही सहारा, और ना कोई किनारा।
सौंप दे पतवार उसको, जायेगी ले हरि धारा।
प्रीति मन उससे बढ़ा ले, बाजे अनहन सुन बयना।
बीते यह काली रैना, जप हरि जपते ही रहना।

दर्द दिल में नयन पानी, सब लिये अपनी कहानी।
कर्ता भर्ता हर्ता वह, कर सुरति न बहे पानी।
अंधी गलियां भटकता जिय, हरि भजो न उसको तजना।
दीप बन देता उजाला, जप हरि मन जपते रहना।

486.

जीना होगा खुद को पागल, तू पकड़ रहा किसका दामन।
जैसा पकड़े वैसा पावे, मन सोच डगर अपनी ले चुन।
क्षण भंगुर से मन प्रीति लगा, ना मिटे कभी दुख की हलचल।
शाश्वत हरि में मन ध्यान लगा, प्यासे प्राणों को मिलता जल।

हरि प्रीति बढ़े हिय कमल खिले, बहता नयनों से पावन जल।
जो भी न्हाये दुख मिट जाये, मुरझाई बगिया जाती खिल।
हरि की लीला हरि ही जाने, ले चले वही वह सब जाने।
बड़भागी वह इस जीवन में, हरि की कठपुतली जो माने।

लाये ले जाये जीवन में, जो ज्ञान जगे वह कर पायें।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, तेरे जीवन में वह छाये।
हरि हरि जप सारी जलन मिटे, नैया तेरी वह लिये चले।
सोच सोच मन होता पागल, जप ले ना दुख की एक चले।

487.

दीप जला दो अंधियारा है, सेवक अपना नाथ बना लो।
फिरूँ भटकता पथ ना मिलता, विनय करूँ तुम प्रीति बढ़ा लो।
अंखियां रोये तू ना दीखे, बतला दे हम कैसे जीवें?
तुम बिन लागे बगिया सूनी, झर झर अंखियां नीर गिरावे।

जीवन तेरा तू ही मालिक, अंखियां रोवे सुन ले माली।
प्यार मुझे तू अपना दे दे, आ जाये जीवन मैं लाली।
हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, बना लहर मैं बहता जाऊँ।
छूटे साथ कभी ना तेरा, ध्यान हटे ना तुमको पाऊँ।

हरि हरि जपूँ चढ़ाऊँ पानी, शरण तुम्हारी जग का दानी।
मैं कुछ ना सब कुछ तू ही है, उठती दिल में कहूँ कहानी।
चल चल कर मैं हार गया हूँ, देख पड़े है कितने छाले।
कर स्वीकार मुझे अपना ले, नाव मेरी तेरे हवाले।

488.

हरि बोलो मन हरि को जी लो, जख्म लगे मन हरि से सी लो।
अंखियां बरसे जियरा तड़फे, प्यारा वह ही सुमरन कर लो।
हरि बिन कोई नहीं सहारा, जाता जीवन भोर का तारा।
प्रीति जगे मन होय मगन मन, कट जाती दुनिया की कारा।

जप हरि हरि मन और नहीं धन, भाग्य खिलावे अपना खेला।
दे पतवार उसी के हाथों, करता क्यों मन अपना मैला।
जनम मरण सब हाथ उसी के, मन्द बुद्धि ज्ञानी सब फिरते।
कितनी योनी जग में घूमें, नयना झर झर झरते रहते।

हरि की लीला हरि ही जाने, छोड़ो मैं को मिटती पीड़ा।
सांस सांस में जप ले उसको, सागर नाचे उसकी क्रीड़ा।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, लहर बना बह जीवन बीते।
ले जावे सागर क्या बस में, साथ लगे हरि जो हरि जपते।

489.

हरि दर्शन को प्यासी अंखियां, प्यार मिले कट जाये रैना।
तड़फ रहा है यह दिल मेरा, आ जा आये दिल को चैना।
नाम सहारा है इस पथ में, कांटे बिखरे हैं इस जग में।
मिलती कृपा फूल बन जाते, अंखिया झरती उठते नगमें।

सुख दुख की बहती धारा में, सदा चाहता तेरी छैंया।
अपनी कृपा सदा हरि रखना, अनजानी जग की हैं गलियां।
सुमरन तेरा हरि हरपल हो, मन भटके ना तू दिल में हो।
नयनों में बस जाओ मेरे, जहाँ ले चलो मंजिल वह हो।

मेरा क्या सब तेरी लीला, जैसा राखे वैसा जीना।
डोर हाथ कठपुतली तेरी, डोरी पर हो मेरे नयना।
प्रीति तेरी में रंग जाऊँ, नहीं भूल मैं नाथ हूँ अबल।
इतना तो बल दे दे मोहन, जपूं तुझे ना होना ओझल।

490.

सारी दुनिया भागी जाती, खेल रचाया कैसा छलिया।
झरझर झरझर अंखियां बरसे, सबने तेरे गुन को गाया।
खो जाती अंखियां अनन्त में, प्राणों को ले जाता झोंका।
करता तब वह किसी पूजा, जाते को ना किसने रोका।

पल में तोला पल में माशा, दुनिया है यह एक तमाशा।
लिये आस हम कितनी जीते, आती कितनी हाथ निराशा।
सोच सोच हम पागल होते, जपे न हरि को आंसू गिरते।
मगन होय शाश्वत में जीवे, तजे सोच जो हरि को जपते।

जप हरि हरि दो पल का मेला, क्यों करता अपना मन मैला।
अंखियां रोवे याद उसे कर, देगा ज्ञान छिपा जो छैला।
हरि हरि जप सब मैल कटेगा, नैया तेरी लिये चलेगा।
उसकी मर्जी से तू आया, छोड़ उसी पर वही करेगा।

491.

शाश्वत हरि मन इसको जप ले, मिट जाती जीवन की पीड़ा।
सब जगह वही जो जपे हरी, मैं मिटती देखे वह क्रीड़ा।
जपते जपते मन चुप हो जा, पी अमृत को मन तू खोजा।
दो दिन का रैन बसेरा यह, ना चैन यहाँ हरि में खो जा।

खेला उसका ले याद बहो, मन उसे भजो मैं यहाँ तजो।
उसकी मर्जी में हो राजी, मन करो समर्पण सदा भजो।
मन जपो हरी है सत्य वही, सुख दुख जो दे लेना होगा।
अपने बस क्या मन सोच जरा, जो ज्ञान मिले चलना होगा।

हरि हरि जपो जपते ही रहो, मन चैन यही हरि सदा जपो।
हरि हरि को जप मन को कर लय, वह पीड़ हरे हरि सदा जपो।
बहता जा यहाँ लहर बन कर, नाचे सागर वह नचा रहा।
जप हरि को नयन बसा मूरति, देखे सागर संग सदा रहा।

492.

गा ना पाऊँ गीत तुम्हारे, स्वर खोये पर तुझे पुकारे।
नयनों से पानी गिरता है, शरण तुम्हारी हम तो हारे।
यहाँ डरावे काली रातें, रो रो सूज गई है अंखियां।
पकड़ हाथ ले चल कन्हैया, सदा चाहते तेरी छैयां।

सारे जग का तू दानी है, बहता आंखों से पानी है।
लाज राखना इस मेले में, बहती जाती जिन्दगानी है।
तुझे भजे मन चैना पाये, मेरे सुपनों में भी आये।
निरखू हरपल मूरति तेरी, इन नयनो से कभी न जाये।

सांस सांस में तू ही छा जा, ढलती संध्या अब तो आ जा।
सका न बन मैं तेरे काबिल, पर प्यासा हूं प्यास बुझा जा।
हरि हरि जपे मनाये तुमको, अन्तर्यामी जानो तुम तो।
दिल की पीड़ा तुझे दिखायें, द्वार पड़े है तेरे हम तो।

493.

पल पल में पलटे रंग यहाँ, जप हरि इस बिन ना चैन यहाँ।
किस किस से करे शिकायत मन, निज लिये वासना चले जहाँ।
सुख दुख के ले चल पार नाव, हरि जपो ले ले उसकी ठांव।
ना शान्ति यहाँ होली जलती, पड़ चरण में ले ले हरि की छांव।

हरि हरि जप ले बीते रैना, मन समझ इशारे फिर चलना।
सब कुछ वह बना खिलौना, नजरों से दूर नहीं करना।
हरि हरि जप ले दे शान्ति वही, दुखते दिल की है दवा वही।
अंधियारी काली रातों में , देता प्रकाश सब जगह वही।

जप ले हरि हरि मन चैन यही, कितना भटको है ठौर यही।
बहते आंसू दुनिया जंगल, प्यासे प्राणों को पिला यही।
हरि हरि जप जी पागल इसको, लाया ले जायेगा तुमको।
मन करो समर्पण हरि आगे, सांसे उसकी जप ले उसको।

494.

कितना साथ किसी का होगा, कौन पीड़ तेरी हर लेगा ?
मन हरि भज हरि हरि जपता जा, जान दिशा तुझ को वह देगा।
आये यहाँ अजनबी दुनिया, कितने रंग खेलता छलिया।
नीर न कोई उस बिन पोंछे, जप ले उसको पड़ जा पैंयां।

जहाँ ले चले मंजिल वह ही, लहर यहाँ तू सांगर सैंया।
जपता जा वह संग तेरे है, ना रोयेगी दुख से अंखियां।
हरि भज हरि भज ध्यान करो मन, नयन बसा लो उसकी मूरति।
कठपुतली हरि हाथ डोर है, सदा रहे मन उसकी सूरति।

जपो उसे मन करो विनय यह, बालक तेरे अज्ञानी है।
बहते नयन कर रहे पूजा, लाज राखना तू ज्ञानी है।
ज्ञान जगे तन करे वही हरि, तू ही तो औघड़ दानी है।
प्यासा मुझे पिला दे जल तू, नौका तो यह बंह जानी है।

495.

सुपना जीवन जोड़ू कण कण, आग बुझे ना तड़फे यह मन।
कहाँ जायेगी मेरी नैया, जानूं ना साहिल मेरा बन।
मैं क्या जब सब कुछ तेरा है, आशाओं ने क्यों घेरा है।
नीर गिराती अंखियां मेरी, मैं लेकर मन भटक रहा है।

जर्रा जर्रा घूम रहा है, कौन खोज पर लगा हुआ है।
जाने कुछ ना अंखियां बरसे, चाह प्यार की जुदा हुआ है।
सहे न जाते जग के दुखड़े, छिपे कहाँ तुम देखो प्यारे।
हरि हरि जपे मनाये तुमको, बस जाओ नयनों में मेरे।

अन्तहीन न कोई किनारा, नाम तेरा ही प्रभु सहारा।
गाते तेरे गीतों को हरि, लय हो जाये जीवन धारा।
मैं ना कुछ सब कुछ तू ही है, कर्ता भर्ता हर्ता तू है।
डगमग नैया नीर बह रहे, हरि संभालना सब तू ही है।

496.

तन मिटता यह भी न अपना, सोचे मन क्या जग में तेरा।
हरि भजन करो उसको सुमरो, मिट जावेगा दुख का घेरा।
जीवन है एक बबूला यह, क्या आस लिये मन तू फूला।
पल पल में गिरते आंसू है, मन भजन करो हरि क्यों भूला।

दो पल का जीवन हो क्या कल, जाने ना फिर भी हरि भूला।
अंखियों का नीर नहीं सूखे, मन सोच सोच में तू झूला।
हरि भजन करो मन शान्ति मिले, जग के ना दन्श सतावेगे।
कठपुतली हम तो हरि की है, हरि सुमर उसी को पावेगे।

अनजानी जग की हैं गलियाँ, ना कभी सूखती यह अंखियां।
हरि भजन करो सुख पावे मन, वह लिये चले तेरी नैया।
हरि जपो यहाँ मन जपता जा, जीवन की वह ही है मन्जिल।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, जप खिल जायेगा हिय कमल।

497.

पल दो पल की चाहें खुशियां, मन भटक रहा जग के अन्दर।
ठोकर पर ठोकर खा कर भी, संभले ना नीर गिरे झरझर।
हरि भजन बिना सुख नहीं यहाँ, बड़ भागी जपते उसे यहाँ।
स्वप्निल सारा यह खेल चले, जप हरि में हो जा लीन यहाँ।

दो दिन का रैन बसेरा यह, कल क्या होगा सब जाने वह।
कठपुतली बन हम नाच रहे, रख डोर नजर पर पावे वह।
हरि हरि जप जग चिन्ता मिटती, ले चले वही तेरी किस्ती।
आना जाना तेरे बस क्या, जप ले उस बिन अंखियां रोती।

मन जप ले हरि दे ज्ञान वही, स्वामी वह पड़ जा चरणों में।
मन प्यासे प्राण पिला दे जल, मन करो समर्पण तू हरि में।
क्षण भंगुर सुख दुख में नाचा, पर रहा सदा हरि बिन प्यासा।
ढलती संध्या ना भूल उसे, पावे हरि सब टूटे आसा।

498.

हरि जप ले मन जो शाश्वत सुख, वह छिपा हुआ तेरे अन्दर।
क्षण भंगुर में सुख नहीं यहाँ, अंखियां रोती रहती झर झर।
हरि प्रीति बढ़ा ना छोड़ उसे, जप ले जब तक ना शमा बुझे।
तू नहीं यहाँ हरि की लीला, मैं छोड़ प्यास सब यहाँ बुझे।

हरि याद करो निज नीर चढ़ा, खिलते मन के फिर सुमन यहाँ।
गिर जाता जो हरि चरणों में, ले चलता वह यह हरी जहाँ।
हरि बिन न कोई सहारा है, हरि से मन नयन लड़ा अपने।
मन कर विचार दुनिया जंगल, आशा क्या देखे क्या सुपने।

मन रटो उसे दे ज्ञान वही, ले चलता नौका सदा वही।
ले जाये जहाँ मंजिल तेरी, नयनों में हरि डर कहीं नहीं।
मैं क्या जब सब कुछ है हरि का, लेकर मैं को फिर क्यों भटका।
अज्ञानी को दे ज्ञान वही, सेवक बन मन हरि चरणन का।

499.

हरि जपो मन चैन आवे, ताप ना जग के सतावें।
उसकी कठपुतली नाचे, डोर पर धर ध्यान पावें।
बन पतंगा लय हो हरि में, खेल उसका ही चलेगा।
आये हम जायेंगे भी, ना जपा तो दिल जलेगा।

प्यार का भूखा जमाना, प्यार को न सबने जाना।
जो मिटा बन कर पतंगा, मैं मिटा कर उसे जाना।
मन जपो देगा सहारा, थके को भी है किनारा।
सुरति रख मन जा लहर बन, जाये ले उसकी धारा।

जपो हरि हरि जपो हरि हरि, जाने न कुछ दुनिया जंगल।
ले सहारा झुक चरण में, रैन बीते होता मंगल।
मिट रहा है खेल सारा, जप खुदी को तू मिटा दे।
गीत गा ले मन हरी के, प्राण प्यासे जल पिला दे।

500.

डगमगाती नाव मांझी, ले चलो नौका हमारी।
नीर न अंखियों के सूखे, देख ले यह नयना भारी।
जानता ना नियति अपनी, तुझ कृपा को चाहता हूँ।
कर्म शुभ हो ज्ञान देना, मैं सहारा मांगता हूँ।

मैं नहीं सब खेल तेरा, देखे पथ रोती अंखियां।
प्यार अपना हमें दे दे, जाये खिल मेरी बगिया।
दास तेरे क्यों खफा है, दुख रहा दिल तू दवा है।
आंख मेरी रो रही है, आजा अब क्यों छिपा है।

नयन मे प्रभु बसो मेरे, जाये मिट तृष्णा घेरे।
सत्य तू शाश्वत तुही है, प्यार दे मिट जाये फेरे।
हरि जपे जपते रहे हरि, प्रीति हरि नित बढ़े जाये।
न जुदा चरणों से करना, नीर यह तुमको मनाये।

501.

हरि ओम ओम हरि ओम ओम, नाचे धरती नचाता कौन?
बहते जाते बहती नदिया, न रूके पता ना नभ भी मौन।
सुख दुख इस जीवन में जाना, हरि तुमको ना पर पहचाना।
नयनों से सदा बहे आंसू, मैं बना पहेली यह जाना।

हरि लाज राखना करूँ विनय, ना जाने कब हो यहाँ सुबह।
मैं हारा थका मुसाफिर हूँ, चरणों में तुम दो मुझे जगह।
कर्ता भर्ता हर्ता तू ही, क्यों बरसे आंसू कह तू ही।
ना ताप सहा जाता जग का, दे प्यार पिला जल अब तू ही।

बरसे नयन ले याद तेरी, क्यों छिपा हुआ तू बता मोहि।
बालक तेरा मैं अज्ञानी, क्या है कसूर ना रूला मोहि।
हरि ओम जपें बीते जीवन, माना सारी दुनिया स्वप्निल।
नयनों में मेरे बस जाओ, जायेंगे बीत कठिन यह पल।

502.

मन जप ले हरि, तू कर ले तप, सारी दुनिया है एक जंगल।
किस किस से तू करे शिकायत, नीर गिरे अंखियों से हरपल।
हरि हरि जप ले जावे नैया, तपते दिल को देता छैया।
नाम सहारा है इस जग में, बस तेरे क्या पड़ जा पैया।

हरि हरि गा स्वप्निल सब मेला, जप ले मन कट जाये रैना।
प्रीति बिना हरि चैन मिले ना, तज मैं को मन हरि को जपना।
बस अपने क्या खेले छलिया, जग में रोती रहती अंखियां।
हरि हरि गा जपता जा तू मन, मिल जायेंगे तेरे सैंया।

प्रीति बढ़े हिय सुमन खिले मन, चिन्ता मिटती लिये चले हरि।
दो दिन का यह रैन बसेरा, जिया जले ना जप ले मन हरि।
हरि हरि गा सबका रखबाला, जाने सबकी अन्तर्यामी।
कठपुतली हम नाच रहे है, ध्यान डोर पर कर पा स्वामी।

सुख दे दुख दे उसकी मर्जी, जग में कितनी अंखियां बहती।
पतवार सौप दे हरि हाथों, वह लिये चले तेरी किस्ती।
मन रोम रोम में उसे बसा, इस जग से करना नहीं गिला।
हरि जपो मिलेंगे तुझे पिया, हरि सत्य सदा ना जिया जला।

503.

नीर मेरे गिर रहे हैं, प्रीति हरि मुझसे बढ़ा लो।
दास तेरा करूँ पूजा, अब शरण में मुझे रख लो।
दिल नहीं लगता यहाँ पर, तुम बिन सूनी यह बगिया।
प्यार मुझे अपना दे दे, रोती यह मेरी अंखियां।

काल के बन कर खिलौने, नाचे जीवन यह दूभर।
प्राण प्यासे जल पिला दे, झरती है अंखियां झर झर।
जिन्दगी की शाम ढलती, चाह थी मैं तुझे मिलती।
स्वर उठे न वीणा टूटी, आशा ले फिर भी गाती।

बहते नयनों से आंसू, यह बहें विनती यही है।
सूख जायें यह कभी न, राह बस तेरी यही है।
नमन को स्वीकार कर लो, दास हरि मैं हूँ तुम्हारा।
प्यार दे ठुकरा मुझे तू, बस मुझे तेरा सहारा।

504.

तेरे पिया मन हिय बसत है, भाग कहाँ पर मन तू जाई।
जपता जा हरि कौन जपे है, ध्यान धरो मन हरि को पाई।
हरि की लीला करता क्रीड़ा, जप ले मन मिट जाती पीड़ा।
हरि बिन चैन न आवे दिल में, नीर न सूखे रोवे जिवड़ा।

अन्तर्यामी जग का स्वामी, कुछ पल तोड़ न प्रीति पुरानी।
आना जाना खेल उसी का, बनती मिटती यहाँ कहानी।
हरि हरि जप मन चैन मिलेगा, संग तेरे वह सदा रहेगा।
नहीं डरावें काली रातें, निर्भय हो वह लिये चलेगा।

जल में फिर रही मीन प्यासी, जाने ना सबमें अविनाशी।
मन जप ले हरि तू जपता जा, जायेगी कट काली रैना।
पड़ जा मन हरि के चरणो में, और कहूँ क्या जानूँ कुछ ना।

505.

आंसू से भीगी यह अंखियां, शरणा तेरी पड़ता पैंया।
ओ जन्म मरण के साथी सुन, ना आंख मूंद डगमग नैया।
जीवन तेरा जग में जीते, आंसू की घूंटो को पीते।
कह दे कसूर क्या है मेरा, ना जानूं क्यों मुझसे छिपते।

तेरे ही गुण हरि हम गाये, गाते गाते लय हो जाये।
यह विनय बसो तुम नयनों में, तुम बिन बगिया यह मुरझाये।
सुमरन तेरा हरि छूटे ना, ले चलो जहाँ तेरी मर्जी।
बालक तेरा ना भूल मुझे, इतनी तो सुन ले यह अर्जी।

अनजान राह आया जग में, धरती पर आंखो को खोला।
दे रहे प्यार लोरी देकर, खुश करने के सागर डोला।
आशा के दीप जले उर में, हरि भूल गये सब कुछ तुझ में।
इस रंग बदलती दुनिया में, वह बात नहीं जो है तुझमें।

हरि प्रीति बढ़े मन ताप मिटे, जीवन को हरि ही लिये चले।
यह रैन बसेरा दो दिन का, जप उसे सदा जो साथ चले।
मन एक सहारा हरि जग में, पतवार सौंप हरि हाथों में।
किस्ती को लिये चलेगा वह, हरि हरि जप ले गा ले नगमें।

506.

जीवन क्या है एक पहेली, सुलझ सकी ना आंखे रो ली।
मन पी ले हरि की मदिरा को, मिटती चिन्ता जिसने पी ली।
मन हरि हरि जप यही सहारा, साथ कौन दे उस बिन हारा।
बरसे आंसू भूल उसे ना, अन्तिम पल तक वह आधारा।

हरि हरि जपो चैन हिय आवे, कारज सारे वह सुलझावे।
वह ना सुने, सुने ना कोई, पड़ हरि चरणन हरि को पावे।
सारा उसका ही है यह बन, जप हरि हरि दे ज्ञान वही मन।
कौन यहाँ तू खेले कुछ पल, शाश्वत हरि का जा प्यारा बन।

पड़ जा मन उसके चरणों में, उस बिन जियरा यह घबराये।
मन हरि हरि गा हरि को ले भज, प्यासे की वह प्यास बुझाये।
प्राण पुकारे जप ले हरि हरि, जप ले उसको राह संवारे।
मन्दबुद्धि अज्ञानी को भी, जप केवट बन पार उतारे।

507.

घुटती सांसे है, कैसी घुटन यह?
मिले तुम नही क्यों, देते चुभन यह।
स्वारथ का मेला, रोवे अकेला।
जपता जा हरि को, भूल न छैला।

नयनों में आंसू, ले दर्द फिरते।
पूछे न कोई, तुझे हम कहते।
तुही राह देगा, तेरा सहारा।
जपे शान्ति देगा, जीवन अधारा।

उसकी है दुनिया, चलती उसी की।
कठपुतली हम तो, डोरी उसी की।
धरो ध्यान उसका, तुझे जो घेरे।
उसी को पुकारो, वह साथ तेरे।

जपता जा मन तू, सबका विधाता।
करे याद जो भी, सुमन हिय खिलता।
जपता जा हरि हरि, पड़ जा चरण में।
कर नहीं सके तू, करे वह पल में।

508.

नीर बहे ना पूछा तुमने, क्या थी खता न जाना हमने।
बहते नीर पुकारे तुमको, कुछ भी बस ना टूटे सुपने।
हरि हरि जपें मनाये तुमको, बीते फिर यह काली रैना।
चल चल कर मैं हार गया हूँ, दे दे प्यार न अब कुछ कहना।

छिपा हुआ तू घबराये दिल, तेरी दुनिया रंग बिरंगी।
कैसे दिल को मैं समझाऊँ, परिवर्तित सब कोई न संगी।
गिरता ठोकर खा खा जग में, थामें तू ना मेरे बस में।
कितना है उपकार तुम्हारा, फिर भी रोते मेरे नगमें।

दास तुम्हारा राख चरण में, मेरा तू ही सृजन हारा।
सारा जग यह भूल भुलैया, ना भटका बहती है धारा।
तुझे पुकारूँ रो रो कर मैं, विरह बढ़ा दे प्यास जगा जा।
तुम बिन जीना भी क्या जीना, विनय करूँ नयनों में बस जा।

509.

हरि तुझे जपते रहेगे, हरि तुही मेरा सहारा।
देख या ना देख मर्जी, बहती आंसू की धारा।
शरण में रख लो मुझे तुम, बीतेगी काली रैना।
नीर अंखियों के न सूखें, चाहता मैं प्यार पाना।

जिन्दगी की शाम ढलती, तुम बिना यह आंख रोती।
छिप गये हो छोड़ छलिया, कह दो तुम क्या है गलती।
नाथ सर्जक तुम हमारे, देखो बहती है धारा।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, दो मुझे अपना सहारा।

नयन प्यासे पथ निहारे, आ जा मोहन तू प्यारे।
डूब जाऊँ ना भंवर में, देख ले हम नाथ हारे।
नयन में तुम बसो मेरे, जप हरि मिल जाये चैना।
डगमगाती नाव मेरी, प्यार दे कर पार करना।

510.

मिल कर विछुड़े हम इस जग में, सबकी अपनी अपनी मन्जिल।
यादें ले जीवन कटता है, गिरता रहता नयनों से जल।
मन हरि भज किसकी याद करे, चलता यह चक्कर नहीं रूके।
पल पल में परिवर्तित यह जग, वह धन्य चरण हरि सदा झुके।

मन प्रीति यहाँ की सदा तजो, मन ओम जपो मन ओम जपो।
अपना न कोई पराया है, खेला हरि का मन देख जपो।
मन ओम जपो जप उसे मिटो, अंखियां यह नीर बहाती है।
हरि प्रीति बढ़े सब ताप मिटे, जप हरि सुगन्ध मिल जाती है।

दो पल जीवन तड़फे यह मन, अंखियां बरसे जैसे सावन।
मैं किसे कहूँ दिल की बतियां, घबराता दिल अब तो आ सुन।
तू देख मुझे बालक तेरा, चल चल कर मैं जग में हारा।
हरि मुझे पिला अपनी मदिरा, ले जायेगी तेरी धारा।

511.

कौन हूँ मैं, कौन हूँ मैं, बह रहा इस धार में मैं।
सूखते ना नयन आंसू, पीड़ ले कर चल रहा मैं।
मन भजो हरि वह सहारा, न बहेगा आंसू खारा।
खेल सब उसी का चलता, स्वप्न सा संसार सारा।

हरि भज हरि की ही लीला, सौंप निज को करे क्रीड़ा।
न पता कहाँ जा रहे हम, हरि भज मिटती है पीड़ा।
जप हरि जपता ही जा मन, वही सहारा उसको पा।
यहाँ बदलता पल में सब, मन पकड़ हरि दुख न पा।

जपो हरि मन ज्ञान देगा, दुख तेरे वही हरेगा।
आना जाना हरि मर्जी, जप हरि कोहरा छटेगा।
जपो हरि हरि प्रीति कर हरि, और ना कोई ठिकाना।
तप रहा सारा जमाना, जपो चाहो शान्ति पाना।

512.

चुप हो जा मन, चुप हो जा मन, तू झूठ सत्य हरि ही है मन।
हरि भजो मिटे सारी पीड़ा, हरि नाम सुमर वह दुख भंजन।
बरसे आंसू जैसे सावन, हरि बिन न और कोई है धन।
जग की सब प्रीति यहाँ झूठी, जपो हरि को खिल जाये सुमन।

मन सोच सोच पागल होता, बतला कितना तुझसे होता।
दुख की गठरी को सिर पर धर, दिन रात उसे ढोता रहता।
ले चले नियन्ता जप ले हरि, हरि भज हरि भज छूटे चिन्ता।
नाचे सागर बन लहर यहाँ, कर्ता भर्ता वह ही हन्ता।

कठपुतली बन हम नाच रहे, सोचे करतब हम दिखा रहे।
ना पता कहाँ जाना हमको, कुछ पल दीखे फिर नही रहे।
मन हरि जप चैन मिले हमको, तू मिटे सत्य दीखे हमको।
मैं मिटे हरि ही शाश्वत है, खोना पाना फिर क्या हमको।

513.

जाने वाले कभी न रूकते, देखा करते ना पीछे को। मन
हरि भज ले चैन मिलेगा, दुख भंजक वह जप ले हरि को। इस
अनजानी दुनिया में मन, हरि ही एक सहारा जानो। जब
जब नीर बहायें अंखियां, आता याद वही सच मानो।

हरि हरि जपो पुकारो उसको, माने न छल करे है छलिया।
पर मन तोड़ न उसकी प्रीति, प्यारे आंसू रोवे अंखियां।
ढलती जाती जीवन संध्या, भेज न पाता उसको पाती।
नयनो से गंगा झरती है, सुन ले फिर भी करता विनती।

हरि बस जाओ मेरे नयना, बीतेगी यह काली रैना।
क्षण भंगुर सब प्रीति यहाँ की, मिटता कभी नहीं है रोना।
पड़ा द्वार पर ईश संभालो, उठने की सामर्थ नहीं है।
इन बहती अंखियों को देखो, बिना कृपा संगीत नहीं है।

514.

नयनों में मेरे बस जाओ, चाहत दिल की सुन ले मेरी।
वीणा टूटी स्वर ना उठते, कैसे करता पूजा तेरी।
गिर गिर जाते रोवे अंखियां, दे दे मुझको अपनी छैया।
मैं दास तुम्हारा जन्मों का, पड़ता हूँ मैं तेरे पैंया।

मन लिये वासना घूम रहा, विष को भी अमृत समझ रहा।
अज्ञान हरो दो ज्ञान हमें, तेरी गलियों में घूम रहा।
दे प्यार हमें बालक तेरे, जियरा मेरा करता धक धक।
मेरी अंखियां रोती रहती, हरि कृपा करो पहुँचू तुम तक।

मन्दिर मस्जिद काशी कावा, सब ओर प्रभु तू छाया है।
अपनी हरि कृपा सदा रखना, जीवन तुमसे ही आया है।
चरणों में हरि दो जगह मुझे, जायेगी बीत रैन काली।
जप चैन मिले हिय सुमन खिले, इस बगिया का तू ही माली।

515.

बेचैन यह दिल क्या है मंजिल, कैसे समझूं यह मन चंचल।
कर कृपा हरि मै शरण तेरी, प्यासा हूँ पिला दे मुझको जल।
तुम छिपे कहाँ मैं भटक रहा, खा खा ठोकर होता बोझिल।
तुम दीनबन्धु करूणा सागर, नयनों से मेरे गिरता जल।

हरि दास तुम्हारे कृपा करो, चरणों में अपने रख लो तुम।
सूखे न नयन के आंसू प्रभु, हरि प्रीति बढ़ा लो मुझसे तुम।
जीवन तेरा सर्जक तू ही, क्यों आंसू ले फिर मैं रोया।
कुछ ना जानू हरि लाज रखो, देखो मुझको तू क्यों सोया।

नदिया यह पार करा केवट, दिल मेरा धक धक करता है।
मैं तरस गया तुम ना आये, नयनों से पानी झरता है।
कहीं रूठ न जाना तुम मुझसे, हरि हरि कहते बीते जीवन।
अंखिया मेरी बरसे रिमझिम, मेरे जीवन के तुम ही धन।

516.

दीप जला अन्तस में तेरे, किसकी करके प्रतीक्षा?
कोई न आवे जिय जलावे, ले जीवन से शिक्षा।
लहर भागती हाथ न आये, कौन बड़ी है छोटी।
विधि ने लिख दी रचना जैसी, क्यों मन से तू टूटी।

कर विश्वास जपो हरि हरि मन, जप वह ही सुखदाता।
दे वह ज्ञान चले यह नौका, नीर पोंछ क्यों रोता।
मतलब की यह दुनिया सारी, पल में रंग पलटते।
किससे अपनी प्रीति बढ़ावे, क्षण भंगुर सब रोते।

हरि हरि जप बस शाश्वत वह ही, दिल में ज्योति जला ले।
महकेगा फिर गुलशन तेरा, हरि से प्रीति बढ़ा ले।
हरि हरि गाओ प्रीति बढ़ाओ, सब हरि का ही खेला।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, विछुड़ रहा सब मेला।

517.

कौन हो कह दो मुझे तुम, पूछता हूँ मैं स्वयं से।
ना नयन से नीर रूकते, गिर रहा चलता जतन से।
जिन्दगी की शाम ढलती, क्यों लिये फिर चाह रोती।
कुछ पलों का खेल सारा, पर लुटाते आंख मोती।

घबराता दिल मेरा है, कोहरा छाया हुआ है।
आ जा मिल मेरे प्रियतम, तुम बिना जिय रो रहा है।
प्यास है पानी पिला दे, इस जग से मैं हूँ हारा।
डगमगाती नाव मेरी, पार कर तू ही सहारा।

दे दो मन्दिर का कोना, बीतेगी काली रैना।
सृष्टि के स्वामी तुम्ही हो, न रूके आंसू का बहना।
मेरी सांसो में बहना, बीतेगा सारा सुपना।
नाम की मदिरा पियूँ मैं, चाहूँ मैं उसमें मिटना।

518.

हरि कृपा मिले तब राह मिले, अपना क्या सब कुछ उसका है।
हरि नयन बसे बस यह चाहूँ, दुनिया में कुछ ना रक्खा है।
मन हरि हरि जप रखबाला वह, सुख दुख की रचना हरि रच दी।
मन चरण पकड़ कर ले विनती, अंखियां आंसू से है भर दी।

जीवन उसका मैं कौन यहाँ, ले दर्द यहाँ पर मैं फिरता।
हरि लाज रखो स्वामी मेरे, तेरे चरणों में मैं पड़ता।
सबकी अपनी है राह अलग, ना कभी मिले पकड़े किसको।
कितना भी नयन बहाये जल, देखे ना पत्थर दिल हमको।

कैसे पाऊँ मैं नाथ अबल, हरि सुलझा दे मेरी कड़ियां।
ले चलो भुलावा दे छलिया, रो रो कर लाल हुई अंखियां।
हरि हरि जप यह कट जाये दिन, अपना हरि मुझ पर हाथ रखो।
खो जाऊँ ना इस मेले में, अज्ञानी मैं प्रभु लाज रखो।

सुन्दर तू यह तेरी बगिया, आये आंसू मैं कुछ भी ना।
मैं दास तुम्हारा हे हरि हूँ, चाहूँ मुझको ठुकराना ना।
कठपुतली तेरी नाच रहे, चाहूँ डोरी पर ध्यान रहे।
मैं हाथ तेरे मिटती चिन्ता, मैं नहीं यहाँ तू सदा रहे।

519.

मन सोचे क्या पागल है क्या, हरि की लीला हरि ही जाने।
कठपुतली बन हम नाच रहे, हरि चले इशारे ना जाने।
जीवन आया जीना होगा, दुख को भी मन सहना होगा।
उपजे जो ज्ञान हिया अन्दर, मन समझ उसे चलना होगा।

जप ले हरि देवे ज्ञान वही, उस बिन जग में ना ठौर कहीं।
अंखियां रोवे पथ ना दीखे, पतवार सौंप सब जगह वही।
बरसे अंखियों से जब जब जल, कर विनय नाथ मैं यहाँ अबल।
बस एक सहारा तेरा है, मेरे जीवन का तू सम्बल।

हरि प्रीति बढ़ा शाश्वत वह ही, आवे जावे मालिक वह ही।
पड़ जा मन उसके चरणों में, किस्ती ले जायेगा वह ही।
दर्शन की प्यास लिये रोवें, जियरा हरि बिन तू क्यों जीवे।
हरि दास बनो मन चरणो का, कर विनय यही तू ना सोवे।

520.

बीते कितने दिन ना आये, हरपल तू तड़फाये।
टूटी निंदिया रोवे अंखियां, पर तू नहीं लजाये।
पथ में बैठी राह निहारूँ, जनम जनम की दासी।
लोग कहें मैं हुई बाबली, जग में होती हांसी।

जीवन जाता तू ना आता, कह दे खता हमारी।
नीरस लगता सारा जीवन, नयन नीर है जारी।
पलक बिछाऊँ तुझे मनाऊँ, सुन जा मेरे साजन।
अपना दर्द दिखाऊँ कैसे, तू मेरा मन भावन।

बढ़ कर मेरा हाथ थाम ले, ना बल है लाचारी।
इस जीवन केा देने बाले, सुन लो विनय हमारी।
शीश झुका चरणों में रख लो, मुझमें प्रेम बहा दो।
कट जायेगी काली रैना, अपना प्यार मुझे दो।

521.

गीत सुना मन ऐसा कोई, याद उसे कर अंखियां रोई।
लागे ना जिय बहते नयना, भूला क्यो वह निष्ठुर होई।
पार करा दे मुझको नदिया, ले चल जहाँ बसे हैं सजना।
उस बिन जीवन नीरस लगता, नहीं रूके नयनों का बहना।

बजता अनहद मैं ना सुनता, किन ताने बानो को बुनता।
खोकर चैन भटकता जग में, हरि की कृपा मिले पथ मिलता।
प्रीति डगर पर ले चल मुझको, भूल सभी कुछ जप लूँ तुमको।
रैन बसेरा दुनिया सारी, प्यासे प्राण पिला दे जल को।

झर झर बरसे मेरी अंखियां, छिपे कहाँ मेरे सांवरिया।
क्यों भूला सुन ले निर्मोही, मिटती जाती अन्तिम घड़ियां।
आंसू बहे पुकारे तुमको, दास तुम्हारा भूल न हमको।
इस जीवन के तुम हो सर्जक, चाह प्यार की दे दे हमको।

522.

लाज को रखना हरी तुम, जिन्दगी तेरे हवाले।
कहूँ या न तू भी जाने, पड़ गये पैरों में छाले।
दास तेरा चल रहा मैं, तू छिपा पर हम न जाने।
अब जगह दे दे चरण में, मान तो ले क्यों न माने?

जायेगी ढल यह संध्या, क्या नहीं दीदार होगा?
कुछ मिले पल बह रहा जल, पा तुझे ना दर्द होगा।
न मिटे किस्मत के लेखे, रो रहा मन क्यों यहाँ पर?
सौप दे पतवार उसको, आज है कल ना यहाँ पर।

मैं मिटूँ तू ही रहे बस, हरि बढ़ा दे प्यार इतना।
मन्द बुद्धि ज्ञानी मैं ना, यह समझ हरि थाम लेना।
बहते नयनों से आंसू, अज्ञान से हैं हम घिरे।
तू रखैया इस जगत का, चरणों में पड़ता तेरे।

523.

जिन्दगी आती रहेगी, जिन्दगी जाती रहेगी।
अर्चना तेरी हरी हर, यह सदा होती रहेगी।
अबल हम तू शक्तिदाता, भाग्य का तू ही विधाता।
नयन से जब नीर आता, शीश हर कोई झुकाता।

नाचे कठपुतली तेरी, गम दे या सुख दे मर्जी।
नयन में जब नीर छलके, देख लेना यही अर्जी।
प्यार तेरा चाहते है, दे मुझे हरपल सहारा।
तुझ कृपा बिन चल न पाऊँ, इस जग से मैं हूँ हारा।

दास तेरा शरण में रख, और ना कोई ठिकाना।
बह रहा बन कर लहर मैं, जाना कहाँ मैं न जाना।
मेरे सर्जक भूल न तू, मेरी रोती हैं अंखियां।
दिल मेरा तुझे पुकारे, तू करा दे पार नदिया।

524.

सोच रहा मन क्या है इतना, ज्ञान यहाँ पर कभी न तजना।
नश्वर जग से प्रीति करे क्या, क्षण भंगुर सब मिटता सुपना।
हरि हरि गा लय हो जा उसमें, उसकी लीला कुछ ना बस में।
जीवन नदिया बहती जाये, कूल छूटते टूटें सुपने।

हरि भजो हरि नाम है प्यारा, ले जायेगी हरि की धारा।
अपनी डोरी सौंप हरी के, नहीं बहेगा आंसू खारा।
मन ना लागे हरि ना पावे, हुये अभागे नीर बहावें।
तप कर मन हरि को भजता जा, ढलती संध्या दुख ना पावे।

हरि हरि भज मन हरि की धारा, सुमर उसे उसका संसारा।
उस बिन चैन मिले ना मन के, जप उसको ले यही किनारा।
बहता जा तू लहर बना मन, सागर मर्जी जैसा राखे।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, जपो नयन ना होवे रूखे।

भावुक मन तू भावुक होता, पल पल किसकी याद सताये।
कोई नहीं यहाँ पर अपना, क्यों नयनों में आंसू आये।
सुख दुख का है खेल यहाँ पर, ढलती संध्या सुबह कहीं पर।
मन हरि हरि भज हरि भजता जा, वह मंजिल ले चले जहाँ पर।

बस अपने क्या आना जाना, बन टूटे सुपने हरपल।
बहे नयन मन पकड़ चरण हरि, मिट जायेगी सारी हलचल।
मन हरि हरि जप प्यारा वह ही, पार करावे नदिया वह ही।
और सहारा ना इस जग में, अन्तिम क्षण तक संग है वह ही।

525.

चुप हो जा मन, चुप हो जा मन, बरस रही अंखियां सावन बन।
प्रीति यहाँ हरि की ही सांची, जप हरि को लय हो जा तू मन।
घूम रहा क्यों लिये वासना, विष को क्यो अमृत समझा है।
जप ले हरि ना चैन यहाँ है, सुपना सब न कोई रहा है।

अन्तर्यामी जग का स्वामी, संकटहर्ता वह है दानी।
मन कर ले तू उसकी पूजा, नहीं बहेगा खारा पानी।
प्रीति बढ़ा मन वह ही प्यारा, जीवन यहाँ भोर का तारा।
हरि भज हरि भज मन हरि भज ले, किस्ती तेरी होगी पारा।

दीनबन्धु वह करूणा सागर, देगा भर वह तेरी गागर।
सुमर उसे मन नयन बसा ले, जाना है मन उसके ही घर।
करो नमन हरि शीश झुका ले, कर्ता ना बन प्यार बढ़ा ले।
ले जायेगी हरि की धारा, कर विश्वास जतन कर जप ले।

526.

तुम कहो सही या मुझे गलत, हरि की मर्जी मैं चलूं वही।
नयनों के आंसू देख न तू, देखेगा वह ही सदा सही।
वह कौन इशारा जो करता, मर्जी उसकी से हम नाचे।
कठपुतली डोर हाथ उसके, कैसे उसके पौथे बांचे।

जो दे विवेक तन करे वहीं, मन जप ले हरि वह सदा सही।
दे दे पतवार उसे मन तू, ले चले जहां मंजिल वह ही।
नयना बरसे जप ले उसको, बस में क्या है तेरे जग मे।
बन बन्जारा जग में जी ले, सुमरो उसको बदले पल में।

जप ले हरि हरि पावन गंगा, नहाये होता है मन चंगा।
सुख दुख की उठती लहरों में, मन छोड़ न हरि ना कर पंगा।
मन जप ले हरि कटती रैना, सारा जीवन बस इक सुपना।
मन जप हरि में लय हो जा तू, दुख से छूटे मन हरि भजना।

527.

दो पल के सब हैं याराने, जाये बदल कब हम न जाने।
नीर बहाती है यह अंखियां, सबके अपने हैं पैमाने।
सुमरन कर हरि मिटना होगा, सुख चाहे हरि जपना होगा।
सुख दुख की यह भूल भुलैया, मन हरि के जपना ही होगा।

सुपना दुनिया छलके अंखियां, कितने ही लगते दन्श यहाँ।
हरि भजन बिना मुक्ति मिले ना, हरि भज हरि का है सकल जहाँ।
हरि हरि बोलो हरि को जी लो, बहती जाती हरि की गंगा।
करता जो भी स्नान इसी में, भागे भय मन होता चंगा।

हरि ही प्यारा हिया बसा ले, मुरझाया जो फूल खिला ले।
क्षण भंगुर से प्रीति करे क्या, शाश्वत हरि से नयन लड़ा ले।
जी लो हरि को हरि हरि बोलो, जख्म लगे जो हरि से सी लो।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, सौप हरी को मैं तज जी लो।

528.

करूणा सागर कृपा हरी की, जानूँ ना पर वही सहारा।
अंखियां मेरी रिमझिम बरसे, छिपे न दीखे हमे किनारा।
सागर में लहरें बन डोलूं, तुमको यहाँ वहाँ मैं खोजूं।
सब कुछ है अस्तित्व तुझी से, संग सदा नहीं अन्तस खोजूं।

मन कर अर्पण नीर उसी को, जप ले उसको साथ सदा है।
मर्जी उसकी चले यहाँ पर, कठपुतली तू जान यहाँ है।
जाये जहाँ ले वही मन्जिल, कौन यहाँ तू सब ही है हरि।
लिये चले वह चरण पकड़ हरि, सबका मालिक वह ही है हरि।

संध्या ढलती मन पुकार ले, क्षण भंगुर हरि हिय बसा ले।
कूल छूटते जाते सारे, जप ले हरि को नयन बसाले।
सुपना दुनिया छलता छलिया, मन पड़ जा तू हरि के पैया।
दे पतवार उसी को अपनी, कृपा मिले मिल जाती छैया।

529.

प्यासे प्राण पिला दे जल को, करे अर्चना तेरी ही हम।
अंधियारा पथ जाने ना कुछ, करे विनय तम को हर लो तुम।
सर्जक तू ही मालिक सबका, दर्द नहीं मिटता है दिल का।
आ जा मोहन तुझे पुकारे, फूल खिला अपनी बगिया का।

तेरे बालक हम हैं प्रभु जी, देखो बहती मेरी अंखियां।
अगम अगोचर पार न तेरा, करूँ प्रतीक्षा फिर भी सैंया।
जाऊँ कहाँ तू ही सहारा, इस जीवन का तू आधारा।
प्यार हमें दे रोवे अंखियां, व्यथित हुआ मैं तुझे पुकारा।

मन्दबुद्धि मैं अज्ञानी हूँ, बालक तेरा माफ करो प्रभु।
नाच नचाया जैसा तुमने, नाचा नहीं खता मेरी प्रभु।
बरसे अंखियां याद तुझे कर, जाऊँ बहता मैं इस पथ पर।
इस पथ पर बह लय हो जाऊँ, विनय सुनो तुम मेरी हरि हर।

530.

तू कौन है मैं कौन हूँ, जाने न खेला चल रहा।
तू ब्रह्म मैं भी ब्रह्म हूँ, फिर किस लिये मैं रो रहा?
नहीं नयन नीर सूखते, कण कण से यही पूछते।
अज्ञान में क्यों फंस गया, कुछ पल की खुशी खोजते।

हरी असीम मैं हूँ सीम, बंधा हूँ इसमें तड़फता।
दीपक जले जेा ज्ञान का, सब ओर तू ही दीखता।
नैया हमारी ले चलो, तम से यहाँ है हम घिरे।
अंखियां न सूखती मेरी, नयन में तुम बसो मेरे।

तुमसे बढ़ाये प्रीति हम, हरि लीन तुझमे होय हम।
सुख दुख क्षणिक यह भूल सब, गीत हरी के गाये हम।
हरी तू सबल असीम है, नयन में मेरे नीर है।
ले चल मुझे भटका नहीं, चरणों में झुका शीश है।

531.

चल रहे पहुँचे न पहुँचे, यह तेरी मर्जी हरि है।
देखो इतना तेा तुम प्रभु, रोती अंखियां मेरी है।
बीती जाती है घड़ियां, शाम भी यह जा रही ढल।
दर्द दिल में घूमता ले, देखूँ यह दुनिया स्वप्निल।

प्यार की थी चाह मुझको, पर गिरे नयन से आंसू।
दम निकलता भी नहीं यह, मैं तू बता कैसे हसूँ।
दास तेरे है सदा से, जानते तुमको नहीं हम।
बहते नयनों से आंसू, दिल को तुमने दे दिया गम।

नमन को स्वीकार कर लो, देखो रोती है आंखे।
सृष्टि के तुम हो रचैया, प्यार से खिले है पांखें।
गिर गिर करूँ प्रणाम तुमको, दूर भागी जाती मंजिल।
पी तेरी मदिरा प्रभु जी, सुख से जाये बीत सब पल।

532.

सुख का है सागर यह हरि, मन खूब सोच विचार ले।
तुझको मिले यहाँ जो पल, हरी को यहाँ उचार ले।
बह ले यहाँ तू बन लहर, जाये कहाँ यह ना खबर।
जप साथ तेरे वह सदा, तू हो गया है बेखबर।

हरि बिन यहाँ जीना कठिन, रतिया कटे न तारे गिन।
हरि प्रीति मन तू ले बढ़ा, नाव बहेगी डर के बिन।
हरि जप सदा वह साथ है, उसके बिना अनाथ है।
जग के ना शूल सह सके, कर याद वह ना दूर है।

हरि हरि जपो कटता सफर, पथ में लगे न कोई डर।
आये है हम जायेंगे, जप ले वही है शान्ति घर।
हरि के चरण पकड़ ले मन, यादें करो उसकी सघन।
केवट बन ले जाये घर, खिले है दिल का फिर सुमन।

533.

चलती है दुनिया चलती रहेगी, बन कर लहर बह नही तू रहेगी।
क्या है पकड़ना यहाँ छोड़ना क्या, हरि हो समर्पित न दुख में रहेगी।
सुख भी है उसका दुख भी उसी का, जगे ज्ञान जो यह सब खेल उसका।
यहाँ कौन तू सब मर्जी उसी की, जप ले हरि को तू बन जा उसी का।
सुपना है दुनिया करे क्या शिकवा, जपो मन हरि को यही चैन दिल का।
बह ले लहर बन के जप ले हरि केा, सुरति कर उससे सदा साथ उसका।
आया यहाँ जाये, चले उसी की, अंखियां यह भीगी तुझको कहेगी।
यहाँ कौन तू सब खेला उसी का, पकड़ो चरण हरि न मैं फिर रहेगी।
हरि को जपो ध्यान इसमें लगाओ, गिरे नयन मेाती उसको मनाओ।
तेरे हाथ क्या मिटा ले स्वयं को, सब ओर वह है नयन में बसाओ।
पतवार उसकी नैया भी उसकी, मैं को मिटा यहाँ चलती उसी की।
जपो मन हरि को टूटेंगी कड़ियां, जाने नहीं तू उसकी है दुनिया।

534.

थके यहाँ भर आई अंखियां, कैसे तुमको पाऊँ सैंया?
दीनबन्धु करूणा के सागर, दास तुम्हारा पड़ू पैंया।
कर्ता भर्ता हर्ता तू ही, कौन यहाँ मैं कह दे तू ही।
बहते नयनों से आंसू हैं, चाह प्यार की दे दे तू ही।

हरि हरि जपें मनायें तुमको, खाली झोली भर दे इसको।
इस जगत में तेरा सहारा, देख प्यार से ले तू हमको।
जीवनदाता जीवन तुमसे, तेरे बालक रूठ न हमसे।
अंधियारी गलियों में प्रभु जी, जले दीप आशा है तुमसे।

अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढ रहा फिर भी मन मेरा।
जपूं तुझे बस एक सहारा, गिरे नीर हरि तुझे पुकारा।
गिरते नीर खिला दे बगिया, सूखी है जो पड़ता पैंया।
इन नयनों में सदा रहो तुम, ढलती रहे कभी भी संध्या।

535.

हरि हरि गाओ हरि की लीला, हरि बिन मिटे न दिल की पीड़ा।
नाच नचावे नाच रहे हम, उसकी चले सदा है क्रीडा।
शाश्वत हरि मन प्रीति बढ़ा ले, दे वह ज्ञान जगत में चल ले।
सूखें नही नयन के आंसू, जप हरि शान्ति सुधा मन पीले।

बन्जारा बन जग में जी ले, कुछ ना अपना दुख सुख सह ले।
पार लगावे वह ही नौका, करो विश्वास हरि को जप ले।
मन हरि हरि गा चैन यही है, सुपना दुनिया खेल यही है।
कुछ पल देखे कुछ पल नाचे, फिर दीखे कुछ यहाँ नही है।

प्रीति बढ़ा मिट जा सागर में, हरि हरि गा बह ले सागर में।
तेरा क्या सब खेला उसका, बह सागर में मिट सागर में।
हरि सागर सब ओर यही है, छोड़ो मैं सब पीड़ यही है।
नहीं लहर नाचे सागर ही, जप हरि तेरे साथ यही है।

536.

बहे नयन से आंसू मेरे, जाये तुमको छोड़ कहाँ पर?
मतलब की यह सारी दुनिया, नीर गिरे मेरे हरि झर झर।
शीश झुकाये करें प्रतीक्षा, कब आयेगा मेरे द्वारे।
अबल नाथ मैं पहुँच सकूँ ना, करो कृपा हरि तू ही तारे।

हरि हरि जपूँ मनाऊँ तुमको, मुँह ना मोड़ बुलाऊँ तुमको।
तेरी लीला तेरा जीवन, तुम बिन बता कहें हम किसको?
पार करा दो मुझको नदिया, लागे डर भर आई अंखियां।
मुझे सहारा हरि तुम दे दो, पड़ता हूँ मैं तेरे पैंया।

सर्जक मेरे भाग्य विधाता, अंखियां बरसे कुछ ना भाता।
आ जा दिल में तुझे बसा लू, टूटे फिर सब दुख से नाता।
तेरी दुनिया देखो छलिया, रूला रहा क्यों दे दे छैंया।
दास तुम्हारा जनम जनम का, बहती आंखो से है नदिया।

537.

क्या चाह थी ले आई हमें, इस दुनिया में दिन रात जले।
दीदार न तेरा कर पाये, उलझे फिर दुनिया छोड़ चले।
हरि कृपा करो ना अब उलझा, तुम बिन ना चैन मिले छलिया।
नयनों में मेरे बस जाओ, आती भर भर मेरी अंखियां।

प्यासे प्राणों को मिलता जल, तुम बिन खिलता ना कभी कमल।
सुमरन हरि तेरा सदा रहे, विछड़ो न मुझसे तुम एक पल।
मैं दास तुम्हारा जन्मों का, तेरी हरि कृपा सदा चाहूँ।
बहती अंखियां दे प्यार मुझे, इतना तो दे हक यह चाहूँ।

ढलती संध्या ढल जायेगी, चाहत न नयन से जायेगी।
छवि तेरी बसी रहे दिल में, यादे ले अंखियां रोयेगी।
मेरी सांसों में सदा बहो, मैं दास तुम्हारा नहीं तजो।
स्वप्निल दुनिया मेरा सुपना, आयेगा चैन मन हरि भजो।

538.

छिपे ईश तुम रोवें अंखियां, दिल कैसे समझाऊँ?
दास तुम्हारा जनम जनम का, फिर भी तुझे ना पाऊँ।
इस मेले में लाज राखना, गिर गिर नीर बहाऊँ।
कुछ न अच्छा मोहि को लागे, कैसे तुमको पाऊँ।

अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी ध्यान लगाऊँ।
सुख मिलता जब बहती गंगा, तेरे चरण चढ़ाऊँ।
प्रीति बढ़े नित झरें नयन यह, चाहूँ यह वर पाऊँ।
गाते गाते गीत तुम्हारे, लय हरि मैं हो जाऊँ।

जीवनदाता जीवन तेरा, तुमको सदा मनाऊँ।
कौन यहाँ मैं सर्जक तू ही, तुझको सदा रिझाऊँ।
ज्ञानी मैं ना मन्दबुद्धि हूँ, अपना शीश झुकाऊँ।
ले चल मेरी नौका हरि हर, नयनन तुझे बसाऊँ।

539.

हरि हरि बोलो अमृत पी लो, हरि मर्जी से जग में चल लो।
झरे नयन से आंसू जब भी, याद करो हरि उसको जप लो।
छोड़ो मैं कुछ भी ना अपना, तन जाता यह भी तो सुपना।
इन अंधियारी गलियों में मन, बसा नयन में अपने सजना।

अपना कौन पराया जग में, लिये वासना चलते मग में।
कुछ पल होता साथ यहाँ पर, टूटे फिर रोते है नगमें।
हरि बिन नहीं जगत में चैना, सुख हरि नाम इसी को पीना।
हरि की लीला खेल उसी का, देख सभी में हरि को नवना।

कर्ता तू ना करे वही सब, छोड़ उसी पर हो जा ना कुछ।
शक्तिमान वह जगत नियन्ता, देख यहाँ तू कितना है कुछ।
बह सागर में यहाँ लहर बन, जैसा राखे सागर का बन।
सुमरन इसका कभी न छोड़ो, इसका ही यह सारा जीवन।

आना जाना खेल उसी का, जान लहर का क्या है जीवन।
लहर मिटे सागर ही सारा, मिट मन साथ सदा है साजन।

540.

जिद क्या जैसा चाहे जी ले, लागे हरि प्यारा तो जप ले।
दो दिन का रैन बसेरा यह, सुख कहाँ छिपा मन तू चुन ले।
जायें भागी सब लहर यहाँ, पकड़े ना आये हाथ यहाँ।
बह ले हरि हरि गा ले तू मन, मर्जी हरि की ले चले जहाँ।

सागर सब सुरति रहे जब जब, डर लगे नहीं मन कर ले तप।
आना जाना कितना है बस, दे ज्ञान वही मन हरि को जप।
जग से टूटा दिल किसे चहे, ना शान्ति मिले मन किसे कहे।
जब प्रीति लगे जग की झूठी, जप नाम चैन दे नीर बहे।

मन सदा जपो अमृत है वह, तम मिटता मन प्रकाश है वह।
कितना ही भाग लहर पीछे, मिटती लहरें शाश्वत है वह।
शाश्वत का मन तू पी ले रस, जप प्रीति बढ़ा तेरा वह रब।
हरि सागर पड़ जा चरणों में, नैया ले जाये वह ही सब।

541.

जग में मेरा मन लगा नहीं, तू भी मुझसे छिप गया कहीं।
कैसे इस दिल को समझाऊँ, सर्जक मेरा तू जगत मही।
नयनों से नीर गिरे निशदिन, मछली सा तडफू मैं जल बिन।
प्यासी अंखियां ना प्यास बुझे, क्यो मिला बता मुझको जीवन।

तू ज्ञान हमें दे ज्ञान मिले, बिन कृपा ना संशय कभी मिटे।
हरि दास तुम्हारा अपना लो, पथ की भटकन फिर यहाँ मिटे।
तेरी चौखठ पर आऊँ मैं, पग आंसू से हरि धोऊँ मैं।
मैं दास तुम्हारा जन्मों का, हरि प्यार तुम्हारा चाहूँ मैं।

तुम बिन रोवें मेरी अंखियां, तुम छोड़ छिपे हो क्यों छलिया।
अज्ञानी पर तेरा बालक, कर खता माफ दे दे छैया।
नयनों में मेरे बस जाओ, ना और कही अब भटकाओ।
अब सांझ हुई यह शीश झुका, लय निज सुगन्ध में कर जाओ।

542.

सुरति जगा बल दे दे इतना, मन्दिर तेरे चल कर आऊँ।
बहते मेरे नीर पुकारे, तुम बिन हरि मैं रह ना पाऊँ।
तेरी लीला नाच रहे हम, क्यों ना बाजे पायल छम छम।
मुझे बना ले अपना छलिया, गई हार मैं मुझमें ना दम।

हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, क्यों भूला ना तुझे भुलाऊँ।
तेरी प्रीति मुझे है प्यारी, नयन बहे इसमें बह जाऊँ।
प्यासा कण्ठ पिला दे पानी, जनम जनम की तेरी दासी।
अंखियां मेरी भर भर आवें, लोग करें हैं मेरी हांसी।

पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तुम हो, कहो मुझे तुम रूठे क्यों हो?
सूखे नहीं नयन का पानी, आ छलिया क्यों छिपे हुए हो।
हरि पुकारती सदा रहूँ मैं, नही रूके नयनों का पानी।
बह जाऊँ पावन गंगा यह, इतना तो कर देना दानी।

543.

हरि जपे ना मन न माने, ले रहा सुपने यहाँ पर।
मिटती न तृष्णा कभी भी, भूल हरि रोवे यहाँ पर।
दर्द दिल में नयन आंसू, दीखता ना पथ यहाँ पर।
जप हरि ले जाये नौका, खेल उसका सब यहाँ पर।

हरि जपो मन ज्ञान देगा, व्यर्थ उलझन से बचेगा।
साथ हो न जग में कोई, जपो संग में वह चलेगा।
हरि जपो शाश्वत वही है, उस बिना कुछ भी नहीं है।
छूटते सब कूल जग में, धारा उसकी बहती है।

जप हरि जपते ही जाओ, स्वामी वह उसे रिझाओ।
हरि का जल जाये दीपक, तम मिटे प्रकाश पाओ।
कौन हम उसी की दुनिया, जप देगा वह ही छैंया।
दे उसे पतवार अपनी, नाचे लहरों में नैया।

544.

इस जग का वह ही मालिक, जैसा चाहे वह राखे।
दिल नहीं लगता यहाँ क्यों, भूलता यह रोती आंखे।
सुरति क्यो भूली लहर तू, नाचता सागर यहाँ पर।
छोड़ कर मझधार में वह, छिप गया जाने कहाँ पर।

साथ वह तो है सदा से, भूल उसको खूब रोई।
कर जतन जप ले उसी को, जल रहा दिल हाय सोई।
न लहर नाचे है सागर, झरती आंखे यह झर झर।
साथ सागर देख अन्तस, जाये मिट सारे फिर डर।

जपता जा जपता ही जा, ना भूल सागर साथ में।
मिटे पीड़ा पकड़ दामन, शान्ति ना बाहर हाथ में।
लहरे नाचे करती झिलमिल, जाती खो दुनिया स्वप्निल।
मन भजो हरि साथ तेरे, पायेगी मिट सारी हलचल।

545.

चल उड़ चल मन पार गगन के, छिपे जहाँ पिव मेरे मन के।
उस बिन मेरा जिया न लागे, बरसे अंखियां गीत विरह के।
जीवन छोटा जग में उलझा, मिले न साजन अंखियां ढलके।
पार करेगा वह ही नौका, करूँ विनय आंसू भर भर के।

हरि माया कोई ना जाने, ऋषि मुनि हारे सब मस्ताने।
मदिरा जिसने पी ली उसकी, मस्त हुआ फिर हरि ही जाने।
हरि हरि गा मन रोती काया, तम चहुँ ओर यहाँ पर छाया।
जप हरि मिट जायेगी पीड़ा, जप सब ओर वही है छाया।

साथ यहाँ पल दो पल का ही, सजा रहा मन कितने सुपने।
दुख में छोड़े साथ यहाँ सब, हरि हरि जप टूटेगे सुपने।
शाश्वत हरि मन प्रीति बढ़ाले, दुख में डूबा उसे मिटा ले।
दे पतवार उसी के हाथों, शान्ति मिले मन उसमें बह ले।

हरि हरि जप दे ज्ञान वही मन, कौन सुने सबकी अपनी धुन।
बरसे नयना नीर चढ़ा पग, ले जायेगा वह केवट बन।
अपना क्या सब कुछ ही उसका, जतन करो मन हरि का हो जा।
ताप मिटे शीतल हो काया, जिसने भी हरि हर को पूजा।

हरि हरि जप मन प्रीति बढ़ाओ, अंखियां बरसे नहीं भुलाओ।
इससे बढ़ कर सुख ना कोई, गाते गाते लय हो जाओ।

546.

हरि कृपा रखना सदा तुम, जायेंगे सुख से सभी पल।
दास मैं तो हूँ तुम्हारा, बहता नयनों से है जल।
हरि जपूं तुम बसो नयना, जाये मिल दिल को चैना।
प्रेम रस में भीग जाऊँ, दे मुझे अपना बिछौना।

दर्द दिल में है उफनता, मन रहीं लगता हमारा।
ले चलो मुझको वहाँ पर, छिप गया छलिया हमारा।
बहते नयनों से आंसू, फेरी क्यों मुझसे अंखियां।
घबराता दिल मेरा है, करूँ किससे कह दो बतियां।

तम यहाँ फैला पड़ा है, ज्ञान का दीपक जलाना।
बीतेगी यह भी रैना, प्रेम में अपने भिगोना।
पार करवा नाथ नदिया, बहती हैं मेरी अंखियां।
ईश मैं बालक तुम्हारा, दो मुझको अपनी छैया।

547.

गीतों को गा ले हरि के, ना तू रहे हरि ही रहे।
दो दिनों का खेल सारा, कर याद हरि नयना बहे।
सब तरफ फैला वही तो, करता क्यों मन को मैला।
जप हरि मिट जाये पीड़ा, छोड़ मैं ले चले छैला।

दे उसे पतवार अपनी, वह बने तेरा सहारा।
सब तरफ उसका नजारा, देखो हरि को क्यों हारा।
जब बहे नयन से आंसू, कर ना शिकवा जप हरि मन।
बहती धारा है उसकी, जपो उसे ले जाये मन।

सुख वही जप दुख भगावे, पीड़ दिल की वह मिटावे।
स्वप्न सा संसार सारा, जप उसे कुछ चैन आवे।
धूप छाया खेल दुनिया, जप ले उसे बहे अंखियां।
दीन बन्धु करूणा सागर, मन पकड़ो उसकी बैंया।

बन लहर बह ले यहाँ पर, नाचता सागर नहीं तू।
आना जाना खेल करे, रोक पाता तन नहीं तू।
मन सुरति कर ध्यान करले, हरी का गुणगान कर ले।
जग में चल न भूल उसको, झुक चरण हरि के पकड़ ले।

548.

चल उड़ चल मन पार गगन के, कुछ ना भावे आंसू ढलके।
छिपा कहाँ पर मेरा प्रियतम, मुझे मिला दे अंखियां छलके।
याद करूँ पर वह ना आवे, मुझको हरपल सदा जलावे।
उसकी यादें भी है प्यारी, मिटा मुझे यदि तू ना आवे।

हरि की लीला हरि ही जाने, बन जायें हरि के परबाने।
प्रियतम बस प्यारा वह ही है, मिट पायेगे हम दीवाने।
छोटा जीवन जप ले तू मन, भटक रहा यह तेा है जंगल।
नाव कहाँ पर जाये तेरी, वह ही जाने सबका साहिल।

हरि हरि गा मन हरि को गाले, अपनी पीड़ा उसे सुना दे।
अन्तर्यामी सबका सर्जक, चरण पकड़ मन शीश झुका दे।
आना जाना उसकी मर्जी, कुछ पल खेले उसकी चलती।
याद करो हरि जप ले तू मन, वही ले चले तेरी किस्ती।

549.

हरि जपूँ तुझे मनाऊँ तुझे, मेरे नयनों में बस जाओ।
अज्ञानी मैं खाता ठोकर, बालक तेरा हरि अपनाओ।
दे ज्ञान तुही तम को हर्ता, पथ में उजियारा तू कर्ता।
डगमग करती इस नौका को, हरि पार करो दुख का हर्ता।

तुम सृष्टि रचियता सर्जक हो, तुमसे ना कहूँ कहूँ किससे।
अंखियों से नीर बरसता है, क्यों छिपे हुए हो तुम मुझसे।
मन हो प्रसन्न वीणा छेड़ी, टूटे पर तार करें केरी।
तुझ कृपा बिना ना चल पाऊँ, बरसे रिमझिम अंखियां मेरी।

जीवन दाता पालक मेरे, सब ओर नाथ तुम ही घेरे।
पर समझ नहीं पाऊँ लीला, अंखियां मेरी आंसू गेरे।
हरि विनय सदा यह भान रहे, तू साथ सदा यह ज्ञान रहे।
मिट जाऊँ गा तेरे नगमें, मैं नहीं सदा तू यहाँ रहे।

550.

मन हरि हरि भज मन हरि हरि भज, किसमें खोजे तू अपना सुख।
इस रंग बदलती दुनिया में, चाहत ले ले पाता है दुख।
जपते ही रहो जप संग सदा, जैसा राखे मन उसे सहो।
बस तेरे क्या ना छोड़ उसे, सुमरन कर ले मन शान्ति चहो।

जब बहे नयन से नीर यहाँ, हरि सुमर नाम की पी प्याली।
बहता जा यह नदिया उसकी, नाचें हम तो हैं कठपुतली।
सागर हरि लहर बना बह ले, उसकी मर्जी में तू जी ले।
अपना है कौन पराया है, जीवन उसका उसको जी ले।

पल दो पल का है मेल यहाँ, विछुड़े जाते है सभी यहाँ।
इस पर भी जब धोखा मिलता, चलता कितना बस जान यहाँ।
हरि हरि भज वह तम को हरता, हरि भजो नहीं पथ मैं डरता।
दे ज्ञान वही जगदीश्वर वह, जप ले हरि नैया ले चलता।

551.

नमस्कार लेलो नमस्कार ले लो, नही और कुछ बस हमें प्यार दे दो।
बालक तेरे हैं नयनों में आंसू, बढ़े प्रीति नित ईश वरदान दे दो।
बहती है नैया न कोई ठिकाना, गिर गिर उठे ना तेरा प्यार जाना।
अज्ञानी हम नाथ तम से घिरे हैं, मेरे दिल में दीप हरि तुम जलाना।
अनजानी गलियां मारग है दुस्तर, अंखियों से आंसू गिरते है झर झर।
अबल नाथ मैं हूँ जगत के रचियता, तपती है राहें दे दे तू छैंया।
जीवन है सुपना फिर भी है कहना, कटते न यह पल बसो मेरे नयना।
ले चल मुझे अपनी मदिरा पिलाकर, चाहूँ तेरा प्यार उसी में बहना।
अंखियां है भीगी रचा रास रसिया, सुन तेरी बन्शी नाचेगा जीया।
मेरे प्राण प्यासे कितने जनम से, पिला दे मुझे जल भर आई अंखियां।
तेरी है दुनिया रखबाला तू ही, बहते आंसू ना बस कुछ भी मेरे।
यहाँ कौन मैं हूँ जो कहता कुछ भी, लगा पार नैया पड़ू पांव तेरे।

552.

कटते ना दिन चैन गया छिन, फेरी आंखे तुमने साजन।
तुम बिन बोलो किसे पुकारूँ, कटती रातें हैं तारे गिन।
अंखियां रोवे कुछ ना जाने, जा रहा ले हवा का झोका।
इस जीवन के तुम ही सर्जक, पार लगा दो मेरी नौका।

गिरते आंसू पल पल मेरे, कैसा जंगल तम है घेरे।
दीप जला दो नाथ ज्ञान का, बस जाओ नयनों में मेरे।
अन्तर्यामी जग के स्वामी, बहता इन नयनों से पानी।
गागर रीती ले कर फिरता, तुझे मनाऊँ भर दे दानी।

अपना प्यार मुझे तू दे दे, प्रीति बढ़े वर मुझको दे दे।
प्रेम दिवानी होई मीरा, पथ मुझको हरि यह तू दे दे।
चाहत छूटे कुछ ना चाहूँ, गा गीतों को लय हो जाऊँ।
तुझे समर्पित हो कर बह लूँ, चरण तुम्हारे की रज पाऊँ।

553.

जैसा राखे रहना होगा, नदिया हरि की बहना होगा।
बस जाये जब हरि नयनों में, मन्दिर सारा यह जग होगा।
मर्जी हरि की कहीं ले चले, नचा रहा मैं हरि की चेरी।
डोरी से हरि ध्यान हटे ना, मिटते डर हरि हाथों डोरी।

हरि हरि जपूँ रटूँ मैं हरि को, अज्ञानी बालक हरि तेरा।
अंधियारे में कुछ ना दीखे, इन नयनों ने आंसू गेरा।
अपनी कृपा सदा ही रखना, बहते है हरि मेरे नयना।
मेरे दिल से कभी न जाना, दे अपने मन्दिर का कोना।

तेरी प्रीति प्यारी मुझको, जाऊँ भीग मैं इसमें सारी।
बल मुझमें ना चलकर आऊँ, पथ देखूँ कब आये बारी।
जनम जनम का दास तुम्हारा, रूठ नहीं जाना तुम मोहन।
अंखियां भीगी राह निहारे, कब सुन पाऊँगा तेरी धुन।

554.

तू पिला दे जाम ऐसा, पी न आये होश मुझको।
तेरी लीला तू जाने, देखना सब कुछ तुझी को।
थक गये चल चल गिरे हम, बहते आंसू ना है दम।
चाहते तेरी कृपा को, बरसते है नीर रिमझिम।

तू न आये हम मनाये, क्या बनी किस्मत हमारी।
विनय हम करते रहेंगे, नयन से हैं नीर जारी।
अजनबी इस जगत आये, नयन में सुपने सजाये।
टूटते पल पल यहाँ है, बहे आंसू याद आये।

मैं लहर सागर तुही है, इस जगत का तू मही है।
नाचूं कठपुतली तेरी, ज्ञान दे होता वही है।
नीर को स्वीकार कर लो, हरि मुझे तुम प्यार दे दो।
अर्चना के फूल सूखे, चाहो हरि सुगन्ध भर दो।

555.

नैया के खेवट आंखे गई थक, दे दो सहारा प्रभुजी मैं हारा।
छिप ना कन्हैया बन्शी बजैया, नजरे उठा देखो बहती है धारा।
गीतों को गाये आंसू बहाये, कुछ भी ना ऐसा तुमको चढ़ाये।
जग के नियन्ता हमे प्यार दे दो, ऋषि मुनि ज्ञानी सब तुमको मनावे।
कोई न जाने लीला को तेरी, बस जा नयन में छवि तेरी प्यारी।
तुझे मनाऊँ करूँ तेरी पूजा, नजरे उठा देखो आंसू जारी।
नाम तुम्हारा ही पार लगावे, सदा रात दिन हरि तुझे ही ध्यावे।
तुम बिन ना कोई और है दूजा, करूँ याद अंखियां यह नीर बहावे।
तपती है राहें बह रही अंखियां, बहाये नयन न कभी नीर खारा।
शरण में रखो मुझे दे दो छैंया, सफल होय जीवन प्रभु जी हमारा।

556.

हरि दर्शन को प्यासी अंखियां, बाट निहारें पथ में अंखियां।
विरह अग्नि में जल जाऊँ मैं, सावन जैसे बरसे अंखियां।
नाच नचावे आंसू आवे, तुम बिन मोहन रहा न जावे।
लागे अच्छी प्रीति तुम्हारी, मन चाहूँ इसमें बह जावे।

सुपना दुनिया छलता छलिया, बहती रहती निशदिन अंखियां।
प्रीति बढ़े हरि कष्ट मिटे सब, मिटता मैं रह जाता छलिया।
हरि हरि जप मन सांचा यह धन, नहीं उलझ यह दुनिया जंगल।
ले जायेगा तेरी नौका, उलझ उलझ क्यों होता पागल।

सुमर उसे हरि नयन बसा ले, बहती नदिया इसमें बह ले।
तेरा क्या सब कुछ ही उसका, मन अपना तू शीश झुका ले।
बहता जा गा हरि गीतों को, अंखियां बरसे भूल न उसको।
स्वामी वह ही चलती उसकी, पीड़ मिटा ले जप ले उसको।

557.

मगन ना होई हरि भजन में, साथ न कोई नीर नयन में।
किसका खोजे यहाँ सहारा, पड़ जा मन तू हरि चरणन में।
हरि हरि जप ले जाये नौका, जलता दिल दे उसको मौका।
खेल यहाँ सारा उसका ही, पता न कब ले जाये झोंका।

दे पतवार उसी के हाथों, जप ले मन यह दुनिया उसकी।
मैं की मन होली ही जलती, नाच रहे कठपुतली उसकी।
हरि हरि जप हरि मर्जी आया, देवे ज्ञान करे वह काया।
फैला तम मन भूल उसे ना, मिल जायेगी तुमको छाया।

हरि हरि जप प्यारा संग तेरे, सभी जगह वह तुझको घेरे।
बस तेरा क्या तोल स्वयं को, करो भजन मन मुंह ना फेरे।
हरि हरि भज मन मिटेगी चिंता, कर्ता भर्ता वह ही हन्ता।
बहे नीर कर याद उसी को, ले नौका को वह ही चलता।

558.

वही है हम तो नही कुछ, पा रहा ले मैं यहाँ दुख।
किसने पूछा आया मैं, बहे आंसू पी रहा दुख।
देता जैसा ज्ञान चले, योनी कितनी जग घूमें।
जप हरि मन बस क्या अपना, जगत में है चक्र घूमें।

प्यासे को पानी देवे, तपे धरती मेघ आवे।
वह करता सारी लीला, जपो हरि को चैन आवे।
सौप दे पतवार उसको, सत्य वह शाश्वत वही है।
चले मर्जी सदा उसकी, पर लगेगा साथ हरि है।

आ रहा जो जा रहा जो, सुख यही मन दुख यही है।
प्रीति मन तुम करो उससे, जो शाश्वत तू नहीं है।
हरि जप मन हरि को जप लो, जाये ले तेरी नौका।
सुख छिपा शाश्वत में ही, जाये ले तुझको झोंका।

धूप छाया खेल दुनिया, बस ना कुछ खेले छलिया।
लहर बन सागर में बहो, आंसू से भीगी अंखियां।
मैं मिटा कर मन समर्पण, शीश हरि चरण में रख ले।
मर्जी उसकी वह राखे, तप यही स्वीकार कर ले।

559.

जप मन शान्ति मिलेगी तुझको, तज दे मैं अपना ले इसको।
कठपुतली बन नाच रहे हम, पीड़ मिटेगी जप ले इसको।
सकल जगत का वह ही स्वामी, पड़ चरणों में ताप हरे वह।
उस बिन कोई नहीं खिवैया, जप ले नौका पार करे वह।

आया कहाँ, जाये कहाँ पर, जाने कुछ ना रोवें अंखियां।
बन जा दास उसी का पागल, मिल जायेगी तुझको छैया।
गा मन हरि हरि उसकी लीला, क्यों करता मन अपना मैला।
जीवन उसका वही चलाये, कौन यहाँ तू खेले छैला।

केवल उसका नाम सहारा, नयन रोये न और अधारा।
जप ले मन हो उसे समर्पित, ले जायेगी उसकी धारा।
बसा नयन में प्रीति बढ़ा ले, लहर बना सागर में बह ले।
मर्जी उसकी वही चलाये, दुख हरता तप शीश झुकाले।

560.

हरि घर जाना तेरा साजन, जप हरि को जग से शिकवा क्या?
सुपना दुनिया प्रीति यहाँ क्या, पल पल बदले दुख माने क्या?
लहर भागती रूके न कोई, जग से प्रीति किये दुख होई।
नीर बहाये अंखियां हरदम, साजन बिन ना पूछे कोई।

साजन मेरा वह ही प्यारा, नीर बहे पर हो ना खारा।
फूल खिले महके फिर बगिया, बना यहाँ जो हरी दुलारा।
हरि हरि गा मन याद उसे कर, नीर बहेंगे तेरे झरझर।
पावन गंगा तू बहता जा, ले जायेगी तुझको हरि घर।

जप ले हरि को सुखदाता वह, घेरे तुझको तू भूला क्यों?
हरि बिन कृपा खुले ना आंखें, जप ले हरि को रोता है क्यो?
उसकी दुनिया कठपुतली हम, नाच नचावे अपना क्या दम।
याद उसे कर नीर बहा ले, तीन लोक उसके आगे कम।

561.

आवे कोई जावे कोई, करे प्रतीक्षा आवे कोई।
किसकी पागल करे प्रतीक्षा, निर्मोही वह आंखे रोई।
जप ले हरि मन प्रीति बढ़ले, जग के शिकवे सभी मिटा दे।
बस जाये नयनन में मूरति, बरसे अंखियां ताप मिटा दे।

हरि हरि जप मन सांचा है धन, गूंज रही सब ओर वही धुन।
प्यासे प्राणों को जल मिलता, अंखियां बरसे जैसे सावन।
जीवन छोटा सुपना दुनिया, खेले खेल छले वह छलिया।
फंस तृष्णा में मनुआ रोवे, भीगी रहती हर दम अंखियां।

बीच भंवर में पड़ी नाव हो, कुशल खिलाड़ी वह ले जाता।
हरि हरि गा मन वह सुखदाता, केवट बन वह पार लगाता।
जप मन जप मन जपता ही जा, सब कुछ उसका तेरा कुछ ना।
शीश झुका दे चरण पकड़ ले, मर्जी उसकी देखे या ना।

562.

बना मन्दिर का पुजारी, मुझे नही हरि ठुकराना।
मेरे जीवन की आशा, न रूके आंसू का बहना।
ढूढ़े है तुमको अंखियां, छिप गया मुझसे छलिया।
क्या गुनाह मुझे बता दे, जग की अनजान गलियां।

बरसे नयनों से है जल, तडफू मछली सा बिन जल।
कैसे करे मीन पूजा, होश ना कटते नही पल।
ज्ञान बल हरि मुझे देना, अर्चना हो सके पूरी।
तुम बिना ना पार होवे, हरि सुनो तुम विनय मेरी।

बहते नयनो से आंसू, तुम बिना किसको कहें हम।
ऋष्टि का तू ही रचैया, देखो आंखें मेरी नम।
मैं अबल बालक तुम्हारा, प्यारा तेरा चाहता हूं।
तुम न मुझसे रूठ जाना, तुझ कृपा को मांगता हूँ।

ढल रही है शाम अब तो, आ मोहन तम है घेरे।
दीप हरि पथ में जला दो, पा सकूँ भय फिर न घेरे।
नयन में तुम बसो मेरे, सांझ क्या फिर क्या सुवेरे।
लहर बन बहता रहूँ, छूटे चिन्ता तू घेरे।

563.

कल क्या हो मन तू क्या जाने, हरिनाम जपो मन दीवाने।
दी चोंच वही चुग्गा देगा, बिन कृपा नहीं खुशियां जाने।
जो ज्ञान जगे तन करे वही, जप ले हरि को वह जगत मही।
ना भूल उसे रोती अंखियां, अन्तिम पल तक है साथ वही।

मन जप ले तेरा खेवट वह, ना दुख में रोयेगी अंखियां।
जिसने भी दामन थाम लिया, मिटते भय खिल जाती बगिया।
हरि हरि जप साथ सदा तेरे, सब ओर तुझे वह ही घेरे।
उसको भूला तू पावे दुख, कह दास उसी का मन मेरे।

सुख दुख के खेल खिलावे वह, नाचो उसकी कठपुतली बन।
कितना वह नाच नचायेगा, जाने ना हम उसका जीवन।
जप ले हरि चैन वही दिल का, प्यासे प्राणों को जल मिलता।
बस नाम सहारा इस जग में, दुख मिटे लहर जो भी बनता।

564.

तू ही तू है इस जग में, नीर क्यों मेरे नयन में।
दो पल की चाही खुशियां, वह भी रूठी इस जग में।
दिल नहीं लगता हमारा, बहती आंसू की धारा।
राख लो अपनी शरण में, बन सकूँ तेरा दुलारा।

हरि बसो नयन में मेरे, प्राण यह तुझे ही टेरे।
नयन से बहे है गंगा, विनय हरि तू मुंह न फेरे।
मैं अबल ज्ञानी नहीं हूँ, राख ले मुझको चरण में।
बीत जायेगी उमरिया, छवि रहे तेरी नयन में।

हरि मुझे तुम प्यार दे दो, थक पुकारूँ छांव दे दो।
सृष्टि के तुम हेा रचैया, बहे आंसू राह दे दो।
सांझ ढलती जा रही है, आंख मेरी रो रही है।
देख लो नजरे उठा कर, ना गलत हम सब तुही है।

565.

ओम जपो मन ओम जपो, ना और सहारा इसे रटो।
जाये कहाँ नैया न जाने, वह अपना खेवट सदा रटो।
नाम सहारा है इस जग में, अन्तिम पल तक साथ यही है।
अंखिया रोये कुछ ना दीखे, जपो ओम मन दवा यही है।

आये कहाँ से जाये कहाँ, हरि की लीला हरि ही जाने।
बहता जा बन लहर यहाँ पर, वही ले चले तू ना जाने।
जप ले इसको चैन मिलेगा, संग तेरे दुख दूर करेगा।
ना कर्ता बन गा ले हरि गुण, बन केवट वह लिये चलेगा।

स्वप्निल दुनिया बीतेगे पल, सहज बहेगा तेरा जीवन।
जप ले हरि को ज्ञान वही दे, जो उपजे हिय करता वह तन।
हरि हरि जप कठपुतली उसकी, ध्यान न टूटे डोरी उसकी।
जप ले हरि मिट जाते सब भय, कौन यहाँ मैं दुनिया उसकी।

566.

किसको सुनाएँ दर्द हम, सुन ले यहाँ पर कौन है?
बहता यहाँ नयन से जल, देता इशारा कौन है?
हरि चाहते तेरी कृपा, उठते न स्वर क्यों मौन है?
तुम राख लो अपनी शरण, हरि खो गया बस चैन है।

जाऊँ कहाँ ना दीखता, तम है बहुत मैं तड़फता।
जल जाये दीप ज्ञान का, आशा लिये मैं घूमता।
चल चल गिरे तड़फे बहुत, रोया बहुत आये न तुम।
क्यों ले रहा सांसे बता, मुझसे यदि रूठे हो तुम।

हरि नयन में मेरे बसो, मर्जी जहाँ भी ले चलो।
सब भूलूं मैं जग के गम, प्रीति में अपनी भिगो चलो।
सुमरन सदा चलता रहे, बन कर लहर बहता रहे।
कुछ मैं नहीं सब कुछ तुही, देखो नयन मेरे बहे।

567.

हरि का भजन करो सुखदाई, जग से काहे प्रीति बढ़ाई।
जाये कहाँ जाने न कोई, हरि को भूल यहाँ दुख पाई।
ताप हरे हरि उसे मनाओ, हरि का भजन करो सुख पाओ।
सारी दुनिया है इक सुपना, जप हरि को दुख से तर जाओ।

जपो उसे सुख का वह सागर, जप ले भर देगा वह गागर।
कठपुतली हम तो उसकी है, बरसे नयना निशदिन झर झर।
नाम सहारा इसको जप लो, शाश्वत यही मिला इससे स्वर।
सागर रूप हरी का जाने, बना लहर जप लागे ना डर।

हरि हरि भज हरि को जपता जा, सदा संग तू उसको तज ना।
सुख दुख के सब खेल उसी के, पीड़ हरे छोड़ो ना भजना।
हरि को भज ले तू पागल मन, नयना बरसे जैसे सावन।
इस नदिया में तू बहता जा, जल इसका गंगा सा पावन।

568.

अपनी मन्जिल सब खोज रहे, दुनिया सारी करती झिलमिल।
नाच रही सागर में लहरें, बन मिटती यह दुनिया स्वप्निल।
जाना कहां जाने न कोई, ताप हरे हरि उसको पाओ।
ज्ञान वही दे जपते जाओ, मैं को छोड़ चरण पड़ जाओ।

सब भाग रही तू यहाँ लहर, कुछ हाथ न अपने रखो सबर।
हरि रूप करे सागर लीला, जप संग तेरे लागे ना डर।
बन लहर यहाँ जी ले जग में, बहता जा गा हरि के नगमें।
कठपुतली उसकी नचा रहा, उसकी चलती क्या है बस में।

जब छलके दर्द बहे अंखियां, जप ले उसको वह ही रसिया।
हरि नाम सहारा इस जग में, जप उसको मिल जाती अंखियां।
मन सत्य यही उसकी दुनिया, ले जायेगा हरि का झोंका।
हरि चरण समर्पित हो जा मन, जप पार लगावे वह नौका।

569.

मन हरि हरि जप हरि को जी ले, दिल में जख्म लगे वह सी ले।
अपना नहीं पराया कोई, शीश चरण मन हरि के रख ले।
अनजान डगर न कोई खबर, जायेगा ले हवा का झोका।
पतवार तेरी हरि हाथ में, जप ले मन दे उसको मौका।

हरि हरि जप उसको जपता जा, हरि भज उस बिन चैन ना यहाँ।
ज्ञान उसी का मन यह समझो, ज्ञानी अज्ञानी सभी यहाँ।
जाये कहाँ मन रोये नयन, जप हरि दीखे सब ओर यहाँ।
कर उसे समर्पण मिटते दुख, तू कौन जान सब वही यहाँ।

सब जग वैभव पाना चाहें, ज्ञानी बन कर जीना चाहे।
अज्ञान तिमिर फैला इतना, हरि जप ले मन यदि सुख चाहे।
हरि कृपा बिना ना होता कुछ, ना पता यहाँ कल कित जाये।
बन्जारा बन जी ले जग में, जप ले मन यदि तू सुख चाहे।

570.

जप ले हरि मन का चैन यही, प्यासे प्राणों की प्यास यही।
दुनिया उसकी सच जान यही, खेले कुछ पल फिर यहाँ नहीं।
हरि जप ले मन भरता गागर, नयनों से नीर गिरे झरझर।
हरि नाम सहारा इसे जपो, जाना अन्तिम इसके ही घर।

सब ठीक यहाँ न कोई गलत, अंखियों से बहता है पानी।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, दुख वही मिटावे वह दानी।
सुमरन कर रखो सदा दिल में, स्वप्निल दुनिया खोना जग में।
अपना न कोई पराया है, सुख से बीतें पल गा नगमे।

पतवार सौंप दे हरि हाथों, सब हाथ उसी के पागल मन।
सौपेगा चैन मिले दिल को, कर्ता बन दुख पाये ना मन।
हरि प्रीति बढ़े हरि नयन बसे, छूटे मैं जो हरि सदा भजे।
जिसने पी ली हरि की मदिरा, सब जाये छूट ना हरि तजे।

571.

हरि हरि जपें मनाये तुमको, नीर बह रहे फेर न हमको।
सकल विश्व का तू निर्माता, झोली खाली भर दे इसको।
छिपे कहाँ मैं कुछ ना जानूं, लाज राखना इस मेले में।
शरण राख ले दम ना मुझमे, अंखिया बरसे रोये नगमें।

बीच भंवर में डोले नैया, बाट निहारूँ आवे रसिया।
तुम बिन सारा जीवन नीरस, देख हमें ले रोवे अंखियां।
चाह प्यार की नयना आंसू, तेरी हरपल बाट निहारूँ।
बीत न जाये कुछ पल बाकी, थक हारा मैं तुझे पुकारूँ।

तेरी ज्योति जले घट भीतर, तुमसे मांगू हरि मैं यह वर।
पार ला दे मेरी नैया, अंखियां मेरी झरती झर झर।
प्यासे प्राण पिला दे पानी, इस जीवन के तुम ही स्वामी।
नयनों में मेरे बस जाओ, कृपा करो तुम अन्तर्यामी।

572.

तुम बसो नयनों में मेरे, बीत जायेगी उमरिया।
सत्य जीवन के तुम्ही हो, झोली खाली सांवरिया।
मैं भिखारी जन्म का हूँ, मांगता तेरी कृपा को।
आंख खोली जग में आया, दे रहे थे प्यार हमको।

लोरी दे दे कर झुलाया, दूध भी मुझको पिलाया।
जब बहे नयनों से आंसू, गीत गा गा कर सुलाया।
चल कर गिरा चल फिर उठा, मन्जिल बुलाती थी मुझे।
कांटे बिखरे अनगिनत थे, थी फूल की आशा मुझे।

मैं बहुत भटका जगत में, प्यासा मैं न प्यास जाये।
दिल नहीं लगता तेरे बिन, छिप गये पर तुम न आये।
दास मैं हूँ हरि तुम्हारा, देखो रोती है अंखियां।
क्षणिक सुख दुख सब यहाँ के, अपने रंग में रंग रसिया।

573.

हरि का भजन करो सुखदाई, दुख हर्ता सब दुख मिट जाई।
नाम सहारा बस इस जग में, अन्तिम पल तक साथ निभाई।
दो दिन का सब खेल जगत में, अंखियां रोवे टूटे सुपने।
हरि शाश्वत मन प्रीति बढ़ाले, खिलती बगिया सींचा जिसने।

जप हरि हरि मन बहेगी गंगा, नहाये जितना हो मन चंगा।
उसकी प्रीति बहुत है प्यारी, मिटता जो बन यहाँ पतंगा।
मृगमरीचिका नाच नचावे, धन्य वही जो हरि को ध्यावे।
मिटती नही जगत में तृष्णा, हरि को जप मन हरि को पावे।

सुपना दुनिया सुपन सजा ले, हरि के अपने नयन बसा ले।
पी अमृत हरि नाम है प्यारा, जीवन अपना सफल बना ले।
मिट जायेगी सारी रेखा, क्या क्या रखेगा तू लेखा।
दे पतवार उसी के हाथों, लहर बना बह खा ना धोखा।

574.

जी रहे यह आस लेकर, तुम मुझे ना भुलाओगे।
बहता नयनो से पानी, देखोगे तुम आओगे।
जगपालक तेरे बालक, बोल मुझसे क्यों गया छिप।
पार न हो मुझसे नैया, बोले कुछ न गगन भी चुप।

प्यार तेरा बढ़े हरपल, मेरे नयन में तू बसे।
पार करो मेरी नौका, हरि भंवर में हम तो फसे।
दीखे न कोई किनारा, चलते चलते मैं हारा।
शरण अपनी राख लो हरि, नाथ चाहूँ दे सहारा।

स्वप्न कितने ही संजोये, टूटते जब खूब रोये।
नाम जब तेरा जपते हरि, चैन दिल को यही लाये।
वर हमे दे भक्ति का, अज्ञान में घूमते है।
प्रीति तुमसे ही बढ़े हरि, चरण की रज मांगते है।

अनजान पथ छले छलिया, फंस यहाँ तड़फे है जिया।
तुम बिना ना पार होवे, मेरी रोती है अंखियां।
दास हम हरी तुम्हारे, भूल ना जाना हमे तुम।
नाचे कठपुतली तेरी, देखो आंखे मेरी नम।

575.

सोच सोच कर पागल होता, काहे को ना हरि को जपता।
सोचे इतना पावे कुछ ना, जप ले हरि जो दिल में बसता।
जपता जा हरि उसकी दुनिया, नीर बहाती रहती अंखियां।
दे पतवार उसी के हाथों, पार लगेगी तेरी नैया।

जप ले मन तू सोच मिटेगी, दिल में हरि की ज्योति जलेगी।
ले जायेगा तेरी नौका, तूफानों से नही डरेगी।
हरि जप बरसे नयनों से जल, ताप मिटे मन होता शीतल।
सुख से गुजरेगे सारे पल, छोड़ो हरि पर दुनिया स्वप्निल।

नाम जपे जो हरि का हरपल, जीवन हो जाता मतबाला।
लिये चले हरि जाने कुछ ना, मगन रहे पी हरि की हाला।
हरि हरि जपो मनाओ हरि को, और नही कुछ जप ले हरि को।
दो दिन का यह रैन बसेरा, शाश्वत हरि दे दे अपने को।

576.

किसके साथ मनाये खुशियां, छिप गये तुम मुझसे छलिया।
तृष्णा हमको नाच नचावे, देखो भर भर आवे अंखियां।
इस जीवन के माली आ जा, सींच प्यार जल इसे खिला जा।
जनम जनम का दास तुम्हारा, अपनी मोहन प्रीति जगा जा।

जीवन तेरा करो कृपा हरि, बहते आंसू देखो तुम हरि।
खिल जाये मुरझाई बगिया, नजर उठा कर देखो तो हरि।
तेरा जीवन तुही संभाले, तुम बिन कहे किसे मतवाले।
ठोकर खा खा गिरूँ यहाँ पर, पड़े पांव में मेरे छाले।

हरि दर्शन को प्यासी अंखियां, लगता ना तेरे बिन जीया।
कैसे तुमको कहो पुकारूँ, अंधियारा जला दे दीया।
नमन करो स्वीकार हमारा, अज्ञानी पर बालक तेरे।
बरस रहे नयनों से आंसू, पड़े चरण में मुँह न फेरे।

577.

हरि हरि भज हरि भज गोविन्दम्, सब कुछ उसका ना कुछ भी हम।
कठपुतली बन कर नाच रहे, जप ले हरि को मिट जाते गम।
हरि हरि जप ले हरि की लीला, हरि हाथ डोर बहते नयना।
मर्जी जब तक वह करे खेल, ले जाये जोर नहीं अपना।

हरि हरि भज मान इसी में सुख, सच देख हाथ में ना है कुछ।
ज्ञानी अज्ञानी सभी यहाँ, हरि कृपा मिले तो मिलता कुछ।
हरि जपो मनाओ मन हरि को, किस्ती को पार लगावेगा।
सुपना बस रैन बसेरा यह, उपजे सुख जो हरि ध्यावेगा।

हरि हरि जप प्यारा नाम यही, कितने ही नाम धरे वह ही।
पड़ जा मन उसके चरणों में, मर्जी उसकी ले चले कहीं।
ज्ञानी वह ही दे ज्ञान वही, जो ज्ञान मिले तन करे वही।
जब बहे नयन से आंसू मन, हरि चरण चढ़ा वह जगत मही।

578.

मन हरि हरि जप तू कर ले तप, सांची ना प्रीति यहाँ हरि जप।
इस रंग बदलती दुनिया में, पल में परिवर्तित हरि को जप।
दो दिन का रैन बसेरा है, विछुड़ा जाता सब मेला है।
हरि प्रीति बढ़े सब मोह मिटे, जुड़ता शाश्वत से नाता है।

लहरे। सारी भागी जाये, पकड़े न हाथ कोई आये।
अन्तस सागर हरि बसा हुआ, ना ध्यान करे दुख को पाये।
जप ले हरि हरि बन लहर यहाँ, सागर डोले तू नहीं यहाँ।
जब तक नाचे मर्जी उसकी, हरि की कठपुतली जान यहाँ।

जप ले हरि मन पायेगा सुख, जग में उलझे उतना ही दुख।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, हरि ओर करो पागल मन मुख।
कर्ता भर्ता हर्ता वह ही, सुख दुख आवे ना बस कोई।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, जो ज्ञान जगे वह ही होई।

579.

आंसू नयना क्या कहूँ तुझे, कहने का कुछ अधिकार नहीं।
तुम कृपा करो बालक तेरे, तू जगत पिता हे सृष्टि महीं।
अज्ञान हरो दो प्यार हमें, जल बिन मछली से तड़फ रहे।
सुख शान्ति करो वर्षा जग में, प्यासे यह प्राण पुकार रहे।

कैसे पहुँचूगा कहो तीर, मैं करूँ अर्चना गिरे नीर।
अनजान गली बिखरे कांटे, पग पग पर चुभते मुझे तीर।
तपती धरती छैया देना, अंखियों का रूके नही बहना।
अन्तर्यामी सब कुछ जानो,अपने मन्दिर का दे कोना।

तेरा सुमरन हरि सदा रहे, अपने से करना नहीं जुदा।
हरि बसो नयन में तुम मेरे, शाश्वत तुम हो तुम रहो सदा।
तेरी दुनिया रखबाला तू, तेरी यादों में नयन बहे।
संग मेरे बन हम लहर बहे, छवि नयन रहे डर नहीं रहे।

580.

सत्य तू है सत्य तू है, संग सबके तू ही तू है।
व्यर्थ में हम तो उलझते, जपे ना हरि भूलते है।
चल रहा संसार तुझसे, कैसे मै ले के चलते?
हरि कृपा रखना सदा तुम, अज्ञान में हम भटकते।

ज्ञान का दीपक जलाना, हरि तुमसे विनती करते।
ना पता जाये कहाँ पर, प्यार देना आस करते।
नाचे कठपुतली तेरी, नयन में आंसू हमारे।
शरण मैं आया तेरी, राख ले मुझे तू द्वारे।

सांस में तेरा तराना, दास मैं हरि हूँ तुम्हारा।
न विलग पल भर भी होना, बहता हरि तेरी धारा।
बहूँ ले मैं नाम तेरा, नीर से मैं चरण धोऊँ।
जानता ना मैं खता क्या, बन पतंगा तुमको पाऊँ।

सुन तेरी वन्शी मोहन, बरसे नयनों से झड़ियां।
नयन में तुम बसो मेरे, बीत जायेगी उमरिया।
नयन में आंसू हमारे, पास ना कुछ दे सकूँ मैं।
द्वार पर तेरे पड़ा हूँ, सभी जानो क्या कहूँ मैं?

581.

हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई, पकड़ो चरण करे सो होई।
जैसे मर्जी वैसा राखे, पी हरि मदिरा मन सुख पाई।
क्या जग में स्वारथ का मेला, परिवर्तित ना कर मन मैला।
प्रीति बढ़ा हरि तुझे मिलेगे, मिटते दुख मन जप ले छैला।

हरि हरि जप चलता जा जग में, ध्यान न टूटे मन रख हरि में।
सदा साथ में सम्बल तेरा, बसा यहाँ हरि को नयनन में।
नीर बहे मन उसे पुकारो, शक्तिमान वह हम कठपुतली।
वही सुनेगा उसकी चलनी, नाच नचावे पकड़े सुतली।

हरि हरि जप मन प्यारा वह ही, गीत उसी के गा सुख आवे।
तम हरता देता प्रकाश वह, जो हरि आगे शीश नवावे।
स्वप्निल दुनिया झिलमिल करती, देख यहाँ पर सुपने कितने?
हरि बिन चैन मिले न दिल को, खिलता सुमन जपा है जिसने।

नाम उसी का मन है प्यारा, अन्तिम पल तक वही सहारा।
दे पतवार उसी के हाथो, बना लहर बह मैं तो हारा।
लाया ले जाये हरि मर्जी, मांग प्यार हरि से कर विनती।
मुक्ति चाह क्या हरि ही दीखे, मुरझाई बगिया फिर खिलती।

582.

देख ले मुझको कहाँ तू, नाथ दिल में बस गया तू।
बहते नयनों से आंसू, किस जगह पर छिप गया तू।
दुनिया तेरी रंगीली, पर हुई मैं तो अकेली।
खोजती आंखे तुझी को, दर्द बिखरा देख रो ली।

तू जगत का है नियन्ता, भाग्य मेरे का विधाता।
जी ना लगता तेरे बिन, नयन से है नीर आता।
कितने जन्मों की दासी, देखो रोती है अंखियां।
न कभी इस दिल से जाना, जी रही ले नाम रसिया।

तेरी यादें मुझे प्यारी, प्रीति को हरि तुम बढ़ाना।
नीर बहते ही रहे यह, नाथ मेरा यह खजाना।
तुम रहो नयन में मेरे, बीत जायेगी उमरिया।
सब जगत के भूल सुख दुख, चाह रही तेरी छैयां।

583.

जपता जा हरि के गा ले गुन, सब ओर गूंजती उसकी धुन।
हरि की लीला हरि ही जाने, जप हरि को सुख पा ले तू मन।
जपता जा सब उसकी चलती, मैला करता क्यों अपना मन।
पतवार सौंप दे तू हरि को, ले जायेगा वह केवट बन।

कठपुतली बन तू नाच रहा, हरि हाथ डोर न भूल यह मन।
झुक जा मन हरि के चरणों में, नयना बरसे जैसे सावन।
जो जपे टूटते सब बन्धन, ना जनम मृत्यु से लागे डर।
सब ओर नजर हरि ही आये, शाश्वत में जीता बना लहर।

हरि नाम जपो मन वह प्यारा, आंसू न बहेगा फिर खारा।
सुमरन कर पी उसकी मदिरा, कह ले चल मुझको मैं हारा।
मैं कौन यहाँ पल का जीवन, सुपने टूटे रोये हरपल।
शाश्वत से नयन लड़ा ले मन, दुख मिटे सभी दुनिया स्वप्निल।

584.

सब खोज रहे अपने सुख को, मन हरि भज खिले सुमन दिल को।
प्यासे यह प्राण पिला पानी, अमृत पी ले जप ले हरि को।
पल पल में बदले रंग यहाँ, अंखियां बरसे जैसे सावन।
क्या पकड़ यहाँ दुनिया स्वप्निल, जग से लिपटे दुख पावे मन।

हरि को जप ले हरि को जी ले, जो जख्म लगे उनको सी ले।
दो दिन का रैन बसेरा यह, झुक चरणों में मन सुख पाले।
अंधियारी रात डरावे जब, हरि को जप ले वह तेरा रब।
मर्जी उसकी से तू आया, ले जाये रूके न कोई तब।

जप ले हरि देवे ज्ञान वही, बिन कृपा जले ना ज्योति कहीं।
मन करो समर्पण हरि आगे, ले चले लगे डर कहीं नहीं।
पतवार सौंप मन हरि हाथों, सबका स्वामी सब ओर वही।
जप बहे नयन से आंसू मन, तप कर जप ले सुख छिपा वही।

585.

जपो मन नाम हरि सुख दाई

जिसने नाम जपा है हरि का, केवट बन ले जाई।
ध्यान ज्ञान सब जप ले हरि में, सब संताप मिटाई।
हरि हरि जप कट जाये रैना, करो समर्पण साई।
नीर दिखाये किसको जग में, हरि बिन शान्ति न आई।

जप ले मन जपता जा उसको, संकट सब कट जाई।
कांटो की सब चुभन मिटेगी, जपता जो है सांई।
बने लहर हम नाचे गायें, सागर नाच नचाई।
अपना क्या सब कुछ है उसका, मर्जी वह ले जाई।

प्रेम बढ़ा मन हरि से पागल, सुख से सुपना जाई।
रैन बसेरा दो दिन दुनिया, किसको पकड़े भाई।
अंखियां बरसे भेजो पाती, वह ही ताप मिटाई।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, सेवक बन जा साई।

586.

जपो मन नाम हरि सुखदाई

पाना क्या खोना इस जग में, मेला छूटा जाई। जप
ले हरि शाश्वत वह ही है, जपता जा हरि पाई।
कठपुतली हम नाच रहे हैं, वही नचाता साई।
डोर हाथ मैं उसके पागल, ध्यान करो दुख जाई।

खिल जाती मुरझाई बगिया, हरि से प्रीति बढ़ाई।
नयना बरसे रिमझिम रिमझिम, याद हरी जब आई।
नाम हरी का प्याला पीकर, मीरा सुध बुध खोई।
शूली ऊपर सेज पिया की, दन्श लगे ना कोई।

कितना भटको ठौर कही ना, हरि बिन चैन न आई।
शाश्वत हरि से प्रीति बढ़ा मन, अंधियारा मिट जाई।
ज्ञानी अज्ञानी सब जग में, सबका खेवट साई।
करो समर्पण उसके आगे, चैना दिल को आई।

587.

सूखे नहीं नयन के आंसू, पार करा दे मुझको नदिया।
कृपा तेरी बिन चल ना पाऊँ, रूठ न जाना मुझसे छलिया।
ज्ञानी अज्ञानी सुख चाहे, हरि बिन कृपा मिले ना राहें।
नीरस जीवन में रस भर दे, तेरा प्यार सदा हम चाहें।

कटती रातें प्रभु तारे गिन, छोटा जीवन दुनिया स्वप्निल।
खेलूँ रसिया रास रचा ले, दीखे ना लगता मेरा दिल।
पड़ा चरण में हरि मैं तेरे, नहीं यहाँ मैं तू ही दीठे।
सारा ज्ञान होय तब झूठा, खिले पुष्प ना जब तू रूठे।

नाथ भीड़ में हुये अकेले, अंखियां बहती देख हमें ले।
करूँ अर्चना पास न जो दूँ, दुख देता आंसू यह ले ले।
हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, बैठ चरण में शीश झुकाऊँ।
लाज राखना इस मेले में, चलकर तेरे द्वारे आऊँ।

588.

जो ठीक लगा तुम वही किया, तुमसे हम कौन करे शिकवा।
हरि विनती तुमसे मेरी है, बन कर रहना मेरे मितवा।
मैं अबल नाथ तुम शक्तिमान, बल तेरे से चल पाऊँगा।
बहते इन नयनों से आंसू, धोने चरणों को आऊँगा।

जग के मालिक लीला तेरी, नाचे कठपुतली हम तेरी।
हरि ध्यान तुम्हारा बना रहे, जानूं तेरे हाथो डोरी।
बस जाओ मेरे नयनो में, हरि नाम तुम्हारा जपे सदा।
तू ही जीवन तू ही मन्जिल, हरि ज्ञान जगे तू साथ सदा।

लहरें आयेगी जायेगी, जोड़ो सागर से मन रिश्ता।
अन्तस तेरे वह छिपा हुआ, मिटती पीड़ा हरि हिय बसता।
मन भटक न भूल भुलैया में, गा ले मन तू हरि के ही गुन।
सभी ओर वही जाये कहीं, शाश्वत हरि नयन बसा ले मन।

589.

बन गये गाफिल बता दो, क्या आ रहा मजा तुम्हे।
बन गये जग का तमाशा, आंसू गिरते किसे कहे।
न डगर कोई है मेरी, जाऊँ कहाँ ना जानता।
न रो सका चरणों में गिर, बना मैं गाफिल मानता।

लाज रखना ईश मेरी, थामों तुम बैयां मेरी।
बीत जायेगी उमरिया, ढले संध्या रैना घिरी।
जा रहा ले पवन झोंका, हरि हाथ मेरे कुछ नहीं।
तुझ कृपा की भीख मांगू, हरि ज्ञान दे मैं ना सही।

नमन को स्वीकार कर लो, कुछ पास ना जो दूँ तुझे।
अर्चना के फूल सूखे, पर तुम न ठुकराना मुझे।
दास मैं तेरा सदा का, तुम रूठ ना जाना कहीं। कर
सकूँ स्वीकार जो दे, जहाँ ले चलो मंजिल वही।

590.

अधिकार नहीं है कहने का, फिर भी हरि मैं तुमसे कहता।
देखो तो बहते आंसू को, क्यों रूठे लगते बता खता?
जग की अनजानी है गलियां, छिप गये छोड़ मुझको छलिया।
ना विरह सहा जाता तेरा, ना तड़फा रोती है अंखियां।

दीन बन्धु करूणा के सागर, कृपा करो तो जाऊँगा तर।
एक सहारा तू ही मेरा, अंखियां मेरी झरती झर झर।
प्यार हमे दो बालक तेरे, प्यासे प्राण तुझे ही टेरे।
सांस सांस में जपे तुझे हम, दूर करो अंधियारा घेरे।

सूखे नहीं नयन के आंसू, जियरा मेरा आता भर भर।
पार करा दो मुझको नदिया, बाट निहारूँ करो अब नजर।
अन्तर्यामी सबकी जानो, कृपा करना तेरी हूँ लहर।
अखियां मेरी बरस रही है, नयन बसो हरि कटे यह सफर।

591.

मन मान मिला अपमान मिला, मन यहाँ शिकायत क्या करना।
दो दिन का रैन बसेरा यह, मन छोड़ नहीं हरि का भजना।
जैसा राखे रहना होगा, जो दी सांसें जीना होगा।
हरि कृपा यहाँ मन मांग सदा, दे ज्ञान सुगम पथ फिर होगा।

जी रहे यहाँ सब ही भ्रम में, ना टूटे लेते है सुपने।
हरि प्रीति बढ़ा हरि की लीला, दुख ना आयेगे फिर डसने।
किससे मन करे शिकायत तू, पल पल परिवर्तित यह दुनिया।
ना लहर हाथ आये कोई, बहता जा रखबाला सैंया।

हरि बसा नयन में पागल मन, कट जाये सब दुख के घेरे।
मन नजर उठा कर देख जरा, अंखियां बरसे तम है घेरे।
सारे जग का रखबाला वह, जपता जा मन हरि चैन मिले।
सुमरन कर मन का मैल मिटे, तेरा मुरझाया फूल खिले।

592.

मैं भिखारी जन्म से हूँ, हरि लाज तुम रखना सदा।
मैं अबल मांगू सहारा, दे प्यार हरि चाहूँ सदा।
जगत की अनजान गलियां, देखो बहती है अंखियां।
तुम न मुझसे रूठ जाना, पांव पडू तेरे सैंया।

क्या तुझे उपहार मैं दूँ, नीर है ना पास कुछ भी।
सृष्टि के तुम हो रचियता, ले चलो मुझको कही भी।
मेरे नयनों में बसना, न उठा अब कोई सुपना।
सांसों में तेरा नगमा, मैं लहर सुमरन न खोना।

जपो हरि को मगन हो मन, जायेगे भ्रम मिट सारे।
ज्ञान इस दिल में जगेगा, करो समर्पण वह तारे।
दूर न मन्जिल कोई भी, जी रहे हम सांस लेते।
सौप दे पतवार उसको, छूटेगी मैं फिर बहते।

593.

मुझे हरि तुम प्यार देना, आ गया मैं शरण तेरी।
तेरे हरी हम खिलौने, जैसा रख मर्जी तेरी।
देख लेना नीर मेरे, सांसों में धुन तुम्हारी।
नयन से मेरे न जाना, कुछ न जानू नीर जारी।

तू ही सभी ओर छाया, जलती क्यों मेरी काया।
दास तेरा भ्रम मिटा दो, आंख में है नीर आया।
दूर ना मन्जिल जपो मन, खेला हरि उसमें रहना।
मन सुमर ले नाम उसका, क्या है पाना क्या खोना।

हरि जपो दे ज्ञान वह ही, जाये मिल खोये रस्ते।
उस बिना ना चैन आये, नयन यह निशदिन बरसते।
हरि जपो टूटें सभी भ्रम, क्यों हुआ बैचेन तू मन।
नाम अमृत जान ले तू, पी उसे हो जा मगन मन।

594.

कैसे पाऊँ तुमको कान्हा, तुम बिन बरसे मेरे नयना।
बाट निहारूँ तू ना आवे, चलती सांसे फिर क्यों जीना।
खोजूँ कहाँ पता ना जानूं, कहाँ छिपे कैसे पहचानूं?
अज्ञानी मैं बहते आंसू, बस जा दिल में तुमको मानूं।

यह बसन्त भी मुझसे रूठा, सारा जग लगता है झूठा।
प्रीति बढ़ाऊँ किससे बोलो, तू ही मुझसे जब है रूठा।
पांव पड़ूं मैं तेरे सैंया, देखो अब तो बहती अंखियां।
नहीं ठिकाना बनी लहर मैं, भूल गई क्यों तुमको सैंया।

कैसा रैन बसेरा दुनिया, जीना मरना तुझमे सैंया।
बसे हुए तुम रोम रोम में, सुरति न टूटे देना छैंया।
द्वार पड़ा हूँ नाथ तुम्हारे, सदा नयन यह तुझे निहारे।
बसो नयन में दूर न होना, विनती यही नाथ हम हारे।

595.

अकड़ क्या है तेरा जहाँ क्या, जैसी मर्जी राखे छलिया।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, उसकी ही यह सारी दुनिया।
मन्दबुद्धि कोई है ज्ञानी, अपनी अपनी लिये कहानी।
सुपने तैर रहे नयनों में, टूटें जब जब आता पानी।

हरि भज ले मन ज्ञान वही दे, पार लगावेगा वह नौका।
आये यहाँ जगत को देखा, जाता लिये हवा का झोका।
जप हरि हरि ना ठौर कही भी, स्वारथ का सब मेल यहाँ है।
नीर बहाती रहती अंखियां, जप ले हरि मन चैन वहाँ है।

प्यासे प्राण पिला दे पानी, बहता जीवन एक कहानी।
बन्जारा बन जग में जी ले, नहिं बचेगी कोई निशानी।
ध्यान डोर पर नाच छोड़ मैं, चढ़ा नीर प्यारा उसका बन मन।
कठपुतली हम करो समर्पण, डोर उसी के हाथ जान मन।

596.

हरि जपो टूटते सारे भ्रम, बैचेन हुआ मन आंखे नम।
उस बिन ना पर लगे नैया, कितना ही मन तू कर ले श्रम।
सब रूपों को है नमस्कार, हरि बह रही अंखियों से धार।
ना कोई रूप लुभा पाया, लगता ऐसा कुछ भी न सार।

मन भटक रहा जग के अन्दर, अन्तस न देखे सब अन्दर।
सुपना सी सारी दुनिया है, जप देख स्वयं को बनी लहर।
कितना ही भटक न चैन कहीं, अन्तस में तेरे छिपा वही।
तू निरख उसे हरपल पागल, देखे सब वह सब जगह वही।

जीते जी मुक्त न हुये यहाँ, मर कर क्या मुक्ति पायेंगे?
बह रहे नयन से आंसू जो, कैसे हम उसे चढ़ायेंगे?
न कोई ठिकाना समय चक्र, पल पल में खेल रचाता है।
बस में क्या पागल तेरे है, सुपने कितने ही लेता है।

मन जप ले हरि है चैन वही, जीना इसमें मरना इसमें।
पतवार सौंप हरि हाथों में, तू नहीं खेल सब है हरि में।
हरि हरि जप ले उसको पुकार, जैसा राखे कर उसे प्यार।
जायेंगे पल यह कट सारे, मिटता दुख बस मन नाम सार।

597.

पार करा दे मुझको नदिया, सभी बहारें रूठी रसिया।
तुम बिन मेरा जिया न लागे, कैसे पाऊँ तुमको सैंया?
अगम अगोचर पार न तेरा, खोजता मैं तेरा चेहरा।
इन नयनों में तुम बस जाओ, बहूँ लहर बन टूटे घेरा।

जीवनदाता जीवन तेरा, कहीं ले चलो मोड़ न मुख को।
अपना प्यार सदा तुम देना, अंखियां रोती देखो हमको।
जनम जनम का साथ हमारा, कृपा तेरी चाहे संसारा।
मिलती कृपा न रोवे अंखियां, बहे नहीं फिर आंसू खारा।

दीनबन्धु करूणा के सागर, देखो बहते नयना झर झर।
प्यासे प्राण पिला दे पानी, बन्शी धुन सुनने को आतुर।
हरि हरि जपे मनाये तुमको, बहता इन नयनों से पानी।
दास तुम्हारा अपना लो हरि, शरण तुम्हारी मैं अज्ञानी।

598.

हरि हरि हरि हरि, हरि कह प्यारे, नैया वह ही तेरी तारे।
सुमरन कर भय सभी मिटेगे, नदिया उसकी बह ले प्यारे।
जीवन उसका कौन यहाँ तू, नचा रहा वह नाच रहा तू।
दो दिन दुनिया रैन बसेरा, जप उसको मन सुख पा ले तू।

मृगतृष्णा मन यहाँ भगावे, तृप्ति मिले जब हरि गुन गावे।
प्यासे प्राण नाम जल पी ले, ज्ञान जगे दुख दूर हटावे।
अंधियारे में भी दीपक वह, तम हरता मन पथ को पावे।
पल पल परिवर्तित यह दुनिया, शाश्वत को जप दुख ना आवे।

जप ले मन हरि करो समर्पण, ध्यान न टूटे वही चलावे।
उसकी लीला वह ही जाने, नहीं उलझ जप मन खिल जावे।
आये कहाँ से जाये कहाँ, अपनी अपनी सभी बखाने।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, कठपुतली उसकी हम जाने।

599 .

सुमरन तेरा सदा रहे हरि, लहर हूँ मैं तेरी निशानी।
जैसे मर्जी मुझे चलावे, मिटा मैं सब तेरी कहानी।
बहे आंसू देख इन्हे ले, तुम बिन बता कहें हम किसको।
धारा तेरी बहते जाये, संग मेरे ना भूलें तुमको।

लाज राखना इस मेले में, शरण तुम्हारी आया हरि मैं।
मर्जी तेरी चले जहाँ यह, घूम रहा सुपने ले क्यों मैं।
संग तेरे मैं रास रचाऊँ, नयनों में मेरे बस जाओ।
तुझमे ही मैं लय हो जाऊँ, बन्शी की धुन मुझे सुनाओ।

तेरी लीला चलता यह जग, ढूंढ रहा पाऊँ खोया मग।
अंधियारा है दीप जला दो, पथ हो जाये मेरा जगमग।
बसे हुए तुम रोम रोम में, सुरति कभी ना मेरी हरना।
दास तुम्हारा जनम जनम का, अपना प्यार सदा तुम देना।

600.

रामा राम जपूँ दिन राती, निशदिन मेरी अंखियां बहती।
दर्शन को यह प्यासे नयना, कैसे भेजूँ तुमको पाती।
छिपे कहाँ ना जानूं छलिया, तुम बिन रोवे मेरी अंखियां।
अपना प्यार मुझे तू दे दे, पांव पड़ू मैं तेरे सैंया।

तुझे पुकारूँ तू ना आवे, कैसे इस दिल को समझाऊँ।
जनम जनम का साथ हमारा, क्यों भूला मैं तुझे मनाऊँ।
चल चल गिरूँ बचावे मुझको, थामों बैयां हारा मैं तो।
जीवनदाता जीवन तेरा, सुरति न टूटे संग हो तुम तो।

मेरे केवट भूल मुझे ना, तुम बिन पार न होगी नैया।
घबराये लहरों में जियरा, देखो भीगी मेरी अंखियां।
राम जपूं मैं राम पुकारूँ, सांस सांस में तेरी हो धुन।
लय हो जाऊँ गाते गाते, नयन बसो शाश्वत तू ले सुन।

601.

चुप हो जा मन चुप हो जा मन, चुप नभ उसमें पर गूंजे धुन।
सब ओर राज उसका छाया, अन्दर वह ही चुप हो जा मन।
जो खोज रहा अन्दर तेरे, कितना दौड़ो ना चैन यहाँ।
उससे मन अपनी पींग बढ़ा, दुख मिटते रहता सदा यहाँ।

हरि शाश्वत गा ले गीत यहाँ, खेले कुछ पल न जाये कहाँ?
मन जप ले हरि उसकी दुनिया, अनजान न कुछ भी पता यहाँ।
बिखरा है दर्द जले जब दिल, ना कोई सुने रोये नयन।
दीखे हरि एक सहारा बस, जपता जा खिलेगा हिय सुमन।

चुप हो मन देख जगत कैसा, लगती चोंटे रोये अंखियां।
जप हरि उस बिन ना चैन यहाँ, मैं छोड़ जले ना जिया यहाँ।
जप ले मन जपता जा उसको, ना छोड़ उसे घेरे सबको।
मिट रही कहानी सभी यहाँ, मन पकड़ उसे देखो सबको।

602.

सुख दे दुख दे मर्जी तेरी, हरि जो तूने रचना रच दी।
ध्यान मेरा न तुमसे टूटे, अंखियां तो आंसू से भर दी।
प्यार तुम्हारा मिले सदा प्रभु, बालक तेरा सुन लो विनती।
अनजानी जग की है गलियां, हरि बिन कृपा न बगिया खिलती।

अंखियां रोवे तुझे बुलावे, आ जाओ मोहन तुम प्यारे।
तुम बिन मेरा जिय न लगत है, कहाँ छिप गये हम तो हारे।
सबका तू ही भाग्य विधाता, क्या लिख दी जो तू ना आता।
बस जाओ मेरे नयनों में, नीर नयन से मेरे आता।

जनम मरण का साथ हमारा, सदा चाहूँ तेरा सहारा।
दीखे ना क्यों मुझको छलिया, बहती है नयनों से धारा।
बन्शी की धुन सुन नाचूं मैं, पियूं नाम का तेरा प्याला।
खोऊँ मैं अपनी सुध बुध को, मुझे पिला दे ऐसी हाला।

603.

हरि हरि गाऊँ हरि मनाऊँ, खोया बालम उसको पाऊँ।
टूटी वीणा स्वर ना उठते, फिर भी उससे आस लगाऊँ।
पूजा की विधि से मैं वंचित, जियरा भी मेरा है कुंठित।
फिर भी आस लगाये बैठा, कृपा मिलेगी मैं ना पंडित।

जीवनदाता जीवन तेरा, अंधियारे ने मुझको घेरा।
दीप जला दो ज्ञान मुझे दो, इस जीवन में होय सुबेरा।
घट घट बसते हरि तुम्ही हो, अन्तर्यामी सबकी जानो।
सुरति तुम्हारी बनी रहे हरि, सदा प्यार पाऊँ हरि मानो।

द्वार तुम्हारे खड़ा नाथ मैं, दर्शन दो यह प्यासी अंखियां।
चल चल कर मैं हार गया हूँ, शीश झुका है रोयें अंखियां।
जाती संध्या रैना आती, अब तो नाथ जला दो बाती।
सफल होयगा जीवन मेरा, गिरे नीर चरणों को धोती।

604.

हरि हरि गा हरि की सब लीला, नाचे सागर करता क्रीड़ा।
बन लहर यहाँ हरि खेल करे, संग सदा जपो मिटती पीड़ा।
डगमग नौका को लिये चले, जप ले मन दिल का सुमन खिले।
नदिया को पार करावेगा, मन ध्यान करो हरि चैन मिले।

मिल मिल कर विछुड़ रही लहरें, ना यहाँ लहर कोई ठहरे।
बहता जा जीवन नाम यही, वह धन्य सदा सागर सुमरे।
जग का सारा रस क्षण भंगुर, क्यों खोया इसमें अमतृ तज।
मन प्रीति बढ़ा हरि शाश्वत है, दुख मिट जाते मन हरि को भज।

हरि बिन ना पार लगे नैया, उस बिन रोती रहती अंखियां।
कितनी मुरझाई हो बगिया, जप ले खिल जाती है कलियां।
हरि भज हरि भज हरि भजता जा, मिटता अंधियारा हरि तज ना।
अन्तिम पल तक दे साथ यही, सुख मिलता दुनिया में फस ना।

605.

बालम ही रूठ गया हम से, फिर कहो सांस क्यों हम लेते?
बालम बिन नीरस यह दुनिया, चरणों को आंसू से धोतें।
मिट सकूं पतंगा मैं बनकर, बालम बिन क्या है दुनिया में।
जलूं विरह में रोये नगमे, गाता जाऊँ उसके नगमें।

खिल जायेगा मन हृदय सुमन, मिट जायेगी सारी उलझन।
पतवार सौंप दे तू उसको, दे ज्ञान वही चलता जा मन।
जी ले पल पल जी ले हरि को, ना पता कहाँ फिर कल हम हो।
इस जीवन का वह ही स्वामी, मैं मिटे मिलन तब हरि से हो।

चहुँ ओर भागता मन पागल, ना शान्त कभी होती तृष्णा।
जप ले मन हरि है सत्य सदा, स्वर उठते गाती है वीणा।
कितने की सजा यहाँ सुपने, बन बन टूटे रोता यह मन।
हरि प्रीति बढ़ा सब कष्ट मिटें, जप ले हरि को मन बसा नयन।

606.

उड़ कर यह पंछी जाये कहाँ, कोई ना देखे नीर यहाँ।
मन हरि भज ले जग में जी ले, उसकी मर्जी से चले जहाँ।
बिन कृपा सदा अंखियां रोई, जपता जा रखबाला वह ही।
मन शीश झुका हरि चरणों में, तेरा खेवट बस है वह ही।

दो दिन का रैन बसेरा है, सुख दुख का खेला चलता है।
अपने है हाथ बता क्या मन, आता पीछे से रेला है।
जप ले हरि है मन चैन यही, परिवर्तित जग ना ठौर कहीं।
जीवन उसका जैसा राखे, बिन कृपा मिले ना ज्ञान कहीं।

हरि को दे दे पतवार यहाँ, बहता जा नदिया है उसकी।
स्वप्निल दुनिया ले खेल रहा, मूरति मन नयन बसा उसकी।
हरि नयन बसे मन पीड़ मिटे, शिकवे मिट जाते फिर सारे।
ले चले जहाँ मन्जिल वह ही, मैं रहता ना हरि के द्वारे।

607.

पागल हूँ पागल बन आया, तुम माफ मुझे कर देना सुन।
तुमने रचना जैसी रच दी, उसके ही तो है सारे गुन।
बहती अंखियां ना नीर रूके, न कोई किनारा मैं जानूं।
मांगू बस प्यार तुम्हारा हरि, जीवन तेरा यह ही जानूं।

ले चलो जहाँ मर्जी तेरी, सुमरन हरि सदा रहे तेरा।
तुम बिन रोये मेरी अंखियां, कितने जन्मों से दास तेरा।
मेरे नयनों में बस जाओ, गूंजे बन्शी की प्यारी धुन।
बहता जाऊँ नदिया तेरी, हरि माफ करो मेरे अवगुन।

तू संग मेरे ना ज्ञान बुझे, मैं मिटा यहां तम ने घेरा।
विष की घूंटो को पीकर भी, समझूं प्रसाद यह है तेरा।
मैं अबल तुही मेरा सम्बल, दे शक्ति रजा में मगन रहूँ।
ना मुझे शिकायत कोई हो, बहते नयना हरि सदा चहूँ।

608.

यह पाँच भूत का महापिण्ड, स्वर उठते गिरते रहते हैं।
दृष्टा बन जा तू देख इसे, ना सन्त मोह में पड़ते है।
जाने ना बस अपने दुनिया, उपजे जो ज्ञान चले दुनिया।
हरि जपे बिना ना चैन मिले, पल पल में रोवे यह अंखियां।

जप ले मन हरि को जपता जा, सुपना दुनिया माने दुख क्या?
पल पल में रंग बदलते सब, शाश्वत हरि जप फिर डरना क्या?
जप ले मन हरि हरि चैन वही, यहाँ मन्दबुद्धि और ज्ञानी।
विधि ने जैसी रचना रच दी, चलती उसकी ही मनमानी।

मन पड़ जा हरि के चरणों में, नौका को पार लगावेगा।
पतवार सौप दे तू उसको, वरना जीवन भर तड़फेगा।
जप ले हरि हरि तम दूर हटे, सांसे पुकारती रहें उसे।
तूफानों से डर ना लागे, जिसके दिल में हरि सदा बसे।

609.

बहती लहर न मन्जिल कोई, जो भी राम करे सो होई।
प्यार राम का हरपल चाहूँ, देखो मेरी अंखियां रोई।
इस जीवन को देने बाले, तुम ही सबके भाग्य विधाता।
कैसे पूजा करूँ तुम्हारी, मिले कृपा वह तुमको ध्याता।

ढलती संध्या आती रैना, पता न जानूं बहते नयना।
जल जाये जब दीप ज्ञान का, चले पता संग हरपल सजना।
जर्रा जर्रा तुझे मनाये, तेरे गीत हवाएँ गाये।
अज्ञानी हम नीर बहाये, कैसा खेल भूल हम रोये।

दास तुम्हारा जनम जनम का, तुम बिन चैन कभी ना आये।
बस जाओ मेरे नयनों में, सभी तरफ तुझको ही पाये।
शरण तुम्हारी लाज राखना, देख हमें लो बहते नयना।
अपनी कृपा बनाये रखना, सदा करूँ मैं तेरी वन्दना।

610.

जाये कौन कहाँ ना जाने, पकड़ रहा किसको दीवाने?
बहती लहर यहाँ बहता जा, करो स्वीकार हरि जो माने।
अपना कौन पराया जग में, खेला है यह सब दो दिन का।
शीश झुका दे हरि चरणों में, मिट जायेगा सब दुख मन का।

हरि हरि गा संगीत मधुर है, न जाने हम खोई डगर है।
आयेगा चैना इस दिल को, झरते नयना नहीं खबर है।
हरि हरि जपले ज्ञानी वह ही, कौन यहाँ हम करता वह ही।
छोड़ यहाँ मैं हरि को जी ले, लिये चलेगा किस्ती वह ही।

देा दिन रैन बसेरा दुनिया, छलक रही पल पल में अंखियां।
बसा नयन में हरि की मूरति, बीतेगी फिर सुख से घड़ियां।
सुरति रहे मन हरि की हरपल, बदले रंग यहाँ बहता जल।
ज्ञान ध्यान सब समझ उसी का, सत्य देख तुझमे कितना बल।

611.

चंचल तू मन ना हरि जपे, मन क्या शिकायत तू करे।
मृगतृष्णा ले भूला हरि, नित दुख का तू सृजन करे।
मन जप हरि मिट जाये दुख, क्या प्रीति जग से है न सुख।
पल में पलटते सब यहाँ, जप ले हरि बढ़ता है सुख।

जप ले मिटेगा कोहरा, खिलता हृदय क्यो रो रहा।
जप ले उसे दिल में बसा, इन सांस में वह बह रहा।
डगमगाये नाव तेरी, जानता न नदिया गहरी।
पकड़ ले मन हरि चरण को, जा रहा ले नाव तेरी।

स्वप्न सा संसार सारा, जपो मिटेगा भ्रम सारा।
देख ले जो देखता है, नहा उसी में हरि धारा।
जप हरि सुख का है सागर, जपे जा मैं को मिटा ले।
बीत जायेगी यह रैना, कर समर्पण हरि बचा ले।

612.

हरि बिन कहाँ सहारा पागल, सारी दुनिया है इक जंगल।
पकड़ यहाँ मन हरि का दामन, नहीं बहेगा फिर खारा जल।
प्रीति बढ़ा हरि उसकी दुनिया, छलता रहता हरपल छलिया।
कठपुतली हम खूब नचाता, डोर हाथ हरि छलके अंखिया।

सुरति रहे हरि हाथ डोर है, जप ले उसको कर ले क्रीड़ा।
झरती अंखियां प्रेम बढेगा, जप ले हरि मिट जाये पीड़ा।
हरि हरि जप मन हरि की लीला, घट में बैठा अन्तर्यामी।
उस बिन रोती रहती अंखियां, जप ले उसको सबका स्वामी।

सुपनो को ले कौन रहा है, जप हरि को जप कौन रहा है।
जोड़ो उससे नाता मन तू, देख उसे बस चैन वहाँ है।
हरि हरि जप दुख सभी मिटेगे, जग में उलझ मिले ना रस्ता।
नयन बसे जब हरि की मूरति, जहाँ रहे मन्जिल ना थकता।

613.

तन चाह लिये जब व्याकुल हो, जप ले हरि को दे शान्ति वही।
उस बिन ना शान्ति मिले दिल को, जप शान्ति मिले फिर करो सही।
कर ले विश्वास हरी पर मन, खिलता मुरझाया यहाँ सुमन।
लीला उसकी कठपुतली हम, जो ज्ञान मिले करता वह तन।

उठती गिरती है लहर यहाँ, न पता जायेंगे कहाँ कहाँ?
मन प्रीति लगा हरि को जप ले, उसका ही सारा राज यहाँ।
हरि हरि जप गा ले उसके गुन, बजती रहती अनहद धुन सुन।
कितना अंधियारा हो जपले, मिलती प्रकाश की यहाँ किरन।

उसका जीवन ले जाये वह, ना अपनी चलती कभी यहाँ।
उपजे जो ज्ञान करे खेला, सूखें ना आंसू यहाँ कभी।
पड़ जा मन हरि के चरणो में, मन सुरति करो हरपल उसकी।
सुख वहीं ले चले वह किस्ती, डर ना नदिया भी है उसकी।

614.

तन्हाई में किसे पुकारे, टूटे जग के सभी सहारे।
नहीं रूके नयनों का पानी, जपले उसको तू क्यो हारे?
लिये जा रहा वह ही किस्ती, मैं को हटा प्रकृति नित खिलती।
नये नये नित रूप सजा कर, नित नित ताने बाने बुनती।

लगता जब न कोई ठिकां है, टूटे दिल की यही दवा है।
उसे पुकारो सदा पास में, जीवन का मन चैन छिपा है।
हरि जप हरि जप हरि की लीला, करो समर्पण कह मैं कुछ ना।
जैसी मर्जी वैसा राखे, दास बनो रहते फिर दुख ना।

हरि हरि जप मृग तृष्णा मिटती, सुपने ले ले अंखियां रोती।
खिलती कलियां कौन खिलावे, समझे ऐसे वह खुद खिलती।
हरि हरि जप मन ज्ञानी वह ही, उपजे घट में होता वह ही।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, लिये चलेगा नैया वह ही।

615.

जब तक चल सकता तू चल ले, अज्ञात छिपा पूजा कर ले।
कितने सजा रहा तू सुपने, पूरे ना हो हरि को जप ले।
सुरति करो मन हरपल उसकी, हरि जप इस बिन चैन ना यहाँ।
जाये कहाँ ना पता हमको, बना लहर बह उसी का जहाँ।

हरि भज हरि भज उसकी लीला, मर्जी उसकी करता क्रीड़ा।
कितने आये चले गये फिर, जप ले हरि मिट जाती पीड़ा।
इन सांसों में वह ही बहता, ध्यान करो मन झुक मैं मिटता।
दो दिन का का यह रैन बसेरा, सुपने ले ले तू क्यों फंसता।

हरि हरि जप ले मन सुख वह ही, जग को पकड़ेगा दुख होई।
छूटा जाता सारा मेला, ठोकर खा खा अंखियां रोई।
देख स्वयं को कौन यहाँ तू, किसकी मर्जी से तू आया।
किसने पूछा हरि की लीला, जप ले मन मिल जाती छाया।

616.

अपनी प्रीति में रंग मोहन, दास तुम्हारा पड़ता पैयां।
सारी दुनिया भागी जाती, छलक रही हैं मेरी अंखियां।
ज्ञानी तू ही ज्ञान मुझे दे, अज्ञानी मैं राह न जानू।
संग सदा मैं बालक तेरा, कृपा मिले तो पथ पहचानूं।

दीनबन्धु मुक्ति के दाता, पकड़ यहाँ क्या समझ न आता?
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, सुपने इतने जी घबराता।
नयन बसे छवि चलूं ले सुरति, छिप ना शरण तुम्हारी आता।
अवगुन मेरा कुछ भी ना हरि, कठपुतली हूँ मुझे नचाता।

हरि हरि गाये तुझे मनायें, पथ में तेरी छैंया पायें।
जनम जनम का दास तुम्हारा, देखो नयना आंसू आये।
तुझे समर्पित रोंया रोंया, फिर भी होता मैं क्यों चिंतित।
लाज रखना इस मेले में, देखो मुझ को मैं ना पंडित।

617.

गीत अपने गा रहे सब, गा रहा हूँ गीत मैं भी।
हरि सुमर आनन्द आवे, शान्ति ना उस बिन कभी भी।
दास मन बन जा हरी का, तम घना दीपक जलेगा।
उस बिना रोती हैं अंखिया, जप जिया तेरा खिलेगा।

सुख यहाँ दुख भी यहाँ है, खेल हरि का चल रहा है।
जपो हरि सिर को झुका ले, ना किसी का मैं रहा है।
बहता नयनों से पानी, हरि चरण पड़ वही दानी।
ले चले वह नाव तेरी, प्यासे को दे वह पानी।

धूप छाया खेल दुनिया, मुझे बना अपना रसिया।
हरि बसो नयन में मेरे, बीत जायेगी उमरिया।
तुम बिना सूना जहाँ है, जबकि घट घट में बसा है।
कैसे मुझे ज्ञान आवे, कर कृपा यह सिर झुका है।

शक्तिदाता दास तेरा, चाहता मैं तेरा संबल।
हरि कभी ना रूठ जाना, देख लो बहता नयन जल।
हरि जपूं तुमको मनाऊँ, जाते पल निज रंग दे दो।
नित बढ़े हरि प्यार दे दो, लो शरण में छांव दे दो।

618.

हरि जप दिल को बहला ले मन, सारा जग है बस इक सुपना।
पकड़े किसको हाथ न आये, लहर बना सागर में बहना।
सब ही खोज रहे हैं सुख को, उलझे जितना जग में है दुख।
प्रीति बढ़ा हरि ध्यान करो मन, दूर नहीं वह तेरे सम्मुख।

कितनी चली यहाँ आया चल, हरि जप कर्ता तू ना बन मन।
जैसी रचना रच दी उसने, कठपुतली हम उसका जीवन।
सुख से गुजरेगे पल जप ले, डोरी पर मन ध्यान लगा ले।
ज्ञान जगे जो घट के भीतर, करे वही तन देख समझले।

जप हरि चलता जा इस जग में, मोह करे ना कांटे पथ में।
मृगतृष्णा मिट जाती सारी, बस जाते जब हरी नयन में।
हरि लीला सब ओर हरी है, छोड़ो मैं सब ओर वही है।
करो समर्पण उसके आगे, तेरा केवट सदा वही है।

619.

अपने अपने गीत यहाँ गा, सभी यहाँ पर खो जाते है।
कितना ही हम रहे खोजते, कभी नहीं पर पा पाते है।
प्रीति बढ़ा हरि सब क्षण भंगुर, आंसू यह ना रूक पाते हैं।
मोह करे क्या परिवर्तित जग, शान्ति मिले जो हरि जपते है।

गा ले हरि मन चैन मिलेगा, तृष्णाओं में काहे फंसता।
दो दिन का यह रैन बसेरा, कर्ता बन क्यों दुख में पड़ता।
कठपुतली बन नाच रहे है, कितने अरमा मचल रहे हैं।
प्यासे प्राण पिला दे पानी, जप हरि भूले तड़फ रहे है।

जपता ही जा हरि जप ले मन, क्या शिकवा इस जग से करना।
हरि मर्जी से जग में आया, ले जाये जब जोर न अपना।
नयन बसा ले हरि को जप ले, जहाँ रहे फिर वह ही मंजिल।
उस बिन और सुने ना कोई, यहाँ बहा ले कितना ही जल।

620.

कितने लेता रहता सुपने, जप हरि तेरे बस क्या कितना?
हरि को सुमर मुक्ति का दाता, सारा जग तों है इक सुपना।
जाल बिछाये तृष्णा हरि जप, मन भटके यह चैन न पाये।
सुमर मिटेगी तेरी पीड़ा, शान्ति मिले मन यह सुख पाये।

आये यहाँ क्या है प्रयोजन, बहता पीड़ा का दरिया है।
हरि बिन मनुआ यह दुख पावे, जप उस बिन ना दर्द मिटा है।
हरि हरि जप मन वही सहारा, मिट जायेगा सब अंधियारा।
दिल में उसकी ज्योति जला ले, नहीं बहेगा आंसू खारा।

ज्ञान उपजता तन वह करता, झुक मन मांग ज्ञान हम निर्बल।
सबका स्वामी सृष्टि रचियता, प्यासे प्राण पिला इसको जल।
सुमरो सदा न भूलो इक पल, नाच रहे सब उसका ही बल।
नयन बसे जब हरि की मूरति, सभी जगह वह घर क्या जंगल।

621.

चाह सुख की स्वप्न दुनिया, छलता है हमको छलिया।
न रूके नयनों के आंसू, बह रहा है दर्द दरिया।
हरि भजो दे ज्ञान वह ही, कर समर्पण स्वामी वही।
लीला उसी की कौन हम, नाचे हम मदारी वही।

हरि भजो तृष्णा मिटेगी, धार उसकी ले चलेगी।
जब गिरे नयन से आंसू, याद कर पीड़ा मिटेगी।
हरि को पा बन कर पतंगा, पाना क्या खोने को क्या?
जब हरि नयनों में बसते, जो सुख मिले त्रिलोक क्या?

तप यह बस मन हरि जप ले, बस सहारा एक जग में।
बहती जाती है नदिया, देखो क्या तेरे बस में?
जपो हरि दे ज्ञान वह मन, ज्ञान आवे करे वह तन।
सौंप दे पतवार हरि को, कर्ता ना बन हरि का बन।

622.

कौन हूँ हरि कौन हूँ मैं, खोज क्या मैं कौन हूँ?
बह रहा है दर्द दरिया, बहते नयन मैं कौन हूँ।
क्या करूँ हरि तू बता दे, मैं अबल जग के रचैया।
कर्म शुभ हो शक्ति देना, दास तेरा पड़ू पैंया।

चाहूँ हरपल मैं तुमको, जाती ले तेरी धारा।
दास तेरा मैं सदा हरि, न बहाओ आंसू खारा।
घूम रही सारी दुनिया, जाये मिल खोई खुशियाँ।
नाम तेरा ही सहारा, पड़ू चरण में दे छैया।

कौन सुनने को यहाँ है, ज्ञान दे तेरा जहाँ है।
प्यास जन्मो की मिटा दे, छिप न अब दे पथ कहाँ है?
झर रही अंखियां हमारी, देख लो अब तुम मुरारी।
ढलती जाये यह संध्या, राह देखें हरि तुम्हारी।

623.

सुरति करो मन सुरति करो मन, सब कुछ उसके हाथ जान मन।
उसकी लीला जग में आया, सागर वह तू यहाँ लहर बन।
हरि जप और यहाँ क्या जग में, कितने दन्श रो रहे नगमे।
बहे नयन हरि चरण चढ़ा दे, देख यहाँ क्या तेरे बस में।

आया जग में उसकी लीला, नाच यहाँ जप मिटती पीड़ा।
जप हरि तज ना पल भर उसको, सुख पाये मन देखो क्रीड़ा।
बरस रहा नयनों से है जल, आज यहाँ पर पता न हो कल।
पल पल बदले खेल यहाँ सब, सुख पाये मन दुनिया स्वप्निल।

हरि हरि बोलो हरि को जी लो, अमृत है यह इसको पी लो।
बहता जा बन लहर यहाँ पर, तप कर लो हरि नयन बसा लो।
हरि की बगिया करो समर्पण, कर्ता ना बन पकड़ो दामन।
ज्ञान ध्यान सब जान उसी का, जप हरि सब यह उसका जीवन।

624.

जप ले हरि मन चैना आये, काहे अपना जिया जलाये?
जाती संध्या अब तो देखो, जप ले हरि को हरि को पाये।
यहाँ कहानी बदल रही सब, पकड़े क्या करता नादानी।
छोड़ उसी पर दुनिया उसकी, रूकता नहीं नयन का पानी।

बना मदारी हमें नचाये, नहीं भूल दुख कितना पाये।
उस बिन कोई नहीं सहारा, कृपा मिले तो ही सुख पाये।
छोड़ यहाँ मैं सब कुछ हरि का, उससे बढ़ा न कोई दानी।
थिर ना कुछ भी जप ले हरि को, दुख से बहेगा न फिर पानी।

उसकी लीला वह ही जाने, मर्जी उसकी घूम रहे हम।
इस जीवन का वह ही मालिक, दुख हर्ता जप आंखे है नम।
पायेगा सुख पी अमृत को, कट जायेगी सुख से रैना।
नाम सहारा बस इस जग में, साथ तेरे न छोड़ो जपना।

625.

पी ही प्यारा रट ले पी को, प्यासे प्राण सुमर ले हरि को।
अनजानी जग की यह गलियां, हरि बिन कृपा न पाये पथ को।
जी ले जैसी रचना रच दी, तेरा क्या बस जग यह सुपना।
जप हरि सुख पायेगा जियरा, सुरति कभी ना उसकी तजना।

ज्ञानी अज्ञानी सब जग में, कितने खेल खिलाता यह रब।
घूम रही अनगिनत योनियां, समझे क्यों ना करे वही सब।
गा हरि के मन गीत यहाँ पर, ले जायेगी हरि की धारा।
ज्ञान ध्यान सब मिले उसी से, जप ले हरि दे वही सहारा।

अन्तर्यामी सबकी जाने, क्यों भूले हम ना पहचाने।
नीर बहाती रहती अंखियां, जपता जा हरि तब हरि जाने।
हरि हरि गा दो पल का मेला, आता पीछे से है रेला।
सुख मन पड़ हरि के चरणों में, ले जायेगा तुझको छैला।

626.

मुँह फेर यहाँ सब लेते, मन तू क्यों ना अब चेते।
ढलती जाती है संध्या, क्यों नाम न हरि का लेते।
जप पी ले अमृत है वह, कट जाते सब संकट हैं।
दो दिन का रैन बसेरा, जग में तू क्यो लिपटे है।

हरि प्रीति बढ़ा संग वह ही, मन ध्यान करो सब वह ही।
कठपुतली हम तो उसकी, कर्ता हर्ता सब वह ही।
हरि जप ले शान्ति मिलेगी, अंखियां दुख से न बहेगी।
स्वप्निल सारी दुनिया है, जप दिल की चुभन मिटेगी।

आना जाना ना बस में, कुछ पल खेले इस जग में।
बहते नयना हरि जप ले, दे वही सहारा दुख में।
हरि भज हरि भज हरि भज ले, सिर चरणों में तू रख ले।
ले जाये साथ सदा वह, मैं छोड़ समर्पण कर ले।

627.

चंचल मन कितनी ले उलझन, ना कमी यहाँ इस जग में है।
हरि भजन बिना ना मुक्ति मिले, नयनों से बहता पानी है।
हरि भज हरि भज मन चैन मिले, जो व्यर्थ सोचता मुक्ति मिले।
कितने ताने बाने बुनता, हरि जप ले हिय का कमल खिले।

हरि भज विश्वास करो हरि पर, बस इतना ही बस में तेरे।
हरि को पुकार वह सुखदाता, कर ले सुमरन दुख ना घेरे।
हरि भज सुमरन ना कभी तजो, इस दुनिया का वह ही स्वामी।
वह खिला रहा हम खेल रहे, घट घट बसता अन्तर्यामी।

मृगतृष्णा में मन नही भटक, जियरा सुख पाये हरी भजो।
दो दिन का रैन बसेरा यह, स्वप्निल दुनिया मन हरी भजो।
बन लहर बहो भजता जा हरि, कर्ता न बनो मन हरी चहो।
ज्ञानी वह ही दे ज्ञान वही, सेवक बन कर मन सदा रहो।

628.

हरि बिन ज्ञान न आवे तड़फे, सुख दुख मिले ज्ञान जो उपजे।
जप ले हरि को कर्ता ना बन, देवे ज्ञान तभी सुख उपजे।
हरि की दुनिया झुक चरणों में, मन का सारा मैल कटेगा।
छोड़ यहाँ मैं गा ले हरि गुन, किस्ती तेरी लिये चलेगा।

पी पुकार ले प्यारा वह ही, और सुने ना आंखे रोई।
कौन यहाँ तू अनजाना जग, हरि करता जो वह ही होई।
जपता जा हरि उसकी लीला, मर्जी उसकी कर ले क्रीड़ा।
दुख भन्जक हरि नाम जपो मन, मिट जायेगी सारी पीड़ा।

जप हरि हरि बस वही सहारा, उस बिन मिलता नहीं किनारा।
अंधियारा छट जायेगा जप, ले जाती है उसकी धारा।
सुरति रहे मन हरपल उसकी, बहते नयना चरण चढ़ा जल।
संग तेरे बन जा कठपुतली, करो समर्पण दुनिया स्वप्निल।

629.

बह ले नदिया हरि की बह ले, नहीं किसी से शिकवा करना।
मगन यहाँ सब ले निज सुपने, नहीं उलझना छोड़ न जपना।
लीला उसकी दुनिया उसकी, देखो कितनी अपनी चलती।
मर्जी उसकी जग में आया, जब चाहे ले जाये किस्ती।

हरि हरि जप ले धैर्य धरो मन, जग में जी पर कर्ता ना बन।
जप जप उसको हिया बसा ले, ज्ञान वही देगा तुझको मन।
बहते नयनो से आंसू हैं, दुख का दरिया कितना बहता।
मान ले मन न उस बिन चैना, छोड़ो मैं काहे ना जपता।

हरि जप ले मन शान्ति मिलेगी, दुख से ना अंखियां रोयेगी।
सबका भाग्य विधाता वह है, जप ले उसको पीड़ मिटेगी।
साथ सदा मन जप ले उसको, तू है लहर न दूर कभी मन।
कौन यहाँ तू सागर नाचे, तप सागर का मन तू जा बन।

630.

हरि भजो विछुड़े कभी ना, जानते ना नियति अपनी।
मिल यहाँ सब ही विछुड़ते, बह रहा है नयन पानी।
सृष्टि का वह ही रचियता, नाचते हरि के खिलौने।
दिल लगा ले मन उसी से, नयन में हरि को बसा ले।

स्वप्न सा संसार सारा, बहती अंखियों से धारा।
जप हरि मन चैना आये, नाम उसका ही सहारा।
बाजती चहुँ ओर हरि धुन, ना भटक उसको सदा सुन।
लहर बन कर बह जगत में, जैसा राखे कर ले तप मन।

बीत जायेगी उमरिया, प्यारा पा ले सांवरिया।
वह ही शाश्वत जप हरि को, दुख से न रोयेगी अंखियां।
हरि जपो मन चैन आये, साथ तेरे वह न जाये।
सौंप दे पतवार उसको, मिटता मैं हरि को पाये।

631.

पागल मन ऐसा यह चंचल, बनता यह भाग्य विधाता है।
जो अपनी आग बुझा न सका, औरों की आग बुझाता है।
कर्ता ना बन पड़ो हरि चरण, उसकी लीला हरि को जप मन।
बहती जाती हरि की नदिया, हरि सुमर यहाँ बहता जा मन।

लहरें सारी भागी जायें, पकड़े न हाथ कोई आये।
बन लहर सुमरता जा उसको, संग सागर हरपल तू पाये।
खेला कुछ पल तू कौन यहाँ, उलझे जग मन करता मैला।
हरि जपो ज्ञान देवेगा वह, आता है पीछे से रेला।

हरि हरि जप जाये बीत उमर, कट जाये सफर न लागे डर।
प्यासे यह प्राण पिला दे जल, अंखिया रोती रहती झर झर।
सुखनन्दन वह सबका स्वामी, ले चले जहाँ मन्जिल वह ही।
कर उसे समर्पण तप यह ही, जो मिटे यहाँ पाये वह ही।

632.

आये जग में सुपने लेते, इसमें गलती क्या ईश बता?
थक हार पुकारूँ नाथ तुझे, कर माफ यदि है कोई खता।
तुम भाग्य विधाता मेरे हो, इस दुनिया के भी स्वामी हो।
देखो बहते मेरे आंसू, सुखदायक तुम दुख हर्ता हो।

हरि प्रीति बढ़े सुख मिले बहुत, तुझ कृपा बिना ना यह होता।
हरि दास तेरा न रूठ कभी, मैं भटकूं जंगल में रोता।
स्वप्निल दुनिया बहते आंसू, बस नाम सहारा तेरा है।
बस जाओ मेरे नयनों में, सबका तू ही आधारा है।

हरि हरि जपते दो ज्ञान हमें, बन लहर बहे नदिया तेरी।
मेरा ना कुछ सब कुछ तेरा, क्यों रोती फिर अंखियां मेरी।
प्यासे है प्राण पिला दे जल, संध्या यह भी जाये ना ढल।
मैं जनम जनम का प्यासा हूं, बहता इन नयनो से है जल।

633.

राम सुमर मन राम सुमर मन, जाता तन ना आवे फिर पल।
जप ले पी ले अमृत है वह, बहे नीर यह दुनिया जंगल।
कौन किसी का सबके सुपने, क्यों बैचेन हो रहा जप ले।
उसकी दुनिया वह ही मालिक, मन तू उसके चरण पकड़ ले।

कर्ता भर्ता हर्ता वह ही, बस कुछ ना यह अंखियां रोई।
नाम सुमर मन तन हो पावन, उलझे जग में चैना खोई।
उसकी लीला वह ही जाने, सुर उसके क्यों ना पहचाने।
कठपुतली बन नाच रहे हम, डोर हाथ में उसके जाने।

स्वप्निल दुनिया रैन बसेरा, रूके न पानी बहती अंखियां।
सुख दाता वह जप ले पागल, टूटेंगी फिर दुख की कड़ियां।
ज्ञानी वह ही ज्ञान वही दे, मन सिर चरणों में तू रख दे।
बना मदारी हमे खिलावे, बसा हृदय में मैं को तज दे।

634.

जग से प्रीति किये दुख होई, जप हरि जग कर्ता है वह ही।
देख यहाँ सब ना दुख को ले, सब में दर्शन कर ले वह ही।
किसको कपड़े किसको छोड़े, क्या वजूद है मन लहरो का।
जो लहरों सा हुआ समर्पित, देखे सागर साथ सदा का।

उपजे जो भी ज्ञान करे तन, पकड़ चरण हरि प्यारा जा बन।
उसकी मर्जी जग में डोले, मिले ज्ञान कर्ता तू ना बन।
जप ले हरि को चैन यही मन, जलती होली ठौर नही है।
नाम सहारा प्रीति बढ़ा ले, अन्तिम पल तक साथ यही है।

हरि ही आता याद सदा है, ठोकर खा खा जब भी गिरता।
प्यारा नाम जपो हरि का मन, साथ सदा तेरे क्यों रोता।
हरि हरि जप हरि ही की लीला, जप ले मिटती मन की पीड़ा।
बसा नयन में भूल न उसको, सुरति न छूटे कर ले क्रीड़ा।

635.

जप ले हरि मन को समझाले, दन्श लगे हम क्या कर पाते?
अबल यहाँ जप नाम सहारा, गिरते आंसू रोक न पाते।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, किसको खोजूँ खोज यहाँ क्या?
बहते आंसू तुझे पुकारूँ, तेरी दुनिया अपना है क्या?

हरि की लीला कठपुतली हम, डोर हाथ उसके नाचे हम।
बना मदारी हमें नचावे, मान रजा उसकी में है दम।
जी ले जीवन हरि को जप ले, जख्म लगे मन जप हरि सी ले।
चिन्तायें जो तुझे डरावे, जप हरि को सब दूर भगाले।

हरि हरि जप मन नाम सहारा, नयन रोये न और अधारा।
प्यासे प्राणों का है यह जल, नहीं बहे फिर आंसू खारा।
हरि हरि जप मन ज्ञान जगेगा, नैया तेरी लिये चलेगा।
उसकी लीला वह ही जाने, लहरो सा फिर यहाँ बहेगा।

636.

नजरें उठा के देखता, नभ भी यहाँ पै मौन है।
किसको सुनाये दर्द हम, सुन ले यहाँ पै कौन है?
जाये कहाँ मन्जिल नहीं, लेते है सांस दम नहीं।
तू छिप गया क्या खेल है, क्या तुम मिलोगे हरि कही?

दिल लग नहीं रहा मेरा, क्यों हो गया तू बेखबर?
बहते नयन से नीर है, आ दे मुझे अपनी खबर।
कैसे मनाऊँ कह तुझे, क्यों हो गया तू दूर है।
बसो नयन में तुम मेरे, बरसे नयन से नीर है।

सुमरन तेरा रहे सदा, मर्जी जहाँ भी ले चलो।
न टूटे डोरी प्यार की, रंग अपने में भिगो चलो।
कुछ पास ना यह नीर है, दर पर झुका यह शीश है।
हरि माफ कर मेरी खता, मैं अबल तू जगदीश है।

637.

लाज रखना नाथ मेरी, माना सुपना यह दुनिया।
दो पल की खुशियां चाही, बहती यह मेरी अंखियां।
दुनिया के तुम हो मालिक, चाहते तेरा सहारा।
तुम कभी ना रूठ जाना, देखो हरि बहती धारा।

छिप गये हो तुम कहां पर, नीर को ना रोक पाती।
जाती बहती यह नदिया, कैसे भेजूँ मैं पाती।
तू विधाता भाग्य का है, छलता क्यों मुझको छलिया।
बजा दे तू अपनी बंशी, मगन हो यह नाचे जिया।

खेल यह जीवन मरण का, सुपने ले ले मैं डोला।
टूटे जब भी मैं रोया, क्यों नहिं तू मुझसे बोला?
अनजानी जग की गलिया, चाहते सदा है छैया।
बालक है हम तुम्हारे, देखो बहती यह अंखियां।

ले चलो मर्जी जहाँ पर, नयन में तुम बसो मेरे।
प्यार अपना दे मुझे तू, चरण में सिर रखा तेरे।

638.

हरि चाहे वह हो जाये, मन उलझ उलझ यह जाये।
बना बांसुरी सुर उसके, वह सबको नाच नचाये।
हरि जप ले स्वामी वह ही, जब भी चाहे ले जाये।
कर्ता भर्ता हर्ता वह, नयनों में आंसू आये।

हरि की लीला हरि जाने, जप उसको मन सुख पाले।
बिखरे कांटे यह जंगल, खिला सुमन हिय हरि पाले।
मृगतृष्णा में भटक रहा, रैन बसेरा है दुनिया।
हरि जी ले विश्वास करो, दुख से ना रोये अंखियां।

सांस सांस में जप उसको, सांसो से नाता जोड़ो।
संग तेरे ना भूल उसे, प्यारा नहीं उसे छोड़ो।
जीवन अनबूझ पहेली, चैन मिले हरि को जप ले।
करो समर्पण मिले ज्ञान, सारा जग उसके बस में।

639.

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, मन वही सहारा नहीं तजो।
दुख का दरिया जग में बहता, उसको पुकार मन सदा भजो।
खेले जग में उसकी मर्जी, ले जायेगा जब ना चलती।
उसको जप प्यारा नाम यही, देखो अंखियां बहती रहती।

सबका वह भाग्य विधाता है, नैया को पार लगाता है।
जप ले मनुआ भीगे नयना, उसके बिन चैन न आता है।
जलती होली हरपल जग में, मन गा ले तू उसके नगमें।
प्यारा है साथ वही देगा, सिर रख दे उसके चरणों में।

सागर में बन तू लहर उठा, कब खो जायेगा नहीं पता।
ना छोड़ सुरति मन नयन बसा, सब ओर वही क्या खोज बता।
तू कौन यहाँ सब क्षण भंगुर, बहता रहता अंखियों से जल।
जप बीतेंगे सुख से यह पल, छोड़ो मैं यह दुनिया स्वप्निल।

640.

पल पल परिवर्तित यह दुनिया, ले कर अतीत बहती अंखियां।
हरि भजन करो मन सुख पाओ, ले जाये तेरी वह नैया।
मन यही सहारा है जग में, अन्तिम पल तक दे साथ यही।
किसको पकड़े किसको छोड़े, हरि बिन मिलता ना चैन कहीं।

अनजान गली अंखियां रोई, कर्ता भर्ता हर्ता वह ही।
मन नाम सहारा पकड़ उसे, कर उसे समर्पण सब वह ही।
हरि हरि जप देवे ज्ञान वही, बह लहर बना कर्ता वह ही।
बहते नयनों से जो आंसू, हरि चरण चढ़ा स्वामी वह ही।

ना सुरति छोड़ वह सदा संग, जाने ना उसके कितने ढंग।
लाये ले जाये खेल करे, अपने क्या बस में देख रंग।
सब कुछ उसका है तू बह ले, मन सांस सांस में हरि जप ले।
ले जायेगी उसकी धारा, मैं छोड़ चरण हरि सिर रख ले।

641.

जप मिलेगी शान्ति मन को, कर्ता न बन तू यहाँ।
करो भजन उसकी लीला, चैन ना उस बिन यहाँ।
खोजे कुछ पल की खुशियां, नीर ना रूकते यहाँ।
थे कहाँ पहले यहाँ अब, जाने न जाये कहाँ?

नाचता सागर लहर बन, जा रहा ले कर कहाँ?
कर समर्पित तू स्वयं को, रजा उसकी ही यहाँ।
सुरति रख ना दूर वह है, आना जाना न कहाँ।
सौंप दे पतवार उसको, ज्ञान भी उसका यहाँ।

ध्यान कर ले कौन जपता, जपो हरि मिले रस्ता।
वासना के पंक में गिर, किसलिये शीश धुनता।
पीड़ मिटती छोड़ मैं को, न बहे आंसू खारा।
हरि भजो जीवन सहारा, जाती ले हरि धारा।

642.

मैं तो हूँ तेरी कठपुतली, कृपा करो हे हरि तुम अपनी।
जैसे चाहो मुझे नचावो, बहता देख नयन से पानी।
सुख दुख के तू खेल खिलावे, बरसे अंखियां तू ना आवे।
जनम जनम का दास तुम्हारा, मुझको धीरज कौन बंधावे।

जीवन तेरा स्वर भी तेरे, फिर भी अंखियां आंसू गेरे।
मिले सदा हरि तेरी छैया, ज्ञान हमें दो मिटे अंधेरे।
पथ हो सुगम प्यार मिल जाये, सूखी बगिया खिल खिल जाये।
तेरा सेवक नहीं रूठना, इन नयनों से आंसू आये।

अपरम्पार तुम्हारी लीला, सांस सांस में तू बहता है।
जाने ना पर माया तेरी, शीश यहाँ सबका झुकता है।
जान यहाँ ले सब कुछ उसका, सागर में बन लहर नाच मन।
लिये जा रही धारा उसकी, खेल खेल में जा हरि का बन।

643.

मन हरि जपो पागल न हो, किसको सुनाये तू व्यथा।
जग से न रख कोई गिला, सब कह रहे अपनी कथा।
जप ले मिटेगी पीड़ मन, जग से रखे क्या आस मन।
सब स्वार्थ का ही मेल है, नयन बरसते हरि का बन।

कर प्यार दिल का चैन है, बहते नयन से नीर है।
ना ठौर है भटको कहीं, हरि नाम जप ले साथ है।
हरि भूल तृष्णा में फंसा, अंधियारा न बाती जली।
जप लो हरी का नाम मन, देखेगा नाव बह चली।

जो कल थे वह गये कहाँ, मन हरि जपो जाये कहाँ?
बहे नयन से आंसू जेा, पोंछे वही उसका जहाँ।
सागर में बहो लहर बन, हरि को बसा ले तू नयन।
करले सुरति दीपक जले, सब उसका जा हरि का बन।

644.

नाम जपो अमृत फल समझो, दुख तेरे सारे मिट जाई।
जप ले मन तू राम नाम को, शान्ति मिलेगी वह सुखदाई।
सागर वह तू बना लहर है, मर्जी उसकी समझ यहाँ बह।
मैं को छोड़ झुका दे सिर को, तप यह ही उसकी मर्जी सह।

बसा नयन में छवि मन उसकी, क्षण भंगुर सब मिटता जाई।
सांस सांस में जपो राम को, दुख की होली जलती जाई।
सारे जग का वह ही कर्ता, क्या अपने वश भर्ता हर्ता।
सुमरो उसको भूल उसे ना, उपजे ज्ञान वही तन करता।

सुपने ले ले बहती लहरे, सागर भूली नाचे जिसमें।
प्रीति बढ़ा मन सागर शाश्वत, सुखदायक जपता जा मग में।
जप ले उसको मिटे अन्धेरा, उलझ नहीं पा उसका डेरा।
जप ले सुख से बीतेंगे पल, दो दिन का यह रैन बसेरा।

645.

चले चल कर थक गये हम, जाने न कहाँ जायेंगे?
बहते अंखियों से आंसू, तुमको हम कब पायेंगे?
इक नजर से देख तो लो, नहीं गुनाह मैने किया।
डोर तेरे हाथ में ही, जो भी किया तूने किया।

तेरी कठपुतली नाचे, प्यार चाहें यह हमें दे।
ज्ञान का दाता तुही है, मुझे चरणों में जगह दे।
सृष्टि तेरी तू रचियता, वासनाये ले उलझता।
दास को अपना बना लो, नयन से है नीर बहता।

कण्ठ प्यासे जल पिला दे, मैं भटकूँ राह दिखा दे।
चलने की सामर्थ न है, मैं भिखारी शक्ति तू दे।
नयन जल से करूँ पूजा, तुम बिना संसार सूना।
तुम बसो नयन में मेरे, मैं मिटा न छोडू जपना।

646.

स्यानों की सारी दुनिया है, बहती रहती यह अंखियां है।
मन भजन करो हरि सुख पाओ, दुख की टूटे फिर कड़ियां हैं।
आये जब ना किसने पूछा, जायेगे कुछ ना है बस में।
दो पल का है खेला सारा, कर्ता बन क्यों पड़ता दुख में।

सपने सबके अपने अपने, उलझे क्यों गा हरि के नगमें।
किससे मन करता गिला यहाँ, हरि सुमरन कर बहता जिसमें।
ज्ञानी वह ही दे ज्ञान वही, जप ले उसको वह कहाँ नही।
बन लहर सदा उसको जप मन, दीखे सागर तू कही नहीं।

चहुँ ओर घुमावे मृगतृष्णा, तज मन तू हो जा वैरागी।
हरि कृपा मिले सुमरन होवे, जो जपे उसे वह बड़भागी।
जप अन्तिम पल तक साथ यही, दुख मिटे जान ले दवा यहीं।
जप इसे शान्ति का सागर है, संग तेरे विछुड़ा कभी नहीं।

647.

हरि हरि जप हरि नयन बसा ले, सुख दुख में हरि गले लगा ले।
नाम सहारा ले इस जग में, दुख सारे मन दूर भगा ले।
तू क्या सब हरि ही की मर्जी, जप ले कुछ पल शाम यह ढली।
आना जाना खेल उसी का, नाच रहे बन कर कठपुतली।

हरि हरि जप यह जाता जीवन, मानेगा जो रूठा साजन।
मर्जी चले सदा ही उसकी, बरसे नयना जैसे सावन।
दे पतवार उसी को अपनी, कर्ता बन क्यों दुख को पावे।
मैं को मिटा लहर सागर की, तप करले फिर जिय सुख पावे।

कौन किसी को जान सका है, स्वप्निल यह सारी दुनिया है।
हरि भज ले मन शान्ति मिलेगी, उलझ उलझ तू क्यों रोता है।
ज्ञान मिले पथ तुझे सुझावे, जप ले हरि को क्यों सोता है।
सुमरन कर मन वह ही है धन, सारी दुनिया बस धोखा है।

648.

हरि सम्भालो डूब रहा मैं, बहती अंखियों से धारा है।
कृपा करो मिल जाये किनारा, नाम सहारा जीवन का है।
ज्ञानी ना मैं बालक तेरा, फैला तम प्रभु करो सुबेरा।
डगमग करती इस नौका को, थामो तुम यह जीवन तेरा।

तुम बिन बोलो किसे पुकारूँ, देखो इन बहती आंखो को।
अज्ञानी हूँ भटक रहा मैं, पार लगा दो इस नौका को।
प्रीति करें हम किससे जग में, टूटे सुपनों को ले रोते।
दिल को कैसे बता लगाये, चाह यही नयनों में बसते।

चैन पड़े ना अंखियां रोये, तुम बिन बोलो कैसे जीये।
बहती आंसू की गंगा है, चाह यही तुमको हम पाये।
विछुड़ो पल भर कभी न मुझसे, भान मिटे ना तुम ही घेरे।
दास तुम्हारा जनम जनम का, ले चल मुझको अपने तीरे।

649.

जप ले हरि मन का यह चैना, विछुड़ा जाता सारा मेला।
जग की प्रीति यहाँ क्षण भंगुर, जप ले नयन बसा ले छैला।
ऋषि मुनि हारे भेद न पाया, नीर बहे अंखियों से खारे।
हरि चरणों में पड़ा यहाँ जो, देखे खड़ा सदा है द्वारे।

मन भटके चहुँ ओर यहाँ है, नाम सहारा केवल जग में।
सुमरन कर हरि पा ले छैया, जप जप हरि को बसा नयन में।
सुख दुख ढलती फिरती छाया, मिटती जाती हरपल काया।
जान यहाँ ले स्वप्निल दुनिया, जप हरि उस बिन सुख ना आया।

जप ले हरि कर्ता तू ना बन, नाम सहारा बहो लहर बन।
वही ज्ञान दे हमें नचावे, डोर हाथ हरि कर सुमरन मन।
हरि हरि गाओ उसे मनाओ, मिटता मैं दुख दूर भगाओ।
लिये जा रही उसकी धारा, हरि चरणों में शीश नवाओ।

650.

मन हुआ दुखी सब छोड़ खुशी, जग से क्या तू आशा रखता।
सब दर्द लिये अपना फिरते, इन नयनों से आंसू झरता।
जग प्रीति सदा दुखदाई है, हरि भजन करो हरि सुखदाई।
सांसे गाये हरि गीत सदा, मन हो जा हरि की शरणाई।

हरि भज हरि भज न और है सुख, बहता जीवन मन उसको जप।
दुख का साया ना घेरेगा, हरि नाम सहारा ले ले जप।
आया कहाँ से जाये कहाँ, न कोई किनारा तू जाने।
सब अपनी अपनी यहाँ कहें, हरि चरण पड़ो वह ही जाने।

बहती किस्ती हरि धारा में, दे ज्ञान वही उसको जप ले।
तू कौन यहाँ खेले कुछ पल, बरसे अमृत हरि को जप ले।
हरि नचा रहा हम नाच रहे, कठपुतली उसकी यहाँ सदा।
हरि हाथ डोर भूलो मत मन, यह सुरति रहे वह साथ सदा।

651.

दिल बता कैसे लगायें, पास ना तुम नीर आये।
अब सहा जाता ना मुझसे, कर कृपा जो तुझे पाये।
झिलमिलाता जगत सारा, मेरी क्यों रोती अंखियां?
प्राण मेरे है तड़फते, न छिपो तुम मेरे सैंया।

प्यार दे दो दास तेरा, कर्म न कुछ भी है मेरा।
नाचता जैसे नचाये, ज्ञान जो दे हाथ तेरा।
सदा करूँ सुमरन तेरा, ना तुम कभी होना जुदा।
बीतेगी काली रैना, मेरे रहो दिल में सदा।

पिव रटे यह प्राण मेरे, तम यहाँ मुझे है घेरे।
दास को अपना बना लो, बस जा नयनों में मेरे।
तेरी सुनने को बन्शी, गिरता नयनों से पानी।
तुम बिना ना बीत जाये, जा रही यह जिन्दगानी।

652.

बहता जीवन नहीं किनारा, थाम हाथ लो हरि मैं हारा।
तुम बिन रोयें मेरी अंखियां, विनय यही मैं बनूँ दुलारा।
विष की घूंटे हँस पी जाऊँ, ना तुमसे पर ध्यान हटाऊँ।
बसे रहो मेरे नयनन में, अन्त चरण रज तेरी पाऊँ।

सारे जग के तुम कर्ता हो, मैं हूँ कौन तुम्ही भर्ता हो।
आया कहाँ से जाऊँ कहाँ, बने मदारी नचा रहे हो।
देख हमें लो बहते आंसू, ज्ञान उपजता वही करे हम।
अपनी कृपा बनाये रखना, कर्म हो शुभ अज्ञानी है हम।

पल पल तुझे समर्पित हो हरि, तेरा दास शरण तेरी हरि।
प्यासे प्राण पुकारे तुमको, प्यार तुम्हारा पा लूँ मैं हरि।
अकुलावे जिय नाम सहारा, मुझे पिला दे अपनी हाला।
सुध बुध खो तुझमें रंग जाऊँ, मिट जाऊँ मैं पाऊँ लाला।

653.

बन लहर बहो जपता जा हरि, कर्ता न बनो सेवक बन हरि।
कर उसे समर्पण स्वामी वह, कुछ ना जाने सब कुछ है हरि।
जाये कहाँ ले जाने वही, मन नयन बसा ले जप ले हरि।
डर सभी मिटे हरि जपो यहाँ, कठपुतली हम खेले वह हरि।

उस बिन ना मन को चैन मिले, कितना भटको ना शान्ति कहीं।
हरि नाम सहारा है जग में, जप जप पा ले हर जगह वही।
उसकी लीला वह खेल रहा, वह नचा रहा हम नाच रहे।
आये जग में मर्जी उसकी, जाये जब कुछ ना साथ रहे।

हरि जपो ज्ञान वह ही देगा, हरि कृपा मिले दुख हर लेगा।
जंगल का राजा जान उसे, गिर चरणों में तम हर लेगा।
बहती जाती हरि की धारा, जप नही बहे आंसू खारा।
कितने ही कांटे बिछे रहे, मिटते दुख बनता हरि प्यारा।

654.

अंधियारी रातों में कह दे, तेरा साथी कौन यहाँ है?
हरि बिन मुक्ति मिले ना मन से, परिवर्तन संसार सदा है।
जप ले हरि शाश्वत है वह ही, बने खिलौने नाच रहे है।
चैन मिले ना उस बिन दिल को, अंखियों से है नीर बहे है।

सिर हरि के चरणों में रख दे, बन कर सेवक यहाँ विचर ले।
सब कुछ उसका तेरा ना कुछ, तज मैं को यह सोच समझले।
कुछ पल का मेहमा हुआ तू, बनना मिटना खेल यहाँ है।
जपता जा हरि सुमरन कर ले, चलती उसकी सदा यहाँ है।

सुमरन कर मन हरि को जप ले, मन भागे आये ना बस में।
दर्दे दिल की यही दवा है, जपता जा हरि आये बस में।
अपना कौन पराया जग में, बीतेगी यह काली रैना।
हरि जपो मन नयन बसा ले, सुख से बीतेगा यह सुपना।

655.

हरि हर बरसत नयन हमारे, कहाँ छिप गये तुम भी प्यारे।
सूखे ना नयनों के आंसू, दिल ना लगता हम तो हारे।
जपूं नाम की माला तेरी, खड़ा देखता राह तुम्हारी।
दिल ना तोड़ो बालक तेरा, देख नयन से आंसू जारी।

जनम जनम का दास तुम्हारा, नाम तुम्हारा लगता प्यारा।
इतना बिखरा दर्द यहाँ पर, दर्द हरो तेरा संसारा।
बना मदारी हमें नचाये, देख नयन में आंसू आये।
इतनी कृपा करो हरि विनती, ध्यान डोर से कभी न जाये।

आना जाना हाथ तुम्हारे, कर्ता हर्ता पालक जग के।
ना समझे ना आंसू रूकते, मैं को लिये यहाँ हम भटके।
मेरा जीवन तेरा जीवन, चलो जहाँ ले मर्जी तेरी।
बस जाओ मेरे नयनों में, सुमरन रहे सदा मैं तेरी।

656.

हरि दास पर कर दो कृपा, लगता नहीं है दिल यहाँ।
छिप कर नचाते हो जगत, रूकते नहीं आंसू यहाँ।
टूटे सुपन ले रो रहे, अंखियों से नीर बह रहे।
चल चल गिरूँ देखूँ गगन, तुम किस जग पर सो रहे।

नयनों में बस जा मेरे, इस जग से ना रहे गिला।
सारे जग का स्वामी तू, प्यासे है प्राण जल पिला।
ले दर्द दिल में चल रहे, शाश्वत तुही न हम रहे।
मिले जो प्यार बीच धार, हरि डर न फिर कोई रहे।

बह रहे श्वास में तुम्ही, अज्ञान में मैं जी रहा।
फंस वासना के चक्र में, क्यों भूल तुमको रो रहा।
बन कर लहर मैं नाचता, सागर में मैं सदा रहा।
जुड़े जो स्वर दे ध्यान को, गिरता चरण में रो रहा।

657.

ज्ञान को दो तम हरो प्रभु, बन सकें सेवक तुम्हारे।
अबल मैं अज्ञान में हूँ, मिले दृष्टि हम तो हारे।
चल रहा मर्जी तुम्हारी, लाज को रखना मुरारी।
न ठिकाना कोई जानूं, नयन से हैं अश्रु जारी।

जानता ना शाम ढलती, जा रहा ले मुझे झोंका।
मैं शरण में प्रभु तुम्हारी, डगमग करती है नौका।
प्यार पाऊँ मैं तुम्हारा, यह तरसे मेरे नयना।
हरि न टूटे ध्यान तेरा, विनती यह मेरी सुनना।

बाट तेरी हरि निहारूँ, भीगी है मेरी अंखियां।
सृष्टि के तुम हो रचैया, चाहें सब तेरी छैंया।
दास को अपना बना लो, प्राण प्यासे प्यार को दो।
नित करूँ दर्शन तुम्हारा, नाथ मन्दिर में जगह दो।

658.

तुम मिलो नहीं जियरा भटके, हरि दर्शन को अंखियां तरसे।
हरि लाज राखना मेले में, तुम बिन बोलो मैं कहूँ किसे।
नाचें गायें जो मिलेा हमें, दो ज्ञान तुझे पाये हम तो।
हरि फूल खिले सब दन्श मिटे, ढलती है शाम मिलो अब तो।

हरि बिना मिले ना चैन कही, मन दौड़ जगत में कितना ही।
जख्मी हो कर जब गिरे यहाँ, हरि याद करे रख लाज तुही।
प्रियतम प्यारे से प्रीति जोड़, उस बिन जीवन भी क्या जीना।
न आये सजन अब ढले शाम, आंखो का नहीं रूके बहना।

हरि बनो नहीं तुम निर्मोही, जिय लगता तुम बिन नहीं यहाँ।
आंसू की गंगा बहती है, जो मिले प्यार यह खिले जहाँ।
हरि खड़े द्वार पर हाथ जोड़, आशा है कृपा न होगी कम।
बस जाओ मेरे नयनों में, विस्मृत हो जायें सारे गम।

659.

पल पल परिवर्तित यह दुनिया, स्वीकारो सब परिवर्तन को।
खिलती झड़ती कलियां देखो, जपले हरि पकड़ न नश्वर को।
अपना जो लगता आज यहाँ, कल बेगाना वह हो जाता।
इस मोह जाल में फंस कर मन, अंखियों से आंसू तू लाता।

हरि भज ले जग यह सुपना सा, यह रैन बसेरा दो दिन का।
जप हरि जग से ना मोह बढ़े, सुख पाये मन जिय हो हल्का।
उपजे जो ज्ञान करे वह तन, मन शीश झुका उस कर्ता को।
वह छिपा मदारी नचा रहा, स्वीकारो उसकी मर्जी को।

हरि जप मन ध्यान लगा उसमें, विखरा है दर्द न कर्ता बन।
शुभ कर्म हो करो विनय यही, मैं छोड़ उसी का सेवक बन।
हरि जप ले दुनिया यह उसकी, कर याद उसे अंखियां रोती।
मन घुमा रहा जप देख उसे, जो जपे देख चिन्ता मिटती।

660.

क्या बन्धन है क्या मुक्ति यहाँ, मन का चलता सब खेल यहाँ।
हरि जपे बिना ना शान्ति मिले, दुख का दरिया बह रहा यहाँ।
मन सोच सोच होता पागल, जप छटते है दुख के बादल।
जप ले हरि प्रीति बढ़ा ले मन, नयनों से बहे न खारा जल।

वह नचा रहा हम नाच रहे, मैं लिये नीर हम बहा रहे।
कठपुतली हम तेा उसकी है, मन ध्यान डोर पर सदा रहे।
स्वीकारो उसकी मर्जी को, तप यही चरण हरि के पड़ना।
अपना न यहाँ सब कुछ उसका, कुछ खेल चले फिर ना रहना।

हरि हृदय बसा मन सुमन खिले, सारा जीवन है इक सुपना।
सुख से गुजरेंगे कुछ पल यह, जप हरि को बहते यह नयना।
बनती मिटती लहरें रहती, सागर का है संगीत सदा।
पाना खोना क्या जग में है, जप ले हरि केा वह संग सदा।

सुख दुख के खेल खिलाये वह, मर्जी लाये ले जाये वह।
उपजे जो ज्ञान करे वह तन, प्यासे को नीर पिलाये वह।
जप ले हरि उसकी प्यास बढ़ा, उसको भूले अंखियां रोती।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, मिल जायेगी उसको पाती।

661.

मौत क्या है जिन्दगी क्या, बस में न कुछ कर वन्दगी।
जप हरि ले जाता वह ही, जप ले डरे ना जिन्दगी। मर्जी
चले उसकी सदा, जैसे नचाये नाचता। पतवार
उसको सौंप दे, भूला उसे मन बिलखता।

मांग ले उसकी कृपा को,दर्दे दिल की वह दवा है।
जग में कितना भटक ले, रो रहा सारा जहाँ है।
जैसा राखे हरि जी ले, नयन के आंसू चढ़ा दे।
सत्य तो वह ही सदा है, शीश हरि आगे झुका दे।

वही है शाश्वत सदा संग, जो झुकता पाया उसने।
मैं मिटा बन लहर बह ले, मिटते बन बन के सुपने।
हरि जपो बहते रहेा मन, दुख से ना रोयें अंखियां।
उसकी लीला वह जाने, जप उसे धर दे चदरिया।

662.

हरि हरि जप ले बरसे नयना, मुख से कुछ भी क्या है कहना।
दे वह दर्द दवा भी वह ही, शीश झुका मन हरि पग पड़ना।
जप ले हरि हरि चैन यही मन, सदा सत्य हरि यहाँ तू नहीं।
बीती जाती यह जिंदगानी, मिटा यहाँ मैं देख सब वही।

ढलती फिरती छाया रहती, मन रो रो तू आंसू लाया।
मिटती तृष्णा याद उसे कर, नचा रही है हरि की माया।
जग में पकड़े क्या चंचल मन, हरि को जप ले वह सांचा धन।
कठपुतली बन नाच रहे हैं, ध्यान जतन कर डोरी पर मन।

जाये कहाँ बह रही धारा, सोच सोच यह मनुआ हारा।
हरि चरणों में शीश रखो मन, बजता है उसका इकतारा।
प्यार माँग हरि सब कुछ वह ही, रूकता ना नयनों का पानी।
हरि को मन पतवार सौप दे, मिटते दुख बस वह ही दानी।

663.

हरि हरि गायें तुझे मनायें, कृपा करो पग तेरे पायें।
जग की अनजानी गलियों में, तुझे पुकारें आंसू आये।
दीनबन्धु तुम सुख के दाता, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।
तुम बिन बोलो किसे कहें हम, चरणों में मैं शीश नवाता।

पिव पिव रटता प्यारा तू ही, लाज राखना मैं ना कुछ भी।
एक सहारा केवल तेरा, बरसे नयन देख ले अब भी।
सुमर नाम को बहता जाऊँ, बहती है जीवन की धारा।
अपना सेवक मुझे बना लो, प्यार पाऊँ सदा मै तेरा।

अंखिया रोये तुम बिन मेरी, छलिया छल क्यों करता छिप कर।
व्याकुल मेरे प्राण पुकारे, कटती रातें तारे गिनकर।
जनत जनम का दास तुम्हारा, दे अपने मन्दिर का कोना।
दर्शन हरपल करूँ तुम्हारा, बसो नयन में बीते सुपना।

664.

कितने बीते जनम न आये, बोलो कैसे नाथ मनाये?
पूजा की विधि मैं ना जानूं, द्वार खड़ा हूँ आंसू आये।
इस जीवन का तू ही स्वामी, घट घट बसता अन्तर्यामी।
फिर भी कुछ भी मैं ना जानूं, दूर करो तम पाऊँ स्वामी।

बालक तेरा अज्ञानी हूँ, बहता आंखों से पानी है।
लाज राखना तुम ही स्वामी, कहते सब औघढ़ दानी है।
जल में रह कर फिरता प्यासा, जीवन कैसा बना तमाशा।
बना मदारी नचा रहा है, तन छूटे ना मिटती आशा।

कृपा करो हरि नाथ अबल हम, सकल जगत के तुम स्वामी हो।
तेरा चाहूँ सदा सहारा, छिप छिप नाच नचाते तुम हो।
घूम रहा मैं पागल बन कर, जग की अनजानी गलियों में।
बहे आंसू देख इन्हे ले, सुमरन तेरा गाऊँ नगमें।

विरह तुम्हारा प्यारा लागे, चाह यही इसमे मिट जाऊँ।
मेरे नयनन में बस जाओ, तुमको मैं ना कभी भुलाऊँ।
अपना सेवक मुझे बना लो, दे दो मन्दिर का इक कोना।
बीत जाये सारी उमरिया, अन्त पाऊँ तेरा विछौना।

665-

हरि सुमर क्या सोचता मन, झरता नयनों से पानी।
सुपने सबके हैं अपने, ले रहे अपनी कहानी।
शीश हरि आगे झुका दे, बस सहारा नाम जप ले।
जा रहा ले कर कहाँ वह, जाने ना हरि को जप ले।

चैन आवे प्रीति कर ले, ज्ञान देवे वही कर ले।
क्या बता है हाथ अपने, जो दिया सन्तोष कर ले।
मन्दबुद्धि ज्ञानी फिरते, उपजता हिय वही करते।
घट में उपजे वह करता, नीर नयनों से निकलते।

क्या शिकायत मन किसी से, जप हरी अमृत को पीले।
कोई अपना न पराया, जप हरी को प्यार कर ले।
जाती ले हरि की धारा, जप उसे विश्वास कर ले।
दुख से ना रोये अंखियां, जपो हरि नयनन बसा ले।

666.

हरि जपो न चिन्ता घेरेगी, मैं की होली जल जायेगी।
हरि नचा रहा तू नाच रहा, हरि जपो सुरति लग जायेगी।
उपजे अन्तस तन वही करे, हरि प्रीति बढ़ा बस मोह गिरे।
हरि की मर्जी से खेल चले, सुपने हजार क्यों लिये मरे।

कितनी योनी इस जग में है, ज्ञानी अज्ञानी सब ही है।
जपता जा देवे ज्ञान वही, बहता आंखो से पानी है।
बस क्या झुक जा हरि चरणों में, वह खिला रहा तू खेल रहा।
सुख दुख के इस आंगन में तन, कठपुतली बन कर नाच रहा।

जप ले मन यह रोये अंखियां, जप चैन मिले प्यारा छलिया।
अंतिम पल तक है साथ वही, मिल जायेगी तुझको छैया।
जप ले हरि स्वप्निल दुनिया यह, उसकी मर्जी से खेल चले।
ना जग के दन्श सतावेगे, जप ले हरि देखो सांझ ढले।

667.

तुम मुझे सुनो मैं तुझे सूनूँ, कटती ना यह काली रैना।
खो गया कहाँ मेरा साजन, रूकता ना आंखों का बहना।
वह तो निष्ठुर निर्मोही है, अंखियां यह हरपल रोई है।
फिर भी दिल याद उसे करता, सांसो में बहता वह ही है।

चल चल कर गिरे यहाँ पर हम, यादों में मेरी वह आया।
हरि देख हमें लो नाथ अबल, ना जान सके तेरी माया।
हरि प्रीति बढ़े वह नयन बसे, सब जगह यहाँ वह ही छाया।
मन जप ले हरि दिल का चैना, उस बिन रोती है यह काया।

मन जप ले हरि जपते जाओ, दुख मिटते पी ले जाम यही।
मिलती ना इस बिन शान्ति कही, जपले हरि मन का चैन यही।
क्या छिपा गगन के पार यहाँ, क्या जान यहाँ कोई पाया।
चरणों में हुआ समर्पित जो, देखे सब ओर वही छाया।

668.

क्या किसी से मन गिला है, चल रहा यह सिलसिला है।
कितने आये खो गये सब, स्वप्न सा सारा जहाँ है।
दुख से ना रोयेगी अंखियां, सौंप दे पतवार हरि को।
वह नचावे नाचते हम, जपो मन पहचान उसको।

झुकते राजा रंक सब ही, जप हरि उसका जहाँ है।
हरि जपो यह चैन दिल का, और ना कोई ठिंका है।
सहज यह किस्ती बहेगी, जब सुरति हरि में लगेगी।
बन न पागल छोड़ तृष्णा, दुनिया यह चलती रहेगी।

जपो हरि मैं को मिटा दे, झुक हरि चरणों को पा ले।
मिट रही सारी कहानी, प्राण प्यासे जल पिला ले।
जा रही ले कर हवाएँ, मन करो विश्वास उस पर।
दुख से ना रोये अंखियां, जो हुआ हरि का यहाँ पर।

669.

मन तेरे सोंचे क्या होता, जो हरि चाहे वह ही होता।
तू बना खिलौना नाच रहा, ना सोच यहाँ यह ही होता।
वह छिपा गगन में नचा रहा, बहती है आँखों से धारा।
हरि को भूला मन भटक रहा, जप ले जायेगी हरि धारा।

प्यारा वह प्यार बढ़ा ले मन, कर्ता ना बन उसका जंगल।
मिटती जाती सारी रेखा, जप पकड़ो मन हरि का आंचल।
मर्जी उसकी आया जग में, जायेगा ले कुछ ना चलती।
पतवार सौंप हरि हाथों में, बहती जायेगी यह किस्ती।

उपजे जो ज्ञान करे वह तन, जप ले हरि के प्यारा जा बन।
शुभ कर्म सदा हो कर विनती, जप ले सुख पायेगा यह मन।
हरि हरि गा हरि को शीश नवा, कुछ पल खेले फिर नहीं यहाँ।
सुख दुख के खेल खिलावे वह, सह ले सब हँस, कर विनय यहाँ।

670.

जो तू बोले वह मैं बोलूं, मिले रहे तुझसे स्वर साजन।
अपनी कृपा बनाये रखना, बरस रहा नयनो से सावन।
दीनबन्धु करूणा के सागर, फिरता मैं खाली ले गागर।
नाथ जला दो दीप ज्ञान का, बरस रहे नयना यह झर झर।

अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी ढूढे मनुआ मेरा।
तृष्णा के जंगल में फंस कर, पहुँच न पाऊँ करो सुबेरा।
चाहत ले ले चलता जाता, क्षण भंगुर सुख को मै रोता।
मिट जाये मैं बसो नयन में, काश तुम्हारा सेवक होता।

तपस न मिटती चल चल हारा, नाम तुम्हारा एक सहारा।
इस जंगल में सुरति न टूटे, नहीं बहे फिर आंसू खारा।
अबल यहाँ बल तुमसे पाऊँ, नयनों के मैं नीर चढाऊँ।
इन सांसो में सदा बहो तुम, बसो नयन में मैं सुख पाऊँ।

671.

खेल ले जैसे खिलाये, उसकी चले मर्जी यहाँ।
बस यहाँ अपने न कुछ भी, जपले उसी का है जहाँ।
उपजता जो ज्ञान हो वह, यह तन करे वह ही यहाँ।
बहते नयनों से आँसू, शान्ति नहीं उस बिन यहाँ।

जप हरि बीतेगी रैना, मन लड़ा उसी से नयना।
सुख से गुजरेगे यह पल, क्या शिकायत यहाँ करना।
जपो हरि शाश्वत वही है, कुछ यहाँ पल फिर नहीं है।
बहें आंसू सौंप उसको, सिर झुका स्वामी वही है।

हरि जपो पावन यह गंगा, जाती ले इसकी धारा।
छोड़ो मैं जप ले हरि को, मिले फिर उसका सहारा।
जप हरि स्वप्निल है दुनिया, वह खिलावे खेल छलिया।
कर उसे स्वीकार पागल, आंसू से भीगी अंखियां।

672.

मन जप ले हरि ले चले कहीं, अपने बस क्या सब करे वही।
पतवार सौंप उसके हाथों, तू नहीं यहाँ सब जगह वही।
हरि हरि गा देवे ज्ञान वहीं, चलती उसकी तू यहाँ नहीं।
कठपुतली उसकी नाच रहा, कर ध्यान डोर पर करे वही।

गिर गिर कर उठते इस जग में, जख्मी दिल को दे दे नगमें।
कट जायेगी काली रैना, मन देख यहाँ कितना बस में।
हरि हरि गा हरि की ही लीला, कर ले मन कितनी ही क्रीड़ा।
उस बिन ना चैन मिले दिल को, जप ले हरि को मिटती पीड़ा।

जप जप हरि को मैं मिटा यहाँ, बरसे नयना क्या खोज यहाँ?
हरि नयन बसे पावन हो मन, अपना ना हरि का सभी यहाँ।
बल देना तुझे मनायें हम, मेरे भीगे हैं यह नयना।
सिर झुका करूँ विनती सुनना, ले चलो छांव अपनी देना।

673.

आता दिन फिर खो जाता है, अंधियारे में छिप जाता है।
सूर्य किरण से सब तम मिटता, जपो नाम तम मिट जाता है।
बहती आँसू की गंगा है, कैसे इस दिल को समझाये?
जप ले मन हरि नाम सहारा, दुख मिटते जो यह रस पीये।

प्रियतम से मन प्रीति बढ़ाओ, बिन हरि कृपा मिले ना रस्ता।
मैं को छोड़ो पड़ो चरण हरि, इन नयनों से आंसू गिरता।
हरि हरि गा ले हरी मना ले, प्यासा अपनी प्यास बुझा ले।
दीनबन्धु करूणा का सागर, जप उसको मन नयन बसा ले।

बन जा मन्दिर का मन सेवक, ले जाये वह तेरी किस्ती।
स्वप्निल दुनिया कौन किसी का, अंखियां निशदिन झर झर झरती।
मिट जाये मैं छा जाये हरि, ऐसी प्रीति बढ़ा ले तू मन।
उस बिन प्यासे प्राण भटकते, जप जप उसको दे दे जीवन।

674.

कितना किसके बस में जानो, यह तो सब हरि की लीला है।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, देख उसे उसका खेला है।
जप ले हरि हरि सफर कटेगा, उससे ही मन ध्यान जुड़ेगा।
कठपुतली बन नाच रहे हैं, ज्ञान जगे ना उसे तजेगा।

यहाँ शिकायत किससे करनी, सबकी अपनी अपनी पीड़ा।
जप ले मन हरि चैन मिलेगा, चलती सारी उसकी क्रीड़ा।
जपले हरि मन मिले सहारा, लिये जा रही उसकी धारा।
उपजे ज्ञान करे वह ही तन, नहीं बहेगा आंसू खारा।

हरि हरि जप मन करो समर्पण, मैं को छोड़ दुलारा जा बन।
उसकी मर्जी वही चलाये, तेरा क्या उसका ही जीवन।
हरि हरि गा बस में क्या तेरे, बन जा चाकर मन तू मेरे।
आंसू की गंगा बहती है, जप पीले अमृत मन मेरे।

675.

तुझ मन्दिर का बनूं पुजारी, नित उठ तेरे दर्शन पाऊँ।
जैसे मर्जी मुझे चलाओ, नहीं शिकायत दिल में लाऊँ।
तुम ही मेरे भाग्य विधाता, तुम बिन किसको दिल दिखलाऊँ?
अपनी कृपा बनाये रखना, नीर बहे जो तुझे चढ़ाऊँ।

हरि हरि गाये तुझे मनाये, रोम रोम में तू ही छाये।
बस जाओ मेरे नयनों में, मिट जाये मैं तुमको पाये।
मैं हूँ अबल मुझे दो रस्ता, अनजानी मैं गली भटकता।
दीनबन्धु करूणा के सागर, कृपा मिले तो ही पथ मिलता।

मुझसे रूठ कभी ना जाना, तुमको ही अपना बल माना।
शीश झुका चरणों में तेरे, प्रीति बढ़े कुछ कहे जमाना।
तेरा जीवन तुझे समर्पित, नैया मेरी डगमग डोले।
पार लगा दो मेरी नौका, जप बल दे अमृत को पी ले।

676.

अर्चना तेरी करें हम, कौन हो कुछ तो कहो तुम।
उलझते हम गांठ खोलो, जानते सब चुप हुए तुम।
बह रही नदिया न जाने, लिये कहां पर जायेगी।
अंखियां मेरी रो रही है, ना तुम्हे क्या पायेगी।

बालक हम है तुम्हारे, चाहते तेरे प्यार को।
रूठ ना तुम मुझसे जाना, तू देख गिरते नीर को।
चाह बह जाऊँ इसी में, कर नहीं हम पा रहे।
देख ले नजरें उठा कर, तेरी कृपा बिन क्यों रहे?

अपने मन्दिर में राखो, गुजर जाये पल चरण में।
मैं कृपा का हूँ भिखारी, राख लो अपनी शरण में।
प्रीति तेरी बढ़े जाये, और न कुछ मुझको भाये।
मिट सकूँ बन कर पतंगा, कर इतना आंसू आये।

677.

उलझन ही उलझन इस जग में, जप ले मन उलझे ना मगमें।
स्वीकारो मन हरि की लीला, संग सदा जप ले इस पथ में।
जपो प्यारा नाम है उसका, जप ले मन से कर नहीं जुदा।
अंखियां रोती हैं भूल उसे, शाश्वत वह झुक मन चरण सदा।

हरि जप ले बस जपता ही जा, मन और बता तेरे बस क्या?
विछुड़ा प्रियतम रोये अंखियां, मन चैन मिले रट ले सैयां।
अनजानी गलियां घूम रहा, चाहत ले ले कर बिलख रहा।
स्वप्निल दुनिया खेले कुछ पल, दरिया अंखियों से सदा बहा।

कठपुतली वन कर नाच यहाँ, जप ले मन हरि जपता ही जा।
न पता यहाँ हम जाये कहाँ, दे ज्ञान वही ले चलता जा।
स्वीकारो हरि नीर मेरे, मैं और नहीं कुछ दे पाऊँ।
मैं खड़ा द्वार पर राह तकूँ, चाहूँ प्यारा मैं बन पाऊँ।

678.

सोचता क्या मन जपो हरि, जा रही ले कर हवाएँ।
चल रहे उसके इशारे, छोड़ मैं क्यों जिय दुखाएँ।
स्वप्न दुनिया बहें अंखियां, प्यारा वह रट ले सैंया।
चैन आये ढले संध्या, जपो मिले उसकी छैंया।

कौन अच्छा है बुरा है, छोड़ बह ले उसकी गंगा।
नयन में हरि को बसा ले, जप उसे मन होवे चंगा।
जपो प्यारा नाम हरि का, जप सहारा मन वही है।
सूखे नहीं नयन आंसू, प्यास प्राणों की वही है।

जपो हरि शाश्वत वही मन, कुछ यहाँ पल फिर नहीं है।
नाव यह जाये कहाँ पर, जपो हरि मन सब वही है।
बहें आंसू याद कर ले, करता सब वह ही क्रीड़ा।
कर समर्पण रख सुरति मन, जाये मिट सारी पीड़ा।

679.

गिरते आंसू तुझे पुकारे, शरण राख ले अपने द्वारे।
रोम रोम गाये तेरे गुन, कृपा करो हरि तू ही तारे।
दीन बन्धु तुम दुख के हर्ता, हरि भटकूँ मैं दे दो रस्ता।
ज्ञान मिले खुल जाये अंखियां, जल में रह क्यों प्यासा मरता।

जाऊँ कहाँ पर कुछ न जानूं, किसको बैचेनी दिखलाऊँ।
सकल जहाँ के तुम हो मालिक, चाह प्यार तेरा मैं पाऊँ।
हरि हरि जपते भीगी अंखियां, नाथ पकड़ लो मेरी बैंया।
बस जाओ मेरे नयनों में, ताप मिटे मिल जाये छैया।

सुरति न टूटे मन हरि भज ले, नाम सहारा छोड़ न पगले।
ले जायेगा तेरी किस्ती, मनुआ हरपल उसको जपले।
हरि हरि जप कट जाये रैना, हरि को मन जपते ही रहना।
शाश्वत वही सुख का सागर, पीड़ हरे दिल का वह चैना।

680.

हरि हरि सुमरो नयन बसा लो, उस बिन मिले कही ना छैंया।
नाम सहारा जप ले पागल, वह ले चले तेरी नैया।
आया किसने पूछा तुझसे, जाये रूके नहीं यह पहिंया।
शाश्वत हरि को हृदय बसा ले, देखे क्यों ना ढलती संध्या।

अपना अपना खेल खेल कर, जग में सब ही खो जाते है।
रूकते ना नयनों के आंसू, तृष्णा में फंस कर जीते है।
बहता दरिया यहाँ दर्द का, छल कैसा जाने ना जियरा।
सुख दुख की यह आंख मिचौनी, मैं छोड़ो ना हरि को बिसरा।

पल दो पल को खिले यहाँ पर, पता ना अब जाये कहाँ पर।
कर ले मन विश्वास हरी पर, देखो अंखियां झरती झर झर।
वही नचावे नाच रहे हैं, मैं को ले हरि भूल रहे हैं।
कितनी है सामर्थ समझले, आंख खोल ले नीर बहे है।

बन जा मन हरि का तू चाकर, बन कठपुतली ध्यान डोर पर।
पार करेगा तेरी नैया, नीर चढ़ा उसको करूणा कर।
जपते रहो ज्ञान वह देगा, मिले ज्ञान तन वही करेगा।
कर ले मन विश्वास हरी पर, मिटते भय वह लिये चलेगा।

681.

हरि कहें जपते रहे हम, न विरह तेरा हो कम।
लगती फीकी यह दुनिया, देखो आंखे है नम।
तुम सबल हम तो अबल है, दो हमें हरि ज्ञान तुम।
मन भटकता है हमारा,चाहते है प्यार हम।

कुछ न जानूं अंधी गलियां, तुमको खोजूं सैंया।
नाम बस तेरा सहारा, थामो मेरी बहियां।
जीते जीवन है तेरा, बन्दगी ना कर सके।
हरि नहीं तुम मुझे दीखो, नही पतंगा बन सके।

ढूंढते खो जाये हम, प्रीति ना हरि तोड़ना।
बह रहे आंसू हमारे, स्वप्न चाहूँ भूलना।
दास को अपना बना लो, जाये मिल तेरी छैंया।
बीत जायेगी उमरिया, शरण मैं पड़ू पैंया।

682.

जाओगे कहाँ न भटक यहाँ, दीदार मान अन्तस में कर।
सब ही तो है हरि की लीला, पुतला उसका जप ले ना डर।
पतवार उसी के हाथों में, संसार उसी की बाहों में।
मन सदा रहो उसको जपते, मिट जाते सब दुख इक पल में।

हरि हरि जप ले मन चैन मिले, तृष्णा है हरपल यहाँ छले।
दो दिन की यह जिंदगानी है, जप ले हरि को क्यों यहाँ जले।
अपने अपने सुपने सबके, क्यों करे शिकायत क्यों रोवे।
हरि जप ले देवे ज्ञान वही, जपता जा हरि पल ना खोवे।

हरि को जप मन जपता ही जा, मन भूल उसे रोवे अंखियां।
जो नीर बहें हरि यादों में, खिल जाती फिर दिल की कलियां।
आये ले जाये खेल करे, बस अपने क्या करता क्रीड़ा।
जप पार करे वह किस्ती को, जप ले हरि मिट जाती पीड़ा।

683.

ओम जपो हरि ओम जपो मन, प्रीति बढ़े हरि चैन मिले मन।
स्वप्निल दुनिया प्रीति यहाँ क्या, स्वीकारो सच ओम जपो मन।
चाह प्रेम की प्रेम बढ़ा ले, तप यह ही हरि प्रीति बढ़ा ले।
जपते जपते खो जा हरि में, मिट कर मन तू हरि को पा ले।

प्यारी डगर न जग में उलझे, जितना उलझे नयना बरसे।
रैन बसेरा दो दिन दुनिया, हरि को भूला काहे झुलसे।
प्रेम बढ़ा रस छिपा इसी में, जप जप उससे प्रीति बढ़ा ले।
कितना बस में आँख खोल ले, उसके आगे शीश झुका ले।

प्यासे प्राण खोज ले हरि को, छिपा हुआ झुक उसके आगे।
प्रीति बढ़े रस टपके उसमें, उसे भूल ना बनो अभागे।
मर्जी उसकी आना जाना, कुछ पल के हम बने तमाशा।
हरि जप ज्ञान वहीं से आवे, जप हरि मिटती झूठी आशा।

684.

पंडित ज्ञानी बन बन घूमें, जनम जनम की बात कहे हैं।
हरि बिन प्रीति चैन मिले नही, खाते ठोकर नीर बहे हैं।
हरि जप ले मन रोती अंखियां, सुमर उसे प्यारा है छलिया।
छिपा हुआ हरि तार जोड़ ले, ले जाये वह तेरी नैया।

आये जाये वह ही सब कुछ, बने खिलौने नाचे मन झुक।
ज्ञानी अज्ञानी हरि लीला, जप हरि मन पहुँचो शाश्वत तक।
दुनिया जंगल हरि ही मंगल, अंखियां रोये उस बिन झर झर।
कठपुतली हरि हाथ डोर है, चैन मिलेगा जप ले हरि हर।

देख रहा क्या जग में सुपने, छोड़ो तृष्णा हरि को भज ले।
दो दिन का यह रैन बसेरा, सुमर उसे अमृत को पीले।
नयन बसे हरि मिटे सभी डर, जहाँ ले चले उसकी मर्जी।
दे पतवार उसी को अपनी, बन कर लहर लगा दे अर्जी।

पाना क्या खोना है जग में, शीश झुका हरि का जा तू बन।
हरि के आगे करो समर्पण, जायेगा ले वह खेवट बन।
वह ही ज्ञानी ज्ञान वही दे, उस बिन मर्जी नाव ना बहे।
नाचे लहर नचाता सागर, मिटा स्वयं को नीर ना बहे।

685.

अपनी अपनी छोड़ नियति पर, छोड़ यहाँ सब जाते हैं।
हरि भज उस बिन ना चैन कहीं, आंसू झर झर गिरते हैं।
पी रट ले प्यारा है प्रियतम, कब निकले ना जाने दम।
अनजानी गलियों में भटके, नाम सहारा जप हरदम।

सुमर उसे मन अंखियां रोये, ना जाने क्यों आये हम।
हरि चरणों में शीश झुकाले, जाने वह अपना क्या दम।
हरि हरि जप मन शान्ति मिलेगी, जप ले यह अंखियां बहती।
उसकी दुनिया वह ही मालिक, जप बहती जाये किस्ती।

हरि हरि जप जपता ही जा मन, करे शिकायत किससे मन।
अपने अपने सुपने ले कर, सभी घूमते जानो मन।
आया जग में उसकी मर्जी, जाये ले न अपनी चलती।
दे पतवार उसी को अपनी, नैया तेरी खुद बहती।

जप ले हरि दे ज्ञान वही मन, उपजे हिय में करता तन।
कर्मों की पार न हो रेखा, उस बिन ठौर नहीं है मन।
ढलता दिन जायेगी संध्या, आंसू से कर ले पूजा।
दिल अपना चरणों में रख दे, जपते जपते लय हो जा।

न अपना कोई पराया है, ढलती फिरती छाया है।
किसका मन मोह करे जग में, मिटती जाती काया है।
स्वप्निल दुनिया रोती अंखियां, चैन मिले जप ले सैंया।
मन प्यास प्रेम की प्रेम हरी, जप लय हो प्यारा छलिया।

हरि हरि जप सुगम बनेगा पथ, मैं मिटा समझ मर्जी रब।
कठपुतली उसकी नाच रहे, धर ध्यान डोर पर वह सब।
हरि नयन बसे दुख सभी मिटे, सारी दुनिया युही चले।
तज मैं अपने बस में कितना, हरि नाम जपो दिल न जले।

686.

तुम तो छोड़ छिप गये मुझसे, कैसे इस मन को समझाऊँ।
आंखो से है नीर निकलते, कृपा करो हरि तुमको पाऊँ।
जीवन तेरा तू ही मालिक, फिर भी मेरी अंखियां रोई।
मैं तुमको था भूल गया हरि, माफ करो सुपनो में खोई।

बल तेरा बल मेरा ना कुछ, अंखियां बरसे जैसे सावन।
प्रीति बढ़े हरि चैन मिल तब, खफा कभी ना होना साजन।
खेल यहाँ मरने जीने का, शान्ति मिले हो कृपा तुम्हारी।
नयनों में मेरे बस जाओ, मैं छूटे मैं रहूँ तुम्हारी।

हरि जप तुझे, जाये कट सफर, जाये कहाँ कल न हमे खबर।
नाम तेरा हरि अमृत टपके, मिट पी जाऊँ तू सदा अमर।
स्वीकारो हरि मेरी पूजा, अंखियां नीर बहाती झर झर।
पार लगा दे मेरी नैया, चरणों मे हरि झुका हुआ सिर।

687.

हरि भजन करो मन सुख पाओ, हरि बिन जानो ना चैन यहाँ।
जन्मों का नाता जोड़ यहाँ, सब विछुड़ गये ना पता कहाँ।
पल पल परिवर्तित यह दुनिया, ठोकर लगती छलके अंखियां।
मन नाम सहारा यहाँ पकड़, जा रहा वही ले कर नैया।

आये जग में रचना रच दी, जायेगा ले उसकी मर्जी।
ना पूछ रहा तुझसे कोई, मैं छोड़ यहाँ उसकी मर्जी।
उसकी मर्जी को समझ यहाँ, दे ज्ञान वही जप सदा यहाँ।
कितनी ही योनी यहाँ फिरें, बस नहीं तेरे जप हरि जहाँ।

कर्ता ना बन कर्ता वह ही, अज्ञात छिपा शाश्वत वह ही।
दुख हर्ता प्रीति करो उससे, जप शान्ति मिले हर जगह वही।
बन लहर यहाँ नाचे सागर, मिटता सब मन क्यों ना जागे।
हरि हाथ डोर कठपुतली हम, धर ध्यान डोर सब दुख भागे।

688.

मैं ना कुछ सब कुछ तू ही हरि, ना समझूं रोता ले मैं हरि।
ज्ञान मिले सब कर्म मिटे तब, बन कर लहर बहूँ सागर हरि।
ले जाये सागर ही जाने, सुखदायक जप ले मन तू हरि।
हरि कठपुतली नाच रहे मन, लीला उसकी पहचानो हरि।

जप जप हरि का बन जा तू मन, अंखियां बरसे जैसे सावन।
हरि यादों मे नीर गिरे जो, वैभव फीके हरि का हो मन।
जहाँ ले चले मंजिल वह ही, आस तजो हरि का मन होई।
उपजे ज्ञान करे वह ही तन, दे विवेक मन हरि का होई।

जप ले मन यह जीवन उसका, जो भी भूला पथ में भटका।
नाम सहारा बस इस जग में, जप जप हो जा मन तू हरि का।
ढलती फिरती इस छाया में, शाश्वत हरि मन प्रीति बढ़ा ले।
बन बन टूटें देखे सुपने, जप उसको हिय कमल खिला ले।

689.

ओम जपो मन ओम जपो मन, खोया पी अब उसे जपो मन।
डगमग होती उस बिन नैया, तजो न उसको सुमरन कर मन।
जंगल दुनिया रोवे अंखियां, चैन मिलेगा जप ले रसिया।
शान्ति वही दे चरण पकड़ मन, पार लगेगी तेरी नैया।

दन्श सतावेगे ना जग के, जपो नाम में अमृत टपके।
कर्ता भर्ता हर्ता जब वह, छोड़ो मैं मन अंखियां टपके।
जप ले हरि का प्यारा जा बन, चले न अपनी झरे यह नयन।
खेल करे लाये ले जाये, दे जो ज्ञान करे वह ही तन।

हरि हरि जप मन खेवट वह ही, जप ले उसको शाश्वत वह ही।
दे पतवार उसी को अपनी, लिये जा रहा सब कुछ वह ही।
जप ले मन न जलेगा जियरा, डोर हाथ हरि नाचे जिवड़ा।
मिटता मैं सब दुख मिट जाते, जपले हरि सुख पावे जिवड़ा।

690.

मन भाग कहाँ पर जायेगा, जप हरि बिन ठांव न पायेगा।
बहते नयनों से आंसू हैं, जप ले हरि चैना आयेगा।
जपता जा मन जपता ही जा, खेले उसका ही यह आंगन।
सुख दुख के खेल खिलावे वह, जप ले हरि को हरि प्यारा बन।

मन जपो सांस जब तक आती, इन सांसों से भेजो पाती।
जीवन तेरा तू ही मालिक, हरि पार लगा दे यह किस्ती।
हरि नयन बसे हिय कमल खिले, इस जग में आ कर गये ठगे।
हरि जप मन हरि का तू हो जा, हरि कृपा मिले तो भाग्य जगे।

हरि जप हरि जप हरि जप ले मन, उससे ही मन हम पावे बल।
अनजानी जग की गलियों में, बहता है इन नयनों से जल।
स्वीकारो हरि मेरी पूजा, विनती मन सदा यही करना।
न कभी भूलना जप ले हरि, उसकी सुगन्ध ले कर बहना।

691.

पंडित ज्ञानी बन बन घूमें, जनम जनम की बात कहें हैं।
हरि की प्रीति बिना सुख नाहिं, खाते ठोकर नीर बहे हैं।
स्वप्निल दुनिया कुछ पल डेरा, जप सुख पावेगा यह जिवड़ा।
किससे यहाँ शिकायत करनी, डोर हाथ हरि नाचे जिवड़ा।

तार जोड़ अज्ञात छिपा हरि, लिये जा रहा तेरी नैयां।
नयनों में जब हरि बस जाते, दुख से ना रोती फिर अंखियां।
दुनिया जंगल हरि ही मंगल, पी अमृत सुख से बीते पल।
दे पतवार उसी के हाथों, चढ़ा चरण जो गिरे नयन जल।

कठपुतली हम डोर हाथ हरि, लाये ले जाये वह सब कुछ।
ध्यान डोर पर कर मन जा झुक, कुछ पल खेलें फिर हम ना कुछ।
देख रहा क्या जग में सुपने, चैन मिलेगा मन हरि जप ले।
कांटों की सब चुभन मिटेगी, जप ले हरि को नयन बसा ले।

क्या पाना है क्या खोना है, सुपना सारा मिट जाना है।
प्रीति बढ़ा बरसे अमृत जल, जप इस जल में बह जाना है।
शाश्वत से मन प्रीति बढ़ा ले, दुख से ना रोवेगी अंखियां।
जिसने जपा कटे सब बन्धन, सभी ओर नाचे वह रसिया।

692.

गली गली में खोजो कितना, छिपा हुआ अन्तस में रसिया।
जप ले रस जीवन का वह ही, नीर बहाती रहती अंखियां।
जप ले हरि मन सदा सत्य वह, घूम रहे तृष्णा के बादल।
उलझ नहीं जपता जा हरि को, मिल जायेगी तुझको मन्जिल।

ढलती फिरती इस छाया में, बन बन टूट रहे हैं सुपने।
जपले मन हरि शान्ति मिलेगी, उसे भूल सुख खोया हमने।
कुछ पल रहना रैन बसेरा, यहाँ शिकायत किससे करना।
ध्यान धरो हरपल छलिये का, याद लिये उसकी मन बहना।

दीप जला अन्तस में जप जप, चहुँ दिश अन्धकार है छाया।
जो दे ज्ञान करे यह तन भी, कर स्वीकार वही है छाया।
हरि बिन कृपा न हो उजियारा, चरण पकड़ हरि की ही माया।
ना कुछ हो मन हरि को जप ले, मिल जायेगी तुझको छाया।

693.

ज्ञानी मैं ना बालक तेरा, हरि अपनी कृपा सदा रखना।
जग की अनजानी गलियों में, प्रभु बहते हैं मेरे नयना।
तू ही कर्ता भर्ता हर्ता, जीवन के भाग्य विधाता तुम।
तुमसे न कहें तो किसे कहें, देखो मेरी आंखें है नम।

हरि जपे तुझे हम याद करे, नयनों में मेरे बस जाओ।
डर लागे ना नदिया गहरी, सब जगह मुझे तुम ही पाओ।
विनती करता ना भटकूँ मैं, गीतों केा तेरे मैं गाऊँ।
नित प्रीति तुम्हारी बढ़ जाये, जल बहे नयन हरि पग पाऊँ।

कठपुतली तेरी नाचूँ मैं, पर ध्यान डोर पर रहे सदा।
तू नचा रहा मैं नाच रहा, लागे ना मुझसे कभी जुदा।
हरि प्यार मुझे अपना देना, यादों में बहते यह नयना।
स्वीकारो हरि मेरी पूजा, अन्तर्यामी हो क्या कहना।

694.

न भटकाओ मुझे मोहन, शरण तेरी आया हूँ।
न कुछ मेरा सभी तेरा, सुपन ले क्यों भुलाता हूँ?
लगा दे पार नैया को, डराती डगमगाती है।
न पथ में मैं भटक जाऊँ, बहे नयन से पानी है।

बनाई मेरी जो रचना, तुम बिन कौन देखेगा?
बहाते नयन आँसू है, बता दे कौन पोंछेगा?
शरण में राख ले अपनी, उमरिया बीत जायेगी।
मुरझाई मेरी बगिया, खिलेगे फूल महकेगी।

ढले यह सांझ कुछ पल है, न हरि मुझसे खफा होना।
न टूटे ध्यान डोरी से, हरि यादों में है खोना।
हरी हर नाम है प्यारा, लिये जाती तेरी धारा।
नयन में तुम बसो मेरे, जपा जिसने उसे तारा।

695.

मन मिटे हरि ही रहेगा, संसार मन का नाम है।
मुक्त हो मन जपो हरि को, न सत्य तू तो तरंग है।
जपता जा नहीं हेा दुखी, सुख एक हरि का नाम है।
आस क्या राखे जगत से, यह स्वप्न सा संसार है।

हरि जपो जपते रहो मन, सुपने संजो ना दुख गहो।
सौप दे पतवार उसको, मन ध्यान हरि का ले बहो।
जानो बस कितना अपने, जा रहा ले छोड़ सुपने।
शीश चरणों में झुका दे, खेल देख सारे अपने।

हरि जपो मन हरि जपो मन, मिटेगा मन मैल सारा।
उस बिना ना शान्ति पावे, जाती ले उसकी धारा।
बहें नीर कर ले पूजा, उस बिना ना और दूजा।
वही शाश्वत जगत उसका, जप ले मन उसका हो जा।

696.

जप ले मन क्यों उलझ गिरे है, देखे ना क्यों नीर झरे है?
कौन यहाँ किसका है साथी, जप ले हरि सब कष्ट हरे है।
कुछ पल रहना रैन बसेरा, यहाँ शिकायत किससे करना।
जप ले हरि कट जाये रैना, लगे नहीं डर जपते रहना।

हरि हरि गाओ शीश झुकाओ, बहे नयन हरि चरण चढ़ाओ।
प्यारा ना उससे बढ़कर है, जप जप मन हरि नयन बसाओ।
जपता जा चलता जा जग में, खेले छलिया ना कुछ बस में।
सुखदाता मन शान्ति वही दे, गाता जा मन उसके नगमें।

प्रीति बढ़ा मन नाम है प्यारा, नहीं बहेगा आंसू खारा।
जिसने उसका दामन थामा, जीत नहीं कुछ कभी न हारा।
जपते जपते लय हो जाओ, इससे प्यारा सुख ना कोई।
मिल जायेगी तुझको मंजिल, जपो हरी दुख सब मिट जाई।

697.

जप ले हरि हर पता न कोई, दुख में आंखें है यह रोई।
शान्ति मिलेगी जप ले तू मन, कर्ता भर्ता हर्ता बोई।
पीछे क्या आगे भी क्या हो, जान सका क्या जग में कोई?
डूब गया जो हरी प्रेम में, चहुँ दिश नाचे सब कुछ बोई।

बहता जा मन नदिया उसकी, सुमर उसे ले जाये किस्ती।
सुख सागर सुख पावे जियरा, जप ले उसको अंखियां बहती।
पल पल में परिवर्तित दुनिया, मोह करे फिर रोये अंखियां।
शाश्वत हरि से प्रीति लगा मन, मिटते दुख ले जाये छलिया।

ज्ञान वही दे हरि हरि जप मन, ज्ञान मिले करता वह ही तन।
अपना क्या यह रैन बसेरा, जप ले हरि मन तेरा साजन।
हरि हरि जप मन चैना पावे, कृपा मिलेगी होय सुबेरा।
मन हरि चरणों में सिर रख दे, सब कुछ उसका ना कुछ तेरा।

698.

क्या अच्छा और बुरा होता, सब छोड़ समर्पण कर हरि को।
हरि चरणों में मन शीश झुका, हरि लिये जा रहा है सबको।
अज्ञात दिशा कुछ ना जाने, अज्ञान न क्यों हम पहचाने।
इस सागर में बन लहर बहें, हरि कृपा मिले तब पहचाने।

अपना क्या तन भी जाता है, सागर से तेरा नाता है।
जप ले सागर ना भूल यहाँ, सब ओर नजर यह आता है।
मैं मिटा यहाँ सागर छाया, स्वीकार करो उसकी लीला।
दे ज्ञान वही जप ले उसको, मन देख जप रहा जो छैला।

सब पीड़ मिटे जब लगे तुझे, छैला तो हरपल संग मेरे।
जर्रा जर्रा जो घूम रहा, हरि ही हरपल उसको घेरे।
जा रहा लिये तेरी किस्ती, बहते आंसू मन उसे चढ़ा।
ना उससे अपना ध्यान हटा, कर ले सुमरन मन प्रीति बढ़ा।

सुख सागर सारे दन्श मिटे, हरि चरणों में जब नीर बहें।
वैभव सब फीके पड़ जाते, इन सांसों में जब वही बहे।
मन प्रीति बढ़ा हरि को जी ले, जपते जपते तू लय हो जा।
तप यही करो हरि की पूजा, मैं मिटा नहीं कोई दूजा।

699.

खड़े द्वार पर करे प्रतीक्षा, देखे ना देखे सब उस पर।
उसकी लीला वह ही जाने, करा रहा है हमें वह सफर।
ज्ञान लिये उसका हम जीते, इन गलियों में आंसू बहते।
आये जग में कुछ ना जाने, चाह प्यार की तुमको जपते।

हरि हरि जप मन पीड़ हरेगा, संकट सारे दूर करेगा।
स्वप्निल दुनिया कुछ पल खेला, किस्ती तेरी लिये चलेगा।
बीत गई कुछ बीत रही है, उस बिन चैना कहीं नही है।
याद उसे कर चैना आवे, जपो नाम सुख स्रोत वहीं है।

तम मे दीपक बन वह जलता, कृपा मिले अंधियारा छटता।
हरि बिन ज्ञान कहां से आये, जपता जो दुख मन से हटता।
करो समर्पण हरि के आगे, जानो कठपुतली हम नाचे।
अपना ना कुछ सब कुछ उसका, दिया ज्ञान जो उसको बाचे।

700.

मेरे बनाये क्या बने, जब डोर हरि के हाथ में।
प्यार तेरा चाहता हरि, आंसू छलकते नयन में।
देख लो अनजान गलियां, बहती है मेरी अंखिया।
हरि कृपा जो मिले तेरी, जाये खिल मेरी बगिया।

मन सुमर हरि नाम प्यारा, न बहेगा आंसू खारा।
प्रीति मन हरि से बढ़ा ले, जाती ले उसकी धारा।
बीत जायेंगे सभी पल, बहता नयनों से है जल।
हरि जपो हरि हाथ डोरी, सुख मिले संसार स्वप्निल।

जपो हरि चल ले जगत में, जान खोती सब कहानी।
हरि बसे जिसके हृदय में, न बहे फिर दुख से पानी।
हरि जपो मन हरि जपो मन, शीश चरणों में रखो मन।
कौन तू सब खेल उसका, मिटता मैं प्यारा हरि बन।

701.

सब हरि खेला नहीं यहाँ बस, क्यों करता फिर मन को मैला।
आया हरि मर्जी खेल रहा, प्यारा है जप ले वह छैला।
मन छोड़ भंवर में तू किस्ती, बस क्या ले जाये वह किस्ती।
पड़ जा मन हरि के चरणो में, मर्जी उसकी लहरे उठती।

मन करो समर्पण हरि आगे, कुछ भी ना सब हरि का खेला।
दे ज्ञान वही जप ले हरि को, जाता ले वह तुझको छैला।
अपना नहीं पराया कोई, दौड़े सुख को वह ही छाया।
बिन भजन हरि मिले नहीं सुख, देखे क्यों ना रोती काया।

जप ले हरि मन समझ इशारे, मिटा यहाँ मै पड़ जा द्वारे।
डोर हाथ में उसके ही है, नहीं बहेंगे आंसू खारे।
बन जा चाकर तप कर ले मन, बहता नयनों से है सावन।
उसकी बगिया बना फूल तू, कुछ ना तेरा सब उसका धन।

702.

कठपुतली उसकी नाच रहे, स्वीकार करो जो कुछ दीन्हा।
मन लड़ा उसी से तू नयना, मर्जी हरि की जो हरि चीन्हा।
जो होना है वह ही होगा, छलका ले कितने ही नयना।
हरि नाम सहारा ले तू मन, ना दुख पावेगे यह नयना।

हरि की मर्जी आ गये यहाँ, ले जाता ना अपनी चलती।
हरि बस जाते नयनों में जब, नैया उसकी खुद ही बहती।
मैं मिटा यहाँ जप हरी जहाँ, चरणों में जप उसके पड़ जा।
जैसा राखे उसको जी ले, वह ही सब कुछ तू ना हो जा।

वह खेल खिलाये बन चाकर, दे ज्ञान वही हरि भाये जो।
आंसू बहते हरि कर पूजा, आंसू में फूल खिलाये जो।
हरि हरि जप ले सब कुछ उसका, तू यहाँ बना केवल सुपना।
यादों में जी कुछ सुख पा ले, अन्तर्यामी क्या कुछ कहना।

703.

हरि भज मन जग में क्या रक्खा, बदल रहा यह रंग जहाँ है।
आज यहाँ साथी है कोई, नहीं पता फिर गया कहाँ है?
शाश्वत हरि से प्रीति बढ़ाले, बहते नयना उसे दिखा दे।
अपने बस क्या दुनिया उसकी, बन चाकर तू प्रेम जता दे।

किससे यहाँ शिकायत करनी, होनी अपने खेल दिखाये।
बना मदारी नचा रहा है, डोर हाथ हरि समझ न आये।
जप हरि साथ लगेगा उसका, तप कर सुमरन कर ले उसका।
कितनी योनी घूमे जग में, लेखा रक्खेगा तू किसका।

हरि हरि जप मन तू लय हो जा, मिटे लहर सागर तू हो जा।
अपना कौन पराया जग में, छोड़ शिकायत हरि का हो जा।
उपजे ज्ञान करे वह ही तन, दाता वह ही हरि का जा बन।
हरि जप उस बिन चैन यहाँ ना, अंखियां बरसे जैसे सावन।

जप ले हरि को रैन बसेरा, उसमें ही है छिपा सुबेरा।
मन हरि का हो फिर क्या चिन्ता, छूटे मैं सब उसका घेरा।
जप हरि हरि सुख पावे मनुआ, हरि यादों में नीर बहावे।
किया समर्पण हरि के आगे, नैया उसकी पार लगावे।

704.

सुमरन कर मिल जाये छैंया, तपती है यह जग की गलियां।
प्यारा नाम हरे दुख सारा, पकड़ा दे तू अपनी बैया।
जनम मरन का साथी वह ही, काहे अपने नयन हटाई।
चलती उसकी स्वामी वह ही, छोड़ यहाँ मैं हरि को पाई।

जपता जा बह ले हरि धारा, जहाँ ले चले वही किनारा।
अपने हाथों जान नही कुछ, ज्ञान पाये जो वह ही द्वारा।
जप ले मन जपता जा उसको, पार लगावेगा वह किस्ती।
अज्ञानी हम कुछ ना जाने, पड़ो चरण में बहती किस्ती।

हरि हरि गाओ बरसे नयना, कुछ ना मुँह से मन तू कहना।
बह ले यह पावन है धारा, सुमरन उसका कभी न तजना।
आये जाये चले ना मर्जी, कुछ पल नाचे अंखिया रोती।
जपता जा जप देख उसी को, बरसेगे नयनों से मोती।

जप ले उस बिन चैन नहीं मन, कटे ना रतिया तारे गिन गिन।
खोज खोजता कौन यहाँ है, लड़ा नयन तू घबरा ना मन।
हरि हरि जप ले होय सुबेरा, टूटेगा सब दुख का घेरा।
कठपुतली बन नाच रहे हैं, मिटो लहर बन सब कुछ तेरा।

705.

पूजो ना पूजो चाहे हरि, हरि बिन चैन नहीं मिलता है।
जप ले हरि मन मंगलदायक, सुमरन कर ले दुख हर्ता है।
अंधियारी रातों का साथी, पथ दीखे ना अंखियां रोती।
ऐसे में भी भूल न हरि को, नैया यहाँ स्वयं ही बहती।

जप हरि हरि वह सत्य ठिकाना, जग में सब कुछ है अनजाना।
काहे जग से प्रीति बढ़ाये, दुख पावे टूटे सब सुपना।
हरि हरि जप सब मिटती चिन्ता, मिटे यहाँ मैं रहे नियन्ता।
शीश झुका दे चरणों में मन, प्यासे प्राणो को जल मिलता।

नाम सहारा है इस जग में, अपना क्या बल सब दरिया का।
जाये वह ले मर्जी उसकी, जप पायेगा साथ सदा का।
हरि हरि जप ले सुख का सागर, तेरी भर जायेगी गागर।
पी अमृत जल जप ले हरि को, शाश्वत वह मिट जायेगा डर।

706.

मन मन्दिर में ओम बिठा लो, कर ले मन तू इसकी पूजा।
बहती आंखों से नदिया है, अन्तिम पल तक साथ न दूजा।
बहते जायें नहीं ठिकाना, पल पल बदले रंग जमाना।
शाश्वत हरि से प्रीति बढ़े जब, दुख मिटते हरि मिले ठिकाना।

हरि हरि जपता जा इस जग में, नहीं डरावे रैना मग में।
अंधियारी रातों का साथी, दीप जला ले उसका दिल में।
हरि हरि भज वह सुख का सागर, देखो बहती अंखियां झर झर।
मैं को मिटा उसी का हो जा, जाती भर फिर खाली गागर।

जीवन उसका क्या है अपना, नाच नचावे बना मदारी।
नयन लड़ाये जिसने उससे, बनता लहर न जिय हो भारी।
बनो पतंगा शमा जल रही, हरि बिन अंखियां पल पल रोई।
जहाँ ले चले मन्जिल वह ही, मिटा प्रेम में जाने बोई।

707.

छोड़ तुमको जाये कहाँ पर, देखो आँसू गिरते झर झर।
सकल जगत के स्वामी हो तुम, सुखसागर सुख बाट यहाँ पर।
स्वप्निल दुनिया रैन बसेरा, फिर भी छलक रही यह अंखियां।
कृपा तुम्हारी हरि हो जाये, ना बीते फिर दुख में घड़ियां।

जीवनदाता जीवन तेरा, अज्ञानी हम बालक तेरे।
प्यासे प्राण पुकारें तुमको, जल वर्षा दे हम तो हारें।
हरि हरि जपूँ तुझे ही पूजूँ, कभी रूठ नाच मेरे सैंया।
नजर उठा कर मुझे देखले, झर झर झरती मेरी अंखियां।

बन्शी धुन हरि प्यारी बजती, छोड़ इसे तृष्णा में फंसती।
तज अमृत विष को मैं पीती, पार लगा दे मेरी किस्ती।
ढलती संध्या रैना आवे, छिप कर हमको नाच नचावे।
अन्तर्यामी करो कृपा अब, दास तेरा चरण को पावे।

708.

हरि नयन में मेरे बसो, हरि सांस में मेरे बहो।
मन्जिल जहाँ भी ले चलो, शिकवा न हो तुम ही रहो।
जाने न जाये हम कहाँ, नही जानते छिपा कहाँ?
तेरी कृपा को चाहते, जहाँ भी रहे खिले जहाँ।

अनजान गलियां भटकता, आंसू नयन से टपकता।
प्यास पाऊँ पग तुम्हारे, हरि दर्श को मैं तड़फता।
जो कहो हरि वह करूँ मैं, दे बल रजा में चल सकूँ।
बहते नयन से नीर है, चाहता प्यारा बन सकूँ।

हरि ज्ञान का तू दीप है, जीवन का तू संगीत है।
निज प्रीति में रंग ले मुझे, बहते नयन से नीर है।
शाश्वत हरि लीला तेरी, नाचे हम कठपुतली बन।
ध्यान डोरी पर लगे जब, जाते मिट गम सारे मन।

709.

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, बस तेरे क्या सच देख जपो।
बढ़ता बीज बढ़ावे कोई, लीला हरि की मन देख जपो।
मन करो समर्पण हरि आगे, दे ज्ञान वही चैना आवे।
मैं छोड़ यहाँ कर्ता ना बन, बन लहर बहो जिय सुख पावे।

हरि हरि मन तू जपते रहना, ले नाम सहारा तू चलना।
अन्तिम पल तक है साथ यही, संग तेरे संग इसके रहना।
वह नचा रहा हम नाच रहे, मर्जी उसकी से खेल चले।
जप ले हरि चरण पकड़ ले मन, ले चले जहाँ ना जिया जले।

सुमरन कर रोती काया है, कर्ता भर्ता हर्ता वह है।
पतवार सौपं जप ले हरि को, सब ओर वही मन छाया है।
जाता दिन अब तो सांझ ढले, जप हरि को पल यह नहीं मिले।
अमृत यहाँ नाम समझ जग में, मन प्रीति बढ़ा क्यों यहाँ जले।

710

हरि हरि जप दाता है वह ही, झोली खाली भरता वह ही।
पार लगे ना उस बिन नौका, क्यों तड़फे सुखदाता वह ही।
जग उसका हम नाच रहे है, नीर चढ़ा दे अपने उसको।
हरि हरि जप ले सुन अनहद को, कर कर जतन रोक ले मन को।

अनहद धुन सुन बजती हरपल, प्रीति बढ़ा ले गिरता है जल।
कुछ पल का है खेल यहाँ पर, मोह करे दुख पाये हरपल।
हरि हरि जप मन नाद यहाँ सुन, बहती गंगा लहर यहाँ बन।
मर्जी उसकी वही चलावे, जो भी उपजे सब उसके गुन।

नीर गिरे कर याद उसी को, छोड़ो मैं अपना लो हरि को।
चले न अपनी आये जायें, सुखपावे जिय जप ले उसको।
लहर नहीं अन्तस में सागर, लहरे देखे होता पागल।
सुमरन करो बसत वह दिल में, छट जायेंगे दुख के बादल।

711.

हरि देख हमें लो खड़े द्वार, अंखियां झरती तुम बिन रसिया।
हरि मिले प्यार तेरा चाहूँ, तुम बिन सूनी मेरी बगिया।
लीला तेरी नाचे जग में, तुझ बिन बतला हम किसे कहें।
अपनी हरि कृपा सदा रखना, अंखियों से रिमझिम नीर बहें।

क्या ठीक यहाँ क्या गलत यहाँ, तेरी दुनिया तू ही जाने।
दे मुझे जगह चरणों में तू, मिल जाये चैना दीवाने।
हरि ओम जपे हरि ओम जपे, यादों में तेरी नीर बहे।
बहता जाऊँ इस नदिया में, प्रभु प्यार तुम्हारा सदा चहे।

बन जा मन तू हरि का चाकर, निर्भय हो कर तू चलता जा।
ले जाये जहाँ मर्जी हरि की, जप हाला उसकी पीये जा।
स्वामी वह ही इस जीवन का, कठपुतली बनकर नाच रहे।
तप कर ले नयन चढ़ा आंसू, जप शाश्वत वह ही सदा रहे।

712.

ले चलो मर्जी कहीं भी, तुम सर्जक जग के पालक।
प्यार की है नाथ चाहत, अबल मैं तुम्हारा बालक।
बहते नयनों से आंसू, जानते न कल क्या होगा।
चाहते तेरी कृपा को, देख ले फिर दुख न होगा।

डगमगाती नाव मेरी, पार कर मेरे खिवैया।
न कोई दीखे किनारा, रोती है मेरी अंखियां।
चाहत ले जग में फिरते, भूल तुमको नयन रोते।
कुछ समय का खेल सारा, पर न इसके पार उठते।

ले चल दे अपनी छैंया, बहती हैं मेरी अंखियां।
दास को अपना बना लो, बीत जायेगी उमरिया।
ज्ञान का दीपक तुही है, छाँटता तम को तुही है।
हरि रहे सुमरन तुम्हारा, आरजू मेरी यही है।

713.

जप ले हरि हरि वह सागर मन, बहो लहर बन जोर न अपना।
कर स्वीकार उसी की मर्जी, जैसा राखे वैसा जीना।
नचा रहा वह नाच रहे हम, जैसी मर्जी वह ले जाये।
उपजे जो भी ज्ञान हृदय में, तन भी बस वह ही कर पाये।

बहो लहर बन ध्यान न टूटे, यहाँ शिकायत किससे करनी।
जपो हरि हर नाम है प्यारा, यहाँ नचावे हरपल होनी।
तप कर ले मन जप ले हरि मन, दुखते दिल की दवा यही मन।
साया भी जब पीछा छोड़े, जप हरि ले जाये केवट बन।

लाई नियति जाये हमें ले, कितना जोर यहाँ पर चलता।
मैं को छोड़ समर्पण कर हरि, नैया वह ही लेकर चलता।
जप ले हरि हरि ठिंका यही मन, प्यासे प्राण पिला दे जल मन।
शाश्वत जप मन हो लय उसमें, टूटेंगे सब दुख के बन्धन।

714.

स्वीकारो हरि की लीला को, छिपा हुआ इसमें ही मन सुख।
जप हरि को हरि हो जा सम्मुख, खोज यहाँ सुख जग लिपटे दुख।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, करे शिकायत बरसे अंखियां।
हरि हरि जप मन उसकी दुनिया, लाया वह ले जाये छलिया।
जप हरि को मन अमृत बरसे, बूंद बूंद को काहे तरसे।
मतबाला बन पी ले प्याला, लय हो जाये हरि ही तरसे।
हरि हरि जप मन लीला उसकी, कुछ पल खेले अंखियां छलकी।
जाये कहाँ नौका न जाने, जपता जा यह दुनिया हरि की।
जप हरि हरि को ज्ञानी वह ही, जो होना है वह ही होई।
छिपा बीज में वृक्ष यहाँ है, हरि बिन कृपा खिले ना कोई।
हरि हरि जप मन शाश्वत वह ही, प्रीति बढ़ा हिय खिलता जब ही।
मिटता मैं शाश्वत में जीता, हरि का हो जा कर्ता वह ही।
हरि हरि जप मिल जाती छाया, तपती गलियां रोती काया।
दे पतवार उसी को अपनी, नहीं कभी वह हुआ पराया।
क्या देखे इस जग में सुपने, हरि हरि हरि हरि, हरि हरि, जप ले।
पंख लगे तृष्णा ले उड़ती, लगे न झटके सुमरन कर ले।
डोर हाथ हरि हम कठपुतली, क्या गुमान जब सब कुछ मिटना।
हरि चरणा झुक रोवे नयना, ना समझे यह बहते नयना।

715.

थक गये हम शरण में लो, दास को अपना बना लो।
यह तेरी रंगीन दुनिया, ना परीक्षा और तुम लो।
नयन खोजें बरसते यह, प्यार को हरि तरसते यह।
मिले जब तेरी कृपा हरि, फूल खिले जग तेरा यह।

मेरे जीवन तुम स्वामी, बहता अंखियों से पानी।
मैं कहाँ जाऊँ बता दो, देखो हरि तुम ही दानी।
प्राण प्यासे जल पिला दो, मैं भटकूँ राह दिखा दो।
अश्रु से मैं करूँ पूजा, मैं अबल हूँ प्यार दे दो।

स्वप्न कितने ही सजाये, टूटते जब नीर आये।
तुम बिना ना चैन आये, विनय नयनों में समाये।
कितनी ही राह कठिन हो, भूले ना हरि संग तुम हो।
बना लहर बहता जाऊँ, सब चाहत तुझमें लय हो।

716.

गिर जा मन हरि के चरणों में, ना मानेगा होगा अति दुख।
लीला उसकी जग का मालिक, सुमरन कर मन पायेगा सुख।
मन हरि हरि गा यह कटे सफर, अंखियां झरती रहती झर झर।
उसकी लीला वह ही जाने, सागर में बह बन यहाँ लहर।

हरि कृपा मिले तो बीज खिले, मिटते अनन्त सब बीज यहाँ।
मर्जी उसकी ले चले जहाँ, अपनी क्या चलती समझ यहाँ।
हरि जपो शान्ति सुखदाता वह, तपते पथ में छाया दे वह।
ना और ठिंका हरि को जप ले, नैया तेरी ले जाता वह।

प्रियतम प्यारा सबसे न्यारा, हरि नाम जपो बहती धारा।
दे ज्ञान वही सब जगह वही, जीता वह हरि आगे हारा।
सुख दुख का चलता खेल यहाँ, हरि जप सुमरन कर चैन यहाँ।
उस बिन जिय की ना प्यास मिटे, उसको जप पा वह सदा यहाँ।

717.

कर भजन मन चैन आवे, बीत जायेगी उमरिया।
स्वप्न सा सब खेल सारा, मैं को ले रोवे अंखियां।
मन समर्पण करो हरि में, बांसुरी बन स्वर उठा ले।
डोर उसके हाथ में है, ध्यान डोरी पर लगा ले।

खेल चलता सब उसी का, जाये ले वह न रूकता।
क्या यहाँ अभिमान पागल, पल में रोवे सिर धुनता।
जप उसे शाश्वत वही है, खोल नयना सब वही है।
न लहर सागर है नाचे, टूटे भ्रम मुक्ति यही है।

स्वीकारो हरि की मर्जी, जाता ले उसका ही बन।
जप न दुख से रोयें अंखियां, मर्जी से बरसे सावन।
शीश जो पग में झुकाये, ज्ञान का दीपक जलाये।
जप न भूलो एक पल को, गम मिटे हरि प्यार पाये।

718.

बरसे अम्बर भीगे धरती, कृपा मिले हरि कलियां खिलती।
छोड़ यहाँ मैं सब कुछ हरि का, जप ले नाम शान्ति तब मिलती।
जप हरि हर उसकी ही दुनिया, नचा रहा वह हमको छलिया।
कठपुतली हम डोर हाथ हरि, देख समझ मन रोवे अंखियां।

जप ले हरि का नाम सहारा, लिये जा रही उसकी धारा।
सुमरन कर सब भय को हर्ता, बहता नहीं नीर तब खारा।
बिन हरि भजन न चैना आवे, नीर बहाती रहती अंखियां।
दुख पावे मन जप हरि का बन, दो पल जीवन स्वप्निल दुनिया।

जपता जा सब हरि की लीला, यहाँ कर रहा वह ही क्रीड़ा।
सुख सागर हरि नाम जपो मन, सदा साथ हरता वह पीड़ा।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, सारे तेरे कष्ट हरेगा।
नैया तेरी पार करेगा, हरि हरि जपो ज्ञान वह देगा।

719.

लेख नियति के यहाँ मिटे ना, संग में हरि क्यों उसे जपे ना।
अन्तर्यामी सब कुछ जाने, ध्यान डोर पर कह कुछ भी ना।
जप ले मन वह सुख का दाता, दिल की पीड़ा वही मिटाता।
बस क्या अपने चलती उसकी, शीश झुका ले भाग्य विधाता।

नाच रहे कठपुतली हरि की, बरस रहे नयना यह रिमझिम।
यादें उसकी प्यारी लागे, जप ले नयन बसा वह प्रियतम।
हरि हरि जप ले जाये नैया, और यहाँ न कोई खिवैया।
लिये वासना अपनी अपनी, घूम रहे सब रोवे अंखियां।

हरि हरि जप मन पावन गंगा, जो नहाये होवे मन चंगा।
पी प्याला हो जा मतवाला, उतरेगी नयनों से गंगा।
मोक्षदायनी पाप हरे सब, मिटती तृष्णा उसे जपे जब।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, मैं ले तड़फे जपे न क्यो रब?

हरि हरि जप मन शाश्वत वह ही, जपता जिसको होता वह ही।
उलझे क्यों जप ले मन हरि को, कर्ता भर्ता हर्ता वह ही।
जप ले हरि भीगी है अंखियां, छोड़ न उसको पकड़ो बैया।
शीश झुका बन दास उसी का, घबरा ना ले लाये नैया।

720.

नियति के बन कर खिलौने, नाचते आंसू बहाते।
धूप छाया खेल दुनिया, नीर बहते रूक न पाते।
सत्य क्या जाने न अंखियां, छिप गया है छोड़ छलिया।
न रूके नयनों के आंसू, जप मिले संग देगा छैया।

दीनबन्धु दुख का हर्ता, सृष्टि का वही है कर्ता।
अर्चना मिल कर करो सब, ज्ञान सब उसी से बहता।
मैं मिटा मन गीत गा ले, जपो अन्तस उसे पा ले।
वही शाश्वत संग कर ले, स्वप्न तज उसको पकड़ ले।

देख ले नजरे उठा कर, नयन से है नीर बहता।
पकड़ो मन हरि का दामन, फिकर क्या सभी वह कर्ता।
प्रीति हरि से मन बढ़ा तू, जाये मिल तुझे खजाना।
स्वप्न सा संसार सारा, कुछ न खोना और पाना।

721.

बनो तुम मन दास हरि के, एक वह ही है ठिकाना।
प्राण प्यासे जल पिला दे, जल रहा सारा जमाना।
मैं मिटा हरि गीत गा ले, देख अन्तस उसे पा ले।
सब जगह बस वही छाया, तज सुपन हरि हिय बसा ले।

जपो हरि को लहर बन कर, जा रहा ले डर न मग में।
मर्जी उसी की लहर क्या, कर समर्पण संग पथ में।
नित नये करे है सर्जन, न लहर नाचे है सागर।
जप लहर अन्तस में देखे, नहिं वह नाचे है सागर।

लीला उसी की सिर झुका, पल मिले जप साथ ले ले।
तू कहाँ जाये न जाने, जप हरि शाश्वत में जी ले।
उसकी मर्जी से आया, जाये ना कोई रूकता।
दुख हरे जप नाम हरि का, क्यों यहाँ भयभीत होता।

722.

कौन हो तुम कुछ कहो तुम, एक छाया और क्या तुम?
दीखती कुछ पल नहीं फिर, लीन हेा जाती कहाँ तुम?
दर्द बहता है जगत में, तेरी भी रोती अंखियां।
ध्यान तू हरि में लगा ले, ताप हरे मिलती छैंया।

जपो हरि वह ही ठिकाना, जपता जो उसने जाना।
कूल जग में छूटते सब, वह सदा संग बन दिवाना।
करो सुमरन चैन आवे, देख अन्तस पा ले पिया।
ज्ञान का दीपक जलावे, मिटे भय भटके न जीया।

अपना क्या दुःख करे मन, जो बनाया बन गये हम।
बहे जो नयनों से गंगा, चढ़ा हरि पग मिटे सब गम।
वही कर्ता दास बन जा, दुख से ना रोये अंखियां।
स्वर उसी के बनो बन्शी, प्यार बढ़े खिलती बगिया।

723.

ध्यान हरि का कर हरपल मन, जपो तुझे मिल जाये मन्जिल।
नयनों से गिरता रहता जल, ले जाये किस्ती खेवट बन।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, क्यों दुख पावे जप ले छलिया।
दीप जलावे वह ही पथ में, जग की सब अनजानी गलियां।

जग से तू तुझ से जग ना है, प्रीति बढ़ा हरि भय मिटता है।
ज्ञानी अज्ञानी जो झुकता, प्यार सभी को फिर मिलता है।
खोल उसी का स्वर भी उसके, उपजे ज्ञान वही सब बजते।
नयन चढ़ा आंसू हरि चरणा, चैन न उस बिन सच हम कहते।

पाप पुण्य सुख दुख का मेला, हरि बिन कृपा न मिटता मैला।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, खेल कर रहा वह ही छैला।
प्यासे प्राण मिले जब पानी, बरसे अंखियां खिले कहानी।
हरि लीला में लय हो जाये, मिट जाती सारी नादानी।

724.

नहीं कर्ता यहाँ तू बन, बनो हरि दास मिटते गम।
धरो मन ध्यान डोरी पर, बन कठपुतली नाचे हम।
यहाँ नाचे हरी लीला, जपो हरि को मिटे पीड़ा।
झुका मन शीश चरणों में, वही मालिक करे क्रीड़ा।

यहाँ चलती सदा उसकी, लहर कितनी नहीं गिनती।
यहाँ पर जो बने हरि का, सहज हो पार फिर किस्ती।
जपो हरि हर नहीं कुछ थिर, सभी जाते उसी के घर।
बसा ले नयन में उसको, नहीं लागे कभी फिर डर।

सुपना सारी दुनिया है, दुख का बहता दरिया है।
न हरि बिन चैन मन पावे, पकड़ो प्यारा प्रियतम है।
जपो हरि हरि मिले चैना, उपजता ज्ञान वह होना।
बहे जो नयन से आंसू, समर्पित कर न तन अपना।

मिटा मैं मन उसी का बन, करो सुमरन सदा उसका।
जगत यह एक मेला है, बिछुड़ते कौन फिर किसका।
वही सुख शान्तिदाता है, पिला जल जिया प्यासा है।
यहाँ पर आये हरि मर्जी, सभी का वह विधाता है।

725.

हरि जप हरि जप मन जपता जा, कट जायेगा मन का मैला।
जब बसे हृदय हरि की मूरति, सब ओर दीखता वह छैला।
मर्जी उसकी से आया तू, मत चाह बना झुक हरि सम्मुख।
ले जायेगा ना कुछ है बस, मिट जाते है फिर सारे दुख।

छिपा बीज में वृक्ष यहाँ है, सबका भाग्य विधाता वह है।
सुख दुख के वह खेल खिलावे, जप ले शान्ति प्रदाता वह है।
ठौर उसे तज और न कोई, देख देख दुख अंखियां रोई।
जप ले देगा ज्ञान वही मन, निर्बल का सम्बल है बोई।

सबके अपने अपनें सुपने, आस करे क्या मन तू जग से।
बहता जा हरि की धारा में, शाश्वत वह जप अमृत बरसे।
सौंप स्वयं को हरि जपता जा, कठपुतली हरि मिटती पीड़ा।
ध्यान रहे डोरी पर हरपल, मिटता मैं हरषे यह जिवड़ा।

726.

उठती लहर मिटने को यहाँ, क्यो न समझे सागर ही यहाँ।
गम मिटे समर्पण हो जिसका, मर्जी सागर ले चले जहाँ।
सागर से उपजे सब लीला, लहरें समझे करती क्रीड़ा।
मिटकर ही लहर बने सागर, खो जाता मैं पावे पिवड़ा।

हरि नाम जपो हरि सागर ही, दिन रात जपो न उसे तजो।
दो दिन का रैन बसेरा यह, सुख पावे जिय हरि नाम भजो।
हरि हरि भज सुख से बीते पल, इन नयनों से गिरता है जल।
आता रेला ले जाता है, पर हरि तो तेरे संग हरपल।

मन जप हरि हरि उसकी दुनिया,दे आंसू चाहे वह छलिया।
उस बिन ना पार लगे नौका, बहता जग में दुख का दरिया।
जप ले मन अमृत बरसेगा, ना तृष्णाओं में भटकेगा।
मैं मिटा नाचता सागर है, जप हरि शाश्वत में जीवेगा।

727.

हे भगवान दया के सागर, पार लगा दो मेरी नौका।
नयनों से बरसात हो रही, सारा जीवन योंही चूका।
दीनबन्धु करूणा के सागर, मेरी भर दो रीती गागर।
तुम बिन मेरी कोई सुने न, बरसे अंखियां मेरी झर झर।

अज्ञानी पर बालक तेरा, खोजूँ कहाँ न जानूं डेरा।
अबल नाथ मैं बांह पकड़ लो, तड़फ रहा दिल होय सुबेरा।
करूँ अर्चना बहते आंसू, जीवन तेरा तुझे पुकारूँ।
दुखते दिल की दवा तुही है, सुमरन सदा रहे ना हारूँ।

तृष्णा का जंगल भटकूँ ना, अज्ञान तुम बिन कोई हरे ना।
दीप जला दो होवे प्रकाश, बरसे अमृत क्यों नहाऊँ ना।
खड़ा राह में करूँ प्रतीक्षा, लिये आस मिल जाये द्वारा।
बीता जीवन मैं तो हारा, नमन करो स्वीकार हमारा।

728.

इस बांसुरिया में स्वर हरि के, क्यों भूला मैं आंसू गेरे?
कर्ता भर्ता हर्ता हरि ही, छिप गया वीज में जल गेरे।
अपने हाथों कुछ नहीं यहाँ, हरि नचा रहा हम नाच रहे।
सागर में उठती लहर कहे, ना हम यह सागर सदा रहे।

उसको भूले अंखियां रोवे, हरि हरि गा मन मिटती पीड़ा।
सुमरन कर मन संग में छलिया, सब सागर ही करता क्रीड़ा।
विधि के हाथों मजबूर यहाँ, जप ले जिय ना घबरायेगा।
नित सूरज आये जायेगा, हरि सुमर नहीं दुख पायेगा।

मर्जी उसकी ले जाये कहीं, मैं छोड़ यहाँ सब जगह वही।
बरसे अमृत चख ले तू मन, उस बिन पीड़ा ना मिटे कही।
हरि हरि गा ज्ञान वही देगा, सब ताप हरे ना तड़फेगा।
जो हुआ समर्पित हरि आगे, बन्शी में हरि स्वर गूंजेगा।

729.

हरि हरि जप ले जाये किस्ती, उसकी दुनिया उसकी चलती।
कुछ पल खेला सुख पावे मन, जप हरि को यह अंखिया दुखती।
आये जग में किसने पूछा, जायेगा जब ना कुछ चलती।
जैसा भी ज्ञान दिया हरि ने, सारी दुनिया यो ही बहती।

कर्ता ना बन जप ले हरि मन, प्यासे है प्राण पिला दे जल।
खिल जायेगी बगिया तेरी, इन नयनों से गिरता है जल।
विधि के हाथों मजबूर यहाँ, सुख दुख का चलता खेल यहाँ।
हरि जपो बरसता अमृत भी, पी ले मन उसका जाम यहाँ।

मन नयन लड़ा हरि कठपुतली, डोरी उसकी से बंधे हुए।
हरि प्रीति बढ़ा जप ले सजना, संग में उसके ना विलग हुए।
दे ज्ञान वही तन करे वही, अन्तिम पल तक दे साथ वही।
बस नाम सहारा इस जग में, जप ले हरि को दुख हरे वही।

730.

जी रहे क्या खोजते हम, जान एक हजार है गम।
कठपुतली हरि की है हम, वह नचाता नाचते हम।
हरि भजो वह ही ठिकाना, मानो उस घर ही जाना।
स्वर उसके बन्शी बाजे, जप उसे मन ना भुलाना।

बन लहर गा गीत उसके, अन्तस वही छिपा सबके।
सुरति जो उससे लगावे, नूर हरि सब ओर छलके।
दुनिया यह आनी जानी, मिट रही सारी कहानी।
छूटते हैं कूल सारे, जप हरि बहता है पानी।

हरि जपो मन शान्ति दाता, ज्ञान का वह ही प्रदाता।
मन बढ़ा ले प्रीति हरि से, प्यास जिय की वह बुझाता।
जप ले हरि खेवट तेरा, मिटे भय होता सुबेरा।
सुपना सारी है दुनिया, जप मिटता दुख का घेरा।

731.

तुझ चरण की धूल हूँ मैं, दिल हुआ बैचेन क्यों है?
ज्ञान की बाती जला दो, जीत तू है हार तू है।
देख लो नजरें उठाकर, आंसू से पग धोयेगे।
थक पुकारे तुझे मोहन, ना पता कहाँ जायेंगे?

प्यार चाहूँ जगत स्वामी, प्यासे को देता पानी।
शरण अपनी राख लो हरि, बहता अंखियों से पानी।
दीनबन्धु दुख के हर्ता, सारे जग के तुम कर्ता।
अर्चना के फूल सूखे, हरि चरणा तेरे पड़ता।

हरि तुम्हारे हम खिलौने, प्यार दे हरि खेल ले तू।
आँख मेरी रो रही है, ना परीक्षा और ले तू।
बह सकूँ तेरी डगर मैं, खेल कुछ पल स्वप्न दुनिया।
छवि बसे नयन में तेरी, बीते फिर सुख से घड़ियां।

732.

ले चल मुझे ले चल मुझे, ना छोड़ तू मझधार में।
बनो हरि मेरे खिवैया, न ज्ञानी मैं अज्ञान में।
आस का दीपक जलाया, था अंधेरा नीर आया।
छिप गये क्यों छोड़ मुझको, दास तेरा शरण आया।

देख लो नजरें उठाकर, नयन से है नीर बहते।
प्राण प्यासे सृष्टि स्वामी, जल पिला तुझे कहते।
जगत में है रंग इतने, लेता मन कितने सुपने।
चैन ना आवे कृपा बिन, फिरती तृष्णा सबको डसने।

दीनबन्धु दुख के हर्ता, सृष्टि के तुम ही तो कर्ता।
लाज मेरी राखना तुम, चरणों में तेरे पड़ता।
नियति के हम तेा खिलौने, नाथ तेरा है सहारा।
ज्ञान जो दे तन करे वह, देखो बहती है धारा।

733.

अपना अपना खेल दिखाकर, खो जाना सबको जग में हैं।
हरि बिन चैन न मनुआ पावे, सत्य देख अन्तस में वह है।
सुमर उसे बरसे हैं नयना, दुख हर्ता वह एक सहारा।
बहता जाये लहर बना जो, मिटता मैं बहती हरि धारा।

हरि जप शान्ति सुधा वर्षाये, ताप हरे शीतलता आये।
मन जप हरि की कठपुतली हम, उसे भूल क्यों दुख को पाये।
पल पल परिवर्तित जग सारा, कूल पकड़ ना होता खारा।
हरि की दिल में ज्योति जला ले, जाये ले क्यों हिम्मत हारा।

आनी जानी सारी दुनिया, शान्ति मिले जप शाश्वत छलिया।
तन करता जो ज्ञान उपजता, जप ज्ञानी वह रोवे अंखियां।
कर्ता ना बन उसकी दुनिया, लाये ले जाये वह छलिया।
कठपुतली बन नाच यहाँ पर, ध्यान डोर रख संग में सैयां।

734.

किस्मत का कैसा खेला यह, मझधार बीच में तड़फ रहे।
कहाँ छिप गये तुम बन्शीधर, देखो नयना यह छलकर रहे।
याद तुम्हारी कभी मिटे न, बहते है नयनों से आंसू।
आ जा मोहन प्रीति न तोड़ो, कोई ना पोछे यह आंसू।

सकल जगत के रखबाले तुम, हरि कृपा बिना सब ही हारे।
दास तुम्हारा राख शरण में, बसो नयन में तुम्ही सहारे।
हरि के चरणों में झुक जा मन, सभी गिरे है उसके सम्मुख।
मानो ना मानो सोचो मन, मिट जाते सारे दिल के दुख।

जग का खेवनहार वही है, सब प्राणों की प्यास यही है।
प्रीति बढ़ा मन अंखियां रोवे, सुखदाता मन शान्ति यही है।
वह ही एक ठिकाना है मन, सबको ही उसके घर जाना।
शाश्वत है मन भूल उसे ना, सुपना सब जप दुख मिट जाना।

735.

हरि जो चाहे वह ही होता, जप ले उसको काहे सोता।
मन मैल मिटे हेावे प्रकाश, चरणों में उसके जो पड़ता।
प्यासे प्राणों को जल मिलता, जप ले हरि को आंसू बहता।
उस बिन ना शान्ति मिले मन को, जग में दुख का दरिया बहता।

हरि हरि गा हरि की ही लीला, नाचे हम सब उसकी क्रीड़ा।
हरि प्रीति बढ़े सब मोह मिटे, सब हर लेगा मन वह पीड़ा।
हरि जपो शान्ति पावेगा मन, दुनिया सारी है इक जंगल।
मन नाम सहारा जपो उसे, अंखियों से बहता रहता जल।

मन करो समर्पण हरि को जप, दुख मिटते सारे कर ले तप।
दो दिन का रैन बसेरा यह, ना फंस तृष्णा में हरि को जप।
हरि हरि गा देवे ज्ञान वही, ना भटकेगा ले चले वही।
वह नचा रहा हम नाच रहे, उसकी दुनिया सब जगह वही।

हरि हरि गा यहाँ मिटा मैं को, छूटे सुपने देख हरि को।
मन शीश झुका हरि चरणों मे, ना भूल कभी उस शाश्वत को।
जप ले हरि हरि मन मांग कृपा, उसकी मर्जी का खेल यहाँ।
नाचे सागर में लहर यहाँ, मर्जी उसकी ले चले जहाँ।

736.

दो पल की खुशियाँ मिले हमें, घूमें रूकते ना नीर कहीं।
हरि नयन बसो विनती मेरी, छूटे मैं फिर ले चलो कहीं।
लहरें उठ उठ गिरती रहती, दिल में रहना सब जगह तुही।
हरि अपनी कृपा सदा रखना, न ध्यान तुम्हारा मिटे कहीं।

सारा जग सुपना रोता क्यों, मैं कौन नियति का कर्ता तू।
सुखदाता शान्ति प्रदाता तू, सुमरन ना छूटे संग में तू।
जीवन तेरा कर दे सुन्दर, नयनों से बहता अविरल जल।
घबराता जिय बालक तेरा, पकड़ा मुझको अपना आंचल।

सूखे है फूल करूँ पूजा, महका इनको तू क्यों रूठा?
मैं जाऊँ कहाँ कुछ ना दीखे, कुछ पल की खुशियां जग झूठा।
हरि जपे सदा हरि ध्यान करे, गा गीतों को लय हो जाये।
इस दिल से कभी न जाना तुम, देखो नयना आंसू आये।

737.

कर मन भजन हरि उसकी ही दुनिया, प्यासा यह दिल है बरसती है अंखियां।
सागर में लहर बनी खेलती है, जप साथ सागर सदा साथ में है।
चैन ना उस बिन प्यासा यह दिल है, बरसता है पी ले अमृत जल है।
ना हाथ आये भागे है लहरें, तृष्णा में फंस काहे नीर गेरे।

कर ले भजन हरि विछुडे है मेला, चख ले हरि रस मिटे मन का मैला।
नयन में है आंसू बहे दर्द दरिया, बह प्यार लेकर छलता है छलिया।
सुपने नयन में लेकर है चलते, टूटे यह जब जब हम हाथ मलते।
शाश्वत वही मन बढ़ा प्रीति हरि से, प्रीति है प्यारी अमृत है बरसे।

मिटा मैं लहर गीत इसके गा ले, मर्जी इसी की जहाँ भी चले ले।
जपते रहो मन बसा हरि नयन में, कभी दूर हो न लगे संग डगर में।
तप कर ले मन स्वर उससे मिला दे, चलती है उसकी सिर को झुका दे।
हरि बिन ना कोई यहाँ पर तारे, कर ले समर्पण मिटे कष्ट सारे।

738.

दो पल की मिल जाये खुशियाँ, बहती रहती हरपल अंखियां।
हरि प्रीति बढ़ा मन वह शाश्वत, तपते दिल को मिलती छैंया।
हरि हरि गा प्यारा गीत वही, अन्तिम पल तक है मीत वही।
अनजानी जग की गलियों में, जप ले हरि देवे ज्ञान वही।

किससे शिकवा जप ले मनुआ, चाहत सब की अपनी अपनी।
ना उलझ जगत में जपता जा, दो पल यारी संध्या ढलनी।
हरि जप ले मन सुख दाता वह, सुख से वह पार करे नौका।
आनी जानी इस दुनिया में, सुमरन कर ले ना खो मौका।

जप ले हरि सांचा मीत वही, ना भटक यहाँ वह कहाँ नहीं?
अन्तस में देख लहर सागर, जप मिटे लहर सब जगह वही।
मन प्रीति बढ़ा ले नीर चढ़ा, पावन बहती यह गंगा है।
कर्ता न बनो हरि दास बनो, क्या लहर बहाता सागर है।

739.

मत मान बुरा क्या यहाँ गिला, सब लिये नियति अपनी अपनी।
सागर में कितनी लहर उठे, समझे न लहर सागर जननी।
अन्तस देखे सब सागर है, बाहर लहरों का जाल यहाँ।
जग में बस एक सहारा वह, जप ले शाश्वत वह सदा यहाँ।

हरि नयन लड़ा बाजे बन्शी, नाचो बन उसकी कठपुतली। ६
ार ध्यान डोर सुखदाता वह, तप कर ले डोर बहुत पतली।
हरि ओम जपो मन उसे भजो, बिगड़े बनते सब काम यहाँ।
मन जप ले हरि वह संग तेरे, मैं छोड़ नाचता वही यहाँ।

सबका ही भाग्य विधाता वह, हरि हरि जपता जा उसे जपो।
अपने है हाथ यहाँ पर क्या, बन लहर सदा मन उसे जपो।
करता हरपल नूतन सर्जन, मैं छोड़ दास हरि का जा बन।
दुख से ना रोयेगी अंखियां, सुमरो हरि जाता खेवट बन।

740.

द्वार तेरे बैठ कर हम, रो सके दे दे इजाजत।
दीखते ना छिप गये हो, क्या बनी मेरी किस्मत।
करते हरि सुमरन तेरा, नाव करना पार हारा।
बहता है आंसू खारा, तुम बिना ना है सहारा।

दीनबन्धु सुख के सागर, रीति मेरी भरो गागर।
दास तेरा मैं चरण का, अश्रु गिरें देखो झर झर।
सत्य तू क्यों भूल तुमको, तृष्णाओं में उलझता।
नयनों में बस जाओ तुम, हरि सब जगह क्यों तड़फता।

तेरी दुनिया तू जाने, हरि जपे जपते रहे हम।
लगे मुझको तू सदा संग, बहे मेरी सांस में रम।
ज्ञान की बाती जला दो, तम मिटा दो मुंह न मोड़ो।
अबल हूँ बालक तुम्हारा, प्यार दो न मुझको छोड़ो।.

741.

गा हरि हर बन बन्शी उसकी, उसके स्वर ना अपनी चलती।
नयन बसा जप ले मन उसको, शान्ति मिले ले जाये किस्ती।
हरि को भज ले जग में चल ले, उलझ रहा मन हरि को जी ले।
ताप हरे मिल जाये छाया, शाश्वत हरि से प्रीति बढ़ा ले।

हरि हरि भज मन ज्ञान मिलेगा, अंधियारा सब दूर हटेगा।
दुनिया उसकी खेले कुछ पल, जप ले हरि सब कष्ट मिटेगा।
हरि भज ले जाये वह नौका, नहीं सहारा कोई दूजा।
तपती गलियो में तू रोवे, चरण पकड़ हरि और न दूजा।

कूल छूटते जाते सारे, पकड़े आवे आंसू खारे।
बन जा मन तू दास हरी का, बनो लहर सुख से वह तारे।
जप हरि हरि संग चलता छलिया, रंग में रंग जा वह है रसिया।
प्राणो की भी प्यास यही है, उस बिन रोती रहती अंखियां।

742.

हरि से ध्यान लगा ले पगले, नीर यहाँ बन जाते मोती।
सुपना रैन बसेरा दुनिया, तृष्णा में फंस दुख क्यों चुनती।
तप कर ले हरि प्रीति बढ़ा ले, सारे अपने कष्ट मिटा ले।
करो समर्पण हरि के आगे, बन बन्शी उसके स्वर गा ले।

सारे जग का वह ही स्वामी, बहता है अंखियों से पानी।
जिसने उसका जाम पिया है, मस्त हुआ गाती जिंदगानी।
बहता जाये लहर बना वह, चढ़े सुरा ना मिटती मस्ती।
अन्तस सागर सुरति न छोड़े, देखे ले जाये वह किस्ती।

छोड़ यहाँ मैं ध्यान लगा हरि, कर्ता भर्ता हर्ता वह ही।
मैं की सदा जली है होली, गीत हरी गा सुख दे वह ही।
उस बिन रोती रहती अंखियां, ध्यान लगा शाश्वत है पिवड़ा।
सुख सागर वह शान्ति प्रदाता, जप मन सुख पावेगा जिवड़ा।

743.

कुछ तो कहो मैं क्या करूँ, खुश हो सको मैं करूँ?
मैं हूँ अबल तुम सबल हो, सिर को चरण में धरूँ।
इस अजनबी संसार में, तुझ कृपा को मांगते।
सुखद हो वे स्वप्न सारा, प्यार दे हरि चाहते।

पथ नहीं सूझे भटकता, छिप गये तुम भी कहीं।
नीर से पूजा करूँ मैं, सुख छिपा इसमें कहीं।
शाम ढलती जा रही है, जाये न जाने कहीं।
नाचूँ मैं धुन पर तेरी, दे प्यार ना छिप कहीं।

लाज तेरे हाथ में है, भाग्य के हो नियन्ता।
तुम बसे रहना हृदय में, प्राण प्यासे मचलता।
तेरी लीला तू ही जाने, भूले न संग तड़फते।
लहर मिट सागर बने, देख नयना बरसते।

744.

चाहा मिलूँ नहीं मिल पाया, देख नयन में आंसू आया।
अर्न्तयामी जग के पालक, मैं हूँ अबल मांगता छाया।
प्यासे प्राण पुकारे तुमको, सूखे फूल थाल है खाली।
प्यास मिटे जल बिन ना स्वामी, कृपा तुम्हारी चाहूँ माली।

निज मन्दिर का कोना दे दे, सुमर तुझे बीते सारे पल।
दुनिया पल पल रंग बदलती, बहती अंखियां रोवे यह दिल।
मेरे नयनों में बस जाओ, दास तुम्हारा ना ठुकराओ।
करूँ राह में नाथ प्रतीक्षा, डूबे नैया पार लगाओ।

हरि हरि जप मैं बहूँ लहर सा, संग सागर वह दूर नहीं है।
ज्ञान ज्योति जला दो प्रभु जी, मैं कुछ ना सब यहाँ तुही है।
भीगे नयन प्यार से तेरे, इतना ही बस मुझको कहना।
चाह प्रीति में लय हो जाऊँ, बस बल मुझको इतना देना।

745.

हरि की प्रति सदा सुखदाई, सत्य समझ मन हरि को जप ले।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, जप हरि यह पल सुख से जी ले। जाये
ले क्यों चिन्ता करता, हरि हर पल संग तेरे फिरता। बहते
नयन चढ़ा तू आंसू, सारे जग का वह ही कर्ता।

जप उस बिन ना चैन यहाँ है, मनुआ भटके ठौर कहाँ है?
उपजे ज्ञान करे वह ही तन, कटे मैल मन स्त्रोत वहाँ है।
स्वर उसके बन बन्शी उसकी, नाच यहाँ कठपुतली उसकी।
नैया तेरी लिये जा रहा, छोड़ भरम सब चलती उसकी।

जप हरि हरि दुख वही हरेगा, साथ वही हरपल मन देगा।
अन्तिम पल तक साथी वह ही, छोड़ न उसको किसे बरेगा?
जप हरि हरि उसकी ही दुनिया, आवे तेरी भर भर अंखियां।
जीवन में हरि नाम जुड़े जब, पावन हो जाती यह नदिया।

746.

जपो हरि को लहर बन कर, लिये जाता तुझे सागर।
करे हरपल नया सर्जन, लहर ना सब जगह सागर।
नचाये नाचना होगा, जपो हरि भय नही होगा।
बढ़ा ले प्रीति मन हरि से, मिलेगा प्यार सुख होगा।

बहे जा नाम हरि का ले, न पल भर तोड़ तू रिश्ता।
तुझे सब ओर से घेरे, जपो हरि शान्ति वह देता।
नचाता वह हमें छलिया, छलके पल में यह अंखियां।
जपो हरि ज्ञान का दाता, कृपा मिलती खिले बगिया।

यही शाश्वत जपो रे मन, जप हरि जाये कट बन्धन।
इशारे चल रहे उसके, चरण हरि के पड़ो रे मन।
मिटता मैं तू पा इसको, छिपा हिय देख ले इसको।
उसकी दुनिया वह जाने, जपो हरि शान्ति दे सबको।

747.

बोलो रसिया रोवे अंखियां, कैसा गीत सुनाऊँ?
जिसको सुनकर रीझो बालम, प्यार तुम्हारा पाऊँ।
छिप गये कहाँ लुट गया जहाँ, नींद मुझे न आती।
लाल हुई रो रो कर अंखियां, कैसे भेजूँ पाती।

तेरे बिन ना जिया लगत है, क्यों बनता निर्मोही।
दासी तेरी जनम जनम की, दे दे मुझको राही।
बहता पानी लिये कहानी, इस जग में मैं आई।
बना मदारी खेल देखता, नहीं रिझा मैं पाई।

आ जा आ जा अब तो छलिया, और नचा ना, हारी।
थक कर गिरी नजर है तुझ पर, मिले प्यार मैं बारी।
नयनों में मेरे बस जाओ, सांसों में तुम छाओ।
जहाँ ले चलो मन्जिल वह हो, नयना नही छिपाओ।

748.

कहने को मिलते यहाँ बहुत, करने को यहाँ कोई नहीं।
सबकी है दृष्टि अलग यहाँ, जप हरि बिन मिटती प्यास नहीं।
सबके है रंग बदल जाते, क्यों पकड़े हाथ नहीं आते।
हरि प्रीति बढ़ा वह साथ सदा, जप ले मन पत्थर तर जाते।

हरि हरि जप मन का मैल मिटे, नैया तेरी वह लिये चले।
उसकी मर्जी से आया तू, हरि कठपुतली बन खेल चले।
हरि हरि जप ले मन का चैना, तपते दिल को दे शीतलता।
बस नाम सहारा इस जग में, जपता जा दिल का दुख मिटता।

हरि जपो प्रतीक्षा क्या करनी, बन लहर बहो हरि का जा बन।
सागर ले जाता तुमको है, जप अंखियां बरसे सावन बन।
हरि हरि जपो नहीं कभी तजो, अन्तिम पल तक वह साथी है।
जब कूल छूट जाते सारे, देखे तू उसकी थाती है।

749.

स्वीकारो हरि की लीला को, छिपा हुआ है इसमें ही सुख।
दुख का दरिया जग में बहता, बिन हरि जपे नही मिटता दुख।
मर्जी उसकी यहाँ खेलते, जब चाहे ले जाये छलिया।
बस कितना दिन रात देख ले, ना समझे यह रोवे अंखियां।

हरि जप बन्जारा बन जी ले, तप कर मर्जी उसकी सह ले।
प्रीति बढ़ाता जा मन हरि से, ताप हरे मन शीतल कर ले।
नयना खोलो हरि को जप लो, बरसे अमृत उसको पी लो।
मृगतृष्णा में भटक भटक कर, दुख पावे क्यों हरि को जी लो।

लाया वह जाये ले नैया, सारे जग का वही खिवैया।
चले उसी की सदा चलेगी, लहर बनी सागर है सैंया।
शीश झुका जप हरपल उसको, दे विवेक भूलो ना उसको।
मिट जाते भय हरि जो जपता, अपनी दे पतवार उसी को।

750.

बरसे अंखियां बरसे बादल, ना प्यास मिटे बहता है जल।
मेले में हुआ अकेला मैं, बिन तेरे ना कटते यह पल।
हरि आन मिलो सांसों में तुम, अब शाम हुई ढलता यह दिन।
दिल बता लगाऊँ मैं कैसे, क्या प्रीति यहाँ सब जाता छिन।

आ जा आ जा मैं प्यार करूँ, बहती अंखियां मैं शीश धरूँ।
ना और ठिकाना कोई भी, अपना ले विनती यही करूँ।
जा रहे कहाँ बहता जीवन, जाने तुही मैं दास तेरा।
मेरे नयनों में हरि रहना,कुछ न तुम बिन संसार तेरा।

अंखियां रोये कर याद तुझे, छिप गये कहाँ पर हो कान्हा।
क्यों दर्द मेरा न जान सके, दे मुझे सुना बंशी कान्हा।
अंखियां मेरी बरसे रिमझिम, तू नचा रहा रहना पर संग।
तेरी यादों में खो जाऊँ, बहता जाऊँ सागर के ढंग।

751.

जो बीत गई वह बात गई, अब चेत मुसाफिर भोर भई।
हरि जप पागल भीगी अंखियां, दे शान्ति और न ठौर कोई।
क्या चाह रखे इस जग से मन, पाये सुख पाना हरि का बन।
पल पल परिवर्तन हरपल है, बरसे अंखियां जैसे सावन।

अनहद बजता रहता हरपल, सांसे गाती हरि गीत सदा।
मन देख उसे तज दे तृष्णा, सुखदाई हरि की प्रीति सदा।
दुख पाया जब भूला हरि को, अंखियां रोती तपती काया।
हरिदास बनो जपता जा मन, उसकी दुनिया मिलती छाया।

जप नाम सहारा दुख काटे, बन लहर बहो सागर नाचे।
संग सदा भूल ना जप हरि को, नयनों का जल हरि पग सीचें।
छूटे सब कूल बहे नदियां, जप ले हरि को बहती अंखियां।
अमृत है हरि का नाम जपो, जप मिटता दुख मिलता सैया।

752.

जप ले हरि का नाम सहारा, जब न दीखे कोई किनारा।
सत्य सदा वह सत्य रहेगा, मिटते दुख जप हरि की धारा।
हरि हरि जपो ज्ञान वह देगा, नैया तेरी लिये चलेगा।
अंधियारी रातों में भी वह,दे प्रकाश पथ सुगम बनेगा।

हरि हरि जपो मनाओ उसको, रोम रोम में भूल न उसको।
लीला उसकी खेल चल रहा, पकड़ उसे ले जाता तुझको।
प्यास मिटे पी ले गंगा जल, ताप मिटे शीतल हेा काया।
बरस रहे यह नयना रिमझिम, मिटते दुख जब हरि गुन गाया।

हरि की दुनिया छलता छलिया, छांव वही दे तपती गलियां।
आना जाना खेल चल रहा, अपना ले हरि रोती अंखियां।
उसकी हाला को पी अमृत, मिटता मैं तब रहता लाला।
जगत मुक्ति सब टूटे बन्धन, बसे नयन में जब नंदलाला।

753.

जप ले हरि ना पछतावे मन, सारा यह हरि का ही है बन।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, उसकी सांसे उसका जीवन।
तू कौन निकाले दोष यहाँ, कठपुतली उसकी नाच यहाँ।
लाये ले जाये हरि मर्जी, जप ले ढलती है शाम यहाँ।

दे वह विवेक जप ले हरि को, हरि नाम सहारा जप हरि को।
बहती अंखियां छलता छलिया, उस बिन ना ठौर कही मन को।
जप ले जप ले सुख का सागर, जायेगी भर रीति गागर।
दे अन्तिम पल तक साथ यही, सब की बन जाती अलग डगर।

हरि की लीला मन क्या कहना, सुपना दुनिया हरि ना तजना।
बन लहर बहो हरि सदा जपो, दे शान्ति वही बहते नयना।
किस किसका लेखा राखे तू, मैं छोड़ चरण हरि पड़ जा तू।
मन शीश झुका हरि प्रीति बढ़ा, बरसे अमृत वह पीले तू।

परिवर्तन जग की रीति यहाँ, नाचे सागर ना लहर यहाँ।
सुमरन कर हरपल सागर का, बन जाती सागर लहर यहाँ।
मैं मिटा नाचता हरि ही है, बहता आंखो से पानी है।
पी ली जिसने उसकी मदिरा, संग देखे नाचे सागर है।

754.

मेरे चाहे यदि कुछ होता, तो धरती पर दुख ना होता।
अपनी चाहत क्या सब हरि की, जप ले हरि को तू क्यों सोता?
जप ले हरि सुख का सागर है, दुख हरता भरता गागर है।
तपते पथ में दे वह छाया, प्यासे प्राणों का वह जल है।

जप ले हरि को मन मान यहाँ, सुमरन कर मिटते कष्ट यहाँ।
उसकी दुनिया वह ही स्वामी, जप ले हरि बहते नीर यहाँ।
आशा के ताने बाने बुन, चलते रहते भूले हरि को।
टूटे बस अपना नहीं चला, तब याद करें तज इस मैं को।

चलता सुख दुख का खेल यहाँ, जप लागे संग में सदा रहा।
सुपना दुनिया रोवे अंखियां, जप ले अमृत भी बरस रहा।
बसते जिसके नयनों में हरि, दुख की होली है सदा जली।
ना सुरति कभी छोड़ो उसकी, हरि हाथ डोर तू कठपुतली।

755.

सुपना दुनिया छलके अंखियां, जग की यह अनजानी गलियां।
हरि नाम सहारा जग में है, जप ले हरि मिल जाती छैया।
हरि जपो चैन मिलता मन को, तप कर ले जपता जा हरि को।
प्यासे है प्राण पिला मन जल, वह सदा साथ तज ना हरि को।

क्या अपना और पराया है, ढलती फिरती सब छाया है।
शाश्वत हरि से मन प्रीति बढ़ा, मिटते दुख सबमें छाया है।
हरि जपो लिये जाता नौका, जप दर्शन कर ना खो मौका।
सुख सागर वह भरता गागर, क्यों बना भिखारी पा मौका।

हरि हरि का सुन्दर गीत यही, बढ़कर इससे संगीत नहीं।
जल पिला महक जाये बगिया, बाजे अनहद चहुँ ओर यही।
हरि जपो ज्ञान दे वह करना, छोड़ो तृष्णा बीते सुपना।
वह लिये जा रहा नौका को, दुख हर्ता वह तज ना जपना।

756.

नयन यह प्यासे छिपा दर्द दिल में, नजरें उठाकर हमें देख लेना।
दास तुम्हारे नयन नीर गिरते, अपना हमें प्रभु सदा प्यार देना।
तेरा ही बल ले चलता जगत में, बहती है अंखियां पर हूँ अबल मैं।
तेरी कृपा हो तिरते है पत्थर, मुझे राख लो हरि अपनी शरण में।
लीला तुम्हारी नाचे जगत है, अंखियों से बरसे रिमझिम नयन है।
मिलता रहे प्यार हरपल तुम्हारा, पथ हो सुगम यह रस्ता कठिन है।
चरणों केा तेरे चाहे जमाना, बना कौन देखे तू भी दिवाना।
अपना बना मैं शरणा तुम्हारी, दास तेरा ना रूके नीर आना।
सुपने नयन में लेकर है चलते, जब जब यह टूटें हम हाथ मलते।
मिटती न तृष्णा जगत में भटकते, तेरी कृपा हो नयनों में बसते।
जीवन तुम्हारा स्वामी तू ही, देना मुझे ज्ञान जाता ले तू ही।
कितनी कठिन हो जग की यह राहें, न विश्वास टूटे सदा संग तूही।

757.

खोजे सुख पर पावे दुख, क्या चूक हुई है अपनी?
ना पकड़ भागती लहरें, सागर भूले यह जननी।
मन भजन करो ले जावे, नैया को पार लगावे।
कर्ता भर्ता हर्ता वह, मैं छोड़ो जिय घबरावे।

हरि हरि जप छलके अंखियां, प्यारा कर ले मन बतियां।
क्षण भंगुर सुपने सारे, शाश्वत सुखदायक छलिया।
दे ज्ञान वही जप हरि को, जग की अनजानी गलियां।
उठते गिरते सुपने हैं, छंटता तम जप ले छलिया।

सागर का खेल यहाँ सब, वह ही तो अपना है रब।
मन प्रीति बढ़ा हो जा लय, क्या जन्म मृत्यु उसका सब।
हरि हरि जपो न यहाँ डरो, मन छोड़ सुरति ना उसकी।
वह नचा रहा नाच रहे, कठपुतली बन जा उसकी।

758.

क्या गीत बता दो गाऊँ मैं, कैसे कह तुझे रिझाऊँ मैं?
छिप गये छोड़ मुझको छलिया, आंखों में आंसू लाऊँ मैं।
बहती अंखियां सुन ले रसिया, तू भाग्य विधाता मेरा है।
ना खता करी जो कहा करी, फिर भी क्यों मुझे रूलाता है।

बालक तेरा दे प्यार मुझे, अंखियां बरसे ना छोड़ मुझे।
खो जाऊँ ना इस मेले में, पाऊँ तुझको दे ज्ञान मुझे।
जीवन यह बहती धारा है, बहता आंसू भी खारा है।
पर कृपा तुम्हारी हो जाये, खिलती मुरझाई कलियां है।

हे दीनबन्धु करूणा सागर, मुझको चरणों में हरि रख ले।
कितने जन्मों से भटक रहा, मेरी भटकन को हरि हर ले।
हरि प्रीति बढ़े हिय कमल खिले, मुरझाई बगिया खिल जाती।
चाहूँ नयनों में बस जाओ, स्वीकारो हरि मेरी पाती।

759.

कब सुबह हुई कब शाम हुई, हरि रस भीगो सब करे वही।
हरि नाच नचावे हम नाचे, जानो बस अपना यहाँ नही।
हरि कृपा मिले करता पूजा, ना और यहाँ रस्ता दूजा।
दे ज्ञान वही करता वह तन, जप ले हरि मन हरि का हेा जा।

हरि हरि जप मन मिलती छाया, दुखियों का साथी सदा वही।
कर ले विश्वास जपो हरि को, निर्बल को बल दे सदा वही।
मन खो जा तू हरि को जी ले, बरसे अमृत उसको पी ले।
क्षण भंगुर सुख दुख की छाया, नहीं छोड़ हरि उसको जप ले।

कुछ पल बीते ना यहाँ रहे, जप ले शाश्वत हरि यहाँ रहे।
मन झांक उसी की आंखों में, मिटने का गम ना कभी रहे।
दो दिन का रैन बसेरा यह, तज तृष्णा को सुख पीता जा।
हरि जपता ही जा मन जप ले, गीतों को उसके गाता जा।

760.

हरि हरि जप चैन मिले दिल को, शाश्वत जी ना परिवर्तन को।
सुख पायेगा मनुआ तेरा, अज्ञात छिपा सुमरो उसको।
क्या पाना है क्या खोना है, हरि नाम जपो बह जाना है।
सुपना दुनिया कुछ पल डेरा, तृष्णा में फंस ना रोना है।

हरि प्रीति बिना ना शान्ति मिले, सुख दुख सब पल पल परिवर्तन।
कितना भटको यह तो जंगल, अंखियां बरसे जैसे सावन।
हरि हरि गा भाग्य नियन्ता है, बस तेरे क्या जग चलता है।
हरि सुमर बहे जो भी आंसू, हरि चरण चढ़ा यह पूजा है।

हरि हरि जप देवे ज्ञान वही, कर्ता ना बन सुख छिपा यहीं।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, उसकी दुनिया ले चले कहीं।
सागर खेले बन लहर बहो, सुख चाहे तो हरि प्रीति चहो।
जप ले साथी सब छूट रहे, शाश्वत हरि उसमें सदा बहो।

761.

नौका डोले इस सागर में, ना और ठिकाना पाये है।
गिरती उठती इन लहरों में, जप ले हरि वही बचाये है।
हरि हरि जप परिवर्तन जग में, नयना बरसे जैसे सावन।
हरिनाम सहारा जप ले मन, ना भूल उसी का यह जीवन।

हरि हरि गा सुन्दर गीत यही, मिटता सब शाश्वत सदा यही।
ना प्रीति बढ़ा क्षण भंगुर से, अंखियां रोवे जप करे वही।
जीवन उसका मर्जी उसकी, केवल हम तो हैं कठपुतली।
जो ज्ञान जगे तन करे वही, धर ध्यान नचावे हरि सुतली।

वह मिले ना मिले हरि मर्जी, हरि चरण गिरो उसकी चलती।
हरि जपो नाम प्यारा इतना, नयनों से सुख नदिया बहती।
हरि जपो समर्पित हो जा मन, सब कुछ उसका अपना क्या धन?
जा रहा वही ले नौका को, स्वीकार करो उसका जा बन।

762.

जीव हर चाहे सहारा, बहती आंसू की धारा।
राम बिन ना ठांव कोई, मिट रहा संसार सारा।
राम जप सबका नियन्ता, क्यों न हरि का दास बनता।
जाता ले तेरी नौका, छोड़ मैं हरि खेल चलता।

जप ले प्यारा है छलिया, सुख से बीतेगी घड़ियां।
स्वप्न सा संसार सारा, न उलझ रोती यह अंखियां।
गीत गा हरि छोड़ मैं को, जाता ले तेरी नैया।
जाने ना खेले कुछ पल, जपो हरि तेरा खिवैया।

बीत जायेगी उमरिया, जप ले प्यारा सांवरिया।
मांग ले उसकी कृपा को, जगत की अनजान गलियां।
दीनबन्धु करूणा सागर, दे तपते पथ में छैंया।
जपो हरि देखो स्वयं को, जायें मिल तुमको सैंया।

763.

आपना प्यार मुझे तू दे दे, कित जाऊँ तुम बिन हरि बोलो।
द्वार तुम्हारे आया मैं हरि, कृपा करो अब आंखे खोलो।
स्वामी मेरे जीवन के तुम, अंखियां भीगी है अंसुवन से।
सुन ले मोहन तुझे पुकारूँ, मेरी सुन ले रूठ न हम से।

संध्या ढलती रैना आती, कैसे भेजूँ तुमको पाती।
अन्तर्यामी घट की जानो, मुझे याद तेरी तड़फाती।
बाट निहारूँ पथ में बैठा, आयेगा कब प्यारा मोहन।
आंसू से चरणों को धोकर, पूछूंगा क्यों छिपे थे मोहन।

चाह प्यार पाऊँ मैं तड़फू, जग की इन गलियों में भटकू।
आंख उठाकर देखो अब तो, कृपा करो अब ना मैं अटकूं।
सुखसागर तुम दुख के हर्ता, शरण तुम्हारी पैंया पड़ता।
बसो नयन में जहाँ ले चलो, दीप जले अंधियारा छंटता।

764.

जपो मन नाम हरि सुखदाई, जप हो जा शरणाई।
मर्जी उसकी वही ले चले, नयना नीर बहाई।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, उलझ उलझ क्यों जाई।
मुरझाया जीवन खिल जाता, जिसने पींग बढ़ाई।

बरसे अंखिया जप ले हरि को, हरपल साथ निभाई।
छोड़ो तृष्णा जप ले हरि मन, केवट पार लगाई।
उस बिन कोई और ठिका ना, अंखियां भर भर आई।
प्यारा रसिया जप ले छलिया, दिल का सुमन खिलाई।

सुखदाता क्यों दुख को पाता, दुख के पार लगाई।
जप ले मन अंधियारा छंटता, बनो दास हरि पाई।
जग के सुख दुख सब परिवर्तित, शाश्वत सुख हरि पाई।
जप ले हरि मन पी ले अमृत, उसकी सब प्रभुताई।

765.

सब यादें तज भूली बिसरी, हरि जप ले तू हरि को पावे।
शाश्वत हरि का मन ध्यान करो, जो ध्यान करे वह ही पावे।
जप ले हरि बदले रंग यहाँ, सुख दुख का चलता खेल यहाँ।
हरि सुमर पिला प्राणों को जल, उस बिन ना मिटती प्यास यहाँ।

हरि जपता जा ना जग में फंस, दो दिन का रैन बसेरा यह।
सुख दुख आये सब सह कर तप, हरि प्रीति बढ़ा अमृत है यह।
हरि हरि जपो नही उसे तजो, बादल दुख के छंट जायेंगे।
हरि हाथ डोर जप ले उसको, मर्जी हरि आये जायेंगे।

बरसे नयना जपते बहना, सागर से तोड़ नही रिश्ता।
बन लहर नाच ना भूल उसे, अन्तिम पल तक वह संग रहता।
हरि हरि जप ले उसका ही बल, उपजे जो ज्ञान करे वह तन।
बरसे नयनों से जो आंसू, हरि चरण चढ़ा हरि का जा बन।

766.

जीवन पथ पर चलते जाये, तेरा प्यार सदा हम पाये।
छलके नयना याद तुझे कर, मेरे सुपनों में तू आये।
जीवन एक पहेली जाना, सुपना दुनिया यह भी माना।
पर तेरा सुपना है प्यारा, सुमरन करे उसी ने जाना।

हरि हरि गाये तुझे मनाये, कहाँ छोड़ तुमको हम जायें।
परिवर्तित रंग बदले दुनिया, किससे गीत बफा का गाये।
आया प्रभु मैं तेरी शरणा, मेरे नयनों में हरि बसना।
लाज राखना इस मेले में, दो जो ज्ञान वही है करना।

इस जीवन के दाता तुम ही, देखो बहती मेरी अंखियां।
पार लगा दो मेरी नैया, डगमग करती बनो खिवैया।
बहती जीवन की धारा में, कहाँ जा रहे किसने जाना।
प्रीति तेरी में रंग जाये, गूंजे हरि का यहाँ तराना।

767.

तू ही तू है मैं नहीं यहाँ, क्यो दर्द लिये जी रहा यहाँ।
बह रहा नयन से पानी है, जाने ना तू छिप गया कहाँ?
मैं दास नाथ तुम स्वामी हो, तुम बिन रोती रहती अंखियां।
अनजानी जग की गलियों में, मैं भटक रहा पड़ता पैंया।

दो ज्ञान हमें हम जपें तुझे, अज्ञानी तेरे बालक हैं।
तुझसे ही हम केा ज्ञान मिले, तेरे बल से चल पाते है।
हे दीनबन्धु करूणा सागर, देखो अंखिया झरती झर झर।
अपना हरि प्यार सदा देना, जाये न पता ले धार किधर।

मेरे नयनों में बस जाओ, प्यासे हैं जल को बरसाओ।
हरि कृपा मिले तब चैन मिले, मेरी सांसों में छा जाओ।
कर्ता भर्ता हर्ता सब तू, तेरी हम तो कठपुतली है।
विनती यह हरपल सुरति रहे, लागे हरि हाथों डोरी है।

768.

बगिया तेरी यह महक रही, अपनी हरि रखना कृपा सदा।
तुम कहाँ छिपे रोये अंखियां, ना पल भर होना कभी जुदा।
हरि प्यार मिले हिय सुमन खिले, तपते पथ में मिलती छाया।
नयना रोवें फंस तृष्णा में, ना शान्ति मिले विलखे काया।

दो दिन का रैन बसेरा यह, जप ले हरि मोती बरसे यह।
मन चढ़ा चरण में हरि का बन, बन जाती सुन्दर रैना यह।
न अपना कोई पराया है, ढलती फिरती सब छाया है।
हरि जपे स्वयं में जो डूबे, पावे हरि उसकी माया है।

जप शान्ति मिलेगी मन तुझको, हरि नाम सहारा छोड़ न मन।
उस बिन न दिल को चैन मिले, तड़फे मछली जैसे जल बिन।
हरि हरि जप लो उसकी दुनिया, लाये ले जाये वह छलिया।
मन करो समर्पण हरि आगे, देखो घूमें यह खुद पहिया।

769.

खोजते तुमको रहेंगे, मिल रही भटकन सहेंगे।
तुम न मुझसे रूठ जाना, आस यह ले कर चलेंगे।
दीनबन्धु हर लो दुख को, बहती हैं देखो अंखियां।
डगमगाते कदम मेरे, थामो पड़ता मैं पैंया।

जल रही नयनों में बाती, बुझ न जाये विनय करती।
तुम पसीजोगे कभी तो, दर्श प्यासी चरण पड़ती।
तू मुझे अपना बना ले, प्यार दे दे जगत पालक।
चैन आये सुनो मेरी, बना मुझे अपना सेवक।

बनो खेवट पार कर दो, डगमगाती नाव मेरी।
कुछ मिले पल ना छिपो अब, देखलो अब कर न देरी।
बनते मिटते हैं सुपने, छोड़ कर जा रहे अपने।
हरि बसो नयन में मेरे, दुई मिटे दीखे अपने।

770.

क्या गलत कहें क्या सही कहे, हरि चलती अपनी चले नहीं।
नयनों से बहते आंसू हैं, दानी जग का है सदा वही।
मन मांग कृपा रोवे अंखियां, सुख दुख दे खेले वह छलिया।
परिवर्तन जग की रीति यहाँ, हरि जप ले बरसे रस रसिया।

मन जप ले एक सहारा वह, छोड़े सब बने किनारा वह।
सुपना दुनिया छलके अंखियां, जप पी ले मन अमृत है वह।
जप ले हरि हरि उसकी लीला, चाहे जब तक करता क्रीड़ा।
कठपुतली हम तो उसकी है, हरि ध्यान करो मिटती पीड़ा।

नयनों में हरि तुम बस जाओ, यह विनय करूँ ना छोड़ मुझे।
बन लहर बहूँ यह सुरति रखूँ, सागर चला रहा सदा मुझे।
स्वीकारो हरि मेरी पूजा, नयनों से बहते मोती है।
इनकी कीमत जग में ना कुछ, पर पास हमारे यह ही हैं।

771.

कह कह अपनी सभी कहानी, खो जाते इस जग के अन्दर।
चैन मिले ना रोवे अंखियां, जप ले हरि बैठा है अन्दर।
हरि हरि जप सुखदाता वह ही, देगा पथ तम हरता वह ही।
सारे जग का वह रखबाला, चोंच दई चुग्गा दे वह ही।

वही सुने, न कोई सुनेगा, जप ले मन का मैल हरेगा।
ज्ञानी वह, दे ज्ञान करे तन, जप हरि नौका पार करेगा।
बहती धारा पी अमृत को, उलझ न जग में पीले सुख को।
जप ले हरि हरि दाता वह ही, जप हरि दिल के खिला सुमन को।

जप हरि हरि मन सुरति बढ़ाले, हरि से अपनी पींग बढ़ा ले।
स्वप्निल दुनिया कुछ पल खेले, जप हरि को मन शाश्वत पाले।
परिवर्तित सब जग का मेला, सुख दुख धूप छांव का खेला।
हरि चरणों में शीश झुका मन, मैल हरे ले जावे छैला।

772.

ढलती संध्या आ जा सजना, कुछ देर प्यार की बातें कर।
मैं तड़फ रही बहते आंसू, फिर जाने न जायेंगे किधर।
निर्मोही छिप छिप सता रहा, ले मजा हमें तू रूला रहा।
रातों को नींद नहीं आती, कर याद तुझे दिल धड़क रहा।

मैं सुनूं बांसुरी दीवानी, जन्मों जन्मों की दासी मैं।
ढल जायेगी क्या यह घड़ियां, ना निष्ठुर बन रोती हूँ मैं।
सुपने में सुपना यहाँ खेल, कुछ पल हो जाये यहाँ मेल।
मेरे जीवन की तू आशा, आता रेला ले जाये ठेल।

प्यारा तू प्यारी है यादे, मुंह मोड़ न बरसे हैं आंखे।
चल चलकर गिरी तुझे खोजा, मैं खोज सकूं दे वह आखें।
मेरे जीवन के स्वामी तुम, मेरी सांसों में छा जाओ।
नयनों में मेरे बस जाओ, ना नजर चुरा मुझसे पाओ।

773.

दिन बीत रहे तुम ना आये, कैसे इस दिल को समझाये।
नयनों से बरस रहे आंसू, सांसे यह क्यों आये जाये।
हरि मिले कृपा तेरी चाहें, तेरे बल से ही चल पाये।
तुम दीनबन्धु मैं नाथ अबल, तम हरो चरण तेरे पाये।

ढल जायेगी यह भी संध्या, अन्तर्यामी सबकी जानो।
हरि तड़फ रहे अब तो देखो, देखे पथ नयना कुछ मानो।
बीते सावन कोयल गाये, इन नयनों में आंसू आये।
हरि प्यार तुम्हारा मिल जाये, मेरी सांसों में तू छाये।

याद करे शीतल तेरी मन, बहता नयनों से गंगा जल।
मेरे नयनों में बस जाओ, सब बीत गये बाकी कुछ पल।
हरि दास तुम्हारा जन्मों का, नजरों से दूर नहीं करना।
जग की इन तपती गलियों में, हरि साथ न मेरा तुम तजना।

774.

दिल लगा स्वयं से हरि को जप, तुझमें हरि जपले छिपा यहाँ।
ना पकड़ करो लहरों सा बहो, आवें लहरें ना हाथ यहाँ।
हरि हरि जप घट बसता वह ही, उसकी दुनिया जाने वह ही।
मैं छोड़ समर्पण कर ले मन, नैया ले जावेगा वह ही।

दो दिन का रैन बसेरा यह, जप ले हरि यह पावन गंगा।
छूटे तृष्णा सुख पावे मन, बनता केवट मन हो चंगा।
उसकी दुनिया हम कौन यहाँ, कर याद उसे रोवे अंखियां।
जप जप कर यहाँ मिटा मैं दे, देखे नाचे चहुँ दिश छलिया।

हरि हरि जप नयन लड़ा ले मन, हरि चरण चढ़ा बहता पानी।
जो बरस रहा अमृत पी ले, मिट जाना सब दुनिया फानी।
कुछ पल मेला सुख से जी ले, बनो दास हरि के झुक जाना।
सब ज्ञान ध्यान उसका ही है, मन मांग कृपा बस यह जाना।

775.

जीने मरने का खेल यहाँ, सुमरन कर हरि में चैन छिपा।
स्वप्निल यह दुनिया सारी है, मिलता सुख जिसने हरी जपा।
दीखे ना पथ रोवे अंखियां, बनते मिटते सुपने हरपल।
बन खेवट ले जाये हरि जप, अपना बेगाना होता कल।

हरि हाथ डोर इस जीवन की, जो बहे नीर हरि अर्पण कर।
मन सांस सांस में उसे जपो, आये जाना है उसके घर।
हरि नाच नचावे नाच यहाँ, तप कर ले जप ले उसे यहाँ।
मन सुरति रखो हरपल उसकी, सुख पावे जिया यह हरि जहाँ।

क्या फिकर करे हरि लिये चले, मर्जी हरि की ही सदा चले।
जप सुख पा ले ना पागल बन, कुछ पल बाकी है शाम ढले।
सुख दुख का चलता खेल यहाँ, मिलता उस बिन ना चैन यहाँ।
एकाकी पथ मेला कुछ पल, जप हरि में हो जा लीन यहाँ।

776.

जप ले हरि हरि जपता ही जा, न कोई किनारा बहता जा।
हरि की मर्जी जी तप कर ले, बरसे अमृत वह पीता जा।
देखे क्या जग हँस कर जी ले, बहते आंसू उनको पीले।
सब घूम रहे निज सुपनों में, बन कर असंग संग में जी ले।

अपना न कोई पराया है, जप ले हरि उसकी माया है।
मन शीश झुका हरि के आगे, उसकी मर्जी से आया है।
मैं यहाँ तजो हरि नाम जपो, विछुड़ा जाता सब मेला है।
शाश्वत हरि मन उसको जप लो, सागर ही लहर चलाता है।

वह सदा साथ सुमरन कर ले, बन लहर गीत गा ले उसके।
ले चले जहाँ वह ही मंजिल, टूटे न तार जियरा भटके।
सुख दुख के खेल करे छलिया, जप चैन मिले रोवे अंखियां।
बस नाम सहारा इस जग में, जप पार करेगा वह नैया।

777.

लागे ना मन हरि जप लो मन, जप लो उसको वह सुखनन्दन।
जग भूल भुलैया में पड़कर, अंखियां रोवे विलखे यह मन।
हरि हरि जप यह हरि की लीला, ना जाने क्या क्या हो खेला।
हरि की मर्जी से आये हम, जायेगा ले वह ही छैला।

प्यासे प्राणों को जल मिलता, जो भी हरि को जपता रहता।
पी ले मन अमृत बरस रहा, तृष्णा में फंस काहे घुटता।
स्वप्निल दुनिया रोवे अंखियां, छोड़ो मैं मिल जाता सैंया।
बन जा मन दास उसी का तू, ले जावेगा तेरी नैया।

जब मिटे बीज तब खिले सुमन, छोड़ो मैं तू जा हरि का बन।
हरि की सांसे हरि को दे दे, ना यहाँ कभी तू कर्ता बन।
दे ज्ञान वही तन करे वही, ले जाये वह उसकी मर्जी।
पतवार सौंप हरि हाथों में, तप स्वीकारो उसकी मर्जी।

हरिहरि जप जाते हैं यह पल, कुछ पल दीखें ना होंगे कल।
अभिमान यहाँ पर क्या करना, नयनों से बरस रहा है जल।
हरि हरि जप मांग कृपा उसकी, जाने ना कुछ दुनिया उसकी।
बहते आंसू हरि चरण चढ़ा, सुख पावे छवि बसती उसकी।

778.

सुपना दुनिया देखे सुपना, आती है यह भर भर अंखियां।
जप ले हरि को मन चैन मिले, कट जायेगी दुख की रतिया।
चलती लीला रोये नयना, पर अमृत भी है बरस रहा।
जपले हरि वह सुख का सागर, मिटता मैं तो हरि सदा रहा।

पतवार सौंप हरि हाथों में, बहता जा बह उसकी नदिया।
चलती हरि मर्जी मांग कृपा, नयना रोये पड़ जा पैंया।
हरि की कठपुतली नाच रहे, हरि गीत उठे मन सुमन खिले।
हरि कृपा मिले संगीत उठे, कर्मो के बन्धन टूट चले।

गा ले मन सुन्दर गीत यही, कितना भटको बस ठौर यहीं।
इस रंग बदलती दुनिया में, पकड़ो दामन सब जगह वही।
लाये ले जाये वह छलिया, तपते मारग में दे छैया।
हरि मांग कृपा उस बिन कुछ ना, इस जीवन का वह ही सैंया।

हरि जपो नहीं मन कर्ता बन, उसकी लीला बस चाकर बन।
ले जायेगा तेरी नैया, डर ना जायेगा केवट बन।
सब कूल छूटते जाते हैं, हरि नाम सहारा जप ले मन।
सुख दुख का खेला यह जंगल, शाश्वत में जी ले जीवन धन।

779.

अंखियां रोवे ना चैन मिले, कितने ही पहलू जीवन के।
सुख पावे जिय जप यह जंगल, वह ही स्वामी इस जीवन के।
जपता जा हरि खेवट वह ही, नैया को पार करे वह ही।
हरिनाम सहारा ले जग में, प्यासे को जल देता वह ही।

हरि की लीला हरि ही जाने, सपना सब मन ना पहचाने।
कुछ बीत गई कुछ बीत रही, पी अमृत यह पल खो जाने।
देगा प्रकाश अंधियारे में, वह ताप हरे इन गलियो में।
मिल जाती छाया जप ले हरि, वह दूर न जप ले अन्तस में।

बीज लिये है वृक्ष यहाँ, बिन कृपा न खिलता कभी यहाँ।
हरि गुन गा देवेगा वह सुख, क्या देखे सुपने हरी जहाँ।
मैं मिटा दास हरि का हो जा, दे ज्ञान वही करता यह तन।
तप मर्जी उसकी जी ले मन, कर्ता ना बन हरि चाकर बन।

780.

मन चैन मिले जप ले हरि को, स्वप्निल दुनिया तज तृष्णा को।
ले अपनी नियति यहाँ घूमें, जप ले हरि यहाँ मिटा मैं को। हरि
नाम सहारा प्यारा है, बहता ना आंसू खारा है। पतवार
सौंप हरि हाथों में, ले जाती उसकी धारा है।

हरि लीला हम सब नाच रहे, पागल हम भूले भटक रहे।
लाये ले जाये क्या बस में, ना समझे नयना छलक रहे।
हरि जपता जा दे ज्ञान वही, उसकी दुनिया सब जग वही।
दी चोंच वही चुग्गा देगा, हरि कृपा बिना ना ठौर कहीं।

हरि हरि जप ले बहते नयना, जग प्रीति न कर दुखदाई है।
बदले मौसम हरपल जग का, हरि जप ले वह सुखदाई है।
कर्ता भर्ता हर्ता है हरि, मेहमा हुए कुछ पल के हम।
बहता जा हरि की धारा में, तज मैं को बह ले ना हो गम।

सुख के बादल भी बरसेंगे, आंसू नयनों से छलकेगे।
मिट जायेगी मन की पीड़ा, जपते हरि में जब लय होगे।
जपता जा मन यह तप कर मन, ना इससे सुन्दर हरि का बन।
शाश्वत जप मिटते कष्ट यहाँ, जप देख स्वयं को जीवन धन।

781.

पत्थर दे देता साथ यहाँ, बह जाता है आंसू खारा।
अपनी पीड़ा उससे कह दे, बस मेरे क्या मैं तो हारा।
जप ले मन हरि की कठपुतली, नाचे हम पर उसका आंगन।
मन सदा डोर पर ध्यान रहे, हरि प्रीति बढ़ा उसका जीवन।

हरि हरि जप ले उसकी दुनिया, छिप नचा रहा हमको छलिया।
प्राणों की प्यास पिला दे जल, बीतेगी सुख से यह घड़ियाँ।
हरि हरि जप कर विश्वास यहाँ, कुछ पल खेले फिर नहीं यहाँ।
बरसे नयनों से मोती जो, हरि चरण चढ़ा यह हरि जहाँ।

जप ले हरि हरि मिटती पीड़ा, ना और ठिकाना कोई है।
हरि प्रेम यहाँ जो मगन हुआ, जाता वह हरि शरणाई है।
बन लहर बहें सागर जाने, सांसे हरि गीत सुनाती है।
उसकी दुनिया वह ही जाने, जाने हरि मर्जी चलती है।

782.

दास तुम्हारा हाथ थाम लो, स्वामी मेरे पड़ता पैंया।
जानू ना मैं जग की गलियां, बहती रहती मेरी अंखियां।
नयन बरसते तुझे तरसते, तुम बिन जीवन भी क्या जीना।
चरण मिले सिर रख दूं उस पर, ना ठुकरा मेरा सुपना।

उठने की सामर्थ नहीं है, पुष्प नहीं है थाली खाली।
फिर भी तेरी बाट निहारूँ, रूठ न जाना मेरे माली।
ऋतुएँ आती जाती रहती, अंखियां हरपल बहती रहती।
कैसा तुमने खेल रचाया, बता मुझे जो भेजूँ पाती।

नयनों में मेरे बस जाओ, श्वासों में तुम ही छा जाओ।
निरखूँ हरपल रूप तुम्हारा, तम गहरा प्रभु दीप जलाओ।
श्वासों में हो नाम तुम्हारा, ले चल मुझे कहीं मैं हारा।
सुरति ने टूटे बस हरि तुमसे, मुझको तेरा नाम सहारा।

783.

हरि बसो नयन में मेरे तुम, चलता जितना तेरा ही दम।
अनजान जगत की यह गलियां, जाने न आये कहाँ से हम।
हरि प्रीति बढ़े हिय सुमन खिले, सारे जग के तुम हेा दानी।
अपनी हरि कृपा सदा रखना, बहता है नयनों से पानी।

अंधियारे में कुछ ना दीखे, जपते हरि हरि ले चल नौका।
मेरे खेवट यह शीश झुका, तुम बिन सब कुछ लगता फीका।
स्वप्निल दुनिया चाहें खुशियां, सुपने बनते मिटते रहते।
तुमको भूले फंस तृष्णा में, तज अमृत विष पीते रहते।

तुमसे भी मिलना होगा प्रभु, यह विनय नहीं तुम ठुकराना।
ना खता मेरी ज्ञान तेरा, बहते आंसू ले नजराना।
हरि सुरति रहे तुझमें हरपल, यह चाह मिले तेरी छैया।
तू पाप हरे दे शीतलता, सुखसागर तुम पकड़ो बैंया।

784.

चुप हो जा तू चुप हो जा मन, हरि मर्जी जी तप कर ले मन।
मन सुरति रखो हरपल उसकी, जग उसका ही तू झुक जा मन।
उसकी नदिया वह ही केवट, अंखियां बहती रहती टप टप।
हरि मांग कृपा ना भूल उसे, ले चले वही मन कर ले तप।

वह खेल खिलावे खेल खेल, सुख दुख देवे ना तोड़ मेल।
ले जावेगा वह ही नौका, उसका जीवन उसी का खेल।
दो दिन का रैन बसेरा यह, मैं छोड़ो हरि मर्जी जी ले।
नाचे सागर बन लहर बहो, जपता जा हरि अमृत पी ले।

कर्ता बन जिया दुखावे क्यों, हरि कृपा मांग काहे सोता?
हरि चरण पकड़ वह लिये चले, जो ज्ञान जगे वह ही होता।
जप हरि हरि एक सहारा वह, जप बहे नहीं आंसू खारा।
तू कौन यहाँ उसकी लीला, बहता जा उसका संसारा।

हरि प्रीति बढ़ा मैं मिटा यहाँ, लय हो जानी सारी दुनिया।
हरि प्रीति बिना ना सुख मिलता, जप चैन मिले प्यारा छलिया।
लाये ले जाये बस कितना, समझे ना मन रोवे अंखियां।
सुपना दुनिया जप सुपने में, खिल जाती है दिल की कलियां।

जप ले हरि को शाश्वत वह ही, जैसा राखे मर्जी उसकी।
कठपुतली बनकर नाच रहे, बन दास कृपा मिलती उसकी।
सागर में नाच रही लहरें, वह दूर नहीं छोड़ो सुपने।
हरि हरि जप अन्तस देख जरा, मन शान्ति मिले देखा जिसने।

कुछ पल मेला सब छिटक रहे, जो आज मिले कल नही रहे।
नश्वर जग से क्या प्रीति करे, जप ले हरि वह ही सदा रहे।
हरि नयन बसा बरसे मोती, हरि हरि जप बन जा बन्जारा।
इससे बढ़कर कुछ सुख नाहीं, बहता जा बह उसकी धारा।

785.

पकड़ो हाथ शरण तुम्हारी, बहता इन आंखो से पानी।
ज्ञानी जग मैं तो अज्ञानी, बना समय की एक कहानी।
जीवन रैन बसेरा दुनिया, पल थोड़े चाहूँ मैं खुशियां।
अपना प्यार मुझे तू दे दे, खिल जायेगी दिल की कलियां।

जाये कहाँ ले हवा का झोका, कुछ ना जानूं समय नचाता।
किसे कहूँ मैं अपनी पीड़ा, तू ही मेरा भाग्य नियन्ता।
इस जीवन के स्वामी हो तुम, देखो झर झर झरती अंखियां।
बजे बांसुरी नाचूं छम छम, रास रचा ले अब तेा रसिया।

मेरे सुपनों में तू आया, खुली आंख जी भर कर रोया।
नहीं बिछुड़ते आंख न खुलती, देख भाग्य को जिय घबराया।
बहते नीर करें यह पूजा, तुम सा और न कोई दूजा।
पार लगा दे मेरी नैया, तुझे पुकारूँ अब तो आ जा।

786.

लिख लिख भेजूँ तुमको पाती, बाट निहारूँ अंखियां रोती।
कभी मिलोगे आशाएँ ले, सुपनों का मैं महल बनाती।
सुपना दुनिया लेती सुपना, छलिया मुझको प्यारा लगता।
मिट जाऊँ ले नाम तुम्हारा, निर्मोही क्या तुझसे रिश्ता?

आंसू से भीगी है अंखियां, छिप छिप देखे करे न बतियां।
कम ना होगा प्यार हमारा, मैं दासी तेरी तू छलिया।
जीवन में बस नाम तुम्हारा, दिल से मेरे कभी न जाना।
अन्तिम पल तक याद तुझे कर, आँसू का दे दूँ नजराना।

कण कण में तुम झांको छलिया, कैसा रूप तुम्हारा रसिया।
जिसने पी ली तेरी मदिरा, मस्त हुआ खोजे फिर छलिया।
सुरति न टूटे पल भर तुमसे, चाह यही हरि पूरी कीजे।
सब वैभव तुझ सम्मुख फीके, अपने चरणों में रख लीजे।

787.

हरि जपो ज्ञान वह ही देगा, मन का सब मैल हरेगा वह।
बन लहर बहो इस सागर में, कर्ता भर्ता हर्ता है वह।
उलझा उलझा कितना जीवन, हरि जपो जायेगी मिल मंजिल।
जाना न कहीं दिल में बसता, जप देख उसे दुनिया स्वप्निल।

मेहमा यहाँ कुछ पल के हैं, आये है फिर खो जायेगे।
हरि जपो चैन जायेगा मिल, तृष्णा में फंस कर रोयेंगे।
मैं तजो यहाँ जप ले हरि मन, आना जाना उसकी मर्जी।
अभिमान यहाँ पर क्या करना, जैसी रचना रच दी मर्जी।

स्वामी वह बन जा दास हरी, जग की अनजानी हैं गलियां।
लाया ले जाये वहीं तुझे, जपता जा हरि बहती अंखियां।
हरि हरि जप बस तेरे क्या मन, जो ज्ञान जगे करता वह तन।
सुख दुख की आंख मिचौनी में, जप ले हरि जाये केवट बन।

788.

तुम न नजरों को उठाना, जायेंगे क्षण यह गुजर।
जा रही है जिन्दगी यह, क्यों हो गया तू बेखबर?
मिट न पाता नाम तेरा, घूमता हरपल जबां पर।
राख भी उड़ कर कहेगी, कुछ कमी थी ना बफा पर।

प्रीति की पींगे बढ़ाकर, ना चला संग खूब रोया।
मेरे सुपनो में आया, छिप गया दीखे न छाया।
ना करो स्वीकार आंसू, भूल ना तुमको सकेंगे।
खोजते सुख को इसी में, याद ले तेरी बहेगे।

सांस में मेरी रमा तू, क्यों हुआ मुझसे खफा है?
आँख से जो बहें आँसू, कह रहे दिल की कथा हैं।
प्यार होगा कम न सुन ले, क्यों न मेरी जान ले ले।
गीत में तुमको पुकारूँ, ढले संध्या अब न गम ले।

789.

हरि जपे मनाये हम हरि को, हरि रूठ नहीं मुझसे जाना।
तेरा ही नाम सहारा है, गिरते आंसू ले नजराना।
हरि अपनी कृपा सदा रखना, तू जीवन का संगीत यहाँ।
नयनों में नीर हृदय में तुम, मालूम नहीं जा रहे कहाँ?

वह देखे ना देखे मर्जी, कह सकें कौन हम जो उसको।
सृष्टि का स्वामी वह ही है, झुक चैन मिले जप मन उसको।
बन लहर गीत गा ले उसके, संग तेरे अन्तस में पाले।
आंसू से भीगी अंखियां है, वह साथ जान यह सुख पाले।

बन लहर यहाँ नाचे सागर, जप हरि सागर हरि ओम जपो।
ले जाये जहाँ उसकी मर्जी, मर्जी न लहर की उसे जपो।
मन नमन करो हरि के आगे, हम अबल नियन्ता वह ही है।
सागर से ध्यान नहीं टूटे, तो लहर यहाँ सागर ही है।

790.

जप लहर यहाँ तू सागर की, सुमरन कर हरपल उसे भजो।
जपते अपना निज रूप तजो, रस में भीगा हरि ओम भजो।
नाचे सागर हम लहर यहाँ, बस कितना जाने सभी जहाँ।
इस धूप छांव के खेले में, जप ले हरि मिलती शान्ति वहाँ।

सब तरफ उसी की माया है, सुख दुख का खेल रचाया है।
मन पड़ जा हरि के चरणो में, वह ताप हरे दे छाया है।
बन ना कर्ता वह ही कर्ता, ले जायेगा तेरी नौका।
सब बीजों में है वृक्ष छिपा, हरि कृपा मिले मिलता मौका।

कब जाये कौन विछुड़ जग में, मन नहीं किसी को तू दे दुख।
सबमें हरि का ही रूप छिपा, बन लहर छोड़ हरि पर है सुख।
प्यारा इतना है नाम हरी, पत्थर भी इससे तर जाते।
नयनों से बरसे जो आंसू, बन फूल हृदय को सुख देते।

791.

चलने को हमें कहाँ जाना, जायेगे जहाँ सभी ओर वही।
सरिता सागर में खो जाये, सागर नाचे सब जगह वही।
जप ले सागर यह प्यारा है, लहरों को नाच नचाता है।
पीड़ा दे दी बरसे आंसू, जप देता यही सहारा है।

जप भग्य नियन्ता यह अपना, ना अपनी चलती स्वामी है।
पड़ जा मन इसके चरणों में, पावे सुख किस्ती बहती है।
कर ले पूजा जो नीर गिरें, कर्ता भर्ता हर्ता वह है।
तपती धरती को जल मिलता, हरि कृपा मिले सब होता है।

हरि हरि जपो मन जाये कहाँ, उस बिन ना खिलता कमल यहाँ।
उसकी दुनिया सेवक बन जी, पोछे ना आंसू और यहाँ।
बन लहर साथ सागर जी ले, तप कर मर्जी उसकी सह ले।
ना कोई और किनारा है, जपते जपते संग लय हो ले।

792.

किसको कह दूँ अपनी पीड़ा, सारा जग लगता यह दुखिया।
हरि सुमरन बिन शान्ति मिले ना, आती है यह भर भर अंखियां।
जीवन रैन बसेरा दुनिया, तृष्णाओं ने फिर भी घेरा।
सुपने बनते मिटते रहते, प्रीति बढ़ा हरि शाश्वत डेरा।

जप ले हरि मन जीवन दाता, तेरा ही वह भाग्य विधाता।
ज्ञान ध्यान जो कुछ भी देवे, सुख दुख के वह खेल खिलाता।
हरि हरि जप मन हरि सेवक बन, कर्ता तू ना हरि कर्ता है।
जैसी रच दी उसने रचना, इस जग में वैसा आया है।

बहते नीर चढ़ा हरि पग में, स्वामी वह देखेगा पथ में।
अपने अपने सुपन लिये सब, घूम रहे टूटे पल पल में।
जप ले हरि दाता है वह ही, चोंच दई चुग्गा वह देई।
हरि बिन कृपा सुमन ना खिलता, लाख जतन कर कुछ ना होई।

हरि हरि जप उसकी है क्रीड़ा, जप ले सुख पावेगा जिवड़ा।
उपजे सुख दे ज्ञान करे तन, मिटा यहाँ मैं मिटती पीड़ा।
जप ले हरि मन सुरति न तोड़ो, बहती अंखिया नाता जोड़ो।
सुपना दुनिया सुपने में जप, शान्ति मिले शाश्वत को पकड़ो।

अन्तिम पल तक यही सहारा, कौन नहीं जो इसे पुकारा।
जपता जा पीले अमृत यह, दे हारे को यही सहारा।
छोड़ो मैं काहे का तड़फे, जप ले हरि यह अंखियां बरसे।
ले जायेगी हरि की धारा, हरि हरि जप इसमें सुख बरसे।

793.

जप मन सोच मिटेगी सारी, कर्ता बन क्यों हुआ भिखारी।
जप ले हरि उसकी ही लीला, झुका शीश हो शरण मुरारी।
जनम जनम के पाप कटे सब, जप ले हरि यह पावन गंगा।
सुमरन कर हरि ढलती संध्या, जो भी न्हाये होवे चंगा।

लाया वह ले जावे वह ही, नाच नचावे कर्ता वह ही।
बस कितना जप ले मन हरि को, लिये जा रहा स्वामी वह ही।
दुनिया रैन बसेरा जाना, कुछ पल जीना यह भी माना।
सुख से बीते जीवन घड़ियाँ, जप ले हरि सुख मिलता जाना।

जप हरि अन्तस ज्ञान जगावे, परिवर्तित जग नहीं सतावे।
शाश्वत हरि से नाता जोड़ो, पकड़ो दामन क्यों घबरावे?
ढलती फिरती धूप छांव में, जप हरि ढाढस सदा बंधावे।
कठपुतली हम नाच नचावे, ध्यान डोर पर कर सुख पावे।

794.

तेरी प्रीति बढ़े हरि वर दो, बहे नीर तुम्ही तो समझो।
जनम जनम का दास तुम्हारा, किस स्वर में गाऊँ तुम रीझो।
ज्ञानी तुम अज्ञानी मैं हूँ, बहे नीर कहते निर्बल मैं।
लाज राखना इस मेले में, शरण तुम्हारी आया हरि मैं।

मन हरि जप हरि भाग्य नियन्ता, बजती वीणा क्यों ना सुनता।
नहीं पराया अपना जग में, जप ले हरि वह सबका कर्ता।
जग की अनजानी गलियों में, सदा चाहता तेरी छैया।
जीवन दाता जीवन तेरा, देखो मेरी बहती अंखियां।

जप हरि तप कर हरि का जा बन, बरसे नयना जैसे सावन।
फूल खिलेगे इस जीवन में, मिट जाता है सारा क्रन्दन।
नयन बसा मन हरि की मूरति, सुख पावे जिय वह सुखनन्दन।
पथ में जाता वह केवट बन, शाश्वत को जप लय हो जा मन।

795.

चाह न तुमको दुख पहुँचाता, जी लेता ले थोड़ी खुशियां।
पर न मेरे हाथ में कुछ भी, क्यों रूठा ना देखे अंखियां।
बाट निहारे बरसे नयना, कब आयेगा हमसे मिलने।
कूल छूटते जाते सारे, फिर भी देखे मनुआ सुपने।

सारा जीवन एक कहानी, बहता इन नयनो से पानी।
हरि जप चैन मिलेगा दिल को, जप सुख पावे स्वप्न कहानी।
जप जप मन मिल जाये छलिया, और डगर ना रोवे अंखियां।
कौन यहाँ तू खेल करे सब, उपजे पीड़ा जप ले सैंया।

जाये कहाँ ले हवा झोका, कुछ ना जाने बह हरि नौका।
करो समर्पण सुमरन कर मन, पार करेगा वह ही नौका।
सुमरन कर मन जिय लय होवे, चाहत सारी तब खो जावे।
नाचे जग में कठपुतली बन, चरणों में हरि के सुख पावे।

796.

जप ले हरि यहाँ मिटा मैं को, सुख पाये जिय जप ले हरि को।
पतवार सौंप हरि हाथों में, जा रहा वही ले हम सबको।
मेहमा यहाँ कुछ पल के हम, अंखियां बरसे रिमझिम रिमझिम।
शाश्वत हरि जप मन प्रीति बढ़ा, जपते जिसको वह पाते हम।

सुपने बन बन मिट रहे यहाँ, बरसे अंखियां जैसे सावन।
क्या प्रीति करे जग से पागल, जप हरि को सुख पाये जीवन।
जैसा राखे सेवक बन जा, जपता जा हरि जीवन उसका।
दे ज्ञान वही पड़ो चरण हरि, लाये ले जाये वह नौका।

जाती भागी न सुने कोई, सागर में लहरें खेल रही।
छूटें सब साथ पकड़ ना कर, देखे अन्तस जप सदा वही।
जप ले हरि सबको नचा रहा, कुछ पल मेला न कोई रहा।
जप सुख पावेगा यह जियरा, जप शाश्वत अमृत बरस रहा।

797.

हरि विनय करो ले चल नौका, घबराता जियरा यह थर थर।
तूफानों के झंझावत में, अनजानी डगर जाये किधर।
सबका ही भाग्य विधाता वह, मन जप ले हरि सुखदाता वह।
बन लहर बहो सागर लीला, जप अन्तस में संग रहता वह।

सुपने में सुपना नित बुनते, पीड़ा ले मैं की हम रोते।
दो दिन का रैन बसेरा यह, शाश्वत को भूले ना जपते।
उसको पुकार वह स्वामी है, तपती धरती दे पानी है।
हरि बिन ना कोई और सुने, नयनों से बहता पानी है।

जप ले हरि देता चैन सदा, जप अंधियारे में दीप जला।
पतवार सौप उसके हाथों, मिट जाती है फिर सभी गिला।
जीवनदाता हम कठपुतली, वह नचा रहा है नाचे हम।
बस कितना कुछ पल का मेला, जप ले जीवन नाचे छम छम।

दे ज्ञान वही सब जगह वही, जलती होली मैं कहीं नही।
जपता जा हरि का सेवक बन, स्वीकार करो ले चले कहीं।
जप ले मन यह बहती अंखियां, तप कर ले प्यारा है छलिया।
सब कूल छूटते जाते हैं, पकड़े अन्तिम पल तक बैंया।

798

ले ले सहारा जप हरि, मिट जाये दिल की पीड़ है।
किसको सुनाये दास्तां, नयनों से बहते नीर है।
गुजरे कितने दौर से, रूकता नहीं चलता सफर।
बन के बिगड़ी फिर बनी, जो हुआ ना कुछ भी थिर।

तपता पथ राहें कठिन, मन छोड़ मैं जा हरि का बन।
मर्जी हरि का खेल है, तू नाचता कठपुतली बन।
जप ले हरि का प्यार पा, अपना है क्या बहे ही जा।
उपजे हिय में ज्ञान जो, हरि ज्ञान वह जपता ही जा।

सुपने अपने सब लिये, करना है क्या किससे गिला।
जप ले हरि खिलता कमल, प्यासा है दिल अमृत पिला।
जप ले हरि शाश्वत वही, नहीं जानते जाये कहीं।
मन चैन दिल का जप हरि, जायेगा ले नौका वही।

799.

शान्ति मिले मन भज ले हरि को, ले जाये वह तेरी नौका।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, बरसे अमृत खो ना मौका।
उठती लपटें भय खा भागे, जप लेा हरि ना बनो अभागे।
सुमरन करो न हरि को मन तज, नचा रहा हरि के सब धागे।

हरि जप हरि जप ज्ञान वही दे, बहता जा ले नाम उसी का।
मर्जी उसकी जग में आया, चलता ना है जोर किसी का।
ताप हरे शीतल है धारा, जप ले नाम हरी का प्यारा।
जनम जनम के संकट कटते, अंधियारे में चमके तारा।

बन कठपुतली नाच यहाँ ले, ध्यान रखो डोरी पर पगले।
क्या क्या खेल खिलाये छलिया, जाने ना जप मदिरा पी ले।
कटे सफर हरि मदिरा को पी, मगन होय दुख मिटते सारे।
घर उसका अपना ना कुछ भी, शरणागत को वह ही तारे।

800.

हरि की लीला हरि ही जाने, मन हेा जा हरि की शरणाई।
उलझ नहीं जग यह हरजाई, काहे जग से प्रीति बढ़ाई।
चोंच दई चुग्गा वह देगा, बिना कृपा वह सब हर लेगा।
बन जा मन तू दास उसी का, नैया तेरी पार करेगा।

नाम है प्यारा जपो हरि को, एक सहारा छोड़ न हरि को।
अन्तिम पल तक साथ निभाये, ले जाये फिर अपने घर को।
दो दिन रैन बसेरा दुनिया, जाता तन यह भी ना अपना।
प्रीति बढ़ा हरि अंखियां बरसे, जप ले बीते सुख से सुपना।

जनम जनम के पाप मिटे सब, हरि हरि जप मन पावन गंगा।
सुमरन कर मन ढलती संध्या, जो भी न्हाये मन हो चंगा।
जिसके नयनों में हरि बसते, जग के वैभव फीके पड़ते।
हरि का दास बना वह डोले, कहे न कुछ बस नयना झड़ते।

801.

ओम जप मन ओम जप मन, बाजती सब ओर यह धुन।
ले सहारा और किसका, रंग बदलते हैं सभी दिन।
धूप छाया खेल दुनिया, चैन दिल का हरि सुमर मन।
आंख दुख से रोयेगी न, प्रीति हरि से तू बढ़ा मन।

ओम जप वह ही सहारा, और ना कोई किनारा।
छूटते है कूल सारे, जप हरि शाश्वत यह धारा।
तप करो स्वीकारो मर्जी, क्या पकड़ना छोड़ना है।
जाता ले तेरी नौका, जप उसे बस मानना है।

बस यहाँ क्या देख ले मन, ओम जप वह ही सहारा।
जाये ले उसकी धारा, बन लहर सागर है सारा।
बह रही मन देख अंखियां, जप हरि मिलती है खुशियां।
शीश चरणों में झुका ले, मैं मिटा उसी की दुनिया।

802.

दो पल की मिल जाये खुशियां, चाहत यह ले रोती अंखियां।
हरि भजन बिना ना चैन मिले, मौसम बदले पड़ हरि पैयां।
अनजान है पथ जाये किधर, क्षण भंगुर जग के भोग यहाँ।
जो आज यहाँ अपने लगते, बेगाने वह बन गये यहाँ।

हरि प्रीति बढ़ा शाश्वत वह ही, उलझे जग में अंखियां रोई।
जप ले हरि अमृत बरस रहा, सब पीड़ मिटे काहे सोई।
जप ले हरि देवे ज्ञान वही, कर्ता जग का मन जान वही।
ले जायेगा तेरी नौका, जप ले सांचा है साथ वही।

जप ले हरि एक सहारा वह, अंधियारे में दीपक है वह।
मैं छोड़ चरण हरि के पड़ जा, बन लहर देख ले सागर वह।
सागर की लहरे नाचे हम, अपना क्या बल सब हरि का दम।
अन्तस में ज्योति जला हरि की, सुख पाये मनुआ मिटते गम।

803.

तुम बिन तड़फे मेरे नयना, छिपो नहीं तुम बिन मैं कुछ ना।
निशदिन बरसत नयन हमारे, तुझे कहूँ अब तेा सुन लो ना।
हरि हरि जपे मनाये तुमको, कैसे रीझो ज्ञान न हमको।
पूजा के दो आंसू केवल, चाह प्यार में रंग ले हमको।

अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढे फिर भी मनुआ मेरा।
मिटूं विरह में प्रीति न कम हो, वर दे दो मैं दास तुम्हारा।
दीनबन्धु करूणा के सागर, फिरता ले मैं रीती गागर।
कृपा मिले तो ज्ञान मिले हरि, देखो अंखियां झरती झर झर।

अंखियां रोये तुझे पुकारे, प्यार मिले हरि सदा तुम्हारा।
चाह यही स्वामी मेरा तू, बरसे अंखियां मैं तेा हारा।
ज्ञान मुझे दो बहूँ लहर बन, नाचे सागर मैं कुछ भी ना।
गोद तुम्हारी खेल रहा मैं, बसो नयन मुझसे रूठो ना।

804.

चुप हो जा मन चुप हो जा, हरि चरणों में तू खो जा।
लहरें बहती सागर संग, तज चिन्ता हरि में बह जा।
जप ले हरि साथ सदा है, देखो अन्तस ना जपता।
बीजों में वृक्ष छिपा है, मर्जी हरि की जब खिलता।

जप ले जप उसकी लीला, मिट जायेगी सब पीड़ा।
स्वीकारो हरि की मर्जी, तप हरि की देखो क्रीड़ा।
ले चले जहाँ मन्जिल वह, नयनों में हरि की छवि हो।
छूटे मैं सब हरि कर्ता, सुख दुख खेला ना भय हो।

विनय करो हरि प्यार मिले, बिन उसके सदा अभागा।
बदले यह रंग जमाना, सोया अब तक ना जागा।
जो ध्यान करे वह पाये, हरि इन सुपनों में आये।
यह रैन बसेरा दुनिया, जप सुख के बादल छाये।

805.

दौड़े हम है सुख की खातिर, अंखियों से नीर गिरें झर झर।
हरि कृपा बिना ना चैन मिले, सुख सागर पीड़ा लेगा हर।
हरि हरि जप ले दे ज्ञान वही, सांसों में बहता कहाँ नहीं?
सुमरन कर ले रोवे अंखियां, चलती उसकी मैं यहाँ नहीं।

बह धारा उसकी हरि को जप, सुमरन कर उसका यह ही तप।
कुछ ना जाने सब हरि मर्जी, चलती उसकी मन हरि को जप।
कांटों में फूल खिलाये वह, प्यासे की प्यास मिटाये वह।
अनजानी जग की गलियों में, वह ताप हरे छाया दे वह।

जप ले हरि मन जपता ही जा, सागर नाचे सब बल उसका।
बन लहर यहाँ मिट जाती है, जप ले हरि चैन यही दिल का।
जप हरि हरि बह ले सागर में, मन गर्व न कर जप ले पथ में।
सुख पावे जिय कर्ता ना बन, तप नीर चढ़ा हरि चरणन में।

806.

दो पल की जो दे रहा खुशी, तेरा ही सब मेरा ना कुछ।
हरि दास तेरा चरणों में रख, मिटते संताप न मांगू कुछ।
जीवन तेरा स्वामी तू ही, जन्मो जन्मो से भटक रहा।
अपना ले मुझको दूर न रख, नयनों से यह जल बरस रहा।

जीवन की इस पगडण्डी पर, हरि थाम हाथ मेरा लेना।
अज्ञानी मैं बालक तेरा, अंधियारा दीप जला देना।
इस जीवन की है आस यही, नयना बरसे तुम मिलो कहीं।
चरणों में शीश धरूँ तेरे, तुम रूठ न जाना कभी कहीं।

ले नाम तेरा गिरे मोती, बहता जाऊँ दिल में रहना।
इससे बढ़कर कुछ सुख नाहीं, मेरे नयनों में तुम बसना।
पागल मैं तो अंखियां रोई, प्यारा लगता जाने तू ही।
लय हो जाऊँ गीतों को गा, ना भूल मुझे कर्ता तू ही।

807.

निशदिन बरसत नयन हमारे, तुम बिन बिगड़े कारज सारे।
बन्शी की धुन मुझे सुना दो, ना गुन चाहूँ फिर भी तारे।
बालक तेरा अज्ञानी मैं, तुम बिन बोलो कहूँ किसे मैं?
अंखियों से आंसू गिरते हैं, लाज राखना चरण पड़ू मैं।

ना खो जाऊँ इस मेले में, अपना प्यार सदा हरि देना।
सुरति रहे हरि हरपल तुझमें, मेरे नयनों में तुम बसना।
मेरे स्वामी बरसे अंखियां, चलता यहाँ काल का पहिया।
पागल मनुआ पर ना समझे, ताप हरे देता तू छैया।

अंधियारे में जिय जब तड़फे, आता याद न कुछ भी दीखे।
दे प्रकाश की किरन हमें हरि, मांगे कृपा वही बस दीखे।
अन्तिम पल तक बने सहारा, जप ले हरि जीवन आधारा।
सुख से बीते जीवन सुपना, जप बहता जा हरि की धारा।

808.

सुनने बाला और न कोई, हरि न सुने तो सुने न कोई।
स्वर जिससे मिल जाये कुछ पल, ना इतरा परिवर्तन होई।
हरि हरि जपो नाम है सांचा, जप हरि यह जियरा है प्यासा।
अन्तिम पल तक साथ निभावे, जग से क्या रखता है आसा।

पकड़े जो हरि के दामन को, बहता जाये तज सब चिन्ता।
रैन बसेरा सुपना दुनिया, तपता दिल मिलती शीतलता।
जप ले हरि प्यारा है छलिया, बरस रही हरपल यह अंखियां।
सुख मिलता जप ले मन हरि को, सुफल होय जीवन पड़ पैया।

पी हरि मदिरा मगन होय तन, बरसे नयना जैसे सावन।
जीवन का आनन्द यही है, आस मिलन की आये साजन।
आनी जानी इस दुनिया में, बन बन सुपने मिटते रहते।
शाश्वत हरि मन प्रीति बढ़ा ले, सुखसागर ना दिल फिर जलते।

809.

गलत कहूँ क्या कौन यहाँ मैं, लीला हरि की नाचे जग में।
बहते नयनों से आंसू है, पड़ जा मन हरि के चरणन में।
आ गये अब जायेंगे कहाँ, जाने कुछ ना रोते नगमें।
सुख पाओ मन करो हरि भजन, देगा वह ज्ञान जपो पथ में।

हरि हरि जप कठपुतली उसकी, धर ध्यान डोर पर हरि चलती।
उपजे जो ज्ञान करे वह तन, जप ले हरि यह अंखिया बहती।
हरि हरि जप ले मन पकड़ उसे, ले जाता है वह ही नौका।
थोड़े पल की यह जिन्दगानी, बरसे अमृत खो ना मौका।

तपती राहें मन समझ यहाँ, हरि हरि जप यही सहारा है।
मैं छोड़ यहाँ हरि का बन जा, ले जाती हरि की धारा है।
जो छिपा बीज में वही खिले, अपना वह भाग्य लिये चलता।
क्या उसका बस हरि मांग कृपा, जो प्रकृति बढ़ाये तो बढ़ता।

कर्ता ना बन सेवक जा बन, सुख पाये जिय फिर खिले सुमन।
हरि हाथ डोर फिर क्या चिन्ता, सोचेगा वह ना घबरा मन।
बन टूट रहे हैं सुपन यहाँ, जपता जा गाले हरि नगमें।
जो ध्यान करे पावे वह ही, बरसे अमृत जी शाश्वत में।

810.

सुख दुख का सारा खेल यही, ना देख सुपन हरि में बह ले।
बन बन कर मिटते हैं सुपने, तज तृष्णा हरि मदिरा पी ले।
तू लहर बनी क्यों ना समझे, संग सागर सुरति लिये बह ले।
सुख पाये मन सागर जब संग, हरि हरि गा शाश्वत में जी ले।

जप ले हरि प्यारा है छैला, मन नाम जपो मिटता मैला।
ले जायेगा किस्ती वह ही, आया सब यह हरि का खेला।
सुपने के यह पल सुख से जी, स्वप्निल यह सारी दुनिया है।
जप ले मन और नहीं कुछ धन, बरसे अमृत वह रसिया है।

अपना है कौन पराया कह, अपने सुख को सब दौड़ रहे।
नयनो से आंसू बरस रहे, पल भर मिलना न कोई रहे।
कितने ही जतन करे कोई, तज चिन्ता को हरि हरि जप ले।
नैया को पार करे वह ही, हरि कृपा बिना ना चैन मिले।

811.

जप ले हरि यह बहती धारा, ले नाम सहारा क्यों हारा।
जाने ना कुछ उसकी लीला, बहता जा ले हरि आधारा।
जप ले हरि चैन मिले दिल को, शिकवा ना कर हरि के जग को।
कठपुतली उसकी नाच रहे, बहते नयना जप ले उसको।

हरि कृपा मिले मिलती खुशियां, जप हरि हरि कर स्वीकार उसे।
जपता जा तुझको लिये चले, बस तेरे कुछ ना समझ उसे।
मन मान मिले अपमान मिले, तज ना हरि को यह शाम ढले।
कर्ता ना बन कर्ता वह ही, बनो दास हरि के चैन मिले।

क्यों अलग हुई रीती न कभी, जप ले हरि भरती गागर है।
जप ले अन्तस में सदा वही, लहरों का स्वामी सागर है।
झुक जा सबका वह ही स्वामी, मिटता मैं नाचे छलिया है।
तन मन नाचे हरि हाथ डोर, जाने जब हरषे जियरा है।

812.

मन तू चंचल दुनिया जंगल, किसको अपनी पीड़ सुनाएँ?
बालम रूठा बरसे नयना, कैसे तुझको हम समझाएँ?
माना सारी दुनिया फानी, मिटती जाती सभी कहानी।
पर यह पल ना कटते तड़फूं, प्यासा चाहे केवल पानी।

चैन है दिल का जपो हरि मन, बरसे नयना पीड़ा हर ले।
इस दुनिया में हुए अजनबी, प्रीति बढ़ा हरि सुख से जी ले।
नाम सहारा प्यारा हरि का, जीवन का वह ही आधारा।
दुख पाते हम उसे भूल कर, लिये जा रही उसकी धारा।

पाप पुण्य सुख दुख की छाया, पथ को रोके जान न पाया।
करो समर्पण हरि के आगे, कर्ता ना बन उसकी माया।
बना भिखारी जग में डोले, तृष्णा में फंस चहुँ दिश भटके।
सबका स्वामी वह ही दाता, माँग कृपा हरि दुख ना फटके।

813.

किसने देखी किसकी पीड़ा, अपने सुपने अपनी क्रीड़ा।
मन भजन करो हरि सुख पाओ, सब दन्श मिटे हरता पीड़ा।
सुपना दुनिया सब खेल चले, जुड़ औरों से किसलिये जले।
सबकी रचना रच दी हरि ने, स्वीकार उसे कर चैन मिले।

जप ले हरि देवे ज्ञान वही, केवट है सबका जान वही।
जप बहता जा इस सागर में, बन लहर लगे संग सदा वही।
बहते आंसू उसको दे दे, तप कर सुमरन हरपल कर ले।
हरि हाथ डोर तेरे बस क्या, हरि की कठपुतली बन जी ले।

कर्ता वह ही कर्ता ना बन, सेवक हरि का बन कर तू चल।
सुख दुख के खेल खिलावे वह, बहता है इन नयनों से जल।
हरि हरि जप उसकी मांग कृपा, करना ना उसको कभी जुदा।
बस नाम सहारा एक यहाँ, सुमरन बिन तड़फे यहाँ सदा।

हरि हरि जप ले बरसे नयना, शाश्वत वह जप मिलता चैना।
कुछ पल जाते संध्या ढलती, पीले अमृत मानो कहना।
पोंछे वह ही बहती अंखियां, तपते मारग पर दे छैया।
कांटो में फूल खिलावे वह, हरि कृपा मिले खिलती कलियां।

814.

अच्छा न कहूँ ना बुरा कहूँ, दुनिया तेरी तुझ चरण चहूँ।
बहता नयनो से पानी है, मैं प्यार तुम्हारा सदा चहूँ।
तुमको भूला अंखियां रोई, इन सांसों का मालिक तू ही।
फंस तृष्णा के इस जंगल में, सेवक न बना स्वामी तू ही।

ले चल मांझी अनजाना पथ, छाती मेरी करती धक धक।
तू पार लगा दे नौका को, ना रूठ कभी जीवन जब तक।
जीवन दाता जीवन तेरा, ना मुझसे नजर चुराना तुम।
मैं दास तुम्हारा जन्मों का, थक आये शरण तुम्हारी हम।

तेरी बगिया में यहाँ खिले, दे प्यार कभी ना जिया जले।
नयनों से आंसू बरस रहे, देखो अब तो यह सांझ ढले।
अज्ञानी हूँ दो ज्ञान तुम्ही, दीपक बन पथ का तम हरना।
तेरा बालक बहते नयना, हरि अपनी कृपा सदा रखना।

815.

मौला मेरे दे ज्ञान मुझे, बरसे नयना पीड़ा हर ले।
अनजानी दुनिया भटक रहा, दे प्यार मुझे तम को हर ले।
आये यहाँ जायेंगे कहाँ, अज्ञात छिपा कुछ ना जाने।
तेरे सुमरन से मिटते दुख, दे प्यार बन सके दीवाने।

तृष्णा के इस जंगल में फंस, ना प्यास कभी जिय की मिटती।
तुझ कृपा मिले इस जीवन में, मुरझाई कलियां भी खिलती।
तेरा ही नाम सहारा है, तू पार लगा दे यह किस्ती।
सुख दुख के खेल खिलावे तू, देखो अंखियां मेरी झरती।

किसको कह दूँ अपनी पीड़ा, बालम रूठा रोवे जिवड़ा।
कठपुतली तेरी नाचूं मैं, तू नजर उठा हरषे जिवड़ा।
प्यारी है प्रीति बढ़े हरपल, इसको तू छीन नही लेना।
इस जग का मालिक तू ही है, स्वीकार करो बहते नयना।

816.

छिपे हो तुम तड़फते हम, बता किसको कहें अब हम।
पुकारे हार कर तुमको, चला जाता नहीं है दम।
बहाते नयन जो आंसू, कहाँ इनको चढ़ाये हम।
बता दो हम कहाँ जायें, ना मुँह फेरो आँखे नम।

तुम्हारी याद न मिटती, उठा नजरें शमा बुझती।
बचे पल देख ले मुझको, तुम्हारे पांव में पड़ती।
यह अनजानी जग गलियां, बरसते नयन यह रिमझिम।
बनो न इतने तुम निष्ठुर, निकल जाये मिले बिन दम।

जगत के ईश दाता तुम, झोली खाली देखो तुम।
प्यासा हूँ पिला दे जल, सहा जाता न तेरा गम।
तेरे बिन न लगे अच्छा, निकल जाता नहीं क्यो दम।
बढ़े हरि प्रीति नित तेरी, बसो नयन में मेरे तुम।

817.

देखो सुपने फंस जाओगे, अपना तुम चैन गंवाओगे।
आगे जो आये कर्म करो, हरि भज लो हरि को पाओगे।
चलता जा सुरति रखो हरि की, जो रचना रच दी हरि मर्जी।
बस अपने कितना देख सत्य, स्वीकारो मन हरि की मर्जी।

हरि नचा रहा हम नाच रहे, लहरे सागर में खेल रही।
कर्ता हरि मन ना कर गुमान, यहाँ नियति सबको खिला रही।
सुपना देखे सब स्वप्न यहाँ, हरि भज मिलता है चैन यहाँ।
हरि सुपना देता सुख जिय को, खिलता जिय का फिर सुमन यहाँ।

क्षण भंगुर प्रीति यहाँ जग की, परिवर्तित सब अंखियां बहती।
बरसे अमृत शाश्वत हरि ही, जप ले नैया फिर खुद बहती।
हरि जपो डरो ना तेरे संग, जैसा राखे उसका जीवन।
मर्जी उसकी से आया तू, स्वीकारो मर्जी मिटे रूदन।

हरि हरि जप प्यारा नाम यही, बरसे नयना जप सदा वही।
बन लहर बहो इस सागर में, नाचे सागर मैं यहाँ नहीं।

818.

प्राण प्यासे पी पुकारें, तू आ जा हम तो हारे।
अश्रु से धोऊँ चरण को, नाव मेरी पार तारे।
शाम ढलती जा रही है, आंख भी शर्मा रही है।
कैसे पाऊँ मैं तुमको, आँख मेरी बह रही है।

दीनबन्धु करूणा सागर, झर रही है आंख झर झर।
तू ही दाता इस जग का, देख लो नजरें उठा कर।
स्वप्न सी सारी कहानी, बनती मिटती जाती है।
प्रीति में रंग जाऊँ तेरी, स्वप्न ऐसा चाहती है।

दूर भय हो साथ तू हो, छोड़ ना मझधार हारा।
हरि जपे बीते उमरिया, नाम तेरा ही सहारा।
जाये मिल खोई मन्जिल, हरि कृपा जिस पर बरसती।
कर ले मन सुमरन हरि का, जाये ले तेरी किस्ती।

819.

जो भी बनाया बन गये, करता सृजन तू नित नये।
हरि राखना अपनी कृपा, शुभ कर्म लेकर हम जिये।
नित प्रीति तेरी हरि बढ़े, हरि ज्ञान का दीपक जले।
नयन में मेरे तुम बसो, मर्जी जहाँ भी ले चले।

सारे जग का स्वामी तू, कर्ता भर्ता हन्ता तू।
दे प्यार हरि शरण तेरी, चरण में अपने राख तू।
हरि दास हम सदा तेरे, तू किसलिये है छिप गया।
यह आँख मेरी रो रही, मिलती कृपा हरषे जिया।

सेवक तेरे कर्ता तू, बहते है देख ले नयन।
हरि डोर तेरे हाथ में, देता जो ज्ञान करता तन।
हरि प्यार में भीगे रहे, तुमको मनाते हम रहे।
विनती यही दे प्यार तू, पल भर ना दूर तू रहे।

820.

अनहद बाजे मन उसको सुन, जीवन की सारी सोच मिटे।
जब कर्ता वह क्यों फिकर करे, हरि हरि जप यह पथ सहज कटे।
सुपना दुनिया रोवे जिवड़ा, हरि हरि जप ले मिटती पीड़ा।
सुख दुखके खेल खिलावे वह, जप ताप हरे करता क्रीड़ा।

हरि हरि जप यह ही सांचा धन, ले सुपना हरि का बहे नयन।
सब लीन हो रहा हरि में ही, जप ले हरि को सब मिटे चुभन।
ना उलझ जगत के जंगल में, हरि हरि जप ले काहे सोता।
हरि हरि जप यह पावन गंगा, सब पाप हरे दे शीतलता।

जपता जा हरि सब व्यर्थ हटे, किस्ती तेरी वह लिये चले।
जो ज्ञान उपजता तन करता, झुक जा चरणों में दीप जले।
क्षण भंगुर पकड़े दुख आवे, शाश्वत हरि जप हिय सुख पावे।
जिसने पकड़ा हरि का दामन, हरि लिये चले ना घबरावे।

जपता जा हरि सुपना दुनिया, बीते पल सुख से वह रसिया।
आनी जानी इस दुनिया में, पतवार उसी की है नैया।
चाहत ले ले मन नहीं फसो, बरसे अमृत मन ध्यान करो।
बहते आंसू हरि चरण चढ़ा, खिल जाये सुमन ना शोक करो।

821.

कैसा किस्मत का खेला है, दो कदम साथ ना चल पाये।
मझधार बीच में छोड़ गये, इन नयनो से आंसू आये।
न याद तुम्हारी कभी मिटे, अंखियों से आंसू छलकेंगे।
यादें तेरी प्यारी लेकर, दिन रात यहाँ हम तड़फेंगे।

सब आयेंगे सब जायेंगे, कम होगा दर्द कभी ना कम।
सुनसान हुई यह मधुशाला, सब चाह मिटी आंखे है नम।
नित सूरज आये जायेगा, ना देख जिया घबरावेगा।
विधि के हाथों मजबूर यहाँ, पर भुला न जीवन पायेगा।

हरि हाथ डोर हम कठपुतली, मर्जी जैसी राखे छलिया।
सुमरो मन हरि बहती अंखियां, बस कुछ ना पड़ हरि के पैया।
स्वप्निल दुनिया जपता जा हरि, इसमें सब होता लीन यहाँ।
मन हरि सुमरो सब की मन्जिल, मैं मिटता जानो हरी जहाँ।

सब कूल छूटते जाते है, छूटा जाता है यह भी तन।
जो ध्यान करे वह ही पाये, सुख पाये जिय हरि सेवक बन।
सुख दुख का वही रचियता है, जप ले हरि वह ही स्वामी है।
ना और ठिकाना कोई भी, बहती रहती यह अंखियां है।

822.

पी कितनी मधुशाला हमने, फिर भी यह मन ना तृप्त हुआ।
हरि नाम जपे सुख चैन मिले, तज हरि तृष्णा में फंसा हुआ।
अमृत बरसे हरि प्रीति बढ़ा, बहते नयनों से आंसू है।
स्वामी वह सारे जग का है, उसको भूले दुख पाते है।

दे ज्ञान वही वह करता चल, कर्ता ना बन हरि सेवक बन।
नयनों के नीर चढ़ा हरि पग, राखे जैसे उसका जीवन।
जप ले हरि एक सहारा वह, तपता जंगल छैया है वह।
अन्तिम पल तक वह साथ रहे, नैया बिन भय ले जाता वह।

दिन आता है ढल जाता है, जीवन सुपने नित लेता है।
शाश्वत हरि भूले चैन नहीं, अंखियों से पानी बहता है।
हरि नयन बसा जुड़ शाश्वत से, सिर झुका शरण उसकी ले ले।
दुनिया स्वप्निल दो दिन जीवन, बरसे अमृत यह जल पी ले।

823.

जप ले हरि देवे ज्ञान वही, स्वप्निल दुनिया कर मोह नहीं।
क्षण भंगुर पकड़ो दुख बढ़ता, सुख दुख का सारा खेल यही।
शाश्वत हरि पकड़ो मिलता सुख, वह जनम जनम का साथी है।
उसको भूले अंखियां रोवे, जप ले हरि बिन यह प्यासी है।

हरि नयन बसा सुख छिपा वही, खिल जाती है दिल की कलियां।
हरि नाम सहारा मन तू ले, होवेगी पार तेरी नैया।
उसकी तड़फन में भी सुख है, वैभव फीके सब पड़ जाते।
हरि मांग प्रीति बढ़ती जाये, वह धन्य याद ले लय होते।

मन जप ले हरि कुछ पल रहना, परिवर्तित जग से क्या कहना।
सुपने सबके अपने अपने, जप ले हरि शाश्वत में रहना।
उसकी मर्जी का खेल यहाँ, न तू जाने जायेगा कहाँ?
जीवनदाता जीवन उसका, बन लहर बहो जपो हरि जहाँ।

824.

कैसे इस दिल को समझाये, इन नयनों में आंसू आये।
अज्ञात दिशा मालूम नहीं, छिप गये नाथ क्यो तड़फाये।
हे दीनबन्धु करूणा सागर, देखो अंखियां झरती झर झर।
निर्बल मैं खोज न पाता हूँ, नैया न जाने जाये किधर।

तुम देख रहे इस आशा से, गिर गिर कर उठ चल लेता हूँ।
देखो मेरे इन नयनों को, न खता मेरी कह देता हूँ।
तुम स्वामी मेरे दास तेरा, चाहूँ बस प्यार मुझे देना।
कठपुतली तेरी नचा मुझे, मेरे नयनों में पर रहना।

मैं अन्धकार में हूँ डूबा, दो ज्ञान नहीं तुम सा दूजा।
डगमग करती इस नौका को, ले चल स्वीकार करो पूजा।
देखूँ मैं नाचे सभी तरफ, सागर में बहूँ लहर बन कर।
हरि कृपा मिले होवे पूजा, मैं शरण तुम्हारी बंशीधर।

825.

जप ले ना जप पर सत्य यही, हरि लीला मैं तो यहाँ नही।
पथरीली राहों पर जब जब, दिल टूटे आवे याद वही।
हरि नाम सहारा ले ले मन, बहता है इन नयनों से जल।
कठपुतली बन जा तू हरि की, सुख से संध्या जायेगी ढल।

हरि हरि का प्यारा गीत यही, खिलती कलिया दे प्यार वही।
बरसे नयना हरि प्रीति बढ़ा, ना उस बिन पावे प्यार कहीं।
तू कौन बता कितना जाने, पढ़ पोथी उनसे पहचाने।
अन्तस की ज्योति जला जप मन, अमृत बरसे पी दीवाने।

हरि हरि जप देवे ज्ञान वही, बिन कृपा जले ना दीप कही।
उसकी मर्जी जब तक खेले, न पता जाये कब नाव कहीं।
हरि हरि जप बीते सुख से पल, उसकी मर्जी ना होंगे कल।
सागर में बन कर लहर बहो, संग सागर सुमरन कर हरपल।

826.

ले नाम सहारा बहता जा, ना फिकर करो मन यह होता।
बस में कितना है देख यहाँ, जो हरि चाहे वह ही होता।
जप ले हरि हरि उसकी दुनिया, नाचे कुछ पल बहती अंखियां।
हरि नाम बिना ना चैन मिले, जप अमृत पी ले वह रसिया।

जपता जा नयन बहें आंसू, पूजा कर उनसे हरि पग की।
उसके आगे सब अबल यहाँ, कर सुमरन फांस मिटे मन की।
हरि हरि बोलो हरि को जी लो, बन लहर यहाँ जग में बह लो।
ले जाये कहाँ हरि ना जाने, उसको सुमरो संग में रह लो।

जप ले हरि हरि उसकी दुनिया, नाचे हम नचा रहा छलिया।
ज्ञानी अज्ञानी सभी यहाँ, रचना रच दी रोवे अंखियां।
मन करो समर्पण हरि आगे, हरि प्रीति बढ़े महके बगिया।
कर्ता वह ना तू कर्ता बन, वह पार लगावेगा नैया।

827.

सत्य तू है कौन हूँ मैं, ना जानते अपनी खता।
दर्द दिल में है उफनता, किसको सुनाएँ दास्तां।
तड़फा ले चाहे कितना, मर्जी तुम्हारी ही चले।
बहते नयनों से आंसू, नजरें उठा कर देख ले।

इस जग के तुम हो स्वामी, नाथ कठपुतली तुम्हारी।
तू नचा ले नाच कितना, प्यार की है भूख हारी।
साथ मेरे तू सदा है, विश्वास न छूटे मेरा।
दास को स्वीकार कर लो, अज्ञानी बालक तेरा।

हरि बसो नयन में मेरे, प्रीति को दिल में जगा दो।
बहते नयनों से आंसू, निज चरण में हरि जगह दो।
सुरति हरपल रहे तेरी, प्रभु वन्दना तेरी करें।
न कभी इस दिल से जाना, प्रभु समर्पण हम करें।

fo'ks'kifjf'k"V

vpZuk] jkedg] tigfj] lkal lkal esa] gfj Hktu
ckV fugk:¡] u;uk cjls] gfj cksyks] I;klh
vaf[k;ka] gfj vkse tiks o ti ys euqvk ds
iwZ izdkf'kr Hkuksa dks bl fo'ks"k ifjf'k"V esa
nsdj *leiZ.k^ iqLrd dh mi;ksfxrk dks vkSj
c<+k fn;k gSA

-चन्द्र 'प्रभाकर' कोकड़ा

'समर्पण' [redacted]

'समर्पण' [redacted]